TEXT FLY WITHIN
THE BOOK ONLY

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178880

UNIVERSAL
LIBRARY

186—13-6-75—10,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

H83
P53M
Accession No. Eg.H.1311
મહાદેવદાસ 'રેણુ'
મોજ ઓર્ડર 1954.

ok should be returned on or before the date last marked below.

बालदेव की बातों को लोग बड़े अचरज से सुन रहे हैं। आँगन की औरतें भी घुंघट काढ़े, 'टट्टी' के पास खड़ी होकर सुन रही हैं—"अब रात भर गोयठा[२] जला कर धुंआ करने का झंझट नहीं, काटे जितना मच्छड़!"

पोलिया टोली, तंत्रिमा छत्रीय टोली, यदुवंशी छत्री टोली, गहलौत छत्री टोली, कुर्म छत्री टोली, अमात्यब्राह्मण टोली, धनुकधारी छत्री टोली, कुसवाहा छत्री टोली और रैदास टोली के लोगों ने वचन दिया—"सात दिनों तक कोई काम नहीं करेंगे। मालिक लोगों से कहिये—हलफाल, कोड़ कमान बन्द रखें। करना ही क्या है? एक इसपिताल का घर, एक डागडर बाबू का घर, एक भनसाघर[३] और एक घर फालतू[४]। सात दिनों में ही सब काम रैट हो जायेगा।

धनुकधारी टोली के तनुकलाल ने एक सवाल पैदा कर दिया·····
····"लेकिन हलफाल काम काज बन्द करने से मालिक लोग मजूरी तो नहीं देंगे। एक दो दिन की बात रहे तो किसी तरह खेपा भी जा सकता है। सात दिनों तक बिना मजूरी के? यह जरा मुस्किल मालूम होता है।·····ततमा और दुसाध टोली के लोगों की बात जाने दीजिये। उनकी औरतें हैं, सुबह से दोपहरिया तक कमला में कादोपानी 'हिंड़' कर एक दो सेर गैंची मछली निकाल लायेंगी। चार सेर धान का हिसाब लग जायेगा। बाबू लोगों के पुआल के 'टालों'[५] के पास धरती खरोंच कर, चूहे के 'मांदों'[६] को कोड़ कर भी कुछ धान जमा कर लेंगी। नहीं तो कोठी के जंगल से 'खमरआलू'[७] उखाड़ लायेंगी। रौतहट हाट में कटिहार मिल के कुल्ली लोग चार आने सेर खमरआलू हाथोंहाथ उठा लेते हैं। लेकिन, और लोगों के लिये तो बड़ा मुस्किल है।"

बालदेव ने निराश होकर पूछा—"अब क्या किया जाये?"

तनुकलाल के पास समस्या का समाधान पहले से ही मौजूद था। बोला—"एक उपाय है। यदि मालिक लोग आधे दिन की भी मजूरी

दे दें तो काम चल जाये।"

तनुक लाल के इस प्रस्ताव पर विचार करता हुआ बालदेव मालिक टोला की ओर चला। विश्वनाथ बाबू तो मान लेंगे, सिंघ जी के बारे में कुछ कहना मुश्किल है। सिपैंहिया टोला का बिरजू सिंह कल कह रहा था—"सिंघ जी इसपिताल में कोई मदत नहीं करेंगे। कहते थे, इसपिताल का 'मालिक मुक्तियार'[८] है विश्वनाथ और बलदेवा।"

ब्राह्मण टोली से तो कुछ उम्मीद करनी ही बेकार है। जिस दिन से अस्पताल होने की बात उन लोगों ने सुनी है, दिन रात डाक्टर और अंग्रेजी दवा के खिलाफ़ तरह तरह की कहानियाँ सुनाते फिर रहे हैं। 'जोतखी जी' का विश्वास है कि डाक्टर लोग ही रोग फैलाते हैं। सुई भोंक कर देह में जहर दे देते हैं, आदमी हमेशा के लिये कमज़ोर हो जाता है। हैज़ा के समय कूपों में दवा डाल देते हैं, गाँव का गाँव हैज़ा से समाप्त हो जाता है। कालाबुखार का नाम पहले लोगों ने कभी सुना था? 'पूरब मुलुक कामरू कमिच्छा हासाम'[९] से कालाबुखार वालों का लहू शीशी में बन्द कर करके यही डाक्टर लोग ले आये थे। आजकल घर घर कालाबुखार फैल गया है।.....इसके अलावा, 'बिलैती' दवा में गाय का ख़ून मिला रहता है।.....

भगमान भगत की दुकान के पास ही विश्वनाथ बाबू से भेंट हो गयी। तनुकलाल के प्रस्ताव को सुनते ही विश्वनाथ बाबू चिढ़ गये।".....धानुकटोली का तनुकलाल? वह अपने को बड़ा क़ाबिल समझता है। हर बात में वह एक न एक 'लेकिन' ज़रूर लगायगा। तुम भी तो बालदेव पूरे 'बमभोलानाथ' हो। उससे पूछा नहीं कि अस्पताल से सिर्फ़ मालिक लोगों की भलाई होगी क्या?

भगमान भगत हमेशा सुपारी चबाता रहता है। बोलने के समय ऐसा लगता है कि वह बात को भी चबा रहा है—"अरे। ई तो दस आदमी के काम बा, जे-बा-से एकरा में सब के मिल के मतत करे के चाहीं। का हो सीप्रसाद?"

भगत की दुकान पर यों भी हमेशा चार पाँच आदमी बैठे रहते हैं। विश्वनाथ बाबू की आवाज़ सुनकर दो चार व्यक्ति और जमा हो गये। बूढ़े सुमरित दास को लोग लबड़ा[10] समझते हैं। मगर वह समय पर पते की बातें बता जाता है। आते ही बोला—"अरे तहसीलदार, आप समझे नहीं। तनुकलाल अपने मन से नहीं बोला है, इसमें 'कनकशन'[11] है। जरा इधर एकान्त में आइये तो बतावें।" तहसीलदार और सुमरित दास भगत की दुकान से जरा दूर जाकर बतियाने लगे। दुकान में बैठे हुए किसी ने कुढ़ कर कहा—"बूढ़ा लुच्चा[12] इसी को कहते हैं। हर बात में एकान्ती!"

भगत ने आँख टीप कर मना कर दिया—ज़ोर से मत बोलो, बालदेव है।

सुमरित दास से 'प्रायविट' करने के बाद तहसीलदार का मिज़ाज बदल गया। आकर बोले—"अच्छा तो बालदेव! तुम जाकर ततमा-टोली और पोलिया टोले वालों से कहो, मैंने पचास रूपैया माफ़ कर दिया। उस दिन अफ़िसियर बाबू को जो डाली दी गयी थी सो तो तुम्हारे ही सामने की बात है। बिरंची भी था।...अब जरा सिपैहिया टोला जाओ, देखो वे लोग क्या कहते हैं। कोई कुछ करे, हमारा जो धरम है हम करेंगे।"

बालदेव जब सिंघजी के दरवाज़े पर पहुँचा तो सिंघजी घोड़े पर सवार हो चुके थे। शायद कटिहार जा रहे हैं, 'जात्रा' पर टोकना अच्छा नहीं, इसलिये बालदेव चुप ही रहा। सिंघजी के दरवाज़े पर पाँच सात आदमी बैठे हुये थे। किसी ने बालदेव को बैठने के लिये भी नहीं कहा। बालदेव ने सबों को 'एक ही साँथ जायहिंद' कहा। शिवशङ्कर सिंघ के बेटे हरगौरी ने बालदेव से पूछा—"कहिये बालदेव लीडर, क्या समाचार है?"

"आप लोगों की किरपा से सब अच्छा है। बाबू साहेब, आप के स्कूल से कब आये?"—बालदेव ने पास में पड़े हुये एक खाली मोढ़े

बैठते हुए कहा ।

"सुना कि आपकी लीडरी खूब चल रही है ।"

"बाबू साहेब, गरीब आदमी भी भला लीडर होता है ? हम तो आप लोगों का सेवक हैं ।"

"आप तो लीडर ही हो गये तो आजकल कांग्रेस आफ़िस का 'चौका बर्तन' कौन करता है ?"—हरगौरी अचानक उबल पड़ा—"अरे भाई, सभी काशी ही चले जाओगे ? पत्तल चाटने के लिये भी तो कुछ लोग रह जाओ ।.....जेल क्या गये, पंडित जमाहिरलाल हो गये । कांग्रेस आफिस में भोलटियरी करते थे, अब अन्धों में काना बन कर यहाँ लीडरी छांटने आया है ।.....स्वयंसेवक न घोड़ा का दुम ।"

"बाबू साहेब ! मुंह खराब क्यों करते हैं ? आप बिदमान हैं, और हम जाहिल । हमसे जो कसूर हुआ है कहिये ?"

"उठ जाओ दरवाजे पर से । बेइमान कहीं के ।.....डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से अस्पताल की मंजूरी हुई है, रूपैया मिला है । सब चुपचाप मार कर अब बेगार खोज रहे हैं । चोर सब.....। उठ जाओ दरवाजे पर से ।....."

हरगौरी तमतमा कर बालदेव को धक्का देने के लिये उठा । बैठे हुए लोगों ने 'हाँ हाँ' करके हरगौरी को पकड़ लिया । बालदेव चुपचाप बैठा रहा ।—"मारिये । यदि मारने से ही आपका गुस्सा ठंढा हो तो मारिये !!"

हल्ला गुल्ला सुनकर भीड़ जम गयी । हरगौरी का लड़कपन किसी को पसन्द नहीं । शिवशंकर सिंघ भी सुनकर दुखित हुए—"लीडरी करे या भोलटियरी, तुमको किस बात की चिढ़ लगी ? तुम्हारा क्या बिगाड़ा था ?.....अच्छा बालदेव, बुरा मत मानना । हंसी दिल्लगी में उड़ा दो ।.....छोटा भाई है ।"

"शिवशंकर मौसा ! बाबू साहब गाली गलौज करके मारने उठे । हम कोई लाजमान[13] बात मुंह से निकाले हैं ? पूछिये सबों से ? आप चाहीं ।

महतमा जी कहिन है·····!"

नीम के पेड़ पर एक कागा कायें कायें कर उठा।

हरगौरी गुस्से से थर-थर काँप रहा है।·····ये लोग भी अजीब हैं। एक घंटा पहले बालदेव की टोकरी भर शिकायत कर रहे थे, लीडरी सटकाने की बात कर रहे थे और अभी उसका बाप भी बालदेव की खुशामद कर रहा है? ग्वाला होकर लीडरी·····?

"गुअरटोली वाले हंसेरी[१४] लेकर आ रहे हैं।"—एक लड़का दौड़ता हाँफता आकर खबर दे गया। ऐं?·····गाँव के उत्तर शोरगुल हो रहा है। खूंटे में बंधे हुए बैलों ने चौकन्ना होकर कान खड़े किये। गाँव के बाहर चरती हुई बकरियाँ दौड़ती मेंमियाती हुई गाँव में भागी आ रही हैं। कुत्ते भूंकने लगे।···बात क्या हुई?

"अरे बेटा रे! गौरी बेटा रे!!·····आँगन में आ जा बेटा रे! गुअरटोली का कलिया पगला गया है!" हरगौरी की माँ छाती पीटती और रोती हुई आई, हरगौरी को घसीट कर आँगन में ले गई। बच्चे रोने लगे।

"अरे बात क्या हुई?"

"भाला निकालो छत्तर!"

"हमारी गंगाजी वाली लाठी कहाँ है?"

"तीर निकाल रे।"

"अरे बात क्या है? हंसेरी क्यों·····।"

कौन किसका जवाब देता है। किसे फ़ुर्सत है। सारे गाँव में कुहराम मचा हुआ है। हरगौरी की माँ अब शिवशंकर सिंघ को आँगन में बुला [७] है। चिल्ला रही है—"गुअरटोली का रौदी बूढ़ा आया है।·····

[७] में बूढ़े बच्चे खौल रहे हैं कि हरगौरी ने बालदेव को जूते से

[८]। कुकुरू का बेटा कलचरना 'काली किरिया'[१५] खाया

[९]—हरगौरी का खून पीयेंगे।·····आँगन में आ जाओ गौरी के बाबू!"

"ओ !"—बालदेव दौड़ा—"आप लोग अकुताइये मत। हम देखते हैं। नासमझ लोग हैं, समझा देते हैं।"

"एकबार बोलिये प्रेम से·····महाबीर जी की···जै।"

"जै ! जाय·····जाय !!"

बालदेव को देखते ही यादव सेना ख़ुशी से जयजयकार कर उठी। बोलिये एकबार प्रेम से·····गन्ही महतमा की·····जै ! जाय····· जाय !! ऐ ! शांती शांती ! चुप रहो, बालदेव जी क्या कहते हैं। सुनो।·····

"पियारे भाइयों। आप लोग जो 'अन्डोलन'[१६] किये हैं, वह अच्छा नहीं। अपना कान देखे बिना कौआ के पीछे दौड़ना अच्छा नहीं। आपही सोचिये, क्या यह समझदार आदमी का काम है ?·····आप लोग 'हिन्साबाद' करने जा रहे थे। इसके लिए हमको 'अनसन' करना होगा। भारथमाता का, गाँधी जी का यह रास्ता नहीं·····।"

सचमुच गियानी आदमी है बालदेव जी। अन्डोलन, अनसन और ·····और क्या ?···हिन्साबात। किसी ने समझा ? गियान की बोली समझना सभी के बूते की बात नहीं।···

"अनसन क्या करेंगे ?"

"अन्ट सन्ट ?"

कलिया कहता था—उपास करेंगे बालदेव जी। कलिया को बुला कर बालदेव जी कहते थे—कालीचरन तुम बहुत बहादुर लौजमान हो। लेकिन जोस में होस भी रखना चाहिये। हम खुस हैं, लेकिन उपास करेंगे।

"सचमुच यदि उस दिन बालदेव जी ठीक समय पर नहीं आ जाते तो कालीचरन 'इस पार चाहे उस पार' कर देता।···अरे हरगौरिया ? कल का छौड़ा। इस्कूल में चार अच्छर पढ़ क्या लिया है लाट साहेब हो गया है।"

"अरे पढ़ता क्या है ! दाढ़ी मोच हो गया है और अपना सकलदीप से दो 'गिलास'[१७] नीचे ही पढ़ता है। एकदम 'फेलियर'[१८] है। इस

साल भी फैल हो गया है। उसका बाप मास्टर को घूस देने गया था। मास्टर गुस्सा कर बोला—भागो, नहीं तो तुम को भी फैल कर देंगे।"

"अरे। पढ़ेगा क्या। सुनते हैं कि लालबाग मेला में 'लाल पढ़ना' में पास हो गया है।"

"लाल पढ़ना?"

बात बनाने में दुलरिया से कोई जीत नहीं सकता। लाल पढ़ना नहीं समझे?···हा···हा···हा···हा···खी···खी···खी···। लाल पढ़ना??

—ढाक ढिन्ना, ढाक ढिन्ना।

"चलो रे। अखाड़ा का ढोल बोल रहा है।"

(१) डिस्ट्रिक्टबोर्ड (२) उपले (३) रसोई घर (४) विशेष (५) घास की ढेरी (६) बांबी (७) एक प्रकार का कन्द (८) कर्त्ता धर्ता (९) आसान (१०) डींग हांकने वाला (११) गुप्त रहस्य (१२) दुचित्ता (१३) खराब बात (१४) बलवा करने के लिए दल बांध कर (१५) कसम (१६) आंदोलन (१७) क्लास (१८) फेल करने वाला।

—चार

सत गुरू हो! सतगुरू हो!!

महन्त साहेब सदा ब्राह्म बेला में उठते हैं।···हो रामदास! आसन त्यागो जी। लछमी को जगाओ।····· सतगुरू हो! ये कभी जो बिना जगाये जागें। रामदास! हो जी रामदास!!

रामदास आँखें मलते हुये उठता है, बाहर निकल कर आस्मान में भुरूकुवा[1] को देखता है फिर रामडंडी[2] को खोजता है।·····अभी तो बहुत रात बाक़ी है। महंथ साहब आज बहुत पहले ही जग गये हैं। माघ का जाड़ा तो बाघ को भी ठंढा कर देता है।·····"सरकार। रात तो अभी बहुत बाकी है।"

" रात बहुत बाकी है तो क्या हुआ? एक दिन जरा सबेरे ही सही। सोओ मत। धुनी में लकड़ी डाल दो। कोठारिन को जगा दो।····· सतगुरू साहेब ने सपना दिया है।"

लछमी उठी। उठकर महंथ साहब के आसन के पास आई। हाथ जोड़कर 'साहेब बंदगी' किया और आँख मलते हुये कुएँ की ओर चली गई।

·····लछमी के रग रग में अब साधु सुभाव, आचार विचार और नियम धरम रम गया है। साहेब की दया है। और यह रामदास? गुरु जानें, इसकी मति गति कब बदलेगी? बचपन से ही साधु की संगति में रह कर भी जो नहीं सुधरा, वह अब कब सुधरेगा?·····भक्तिभाव ना जाने भोंदू, पेट भरे से काम। बस, दो ही गुण हैं। सेवा अच्छी तरह करता है और खंजड़ी बजाने में बेजोड़ है।·····अरे हो रामदास!··· ···फिर सो गये क्या?·····गंगाजली में जल भर दो।

"जागहु सतगुरु साहेब, सेवक तुम्हरे दरश को आया जी
"जागहु सतगुरु साहेब·····।"
डिम डिमिक डिमिक, डिम डिमिक डिमिक
"भोर भयो भव भरम भयानक भानु देख कर भागा जी,
"ज्ञान नैन साहेब के खुलि गयो, थर थर काँपत मायाजी।
"जागहु सतगुरु साहेब·····"

माघ के ठिठुरते हुये भोर को मठ से 'प्रातकी'[3] की निर्गुणवाणी निकल कर शून्य में मड़रा रही है। बूढ़े महंथ साहब पहला पद कहते हैं। दंतहीन मुंह से प्रातकी के शब्द स्पष्ट नहीं निकलते। गले की थरथराहट सुर में बाधा डालती है। बेसुरा राग निकलता है। दमे से जरजर शरीर में दम कहाँ?·····लेकिन लछमी सब संभाल लेती है। पाँच साल पहले प्रातकी गाने के समय उसकी आँखों की पलकें नींद से लदी रहती थीं। महंथ साहब जब गीत की दूसरी पंक्ति 'भोर भयो भव भरम' गाते थे तो वह बहुत मुश्किल से अपनी हँसी को रोक पाती थी—भोय भयो भव भरम·····। लेकिन अब नहीं। उसकी बोली मीठी है। उसका सुर मीठा है। वह तन्मय होकर गाती है। उसकी सुरीली तान के साथ महंथ साहब के बेसुरे और मोटे राग का मेल नहीं खाता, फिर भी संगीत की

निर्मल धारा में कहीं विरोध नहीं उत्पन्न होता। महंथ साहब का मोटा राग लछमी के कोमल लय को सहारा देता है। शहनाई के साथ सुर देने वाली शहनाई की तरह—भों ओं ओं ओं ओं···।

रामदास की खंजड़ी की गमक निशब्द वातावरण में तरंगें पैदा करती है। खंजड़ी में लगी हुई छोटी छोटी झुनुकियों की हल्की झुनुक! मानों किसी का पालतू हिरन नाच रहा हो, दौड़ रहा हो। डिम डिमिक! रुन झुनुक झुनुक!

प्रातकी के बाद बीजक 'शबद'।·····रामुरा झीं झीं जंतर बाजे। करचर्ण बिहुना नाचे। रामुरा झीं झीं·····।

और तब सत्संग! रोज इसी बेला में सत्संग होता है। प्रातकी सुनते ही मठके अन्य साधु सन्यासी, अतिथि अभ्यागत तथा अधिकारी भंडारी वर्ग रह जग जाते है। प्रातकी और बीजक में कोई सम्मिलित हो या नहीं, सत्संग में भाग लेना अनिवार्य है। मठ का भंडारी इसी समय रोज की हाजिरी लेता है। इस समय जो अनुपस्थित रहे, उसकी 'चिप्पी'[४] बंद हो जाती है। सत्संग में महंथ साहब साधुओं और शिष्यों को उपदेश देते हैं। प्रश्नों के उत्तर देते है। अज्ञान अंधकार को अपनी वाणी से दूर करते है।·····

·····सतगुरु सेवा सत्य करि माने सत्य विचार।
सेवक चेला सत्य सो जो गुरू बचन निहार॥·····

फिर सातचक्र परिचय!

"प्रथम चक्र आधार कहावे गुद स्थल के मांही
"द्वितिय चक्र अधिष्ठान कहिये लिंगस्थल के मांही।
"तृतय चक्र मणिपूरण जानो नाभी स्थल·····"

सत्संग समाप्त होते ही भंडारी उपस्थित मूर्तियों की गिनती लेता है—"रानीगंज के तीन गो मुरती तो आज सात दिन से धरना देले हथुन। जाये ला कहै हियेन्ह त कहै हथिन बलु सरकार से आज्ञा ले लेली है। बेला मठ के एक मुरती के बुखार लगलैन्ह है, दोकान में सबुरदाना

न भेटाई है·····।"

कोठारिन लछमी दासिन को रोज इसी समय 'बक-बक झक-झक' बहुत बुरा लगता है। सत्संग से प्राप्त की हुई मन की पवित्रता नष्ट हो जाती है। लेकिन क्या करे? मठ के इस नियम को यदि जरा भी ढीला कर दिया जाये तो साधु बैरागी एक महीने में ही मठ को उजाड़ देंगे। बाहर के साधुओं को चार ही दिन रहने का नियम है, मगर····। "रानीगंज के मूर्तियों को खुद सोचना चाहिये। यहाँ कोई कुबेर का भंडार तो नहीं·····।"

"लछमी"—महंथ साहब कहते हैं—"आज भर रहने दो। भंडारी! जितना मुरती आज हैं, सबों का 'बालभोग'[५] और 'प्रसाद'[६] आज लगेगा।·····सभी मुरती बैठ जाइये। आज सतगुरु साहेब सपना दीहिन हैं।"

धुनी में फिर सूखी लकड़ियों के छोटे छोटे टुकड़े डाल दिये गये। सभी मुरती फिर धुनी के चारों ओर अर्धवृताकार पंक्ति में बैठ गये। लछमी की आसनी महंथ साहब के आसन के पास ही लगती है·····। सभी महंथ साहब की ओर उत्सुकता से देख रहे हैं।

"आज मध्य रात्रि में, सतगुरु साहेब सपने में मेरे आसन के पास आये। हम जल्दी से उठ के साहेब बंदगी किया। हमको 'दयाभाव' देके साहेब कहिन—सेवा दास! तुम नेत्रहीन हो, लेकिन तुम्हारे अंतर के नैनों का जोत[७] बड़ा 'बिलच्छन' है। हम भेख बदल के आये और तूं पहचान लिया? तुम्हारे ज्ञान-नेत्र में 'दिब्बजोत' है।·····सो, तुम्हारे गाँव में परमारथ का कारज हो रहा है और तुमको मालूम नहीं? गाँधी तो मेरा ही भगत है। गाँधी इस गाँव में इसपिताल खोल कर परमारथ का कारज कर रहा है।·····तुम सारे गाँव को एक भन्डारा दे दो।·····कहके साहब अन्तरधियान हो गये। हमारी निद्रा भंग हो गई। सतगुरु के बिरह में चित्त चंचल हो गया—बिरह अगिन तन कैसे बूझे, गृहबन अंधकार नहीं सूझे। आखिर, सतगुरू आज्ञा शब्द

विचार कर चित्त को शांत किया।"

महंथ साहब के सपने की बात तुरत गाँव भर में फैल गई। 'बालदेव-हरगौरी संवाद' और यादव सेना के अचानक हमले ने गाँव की दलबन्दी को नया जीवन प्रदान कर दिया था। जोतखी जी की राय है·····"यादवलोग बार बार लाठी भाला दिखाते हैं। राजपूतों के लिए यह डूब मरने की बात है। फौजदारी में 'यतलाय'[८] देकर इन लोगों का मोचिलका करवा लिया जाये। लेकिन सिंघ जी थाना फौजदारी से घबराते हैं। बात बात में गाली और डेग डेग पर डाली। और कानून कचहरी की शरण जाना तो अपनी कमजोरी को जाहिर करना है। समय आने पर बदला ले लिया जायेगा। अकेले यादवों की बात रहती तो कोई बात नहीं थी, इसमें कायस्त समाया हुआ है। 'मरा हुआ कायस्त भी बिसाता है।' फिर, बदमाशी हरगौरी की ही है। मेरे दरवाजे पर से किसी को उठ जाने के लिए कहना, मेरे दरवाजे पर किसी को मारने के लिए उठना यह तो अच्छी बात नहीं।"

यादव टोली में अब दोपहर से ही ढोल बजने लगता है—ढाक ढिना, ढाक ढिना! शोभन मोची को एक नया गमछा और नयी गंजी मिली है। कालीथान के बड़ के पास गाय भैंस 'बथान'[९] करके दोपहर से ही कुश्ती खेलने लगते है, यादव संतान। बालदेव जी ने जिस दिन 'अनसन' किया था, शाम को खेलावन यादव के दरवाजे पर कीर्तन हुआ था। बालदेव जी का सिखाया हुआ सुराजी कीर्तन---'धन धन गाँधी जी महराज, ऐसा चरखा चलाने वाले।' कीर्तन के बाद बालदेव जी ने भैंस का कच्चा दूध पीकर व्रत तोड़ा था। कहते थे, अब 'हिन्साबात' करने से फिर अनसन करेंगे। अब दो दिनों का। सुराजी कीर्तन, लहसन का बेटा, सुनरा खूब गाता है। बालदेव जी जब फिर उपवास करेंगे तो सुनना। अभी और सीख रहा है।·····'सिपैहिया टोला में तो अब दिन में ही उल्लू बोलता है। तहसीलदार कह रहे थे—राजपूतों की सिट्टी गुम हो गई है। हल्दी बोला दिया है! कालीचरन बहादुर है।

'इसपिताल' के सभी घर बन कर तैयार हो गये हैं। सिर्फ़ मिट्टी साटना बाक़ी है। बिरसा माँझी ने कहा है—'संथाल टोली की सभी औरतें आकर मिट्टी लगा देंगी आज।' अलबत्त मिट्टी लगाती है संथालिनें। पोखता मकान भी मात। अगले सनिचर को डागडर बाबू आवेंगे। बालदेव जी 'डिसट्रीबोट' से सभी सामान ले आये हैं। 'भैंसचरमन' बाबू ने बालदेव जी से दसखत करा लिया है। भैंसचरमन बाबू जरूर यादव ही होंगे। किसी दूसरी जाति का ऐसा नाम क्यों होगा—भैंसचरमन बाबू! तहसीलदार के यहाँ जाकर देखो—कुरसी, ब्रीन्च, बड़े बड़े बक्से में दवा, बाल्टी, कठौत, लोटा। पानी का कल गाड़ा जायेगा, जैसे रौतहट के मेला में गड़ता है!

सनिच्चर को ही महंथ साहेब का भंडारा है। पूड़ी जिलेबी का भोज। सारे गाँव के औरत मर्द, बूढ़े बच्चे और अमीर ग़रीब को महंथ साहेब खिलावेंगे। सपनौती हुआ है।

यादव टोली का किसनू कहता है—"अंधा महंथ अपने पापों का प्राच्छित कर रहा है।·····बाबा जी होकर जो रखेलिन रखता है, वह बाबाजी नहीं। ऊपर बाबाजी, भीतर दगाबाजी।·····क्या कहते हो? रखेलिन नहीं दासिन है?·····किसी और को सिखाना। पाँच बरस तक मठ में नौकरी किया है, हमसे बढ़कर और कौन जानेगा मठ की बात? और कोई देखे या नहीं देखे, ऊपर परमेसर तो है। महंथ ने जब लछमी दासिन को मठ पर लाया था तो वह एक दम अबोध थी। एकदम नादान। एक ही कपड़ा पहनती थी। कहाँ वह बच्ची और कहाँ पचास बरस का बूढ़ा गिद्ध।·····रोज रात में लछमी रोती थी। ऐसा रोना कि जिसे सुनकर पत्थर भी पिघल जाये। हम तो सो नहीं सकते थे। उठकर भैंसों को खोल कर चराने चले जाते थे। रोज सुबह लछमी दूध लेने बथान पर आती थी। उसकी आँखें कदम के फूल की तरह फूली रहती थी। रात में रोने का कारन पूछने पर चुपचाप टुकुर टुकुर मुंह देखने लगती थी। ठीक गाय की बाछी की तरह, जिसकी माँ

मर गई हो·····! वैसा ही चंडाल है यह रमदसवा। वह साला भी अंधा होगा देख लेना।·····महंथ एक बार चार दिन के लिए पुरैनिया गया था। हमने सोचा कि चार रात तो लछमी चैन से सो सकेगी। ले बलैया! बाघ के मुंह से छूटी तो बिलार के मुंह में गई।···उसके बाद लछमी ऐसी बीमार पड़ी कि मरते मरते बची। पाप भला छिपे? रामदास को मिरगी आने लगी और महंथ सेवादास, सूरदास हो गये। एकदम चौपट। ·····हमारा तीन पुश्त का दरमाहा बाकी रखा है। भंडारा करता है?·····हम उन लोगों को साधू नहीं समझते हैं।·····"

महंथ सेवादास इस इलाक़े के ज्ञानी साधु समझे जाते थे। सभी 'सास्तर पुरान' के पंडित। मठ पर आकर लोग भूख प्यास भूल जाते थे। बड़ी पवित्र जगह समझी जाती थी।···लेकिन जब महंथ दासिन को लाया, लोगों की राय बदल गयी। बसुमतिया मठ के महंथ से इसी दासिन को लेकर कितने लड़ाई झगड़े और मुक़दमे हुये। बसुमतिया का महंथ कहता था— लछमी दासिन का बाप हमारा गुरु-भाई था, इसलिए बाप के मरने के बाद उस पर मेरा हक़ है। सेवा दास की दलील थी— लछमी का बाप जिस मठ का सेवक था, वह मेरीगंज मठ के अधीन है, इसलिए लछमी पर हमारा अधिकार है। अंत में लछमी क़ानूनन सेवादास की ही हुई। सेवादास के वकील साहब ने समझा कर कहा था—महंथ साहब! इस लड़की को पढ़ा लिखा कर इसकी शादी करवा दीजियेगा। महंथ साहब ने वकील साहब को विश्वास दिलाया था— वकील साहब, लछमी हमारी बेटी की तरह रहेगी।·····लेकिन आदमी की मति को क्या कहा जाये। मठ पर लाते ही किशोरी लछमी को उन्होंने अपनी दासी बना लिया। लछमी अब जवान हुई है, लेकिन लछमी के जवान होने के पहले ही महंथ सेवादास की आँखें अपनी ज्योति खो चुकी हैं। पता नहीं, लछमी की जवानी को देख कर उनकी क्या हालत होती?····· अब तो महंथ सेवादास को बहुत लोग प्रनाम बन्दगी भी नहीं करते हैं।·····धर्म भ्रष्ट हो गया है। बगुला भगत

है । ब्रह्मचारी नहीं व्यभिचारी है । आदि आदि ।

पूड़ी जिलेबी और दही चीनी के भंडारे की घोषणा के बाद जनमत बदल रहा है ।···कैसा भी हो, आखिर साधु है । किसने आज तक इतना बड़ा भोज किया है ? तहसीलदार ने अपने बाप के श्राद्ध में जाति बिरादरी वालों को भात और गैरजाति के लोगों को दही चूड़ा खिलाया था । सिंघ जी ने अपनी सास के श्राद्ध में अपनी जाति के लोगों को पूड़ी मिठाई और अन्यजाति के लोगों को दही चूड़ा खिलाया था । खेरयावन के यहाँ, पिछले साल माँ के श्राद्ध में जैसा भोज हुआ सो तो सबो ने देखा ही है । फिर, सारे गाँव के लोगों को, औरत-मर्द-बच्चे को, आज तक किसने खिलाया है ? चीनी मिलती नहीं । भगमान भगत ने कहा है कि 'बिलेक' में एक बोरा चीनी का दाम है एक 'नमरी'[१०] । चार मन चीनी —दो नमरी !

तंत्रिमा, गहलोत और पोलिया टोली के अधिकांश लोगों ने पूड़ी जिलेबी कभी चखी भी नहीं । बिरंची एक बार राज की गवाही देने के लिए कचहरी गया था तो तहसीलदार ने पूड़ी जिलेबी खिलाई थी । गाँव में, न जाने कैसे, यह हल्ला हो गया कि बिरंची ने तहसीलदार का जूठा खाया है ।·····जनेऊ देने के लिए जाति के पंडितजी आये थे । बिरंची के सिर पर सात घंटे तक 'धैला सुपाड़ी' रखने की सजा दी गई थी । पाँच सुपारी पर धैला भर पानी ! जरा भी धैला हिला, एक बूँद भी पानी गिरा कि ऊपर से झाड़ू की मार । तहसीलदार साहब क्या कर सकते हैं । जाति-बिरादरी का मामला है, इसमें वे कुछ नहीं बोल सकते । आखिर पाँच रुपैया जुर्माना और जाति के पंडितजी को एक जोड़ी धोती देकर बिरंची ने अपना 'हुक्का-पानी' खुलवाया था । ···पूड़ी जिलेबी का स्वाद याद नहीं ।

"जीवन दास ।"

"बालदेव जी आये है । बनगी बालदेव बाबू ।"

"बनगी नहीं, जाय हिन्द बोलो जाय हिन्द । ···हाँ जी, इस टोले

में कितने लोग हैं हिसाब करके बताओ तो। औरत-मर्द, बच्चों को भी जोड़ना। ···क्या ? गिनना नहीं जानते ? बिरंची कहाँ है ?···"

बालदेवजी घर-घर घूमकर मर्दुमशुमारी कर रहे हैं। बड़ा झंझट का काम है। सिर्फ पोलिया टोले में सात कोड़ी चार···नहीं···चार कोड़ी सात। ततमा टोली में पूरे पाँच कोड़ी। दुसाध टोली में दो कोड़ी। कोयरी टोले में छः कोड़ी तीन। ···यादव टोली का हिसाब कालीचरन कर रहा है। भगवान जाने, सिपैहिया टोली के लोग इसमें भी मीनमेख निकाल कर बखेड़ा न खड़ा कर दें। क्या ठिकाना है ? बाभनों ने तो साफ़ इनकार कर दिया है। यदि बाभनों के लिए अलग प्रबंध नहीं हुआ तो 'सरबसंघटन' में नहीं खायेंगे। बाभन-भोजन ही नहीं हुआ तो फिर भोज क्या ? महंथ जी से कहना होगा। बाभन हैं ही कितने ? सब मिलाकर दस घर।

महंथ साहब ने सब सुनकर कहा— "सतगुरु हो, सतगुरु हो ! बाभन लोगों का अलग इन्तजाम कर दो बालदेव बाबू। इसमें हर्ज ही क्या है। नहीं हो, तो उनलोगों का प्रबन्ध मठ पर ही कर दो।

इसी समय लछमी दासिन ने आकर खबर दी—"सिपैहिया टोला के लोग भी नहीं खायेंगे। हीवरन सिंघ का बेटा आकर कह गया है, ग्वाला लोगों के साथ एक पंगत में नहीं खायेंगे। हमलोगों के गाँव का आटा-घी-चीनी अलग दे दिया जाये, हमलोग अलग बनवा लेंगे।"

"सतगुरु हो ! यह तो अच्छा बखेड़ा खड़ा हुआ। अब यादव लोग कहेंगे कि धानुक लोगों के साथ एक पंगत में नहीं खायेंगे···।"

"हिवरन सिंघ के बेटे ने तो यह भी कहा कि बालदेव यदि इन्तजामकार रहेगा तो महंथ साहेब का भंडरा भंडुल होगा।"

"गुरु हो ! गुरु हो !!"

"तो महंथ साहेब, हमारे रहने से लोग विरोध करते हैं तो हम खुसी-खुसी···।"

"वाह रे ! यह भी कोई बात है। महंथ साहेब ! मैं कह देती हूँ, यदि

बालदेव जी को छोड़कर और किसी को प्रबन्ध करने का भार दिया तो समझ लीजिये कि भंडारा चौपट हुआ। मैं इस गाँव के एक-एक आदमी को पहचानती हूं।"

बालदेव ने पहली बार लछमी की ओर गर्दन उठा कर देखने की हिम्मत की। निगाहें ऊपर उठीं और लछमी की बड़ी-बड़ी आँखों में खो गया वह। ···आँखों में समा गया बालदेव शायद।

(१) भोर का तारा (२) तीन तरवा (३) प्रभाती (४) राशन (५) जलपान (६) भात (७) ज्योति (८) इत्तला (९) जमा करके (१०) सौ रुपये का नोट।

—पाँच

मठ पर गाँव भर के मुखिया लोगों की पंचायत बैठी है। बालदेव जी को आज फिर 'भाखन' देने का मौक़ा मिला है। लेकिन गाँव की पंचायत क्या है, पुरैनिया कचहरी के रामू मोदी की दूकान है। सभी अपनी बात पहले कहना चाहते हैं। सब एक ही साथ बोलना चाहते हैं। बातें बढ़ती जाती हैं और असल सवाल बातों के बवंडर में दबा जा रहा है। सिंघजी चिल्ला-चिल्ला कर कहते हैं—"उस दिन यदि हम घर में रहते तो खून की नदी बह जाती।" कालीचरन चुप रहनेवाला नहीं है—"वाह रे? दरवाजे पर एक भले आदमी को बेइज्जत करना 'इन्सान' आदमी का काम है?" तहसीलदार साहब कहते हैं—"अस्पताल तो सबों की भलाई के लिए बन रहा है। इससे सिर्फ़ हमारा ही फ़ायदा नहीं होगा? ओवरसियर बाबू कह गये थे कि तहसीलदार साहब ज़रा मदद दीजियेगा। हम अपने मन से तो 'अगुआ' नहीं बने हैं। तुम्हीं बताओ खिलावन भाई!"

बूढ़े 'जोतखी जी' भविष्यवाणी करते हैं—"कोई माने या नहीं माने, हम कहते हैं कि एक दिन इस गाँव में गिद्ध-कौआ उड़ेगा। लच्छण अच्छे नहीं हैं। गाँव का ग्रह बिगड़ा हुआ है। किसी दिन इस गाँव में खून होगा खून! पुलिस-दारोगा गाँव की गली-गली में घूमेगा। और यह इसपिताल? अभी तो नहीं मालूम होगा। जब कुएँ में दवा लाल कर गाँव में हैजा

फैलावेगा तो समझना। शिव हो! शिव हो!!"

बालदेव भाखन के लिए उठना चाहता था कि लछमी हाथ जोड़कर खड़ी हो गई—"पंच परमेश्वर!"

मानो बिजली की बत्ती जल उठी। सन्नाटा छा गया। सफ़ेद मल-मल की साड़ी के खूँट को गले में डाल कर, लछमी हाथ जोड़े खड़ी है- "पंच परमेश्वर!"

"लछमी!" महंथ साहब शून्य में हाथ फैला कर टटोलते हुये कहते हैं—"लछमी! तुम चुप रहो।"

लछमी रुकी नहीं, कहती गई—"जोतखी जी ठीक कहते हैं। गाँव के ग्रह अच्छे नहीं। जहाँ छोटी-छोटी बातों को लेकर इस तरह झगड़े होते हैं, जहाँ आपस में मेल-मिलाप नहीं, वहाँ जो कुछ न हो वह थोड़ा है। गाँव के मुखिया लोग ही इसके लिए सबसे बड़े दोखी है। सतगुरु साहेब कहिन हैं—जहाँ मेल तहाँ सरग है। मानुस जन्म बार बार नहीं मिलता है। मानुस जन्म पाकर हम 'परमारथ' के बदले 'सोआरथ' देखें तो इससे बढ़कर क्या पाप हो सकता है। परमारथ में जो बिघिन डालते हैं वे मानुस नहीं। आपलोग तो सास्तर-पुरान पढ़े हैं, 'जग्ग' भंग करनेवालों को पुरान में क्या कहा है, सो तो जानते ही हैं। हमारे कहने का मतलब यह है कि सब कोई भेद-भाव 'तेयाग' के, एक होकर के परमारथ कारज में सहजोग दीजिये। आपलोग तो जानते ही हैं—परमारथ कारज देह धरो यह मानुस जन्म अकारथ जाये। बस, हाथ जोड़कर पंच परमेश्वर से 'बिनै' है, झगड़ा तेयाग कर मेल बढ़ाइये। सतगुरु साहेब गाँव का मंगल करेंगे। आगे आप लोगों की मरजी।"

लछमी बैठ गई। उसका चेहरा तमतमा गया है, गाल लाल हो गये हैं, और कपाल पर पसीने की बूँदें चमक रही हैं। पंचायत में सन्नाटा छाया हुआ है, मानो जादू फिर गया हो। बालदेव जी का भाखन देने का उत्साह कम हो गया है। ···वह दोहा 'कवित' नहीं जानता, 'सास्तर पुरान' भी नहीं पढ़ा है। 'जेहल' में चौधरी जी उसे पढ़ाया करते थे।

तीसरा भाग में—'भारी बोझ नमक का लेकर एक गधा दुख पाता था' के पास वह पढ़ रहा था कि चौधरी जी की बदली हो गई। उसी दिन से उसकी पढ़ाई भी बन्द हो गई। लेकिन···वह जरूर भाखन देगा। उसने लछमी की ओर देखा और मानो नशे में उठकर खड़ा हो गया—"पियारे भाइयों।"

"बोलिये। एक बार प्रेम से···गंधी महतमा की जै!" —यादव टोली के नौजवानों ने जयजयकार किया।

"पियारे भाइयों! कोठारिन साहेब जितना बात बोली, सब ठीक है। लेकिन सबसे बड़ा दोखी हम हैं। हमारे कारन ही गाँव में लड़ाई झगड़ा हो रहा है। हम तो सबों का सेवक है। हम कोई विद्यमान नहीं है, सास्तर पुरान नहीं पढ़े हैं? गरीब आदमी हैं, मूरख हैं। मगर महतमा जी के परताप से, भारथ माता के परताप से मन में सेवा भाव जन्म हुआ और हम सेवा का 'बाना' ले लिया। आपलोगों को तो मालूम है, जयमंगल बाबू जो मेनिस्टर हुये हैं, अपना दस्तखत भी नहीं जानते हैं। बहुत छोटी जात का हैं। वह भी गरीब आदमी थे, मूरख थे मगर मन में सेवा भाव था और महतमा जी उसको मेनिस्टर चुन लिये। महतमा जी कहिन हैं—'बैस्नब जन तो उसको कहते हैं जो पीर पराई जानता है रे!' मोमेन्ट (मूवमेंट) में जब गोरा मलेटरी हमको पकड़ा तो मारते-मारते बेहोस कर दिया। पानी माँगते थे तो मुँह में पेसाब कर देता था।···"

बालदेव जी का 'भाखन' शुरू होते ही पंचायत में फिर कानाफूसी शुरू हो गई थी। राजपूत टोली के लोग और भी जोर-जोर से बातचीत करने लगे। बालदेव के भाखन के इस 'रोमांटिक' अंश ने जरा असर किया। मुँह में पेशाब करने की बात सुनते ही पंचायत में फिर सन्नाटा छा गया। बालदेव ने झट अपनी क़मीज खोल ली, चारों ओर घूमकर पीठ दिखलाते हुये उसने अपना भाखन जारी रखा—"आपलोगों को बिसवास नहीं हो तो देख सकते हैं!"

"अरे बाप! चीता-बाघ की तरह देह हो गया है। ···धन्न हैं।"

"देखिये आपलोग"—यादव टोली का एक नौजवान कहता है—"हमलोग गंधी जी का जै करते हैं तो आपलोगों के कान में लाल मिर्च की बुकनी पड़ जाती है। देखिये। ···"

"अरे भाई! यह सब महतमा जी का परताप है। ···कौन सह सकता है? जब गुड़ गंजन सहे तो मिसरी नाम धरायं।"

"·····लेकिन पियारे भाइयों, हमने भारथ माता का नाम, महतमा जी का नाम लेना बन्द नहीं किया। तब मलेटरी ने हमको नाखून में सूई गड़ाया, तिस पर भी हम 'इसबिसर' नहीं किये। आखिर हार कर जेहलखाना में डाल दिया। आपलोग तो जानते ही हैं कि सुराजी लोग जेहल को क्या समझते हैं—जेहल नहीं ससुराल यार हम बिहा करन को जायेंगे। मगर जेहल में अंगरेज सरकार हमलोगों को तरह तरह की तकलीफ देने लगा। भात में कीड़ा मिला देता था, घास पात का तरकारी देता था। बस, हमलोगों ने भी अनसन सुरू कर दिया। पियारे भाइयों! पाँच दिन तक एकदम 'निरजला' अनसन। उसके बाद कलकटर, इसपी, जज सब आया। माँग पूरा कर दिया, खाने को दूध हलुआ दिया। हमलोग बोले—दूध हलुआ अपने बाल बच्चों को खिलाओ हमलोगों को बढ़िया चावल दो। सो पियारे भाइयों! सेवा ब्रत जब हम लिया है तो इसको छोड़ नहीं सकते। ···अंधी होकर पुलिस चलावे पर डंडों का परिवाह नहीं! आप लोग अपने गाँव में सेवा नहीं करने दीजियेगा, हम चन्ननपटी चले जायेंगे। वहाँ आसरम है, घर-घर चरखा-करघा चलता है। घर-घर में औरत-मर्द पढ़ते हैं। महतमा जी, जमाहिर लाल, रजीन्नर बाबू और दूसरे बड़े-बड़े लीडर लोग साल में एक बार जरूर आते हैं। चौधरी जी हमको बार-बार खबर भेज देते हैं। ···बालदेव अपने गाँव में चले आओ। हम कहे कि चौधरी जी आप हमारा गुरु है, आपका बचन हम नहीं काट सकते। लेकिन अपना गाँव तो उन्नति कर गया है। जो गाँव उन्नति नहीं किया है, हम वहीं सेवा करेंगे। ···हम मेरीगंज को चन्नन-पटी की तरह बनाना चाहते हैं। हम अपने से गाँव में झाड़ू देंगे, मैला

साफ करेंगे। हमलोगों का सब किया हुआ है। महतमा जी खुद मैला साफ करते थे। जहाँ सफाई रहती है, वहाँ का आदमी भी साफ रहता है। मन साफ रहता है। साहेब लोगों को देखिये, उसके देस का 'गाछ-बिरिछ' भी साफ रहता है। कोठी के बगीचे में 'कलस्टर'[3] के गाछ को देखिये, एकदम बगुला की तरह उजला है। ···लेकिन, आपलोग हमको नहीं चाहते हैं तो हम चले जायेंगे। आपलोगों को बिसवास नहीं हो, जो पढ़ना जानते हैं, इस चिट्ठी को पढ़ लीजिये कि इसमें क्या लिखा हुआ है। टैप में छापी किया हुआ है···। दो साल पहले की चिट्ठी है।"

कौन पढ़ेगा? बड़े मौक़े से सभी 'इसकुलिया अंगरेजिया' लोग भी घर में ही हैं। पढ़ो जी कोई।···खेलावन ने अपने लड़के सकलदीप से कहा—जाओ पढ़ दो। लेकिन वह बड़ा शर्मीला है। हरगौरी? पढ़ो जी।

पासवान टोले के रामचंदर का भतीजा नेवालाल उठकर खड़ा हुआ, बालदेव के हाथ से चिट्ठी लेकर पढ़ने लगा।

"जरा जोर से पढ़ो। गला साफ कर लो। थर-थर क्यों काँपते हो।"

"सेवा में, बालदेव सिंह जी। महाशय। आपको विदित हो कि कस्तुरबा स्मारक निधि की एक अस्थाई कमेटी गठन करने के लिए कांग्रेसजनों की एक विशेष बैठक ता० ८-१२-४५ को पूर्णिया धर्मशाला में होगी। इस बैठक में बिहार के भूतपूर्व प्रिमियर भी उपस्थित रहेंगे। इस महत्त्वपूर्ण बैठक में आपकी उपस्थिति आवश्यक है। आपका, विश्वनाथ चौधरी।"

अरथ भी समझा दो नेवालाल।···अरे नहीं, अरथ क्या समझायेगा। टैप में छापी किये हुये खत का अब अरथ समझायेगा?

···चौधरी जी भी बालदेव जी से राय लिए बिना कुछ नहीं करते हैं। ···यह अपने गाँव का भाग है कि बालदेव जी जैसा हीरा आदमी यहाँ आकर रहते हैं। अपना गाँव भी अब सुधर जायेगा। जरूर···। सुनो, सिंघ जी क्या कहते हैं।···

"बालदेव। तुम यहाँ से चले जाओगे तो यह मेरीगंज गाँव का दुरभाग

होगा। सरम की बात होगी। गाँव में तो लड़ाई झगड़े लगे ही रहते हैं। दो हंडी एक जगह रहे तो ढनमन होना जरूरी है। तुम लोगों का काम है, गाँव में मेल मिलाप बढ़ाना, गाँव की उन्नति करना। इसमें जो बाधा डालता है, वह अधर्म है। तुम लोग देश के सेवक हो। खल और कुटिल लोगों को सुमारग पर चलाना तुम्हीं लोगों का काम है। गोसाँई जी ने 'रमैन' में पहले खल और कुटिल की ही बंदना की है। तुम गाँव से मत जाओ। तहसीलदार और हम तो छोटे-बड़े भाई हैं। बचपन से साथ खेले कूदे, लड़े झगड़े और फिर मिल गये।—आओ जी, तहसीलदार भाई! लोग तो हम लोगों के खान्दान को बदनाम करते ही हैं कि कायस्त और राजपूत ने मिल कर महारानी चम्पावती के 'इस्टेट' को ही पार कर दिया।·····अब हमलोग फिर एक बार मिल जायें।" —सिंघ जी ने अपना लम्बा चौड़ा वक्तव्य समाप्त करते हुये पंचायत में बैठे लोगों की ओर देखा।

पंचायत में जोरों का ठहाका पड़ा। लोग हँसते हँसते लोट पोट हो गये।·····एकदम 'बमभोलानाथ' हैं सिंघ जी। मन में कोई सात पाँच नहीं रखते। सादा दिल के आदमी हैं।

सिंघ जी ने तहसीलदार को हाथ पकड़ कर उठा लिया। दोनों गले गले मिलने लगे।

"बोलिये एक बार प्रेम से·····गन्ही महतमा की जै!"

"जै! जै!!"

अब भंडारा जमेगा। दो दिनों से तो ऐसा मालूम होता था कि लोगों के पत्तल में परोसी हुई पूड़ी जिलेबी अब गई तब गई।·····उस दिन कीर्तन और नाच करेंगे।·····अगमू चौकीदार क्या कहता था? महतमा जी का झंडा पत्तखा नहीं उड़ाना होगा! वह मार खायेगा अब। उसको कहो—अपने नाना दारोगा साहेब से पूछे कि राज किसका है? अनसन करने से लाट, हाकिम, कलट्टर सब डर जाता है।

सारी पंचायत में दो ही व्यक्ति ऐसे हैं जिनके ऊपर मेल मिलाप की

खुशी का उलटा असर हुआ है। खेलावन सिंह यादव को सिंघ ने जिस चालाकी से एक किनारे किया है, इसे कोई नहीं समझ पावे, लेकिन खेलावन ने सब समझ लिया। खेलावन की चर्चा भी नहीं की सिंघ ने। और इस तहसीलदार को तो देखो, तुरत गिरगिट की तरह रंग बदल लिया। लड़ाई झगड़ा यादव टोली से था और गले मिले तहसीलदार जी। खेलावन को 'सठबरसा'[४] नहीं समझना। सब चालाकी समझते हैं। दुनिया का ग्यान गुदड़ी बघारता है बालदेव, मगर इतना भी समझ में नहीं आया कि सिंघ तहसीलदार से क्यों मिल रहा है? मेल मिलाप तो यादव टोली के मुखिया से होना चाहिये। सुराजी होने से क्या हुआ? जात सुभाव नहीं छुटते···। इतना मान आदर से अपने यहाँ रखते हैं, खिलाते पिलाते हैं और समय पड़ने पर सब धान बाइस पसेरी।·····

जोतखी जी, खेलावन के चेहरे को देख कर ही सब कुछ समझ लेते हैं।·····मोटी चमड़ी पर असर हुआ है!···"खेलावन बाबू! सकलदीप बबुआ की जन्मपत्री काशी जी से बन कर आ गई क्या? जरा एकबार हम भी देखते! आज तक हम जो गणना किये हैं उसको काशी के पंडितों ने भी कभी नहीं काटा है।"

"कल सुबह में आइयेगा जोतखी काका। आप तो बहुत दिनों से आये भी नहीं हैं।·····सकलदीप को हायस्कूल में 'संसकिरत' भी पढ़ाता है। जरा आकर देखियेगा तो संसकिरत में उसका जेहन कैसा है?"

ठीक दोपहर को पंचायत की बैठक शुरु हुई, शाम को खत्म हुई। बहुत दिनों के बाद गाँव भर के लोग पंचायत में बैठे थे। बहुत दिनों के बाद फिर मेल मिलाप हुआ।

कल ही भंडारा है। सुबह से ही 'इसपिताल' के सामने की जमीन को साफ़ करके 'जाफरी' से घेरना होगा। शामियाना टांगना होगा। सजाना होगा। हलवाई लोग सुबह से ही आ जायेंगे। आजकल दिन छोटा करता है। बिजै होते होते शाम हो जायेगी। डाक्टर साहब को लाने के लिये चार बैलगाड़ियाँ जायेंगी टीशन—'मैंसचरमन' बाबू ने

बालदेव जी से कहा है। कल भोर को ही इसपिताल में सब कोई जमा होंगे। काम का बँटवारा होगा। इतने बड़े भोज को संभालना खेल नहीं।

सभी बारी बारी से महंथ साहब को साहेब बंदगी करके विदा हुये। बालदेव जी को महंथ साहब ने रोक लिया है। "···बालदेव बाबू, तुम जरा ठहर जाना। कल फिर समय नहीं मिलेगा। अभी एक बार हिसाब-किताब कर लेना अच्छा होगा। थोड़ी देर बैठ के बीजक बाँचो, हम 'डोलडाल'[५] से हो आवें।···कहाँ हो रामदास! गंगासागर[६] में जल भर दो!"

बालदेव धुनी के पास बैठ कर बीजक के पन्ने उलटता है।

.....बीजक बतावे बित्त को
जो बित्त गुप्ते होय,
शब्द बतावे जीव को
बूझे बिरला कोय॥

लछमी लालटेन जला कर सामने रख गई। अक्षर स्पष्ट हो गये—संतो, सारे जग बौराने।·····लछमी के शरीर से एक खास तरह की 'सुगन्धी' निकलती है। पंचायत में लछमी बालदेव के पास ही बैठी थी।·····बालदेव को रामनगर मेला के दुर्गामंदिर की तरह गंध लगती है! मनोहर सुगन्ध! पवित्र गंध!!·····औरतों के देह से तो हल्दी, लहसुन, प्याज और घाम की गंध निकलती है!

(५) सुवर्मेंट (२) चूँ शब्द, आह भी नहीं किया (३) युकलिप्टस (४) साठ वर्ष तक नाबालिग रहनेवाला। (५) नित्य क्रिया (६) लकड़ी का कमंडल।

—छः

बालदेव जी को रात में नींद नहीं आती है!

मठ से लौटने में देर हो गई थी। लौट कर सुना, खेलावन भैया की तबियत खराब है। 'आँगन'[१] में सोये हैं। यदि कोई आँगन में सोया रहे तो समझ लेना चाहिये कि तबियत खराब हुई है। बुखार हुआ

है या सर्दी लगी है अथवा सिर दर्द कर रहा है।·····जिसको 'आँगन-वाली'[२] ही नहीं वह आँगन में क्यों सोयेगा? आँगन में सोने का अर्थ है—आँगनवाली के हाथों की सेवा प्राप्त करना।·····खाने के समय भौजी से मालूम हुआ—पेट में 'बाय'[३] हो गया है। कड़वा तेल लगा कर पेट 'ससारते' समय गों गों बोलता था।

भौजी भी बहुत अनमनी थी। और दिनों की तरह बैठकर बातें नहीं की भौजी ने।·····भौजी 'बोरसी'[४] के पास बैठकर हुक्का पीती रहती थी, बालदेव जेहल की गप सुनाता रहता। बालदेव जी आज पंचायत की गप भौजी को सुनाते, लेकिन आज गप जमने का लच्छन नहीं देख कर बालदेव जी सोने चले आये।

···नींद नहीं आती है। जेहल का बी० टी० कम्बल आज बड़ा गड़ रहा है। खद्धर की धोती मैली होने पर बहुत ठंडी हो जाती है। ···बार-बार लछमी दासिन की याद आती है! आते समय कह रही थी —आज यहीं 'परसाद' पा लीजिये बालदेव जी! ···परसाद? लछमी के शरीर की सुगन्धी? ···आज माँ की भी याद आती है। गाँव के लोग बालदेव को 'टुरवा' कहते थे। सुनकर माँ बहुत गुस्सा होती थी। बाप के मरने से कोई टूअर[५] नहीं होता। बाप मरे तो कुमर, माँ मरे तब टूअर! मेरा बालदेव तो 'कुमर' है। मेरा बालदेव 'टूअर' नहीं! ···ऐसा लगता है, माँ ने अभी तुरत ही पीठ सहलाई है।···

माँ के मरने के बाद, बालदेव बहुत दिनों तक अजोधी भगत की भैंस चराता था। अजोधी भगत की याद आते ही बालदेव का देह सिहर उठता है। कैसा 'पिचाश' था बुड्ढा। बूढ़ी तो और भी 'खटाँस' थी। 'खेकसियारी'[६] की तरह हरदम 'खेंक-खेंक' करती रहती थी। ···दिन भर भैंस चराकर आने के बाद, बालदेव की उँगलियाँ भगत का देह टीपते-टीपते दर्द करने लगती थीं। आँखें नींद से बंद हो जाती थीं। लेकिन ज़रा भी ऊँघे कि 'चटाक्'। उस बूढे की उँगलियों की चोट बड़ी कड़ी होती थी। बालदेव ने बचपन से ही मार खाई है—थप्पड़,

छड़ी और लाठी की मार ! शायद सूखी चमड़ी की चोट ज़्यादे लगती है। ···लेकिन रूपमती का कलेजा मोम का था। वैसे बेदर्द माँ-बाप की बेटी वैसी दयालु कैसे हुई, समझ में नहीं आता है। बूढ़े-बूढ़ी को रात में नींद आती नहीं थी। आध पहर रात को ही भैंस चराने के लिए जगा देता था। आध पहर रात होते ही पीपल के पेड़ पर 'उल्लू' अपनी मनहूस बोली में 'कचकचा' उठता था और इधर बूढ़ा ठीक उसी तरह की आवाज़ में चिल्ला उठता था—"रे दुरवा! भोर हो गई। भैंस खोल।" ···रूपमती कभी दुरवा नहीं कहती थी। छोटा-सा नाम 'बल्ली' उसी का दिया हुआ है। चार सेर सुबह और शाम को तीन सेर दूध होता था, लेकिन बुढ़िया कभी 'सितुआ' भर घोल भी नहीं खाने देती थी। रूपमती रोज चुराकर भात के नीचे दूध की छाली रख देती थी। ···बूढ़ा-बूढ़ी का जमाया हुआ पैसा आखिर डकैत ही ले गये। ···इस बार रूपमती को देखा था। बहुत दिनों के बाद ससुराल से आई थी। तीन बच्चे हैं। बड़ी बेटी ठीक रूपमती जैसी है। ठीक वैसी ही हँसी।···

···याद आती है मायेजी की। मायेजी, रामकिसून बाबू की 'इसतिरी'! पहले पहल सभा हुई थी चन्ननपट्टी में। सभा में रामकिसून बाबू, उनकी इसतिरी, चौधरी जी और तैवारी जी आये थे। ···अलबत्त रूप था रामकिसून बाबू का। बड़ी-बड़ी आँखें! 'भाखन' देते थे—जैसे बाघ गरजे! सुनते हैं, जब 'वोकालत' करते थे तो बहस करने के समय पुरानी कचहरी के छत से 'पलस्तर' झड़ने लगता था! क्या मजाल कि हाकिम उनके खिलाफ़ राय देदें। लेकिन महतमा जी के उपदेश को सुनकर एक ही दिन में सब कुछ छोड़-छाड़ दिया। इसतिरी के साथ गाँव-गाँव घूमने लगे। मायेजी के पाँव की चमड़ी फट गई थी। लहू से पैर लथपथ हो गये थे! लाल उड़हुल! ·····मायेजी का दुःख देखकर, रामकिसून बाबू का भाखन सुनकर और तैवारी जी का गीत सुनकर वह अपने को रोक नहीं सका था। कौन संभाल सकता था उस 'टान' को? लगता था—कोई खींच रहा हो! ···गंगा रे जमुनवाँ की धार नयनवाँ से

नीर बही ! फूटल भारथिया के भाग भारथमाता रोई रही ! ···मायेजी के पाँव की चमड़ी फट गई थी, भारथमाता रो रही थी। ···वह उसी समय रामकिसून बाबू के पास जाकर बोला था—"मेरा नाम सुराजी में लिख लीजिये।" ···उस दिन की सभा में तीन आदमी ने नाम लिखाया था। बालदेव, बाघनदास और चुन्नी गुसाईं। ···चौधरी जी उसे जिला आफ़िस में ले आये थे। मायेजी बराबर आफ़िस आती थीं ! कभी गुस्सा होते नहीं देखा मायेजी को। जब बोलती थीं तो हँसकर ! एक बार देहात से लौटते समय उसको बुखार हो गया था। देह जल रहा था, सिर फटा जा रहा था। कोई होश नहीं। ···रात में आँख खुली तो जी बड़ा हल्का मालूम हुआ। कैसे हो बालदेव भाई ? ···कौन बावन ? गर्दन उलटा कर देखा मायेजी पास में ही कुर्सी पर बैठी हुई हैं। ····कैसे हो बालो ? बुखार था तो देहात क्यों गया था ? ···सोओ।" —माथे पर हाथ रखते हुये मायेजी बोली थीं—"बुखार उतर गया है।" मायेजी के हाथ रखते ही नींद आ गई थी। दूसरे दिन बावनदास ने कहा—"मायेजी को जैसे ही मालूम हुआ कि तुमको बुखार है, वैसे ही मुझे साथ लेकर आफिस आईं ! 'जंतर'* लगाकर बुखार देखते ही चिल्लाने लगीं—पानी लाओ। पंखा दो।···उसी समय से माथे पर पानी की पट्टी देती रहीं बारह बजे रात तक।"···भगवान भी कैसे हैं, अच्छे आदमी को ही अपने पास बुला लेते हैं। दो-तीन साल के बाद ही रामकिसून बाबू, एक ही दिन के बुखार में, 'सरगवास' हो गये।···हे भगवान ! उस दिन मायेजी की ओर कौन देख सकता था ? देखने की हिम्मत नहीं होती थी। मायेजी का उस दिन का रूप···गंगा रे जमुनवाँ की धार नयनवाँ से नीर बही ! फूटल भारथिया के भाग भारथमाता रोई रही। ···सचमुच सबों के भाग फूट गये। 'सराध' के दिन से जिला आफ़िस का नाम हो गया—'रामकिसून आसरम।' सराध के दूसरे दिन ही मायेजी कासीजी चली गईं। गाड़ी पर चढ़ने के समय, पैर छूकर जब 'परनाम' करने लगा था तो मायेजी एकदम फूट फूट कर रो पड़ी थीं—ठीक देहाती औरतों की तरह !

···बावनदास को मायेजी ठाकुर कहती थीं। 'हामार ठाकुर रे!' ···धरती पर लोटते हुये बावनदास को उठाते हुये मायेजी बोली थीं—"महतमा जी पर भरोसा रखो। वह सब भला करेंगे। महतमा जी का रास्ता कभी मत छोड़ना।" ···पता नहीं मायेजी कहाँ हैं?···

आँसू की गर्म बूँदें बालदेव की बाँह पर ढुलक कर गिरीं। माँ, रूपमती, मायेजी और लछमी दासिन!···मायेजी के जैसा ही लछमी भी भाखन देना जानती है। ···लछमी भाखन दे रही है।···

·····विशाल सभा। जहाँ तक नज़र जाती है आदमी ही आदमी दिखाई पड़ते हैं। बाँस के घेरे को तोड़ कर लोग मंच की ओर बढ़े आ रहे हैं। मंच पर बालदेव के बग़ल में लछमी बैठी हुई है। लछमी के भी पैर की चमड़ी फट गई है। मंच की सुफ़ेद चादर पर लहू की बूँदें टप टप कर गिर रही हैं। ···लछमी भाखन दे रही है। कौन? हरगौरी? हरगौरी लछमी के गले में माला डालने के लिए आगे बढ़ रहा है! लछमी माला नहीं पहनती है। माला लेकर बालदेव को पहना देती है। गेंदे के फूलों के माला। फूल से लछमी के शरीर की 'सुगंधी' निकलती है! ···भीड़ मंच की ओर बढ़ी आती है। हरगौरी आगे बढ़ आया है। लछमी को पकड़ रहा है! ···बालदेव चिल्ला रहा है। लेकिन आवाज़ नहीं निकल रही है। लोग हल्ला कर रहे हैं। बहुत ज़ोर लगा कर बालदेव चिल्लाता है—हरगौरी बाबू!···

···"गन्हीं महतमा की जै!"

"जै।"

बालदेव 'हड़बड़ा' कर उठता है। आँखें मलते हुये बाहर निकल आता है। सबेरा हो गया है। गाँव भर के नौजवानों को बटोर कर, जुलूस बना कर, कालीचरन जयजयकार करता हुआ जा रहा है। वाह रे कालीचरन! बुद्धिमान है। बहादुर भी है और बुद्धिमान भी।····· यह 'पुलोगराम'[८] कब बनाया था? रात में ही शायद!·····ज़रूर मेरीगंज भी चम्पानपट्टी की तरह नाम करेगा।·····और भोर का सपना?

"खेलावन भैया ! कैसी तबियत है ?"

"तुम रात में कब लौटे ? कहाँ देर हुई ? सिपैहिया टोली में ? कायस्त-राजपूत की जोड़ी मिल गई, अब क्या है ? सुराज हो गया। लेकिन भाई बालदेव, हम ठहरे सीधे सादे आदमी। कलिया पर नजर रखना। उसमें और भी बहुत गुन है।·····सो तो तुमको मालूम ही हो जायेगा। किसी किस्म का 'लफड़ो' करेगा तो हम जिम्मेवार नहीं हैं। पीछे, यादव टोली के मुखिया के ऊपर बात नहीं आवे। हाँ भाई, कायस्त और राजपूत का क्या बिसवास ?·····"

खेलावन किसके ऊपर अपने दिल का बुखार उतारे, समझ नहीं पा रहा था। भैंस चरवाहा, भैंस दूहने के लिए, बर्तन ले आया था। खेलावन आज भी अपने ही हाथों भैंस दूहता है। उसका कहना है, भैंस के थन में चार आदमी के हाथ लगे कि भैंस सूखी। चरवाहा पर बिगड़ पड़ा—"साला ! अभी भैंस 'थिराई' भी नहीं है, दूहने के लिए हल्ला मचा रहा है। पूड़ी जिलेबी क्या अभी ही बँट रही है ? जीभ से पानी गिर रहा है ?·····परनाम जोतखी काका।"

जोतखी जी कान पर जनेऊ टाँगे, हाथ में लोटा लटकाये इनारे की ओर जा रहे थे। खेलावन ने टोका—"आइये यहीं। पानी मंगवा देते हैं।"

"खेलावन बाबू ! गाँव में तो सुराज हो गया, देखते हैं। अच्छा ! अच्छा !! देखियेगा।·····गाँव के लौंडे सब आज 'फुच्च फुच्च' कर रहे हैं। छुद्र नदी चलि भरी उतराई, जस थोरे धन खल बौराई। ऐसा ही सिमरबनी में भी हुआ था। हमारे मामा का घर सिमरबनी में ही है। आज से दस बारह साल पहले की बात कहते हैं। हम मामा के यहाँ गये थे। मामा के बड़े पुत्र का 'जग्योपवित' था। प्रातःकाल उठ के देखते हैं कि गाँव भर के लौंडे इसी तरह झंडा पत्तखा लेकर 'इनकिलास जिन्दाबाघ' करते हुये गाँव में घूम रहे हैं। मामा से पूछा कि मामा बात क्या है। तो मामा बोले कि गाँव के सभी लड़कों ने 'भोलटियरी' में नाम

लिखा लिया है। 'इनकिलास जिन्दाबाघ' का अर्थ है कि हम जिंदा बाघ हैं।···जिंदा बाघ भी उसी शाम को देखा। इस्कूल से पच्छिम, कंगरेसी तैवारी नीमक कानून बनाने वाला था। बड़े बड़े चुल्हे पर, कड़ाहियों में चिकनी मिट्टी और पानी डाल कर खौला रहे हैं। खूब गीत-नाद, झंडा पत्तखा। पूछा कि यह क्या है भाई। तो कहा कि नीमक कानून बन रहा है। हम भी खड़ा होकर तमासा देखने लगे। इसी समय हल्ला हुआ—'दारोगा आ रहा है।' इस्कूल के हाता से एक टोपा वाला और चार पाँच लाल पगड़ी वाला निकला। बस, फिर क्या था, जिंदाबाघ आ गया। जो जिस मुँह से खड़ा था, उधर ही भागा। एक दूसरे के ऊपर गिर रहा है। कहाँ झंडा, कहाँ पत्तखा और कहाँ इनकिलास जिंदाबाघ!·····दारोगा साहब तैवारी को पकड़ कर ले गये। इसके बाद गाँव के घर घर में घुस कर 'खन्नातलासी'! गाँव के सभी 'जिन्दाबाघ' माँद में घुस गये। सुनने में आया कि जब कंगरेसी राज हुआ तो फिर घर घर में भोलंटियर घरघराने लगा। फिर इनकिलास जिंदाबाघ! पुलिस दारोगा को देखकर और जोर से चिल्लाते थे सब।·····"लो भाई, चिल्लाओ। तुम्हारा राज है अभी।' पुलिस दारोगा मन ही मन गुस्सा पीकर रह गये! पिछले 'मोमेंट' में जिंदाबाघों ने जोस में आकर 'अड़गड़ा' जला दिया, 'कलाली' लूट लिया। दूसरे ही दिन चार 'लौरी' में भर के गोरा मलेटरी आया और सारे गाँव को जला-पका, लूट-पीट कर एक ही घंटा में ठंढा कर दिया। पचास आदमी को 'गिरिफ्फ' किया। दो को तो मारते मारते बेहोस कर दिया। एक को 'कीरीच' भोंक दिया।·····अंग्रेज बहादुर से यही 'तुग्गी तिग्गी' लोग पार पायेंगे। बड़ा बड़ा घोड़ा बहा जाये तो नटघोड़ी पूछे कितना पानी! अंग्रेज बहादुर ने अभी फिर ढील दे दिया है। सब उछल कूद कर रहे हैं। इस बार बिगड़ेगा तो खोप सहित कबूतराय·····।"

"नहीं जोतखी काका। अब वैसा नहीं हो सकता।"—बालदेव इससे आगे नहीं सुन सका—"पिछले 'मोमेंट' में सरकार का छक्का छूट

गया है। सिमरबनी के बारे में आप जो कह रहे हैं सो आप इधर [सिमर-*बनी गये हैं? नहीं?* तब क्या देखियेगा! एक बार वहाँ जाकर देखिये—इसपिताल, इस्कूल, लड़की-इस्कूल, चरखा सन्टर, रायबरेली—क्या नहीं है वहाँ? घर घर में 'एबी-सीडी' पास! सिवानन्द बाबू को जानते हैं? उनका बेटा रमानंद हमलोगों के साथ जेहल में था। अब *हाकिम हो जायेगा। पक्की बात!*"

खेलावन भी कुछ कहना चाहता था कि चरवाहे ने पुकारा—"पाँड़ा भैंस पी रहा है।"

खेलावन भैंस दूहने चला गया। बालदेव के पास बेकार बहस करने के लिए समय नहीं है। गाँव में जयजयकार हो रहा है—'गन्ही महतमा की जै!'

(१) अन्दर हवेली (२) स्त्री (३) वायु (४) अँगेठी (५) अनाथ (६) लोनही (७) थर्मामिटर (८) प्रोग्राम (९) उपद्रव।

—सात

प्यारू को सबों ने चारों ओर से घेर लिया है।···'डागडर साहेब' का नौकर है? डागडर साहेब कब तक आवेंगे? तुम्हारा क्या नाम है? कौन जात? दुसाध मत कहो, गहलोत बोलो गहलोत! जनेऊ नहीं है?

बालदेव जी प्यारू को भीड़ से बाहर ले आते हैं।·····भाई, तुम-लोगों ने आदमी नहीं देखा है कभी? जाओ, अपना काम देखो! हलवाई जी लोगों के पास कौन है?

बालदेव जी सबों के नाम के साथ "जी" लगा कर बोलते हैं। राम-किसून आसरम में लीडर लोग इसी तरह सबों के नाम के साथ 'जी' लगा कर बोलते हैं—'ड्राइवर जी', 'ठेकेदार जी', 'हरिजन जी'।

पूछ-ताछ के बाद मालूम हुआ—प्यारू डागडर साहेब के पास नौकरी करने आया है। रौतहट टीशन में जो 'हेमापोथी' डागडर साहेब थे,

प्यारू उनके यहाँ पाँच साल नौकरी कर चुका है। डागडर साहेब देश चले गये। सुना कि मेरीगंज में एक डागडर बाबू आ रहे हैं। सो प्यारू डागडर बाबू के पास नौकरी करने आया है।

चूड़ा गूड़ का 'जलखै'[1] करके प्यारू बालदेव जी से कहता है—"डागडर बाबू का सामान कहाँ है? टेबुल कुर्सी लगाना होगा। आलमारी को झाड़ना पोंछना होगा। पानी के ढोल के पास एक 'बाँल'[2] रखना होग.। एक साबुन और एक गमछा। डागडर बाबू आते ही पहले साबुन से हाथ धोयेंगे।....."

सचमुच प्यारू डाक्टर का पुराना नौकर है। टेबुल कुर्सी ठीक से लगा दिया है। तीन पैर वाली लोहे की सीढ़ी पर पानी का ढोल रख दिया, सीढ़ी में ही लगी हुई गोल कड़ी में 'ललमुनियाँ'[3] का कठौत बैठा दिया है। ढोल में कल लगा हुआ है। कल टीपने से पानी गिरने लगता है। बक्से से गमछा निकाल कर वहीं लटका दिया है। खस्सी बकरी की अँतड़ी का भीतरी हिस्सा जैसा रोयाँदार होता है, वैसा ही गमछा है।..... साबुन? साबुन नहीं है। अरे, कपड़ा धोने वाला साबुन नहीं, गमकौआ साबुन चाहिये। भगत की दूकान में गमकौआ साबुन कहाँ से आवेगा? कटिहार में मिलता है। तहसीलदार साहब की बेटी कमली जब गमकौआ साबुन से नहाने लगती है तो सारा गाँव 'गमगम' करने लगता है। तहसीलदार साहब कहते हैं, कमली दीदी से साबुन माँग कर ला दो।.....सचमुच प्यारू पुराना 'डागडरी' नौकर है। बड़े मौक़े से वह आ गया, नहीं तो इतना इन्तज़ाम कौन करता? बेला झुक गया है, अब डागडर बाबू भी आ जायेंगे। तहसीलदार साहब कहते हैं, "भुरुकुवा उगने के पहले ही बैलगाड़ियों को रवाना कर दिया है। साथ में गया है अगमू चौकीदार।"

सारा गाँव महक रहा है। मेले में ठीक ऐसी ही महक रहती है। तहसीलदार साहब के गुहाल में हलवाई लोग सुबह से ही पूड़ी जिलेबी बना रहे हैं।.....पूड़ी बनाकर ढेर लगा दिया है। गाँव के बच्चे

सुबह से ही जमा हैं। राजपूत और कायस्तों के बच्चे दूसरे टोले के बच्चों को उधर नहीं जाने देते हैं—'भागो छू जायेगा !'

सिंघ जी खुद जाकर खेलावन सिंह यादव को पकड़ लाते हैं। "·····तहसीलदार ! देखो, इसके पेट में बाय उखड़ गया है। भोज खाने के पहले ही 'अन्नसर्जी' हो गई है।·····अरे भाई ! औरतों की तरह रूठने से क्या फायदा? तुम्ही कहो तहसीलदार, हम ठीक कहते हैं या नहीं ! लड़ो, झगड़ो और फिर गले-गले मिलो। यह रूठने काक्या माने ? हमको तो बालदेव से मालूम हुआ। जाकर देखा तो 'काग-भुसुन्डी' इसके कान में 'मन्तर' पढ़ रहा है।·····ऐ बालदेव ! सुनो। डागडर साहेब आवें तो पहले इसी का इलाज कराओ। कहना कि आठवाँ महीना है····· ।"

हा···हा···हा···हा···हा···हा !

"रामकिरपाल भाई ! लड़कों के सामने भी आप दिल्लगी करते हैं ? अच्छा हाथ छोड़िये। सब कोई तो हैं ही, सिर्फ हमारे नहीं रहने से कौन काम हरज हो रहा था ?"

सिंघ जी मजेदार आदमी हैं। सुबह से ही सबों को हँसा रहे हैं। खेलावन यादव रूठे थे, उसको भी पकड़ लाये। 'जोतखी' जी नहीं आये। बोले, दाँत में दर्द है। सिंघ जी कहते हैं—"पता नहीं, उनके पेट के दाँत में दरद है सायद। सुनते हैं आजकल डागडर लोग 'पत्थल' का नकली दाँत लगा देते हैं। डागडर साहेब से कह कर जोतखी जी का दाँत बनवा दो भाई। अजी, 'सभागाछी'[४] में लड़की वाले दाँत को हिला-डुला कर देखते हैं थोड़ो !"·····

"डागडर साहेब आ रहे हैं।"

"आ रहे हैं ? कहाँ ?"

"पछियारी टोला के पास पाँचों बैलगाड़ियाँ आरही हैं। अगमू चौकीदार आगे-आगे दौड़ता हुआ आरहा है। डागडर साहेब 'टोपा'[५] पहने हुये हैं।"

"अगमू आ गया।···कंधे पर क्या है ? बक्सा ?"

कामकाज छोड़कर सभी जमा हो गये—डाक्टर साहेब आरहे हैं !

"हँट जाइये !"—अगमू कहता है—"डागडर साहब बोले हैं, इन्तजाम से रखना। ठेस नही लगे। बेतार का खबर है।"

बालदेव जी कहते हैं—"रेडी[६] है रेडी ! अब सुनियेगा रोज बम्बै, कलकत्ता का गाना। महतमा जी का खबर, पटुआ का भाव सब आवेगा इसमें। तार में ठेस लगते ही गुस्सा कर बोलेगा—'बेकूफ'। बिना मुँह धोये पास में बैठते ही तुरत कहेगा—क्या आपने आज मुँह नहीं धोया है ?"

"जुलुम बात !"

डाक्टर साहब !

सभी हाथ जोड़ कर खड़े हैं। डाक्टर साहब भी हँसते हुये हाथ जोड़ते हैं। बालदेव जी 'जायहिन्द' कहते हैं। देखादेखी कलिया भी आजकल 'जायहिंद' कहता है ! प्यारू, शामियाने में कुर्सी लाकर रखता है। डाक्टर साहब के हाथ से 'टोपा' ले लेता है। डाक्टर साहब के चेहरे का रंग एकदम लाल है। 'लालटेस' ! मोंछ नहीं है क्या ?···नहीं, मोंछ सफ़ाचट कटाये हैं।

बालदेव जी हाथ जोड़ कर पूछते हैं—"रास्ते में कहीं तकलीफ तो नहीं हुई ?·····सब तैयार है, भोजन कर लिया जाये। इनका नाम बिश्वनाथ परसाद है, राज पारबंगा के तहसीलदार हैं। इनका नाम रामकिरपाल सिंघ है। सिंघ···राजपूत टोली के मालिक हैं। इनका नाम खेलावन सिंह यादव है, यादव छत्री टोले के 'मड़र' हैं। इसका नाम कालीचरन है, बड़ा बहादुर लौजमान है। और ये लोग 'इसकुलिया' हैं। ···आइये बाबू साहेब ! आप लोग डागडर साहेब से बतियाइये।····· इस गाँव के महंथ साहेब ने इसपिताल होने की खुसी में गाँव वालों को आज 'भंडारा' दिया है।"

डाक्टर साहब हाथ जोड़ कर सबों को फिर नमस्कार करते हैं। कहते

हैं—"हम अभी नहीं खायेंगे। सबों को खिलाइये!"

सचमुच प्यारू पुराना नौकर है। देखो! डागडर बाबू ने सबसे पहले साबुन से हाथ धोया।

मठ से महंथ साहेब, कोठारिन लछमी दासिन, रामदास और दो मुरती आये हैं। महंथ साहेब की बैलगाड़ी के आगे एक साधू तुरही फूंकता हुआ आ रहा है। धु तु तु तु ऽ ऽ···धु तु तु! और तुरही की आवाज सुनते ही गाँव के कुत्ते, दल बाँध कर भूंकना शुरु कर देते हैं। छोटे छोटे नवजात पिल्ले तो भूंकते भूंकते परीशान हैं। नया नया भूंकना सीखा है न!

सबसे पहले कालीथान में पूड़ी चढ़ाई जाती है, इसके बाद कोठी के जंगल की ओर दो पूड़ियाँ फेंक दी जाती हैं—जंगल के देव-देवी और भूतपिशाच के लिए। इसके बाद साधू और बाभन भोजन! बालदेव जी ने बहुत कहा, लेकिन डाक्डर साहब नहीं माने। प्यारू ठीक कहता था, डागडर लोग हलवाई की बनाई हुई पूड़ी जिलेबी नहीं खाते हैं। 'कल के चुल्हे' पर प्यारू डागडर बाबू के लिए भात बना रहा है। जल्दी से 'बिजै' खतम हो तो 'बेतार के खबर' का गाना सुनें। क्या? आज गाना नहीं होगा? हाँ भाई कल-कब्जा की बात है। इतना जल्दी कैसे होगा! फिर कटिहार जकशन में रेलगाड़ियों और मिलों का अभी इतना शोरगुल होता होगा कि यहाँ तक खबर आ भी नहीं सकेगी।

"बिझै! बिझै!!"

हर टोले के लोग अलग अलग 'पंगत' में बैठो। अपने अपने बगल में एक फाजिल पत्ता लगा देना भाई! अपने अपने घर की जनाना लोगों के लिए। कम बेस नहीं।·····

गुआर टोली के रौदी बूढ़ा को सभी मिल कर चिढ़ा रहे हैं—रौदी गोप गाँव गाँव में घूम कर दही बेचता है। उसका चाल चलन, उसकी 'बोली बानी' सब कुछ औरतों जैसी है। सिर और छाती पर से कपड़ा जरा सा भी सरक जाने पर, औरतों की तरह लजा कर ठीक कर लेता है। मर्दों

से बातें करने के समय लजाता है, औरतें उसके सामने किसी भी किस्म का पर्दा नहीं करतीं। हाट जाते और लौटते समय वह औरतों के झुंड में ही रहता है।·····अभी सब मिल कर रौदी बूढ़ा को चिढ़ा रहे हैं।—"तुम्हारा हिस्सा आँगन में भेज दिया जायेगा। देखो, लालचन ने तुम्हारा पत्ता लगा दिया है।"

"दूर! मुँहझौंसे! बूढ़े पुराने से हँसी दिल्लगी करते लाज नहीं आती? हम पूछते हैं तुम लोगों से कि तुमलोग अपनी बूढ़ी दादी और नानी से भी इसी तरह हँसी-मसखरी करते हो? इस गाँव के लौंडे छौंडे बिगड़ गये हैं। और सारा दोख इसी 'सिंघवा' का है। जहाँ के बूढ़े ही बदचाल हों तो लौंडे का क्या हाल? हम कह देते हैं, हाँ, सुन रखो! हाँ·····।"

महंथ साहब रात में भोजन नहीं करते हैं।

"सत गुरु हो! तो डागडर साहेब, आपको कितना मुसहरा मिलता है? दो सौ?·····हाँ, यहाँ उपरी आमदनी भी होगी! असल आमदनी तो ऊपरी आमदनी है।···बहुत अच्छा हुआ।···गाँधी जी तो अवतारी पुरुख हैं।·····डागडर साहेब! आज से करीब पाँच साल पहले, एक बार हमारी आँखें आईं, उसके बाद दो महीने तक आँखों में लाली छाई रही।···पुरनियाँ के सिविलसार्जन साहेब को पचास रुपैया फीस देकर दिखलाया। बहुत दिनों तक इलाज भी करवाया। मगर बेकार। अब तो आप आ गये हैं। अपने घर के डागडर हुये!·····"

लछमी दासिन टकटकी लगा कर डाक्टर साहब को देख रही है।··· कितना सुन्दर पुरुष है। बेचारे का इस देहात में मन नहीं लग रहा है। नौकरी कोई भी हो, आखिर नौकरी ही है। मन घर पर टँगा हुआ होगा। बीबी बच्चों की याद आती होगी।···कुछ दिनों में मन लग जायेगा। फिर बाल बच्चों को भी ले आवेंगे। अचानक वह पूछ बैठती है—"आपके घर पर और कौन कौन हैं डाक्टर बाबू?"

"जी।"—डाक्टर ने जरा हकलाते हुए कहा—"जी, मेरा कोई

नहीं। माँ बाप बचपन में ही गुजर गये।"

लछमी समझ लेती है कि यह सवाल पूछना उचित नहीं हुआ। उसे स्वयं आश्चर्य हो रहा था कि उसने ऐसा प्रश्न ही क्यों किया?..... मेरा कोई नहीं!

"लछमी! रामदास को बुलाओ। अच्छा तो डागडर बाबू, अब 'आज्ञाँ' दीजिये। आप भी भोजन करके आराम कीजिये।...कभी मठ की ओर भी आइयेगा। सतगुरु साहेब कहीन हैं—दरस परस सतसंग ते छूटे मन का मैल।"

लछमी हाथ जोड़ कर नमस्कार करती है।

ब्राह्मण टोली के लोग बालदेव जी से पूछते हैं—"डागडर बाबू का नौकर तो दुसाध है। और डागडर बाबू कौन जात है? दुसाध का बनाया हुआ खाते हैं?"

बोलिये प्रेम से...महतमा गन्ही की जै!

भंडारा समाप्त हो गया। कोई 'तरुटी' नहीं हुई। सबको 'पूर्ण' हो गया। जो भूल चूक से छूट गये हैं, उनका हिस्सा कल ले जाइयेगा।

बालदेव जी, अगमू चौकीदार और बिरंची के साथ, इसपिताल में ही सोयेंगे। आज पहली रात है!

(१) जलपान (२) कठौत (३) अलमुनियम (४) विवाहार्थी मैथिलों का मेला (५) ट्रेट (६) रेडियो (७) खाना पीना।

—आठ

लछमी का भी तो इस संसार में कोई नहीं!

...जी मेरा कोई नहीं! ...लछमी सोचती है, उसका दिल इतना नरम क्यों है? क्यों वह डाक्टर को देख कर पिघल गई? यह अच्छी बात नहीं। ...सतगुरु, मुझे बल दो!

सतगुरु के सिवा कोई भी उसका नहीं। माँ की याद नहीं आती। पसराहा मठ के पास अपनी झोंपड़ी की याद आती है। सुबह होते ही

बाबूजी कंधे पर चढ़ा कर मठ पर ले जाते थे। महंथ रामगुसाईं कितना प्यार करते थे—'आ गई लच्छो! ले मिसरी खायेगी? चाह पीयेगी?' भंडारी एक कटोरे में 'चाह' चूड़ा दे जाता था। बाबू जी बैठ कर महंथ साहेब के लिए गाँजा तैयार करते थे। एक चिलम, दो चिलम, तीन चिलम! पीते पीते महंथ साहेब की आँखें लाल हो जाती थीं। कभी कभी बाबू जी भी थर थर काँपने लगते थे। भंडारी दही लाकर देता था—'खा लो रामचरन भाई। नशा टूट जायेगा।' बाबू जी को महंथ साहेब बहुत मानते थे। कोई काम नहीं। दिन भर महंथ साहब की धुनी के पास बैठे रहो, गाँजा तैयार करो, चिलम चढ़ाओ। मठ पर ही हमारा खाना पीना होता था।

गाँव में जब हैजा फैला तो बाबूजी को महंथ साहेब ने कहा—"रामचरन! तुम मठ पर ही रहो।" उन दिनों, दिन भर में कभी चिलम ठंढी नहीं होने पाती थी। एक दिन महंथ साहेब का बीजक जल गया। न जाने कैसे चिलम की आग 'बीजक' पर गिर पड़ी। ···महंथ साहेब ने रोते हुये कहा था—"रामचरन! साहेब करोध कीहिन हैं। दंड भोगना पड़ेगा। अमंगल होगा।"—दूसरे ही दिन मठ के एक साधू का 'पेट-मुँह चलने[1]' लगा। तीसरे दिन उस साधू ने देह 'तेयाग' दिया तो महंथ साहेब बीमार पड़े। बाबूजी ने महंथ साहेब की बड़ी सेवा की। शरीर त्यागने के पहले महंथ साहेब ने कहा था—"रामचरन एक बार आखरी चिलम पिलाओ बेटा!" बाबूजी चिलम तैयार करने के लिए धुनी से आग ले ही रहे थे कि धुनी में ही उलटी होने लगी। ···महंथ साहेब ने शाम को और बाबूजी ने सुबह को 'काया' बदल लिया। भंडारी जी ने दूर से ही बाबूजी का 'दरसन' करा दिया था। भंडारी ने कहा था—"मरे हुये आदमी के पास नहीं जाना चाहिये!"

"लछमी! ओ, लछमी!!"

"आई!" —लछमी कुनमुनाती हुई उठती है···उस दिन बीजक छू कर कसम खाये थे और आज फिर पुकारने लगे। सतगुरु हो, तुम्हारी

बुलाहट कब होगी ? बुला लो सतगुरु अपने पास दासी को !

"लछमी !"

"महंथ साहेब, चित्त को शान्त कीजिये । सतगुरु का ध्यान कीजिये । माया··· ।"

"सब माया है लछमी । लेकिन, एक बार पास आओ··· ।"

अंधा आदमी जब पकड़ता है तो मानो उसके हाथों में मगरमच्छ का बल आ जाता है । अंधे की पकड़ ! लाख जतन करो, मुट्ठी टस से मस नहीं होगी ! ···हाथ है या लोहार की 'सँड़सी' ? दंतहीन मुँह का दुर्गन्ध ! ···लार··· !! —"महंथ साहेब ! महंथ साहेब सुनिये ! रामदास धुनी के पास ही है । महंथ साहेब ? अरे ! रामदास ! रामदास !! जल्दी उठो जी । ···महंथ साहेब को क्या हो गया ?"

महंथ साहेब को सतगुरु ने अपने पास बुला लिया !

सुबह को सारे गाँव के लोग जमा होते हैं । ·····महंथ साहेब 'सिद्ध पुरुख' थे । इच्छा मृत्यु हुई है । रात को बैठ कर, गाँव के बूढ़े बच्चों को खिला कर आये और रात में ही 'चोला बदल' लिये । दुनिया में ऐसी मरनी सबों को नसीब नहीं होती । गियानी महतमा थे !!

रामदास कहता है—"भंडारा से लौट कर जब सरकार आये और आसन पर 'धेयान' लगा के बैठे तो देह से 'जोत' निकलने लगा । हम मसहरी लगाने गये तो इसारे से मना कर दिया । हम धुनी के पास बैठ कर देखते रहे । सरकार के देह का जोत और तेज हो गया और सरकार एकदम बच्चा हो गये । जोत की चमक से हमारी आँखें बंद हो गईं । हम वहीं धुनी के पास लेट गये । ···कोठारिन जी जब हल्ला करने लगीं तो आँखें खुलीं··· ।"

लछमी कुछ नहीं बोलती ।···साधुओं को माटी देने की 'रीत' भी नहीं मालूम । जटा बढ़ा लिया और हाथ में कमंडल ले लिया, हो गये साधू ! —"चरन दास ! पहले बीजक पाठ होगा, तब माटी ! इसके बाद सभी संतन के 'गोर'[२] पर माटी दी जायेगी । इतना भी नहीं जानते !"

"···माया जाल बिखंडने सुर गुरु दुख परहरता
"सरबे लोक जनाच जेन सततं,
"हिया लोकिता····· ।"
···नमोस्तु सतगुरु साहेब को
चरण कमल धरी शीश !

सबसे पहले रामदास माटी देता है । उसके बाद लछमी दासिन मुट्ठी भर माटी महंथ साहेब की सुफ़ेद चादर पर डाल देती है । फिर फूलों की माला । साधू लोग कुदाली से 'गोर' में मिट्टी भरने लगते हैं । चरनदास कहता है—"महंथ साहेब को लगा कर दस महंथों को माटी दिया है ! माटी देना भी नहीं जानेंगे ?"

गाँव के 'कीरतनियाँ लोग' समदाउन शुरू करते हैं—

"···हाँ रे, बड़ा रे जतन से सुगा एक हे पोसल,
"माखन दुधवा पिलाये ।
"हां रे, से हो रे सुगना बिरिछी चढ़ि बैठल
"पिंजड़ा रे धरती लोटाये··· ।"

गोर के बाद रामदास खँजड़ी बजा बजा कर 'निरगुन' गाता है—

"कँहवाँ से हँसा आओल, कँहवाँ समाओल हो राम,
"कि आहो रामा हो, कौन गढ़ कयल मोकाम कवन लपटाओल हो राम ।"

डिम डिमिक डिमिक·····

"सुर पुर से हंसा आओल नर पुर समाओल हो राम,
"कि आहो रामा हो, काया गढ़ कयला मोकाम मायाहि लपटाओल हो राम ।"

"जै हो, सतगुरु की जै हो ! महंथ साहेब की जै हो । सब संतन की जै हो !!"

मठ सूना लगता है । जीवन में आज हली बार लछमी समझ रही है महंथ साहेब की क़ीमत को ।·····नेत्रहीन हो गये थे, कुछ देख नहीं

सकते थे, बिना रामदास के सहारा के एक पग चल भी नहीं सकते थे, किन्तु ऐसा लगता था कि मठ भरा हुआ है। बिना महंथ के मठ और बिना प्राण के काया!

"काँचहि बाँस के पिंजड़ा,
"जा में दियरो न बाती हो,
"अरे हंसा उड़ल आकाश,
"कोई संगो न साथी हो!"

.....जो भी हो, संसार में सबसे बढ़ कर लछमी को ही प्यार करते थे महंथ साहेब। चढ़ती जवानी में, सतगुरु साहेब की दया से, माया को जीत कर ब्रह्मचारी रहे। बुढ़ौती में तो आदमी की इन्द्रियाँ शिथिल हो जाती हैं। माया के प्रबल घात को नहीं संभाल सकती हैं। इसी लिए तो साधू-ब्रह्मचारी लोग बुढ़ापे में ही माया के बस में हो जाते हैं। यह तो महंथ साहेब का 'दोख' नहीं। उसका भाग ही खराब है। यदि यह नहीं होती तो महंथ साहेब, सतगुरु के रास्ते से नहीं डिगते। यह ध्रुव सत्त है। दोख तो लछमी का है। एक ब्रह्मचारी का धरम भ्रष्ट करने का पाप उसके माथे है। अब उसका अपना कौन है? कोई नहीं।.....

"महंथ साहेब! महंथ साहेब!.....हमको छोड़ कर आप कहाँ चले गये? दासी के अपराध को छिमा करना गुरु! जीवन में तुम्हारी कोई सेवा खुसी मन से नहीं कर सकी। मरने के समय भी तुमको सुख नहीं दे सकी प्रभू.....!.....छिमा करो!"

जिन्दगी भर के जमे हुये आँसू आज निकल जाना चाहते हैं।...रोके रुकते नहीं।.....

"जयहिन्द कोठारिन जी।"

"दया सतगुरु के! बालदेव जी, बैठिये!"

बालदेव जी सब भूल गये। लछमी को सांत्वना देने के लिए रास्ते में जितनी बातें सोची थीं, दोहा, कबित, सब भूल गये। उसे माये जी की याद आ जाती है। माये जी का वह रूप...गंगा रे जमुनवाँ की

धार नयनवाँ से नीर बही।.....

बालदेव जी की गढ़ी हुई ढाढ़स की बाँध इस तेज धारा में नहीं टिक सकेगी। बालदेव जी की भी आँखें छलछला जाती हैं। फरगू में भी बाढ़ आती है।...वह दिल को मजबूत करके कहते हैं..."कोठारिन जी, सब परमेसर की माया है। हानि लाभ जीवन मरन जस अपजस बिधि हाथ।...हम तो सूरज उगने के पहले ही डागडर साहेब के साथ बाहर निकल गये थे। डागडर साहेब को गाँव की चौहद्दी दिखलानी थी। दखिन संथाल टोली से सुरु करके, दुसाध टोली तक गली कूची, अगवारा पिछवारा देखते देखते दस बज गये। वहीं मालूम हुआ कि महंथ साहेब इंतकाल कर गये हैं। डागडर साहेब का भी मन उदास हो गया। वे इसपिताल लौट गये। बाकी टोलों को कल देखेंगे।.. आज रौतहट हाट में ढोल भी दिला देना है—इसपिताल खुल गया है। शोमन मोची को भेज कर हम यहाँ आये हैं।"

लछमी के आँसू थम चुके थे। बालदेव जी ठीक समय पर आ गये। महंथ साहेब बालदेव जी को बहुत प्यार करने लगे थे। पाँच सात दिनों की जान पहचान में ही महंथ साहेब ने बालदेव जी को अच्छी तरह पहचान लिया था। रुपैया को बजा कर देखा जाता है और आदमी को एक ही बोली से पहचाना जाता है। महंथ साहेब कहते थे—"सुद्ध बिचार का आदमी है। संसकार बहुत अच्छा है।" इसके पहले महंथ साहेब ने किसी पर इतना विश्वास नहीं किया था। मठ में रोज तरह तरह के साधू सन्यासी आते थे। महंथ साहेब रोज यह कहना नहीं भूलते थे—"लछमी! इन लोगों का कोई बिसवास नहीं। रमता लोग हैं। इन लोगों से ज्यादे मिलना जुलना अच्छा नहीं।"..... नई उमर के साधुओं को पैर की आहट से ही वे पहचान लेते थे। उनके अंतर की दृष्टि बड़ी तेज थी। पिछले साल एक दिन सत्संग में एक नौजवान साधू आ कर बैठ गया। रात में आया था, 'बराहछत्तर'[3] जा रहा था।... उसके 'नैन' बड़े चंचल! सत्संग में बैठ कर लछमी की ओर टकटकी लगा

कर देखने लगा। महंथ साहेब, साहेब बचन सुना रहे थे। 'आखर' कहते कहते अचानक रुक गये। बोले—"हो नौगछिया के नौजवान उदासी जी! अरे साहेब बचन पर धेयान दीजै जी! लछमी के सरीर पर क्या नैन गड़ाये हैं? माटी का सरीर तो मिथ्या है, साहेब बचन सत्त!"···बेचारा उदासी बिना 'बालभोग' किये ही आसन तोड़ कर चला गया था।—लेकिन, बालदेव जी पर उनका बड़ा विश्वास था।····· "असल तेयागी यही लोग हैं लछमी!"

बालदेव जी को देखते ही लछमी का दुख आधा हो गया। बालदेव जी कहते हैं—"बड़े भाग से ऐसे लोगों का दरसन मिलता है। हमको तो दरसन मिला लेकिन सेवा का 'औसर' नहीं मिला। हमारा अभाग है·····।"

"बालदेव जी! आप तो दास हैं?"

"जी! मेरी माँ भी दास थी। माँस मछली छूती भी नहीं थी।"

"तब तो आप 'गरभदास' हैं। फिर कंठी क्यों नहीं ले लेते?"

बालदेव जी जरा होठों पर हँसी लाकर कहते हैं—"कोठारिन जी! असल चीज है मन। कंठी तो बाहरी चीज है।"

दूसरा साधू होता तो कंठी को 'बाहरी चीज' कहते सुनकर गुस्सा हो हो जाता। रामदेव गुसाईं होते तो तुरत चिमटा लेकर खड़े हो जाते, गाली गलौज करने लगते। लेकिन लछमी शांत होकर कहती है—"कंठी बाहरी चीज नहीं है बालदेव जी। 'भेख' है यह। आप बिचार कर देखिये। जैसे आपका यह खध्धड़ कपड़ा है। मलमल और मारकीन कपड़ा पहनने वाले, मन से भले ही महातमा जी के पंथ को मानें, लेकिन आप उन्हें सुराजी तो नहीं कहियेगा!"

लछमी की बातों का जवाब देना सहज नहीं। जब जब लछमी से बातें होती हैं, बालदेव जी को नई बातों की जानकारी होती है।"

"आप कहती है तो ले लेंगे कंठी।"

"किससे लीजियेगा?"

"आप ही दे दीजिये।"

लछमी हँस पड़ती है। शोकाकुल वातावरण में उसकी मुस्कुराहट जान डाल देती है। कितने सूधे हैं बालदेव जी।···मुझे गुरु बनाना चाहते हैं?

"नहीं बालदेव जी! मैं आपको आचारज जी से कंठी दिलाऊँगी। आचारज जी काशी जी में रहते हैं।···मैं आपको अपना बीजक देती हूँ। इसका रोज पाठ कीजिये। बीजक पाठ से मन 'निरमल' होता है। अंतर की जोति खुलती है।"

·····बीजक! एक छोटी सी पोथी। 'गेयान' का भंडार! बालदेवजी का दिल धक धक कर रहा है। लछमी कहती है—"सब हाथ का लिखा हुआ है। उस बार काशी जी से एक विद्यार्थी जी आये थे। बड़े जतन से लिख दिया था। मोती जैसे अच्छर हैं।"

बीजक से भी लछमी के देह की 'सुगन्धी' निकलती है। इस सुगन्ध में एक नशा है।·····इस पोथी के हरेक 'पद्दे' को लछमी की उंगलियों ने 'परस'[५] किया है···'पोथी पढ़ी पढ़ी जग मुआ, पंडित भया न कोय, ढाई आखर प्रेम का पढ़ा सो पंडित होय।'

लछमी को देखने से ही मन पवित्र हो जाता है।

(१) कै दस्त होना (२) समाधि (३) वराहक्षेत्र (४) पंक्ति (५) स्पर्श

—नौ

डाक्टर प्रशान्त कुमार!

जाति?·····

नाम पूछने के बाद ही लोग यहाँ पूछते हैं—जाति? जीवन में बहुत कम लोगों ने प्रशान्त से जाति पूछा है। लेकिन यहाँ तो हर आदमी जात पूछता है। प्रशान्त हँस कर कभी कहता है—"जाति? डाक्टर।"

"डाक्टर? जाति डाक्टर।···बंगाली हैं या बिहारी?"

"हन्दुस्तानी।"—डाक्टर जवाब दे देता है।

जाति बहुत बड़ी चीज़ है। जात पात नहीं मानने वालों की भी जाति होती है। सिर्फ़ हिन्दू कहने से ही पिंड नहीं छूट सकता। ब्राह्मण हैं?·····कौन ब्राह्मण? गोत्र क्या है? मूल कौन है?·····शहर में कोई किसी से जाति नहीं पूछता। शहर के लोगों की जाति का क्या ठिकाना? लेकिन, गाँव में तो बिना जाति के आपका पानी नहीं चल सकता।

प्रशान्त अपनी जाति छिपाता है। सच्ची बात यह है कि वह अपनी जाति के बारे में ख़ुद नहीं जानता। यदि उसे अपनी जाति का पता होता तो शायद उसे बताने में झिझक नहीं होती। तब शायद जाति पाति के भेद भाव पर से उसका भी पूर्ण विश्वास नहीं हटता। तब शायद ब्राह्मण कहने में वह गर्व अनुभव करता।

हिन्दू विश्वविद्यालय में नाम लिखाने के दिन भी प्रशान्त को कुछ ऐसी ही समस्याओं का सामना करना पड़ा था। रात भर वह जगा रह गया था।···प्रशान्त कुमार, पिता का नाम अनिल कुमार बनर्जी, हिन्दू, ब्राह्मण·····। सब झूठ!! बेचारा डा० अनिल कुमार बनर्जी, नेपाल की तराई के किसी गाँव में अपने परिवार के साथ सुख की नींद सो रहा होगा। प्रशान्त कुमार नामक उसका कोई पुत्र हिन्दू विश्वविद्यालय में नाम लिखा रहा है, ऐसा वह सपना भी नहीं देख सकता।·····लेकिन प्रशान्त अपने तथाकथित पिता डा० अनिल कुमार को जानता है। मैट्रिक परीक्षा के लिए फ़ार्म भरने के दिन डा० अनिल उसके पिता के 'रिक्त कोष्ट' में आकर बैठ गये थे।

बचपन से ही वह अपने जन्म की कहानी सुन रहा है। घर की नौकरानी, बाग़ का माली और पड़ोस का हलवाई भी उसके जन्म की कहानी जानता था। लोग बरबस उसकी ओर उँगली उठा कर कहने लगते थे—"उस लड़के को देखते हो न? उसे उपाध्याय जी ने कोशी नदी में पाया था।·····बंगालिन डाक्टरनी ने पाल पोस कर बड़ा किया

है।"·····फिर लोगों के चेहरों पर जो आश्चर्य की रेखा खिंच जाती थी और आँखों में जो करुणा की हल्की छाया उतर आती थी, उसे प्रशान्त ने सैकड़ों बार देखा है।·····एक लावारिस लाश को भी लोग वैसी ही दृष्टि से देखते हैं।

प्रशान्त अज्ञात कुलशील है। उसकी माँ ने एक मिट्टी की हाँडी में डाल कर बाढ़ से उमड़ती हुई कोशी मैया की गोद में उसे सौंप दिया था। नेपाल के प्रसिद्ध उपाध्याय परिवार ने, नेपाल सरकार द्वारा निष्कासित होकर, उन दिनों सहरसा अंचल में आदर्श आश्रम की स्थापना की थी। एक दिन उपाध्याय जी बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए रिलीफ़ की नाव लेकर निकले, झाऊ की झाड़ी के पास एक मिट्टी की हाँडी देखी—नई हाँडी। उनकी स्त्री को कौतूहल हुआ·····"ज़रा देखो न, उस हाँडी में क्या है?" नाव झाड़ी के पास पहुँची, पानी के हिलोर से हाँडी हिली और उससे एक 'ढोढ़ा साँप' गर्दन निकाल कर 'फोंफों' करने लगा। साँप धीरे-धीरे पानी में उतर गया और हाँडी से नवजात शिशु के रोने की आवाज़ आई। मानो माँ ने थपकी देना बन्द कर दिया। ·····बस यही उसके जन्म की कथा है, जिसे हर आदमी अपने अपने ढंग से सुनाता है।

···आदर्श आश्रम में एक दुखिया युवती थी—स्नेहमयी। स्नेहमयी को उसके पति—डा० अनिलकुमार बनर्जी ने त्याग कर एक नेपालिन से शादी कर ली थी। उपाध्याय जी के आदर्श आश्रम में रह कर वह हिरण, खरगोश, मयूर और बन्दर के बच्चों पर अपना स्नेह बरसाती रहती थी। तरह तरह के पिंजड़ों को लेकर वह दिन काट लेती थी। उस दिन जब उपाध्याय दम्पति ने उसकी गोद में सोये हुये शिशु को दिया, तो वह आनन्द विभोर होकर चीख उठी थी—"प्रशान्त?·····आमार प्रशान्त!" उस दिन से प्रशान्त, स्नेहमयी का एकलौता बेटा हो गया। कुछ दिनों के बाद, नेपाल सरकार ने निष्कासन की आज्ञा को रद्द करके उपाध्याय परिवार को नेपाल बुला लिया—आदर्श आश्रम के पशु पक्षियों

के साथ। स्नेहमयी और प्रशान्त भी उपाध्याय परिवार के ही सदस्य थे। उपाध्याय जी ने नेपाल की तराई में, बिराटनगर में आदर्श विद्यालय की स्थापना की। स्नेहमयी उसी स्कूल में सिलाई कटाई की मास्टरनी नियुक्त हुई।

स्नेहमयी के स्नेहाँचल में पलते हुये किशोर प्रशान्त पर कर्मठ उपाध्याय परिवार की रोशनी नहीं पड़ती तो वह सितार के 'झलार' और रविन्द्र संगीत के 'बसंतबहार' के दायरे से बाहर नहीं जा सकता था। उपाध्याय जी का ज्येष्ठ पुत्र बिहार विद्यापीठ का स्नातक था और मंझला देहरादून के प्रसिद्ध अंग्रेजी स्कूल का विद्यार्थी। पुत्री शांतिनिकेतन में शिक्षा पा रही थी। छुट्टियों में जब वे एक जगह इकट्ठे होते तो शांतिनिकेतन में शिक्षा पाने वाली बहन चर्खा चलाना सीखती, विद्यापीठ के स्नातक 'आश्रम भजनावली' की पंक्तियों पर 'राबिन्द्रिक सुर' चढ़ाते और अंग्रेजी स्कूल का 'स्टुडेन्ट'—सेवादल के क़वायदों के हिन्दी 'कमान्ड' के वैज्ञानिक पहलू पर बहस करता—"एटेन्शन में जो फ़ोर्स है वह 'सावधान' में नहीं! 'एटेन्शन' सुनते ही लगता है कि दर्जनों जोड़े बूट चटख उठे।"

ऐसे ही वातावरण में प्रशान्त के व्यक्तित्व का विकास हुआ!

हिन्दू विश्वविद्यालय से आइ० एस-सी० पास करने के बाद वह पटना मेडिकल कॉलेज में दाखिल हुआ। माँ की इच्छा थी कि वह डाक्टर बने।.....लेकिन अपने प्रशान्त को डाक्टर के रूप में वह नहीं देख पाई। काशी वास करते करते, काशी की किसी गली में वह हमेशा के लिए खो गई!.....एक बार लाहौर से प्रशान्त के नाम एक मनिआर्डर आया था—विजया की आशीर्वादी लेकर! भेजने वाली थी—श्रीमती स्नेहमयी चोपड़ा।.....एक माँ ने जन्म लेते ही कोशी मैया की गोद में सांप दिया और दूसरी ने 'जनसमुद्र' की लहरों को समर्पित कर दिया!.....

डाक्टरी पास करने के बाद जब वह हाउस सर्जन का काम कर रहा

था, १६४२ का देशव्यापी आंदोलन छिड़ा। नेपाल में उपाध्याय परिवार का बच्चा बच्चा गिरफ़्तार किया जा चुका था। अंग्रेजी सरकार को पूरा पता था कि उपाध्याय परिवार हिन्दुस्तान के फ़िरार नेताओं की सिर्फ़ मदद ही नहीं करता है, गुप्त आंदोलन को सक्रिय रूप से चला भी रहा है। मँझला पुत्र, बिहार के सोशलिस्ट पार्टी का कार्यकर्ता था, वह पहले ही नज़रबंद हो गया था। प्रशान्त भी तो उपाध्याय परिवार का था, वह कैसे बच सकता था। उसे भी नज़रबंद कर लिया गया। जेल में विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं और कार्यकर्ताओं के निकट सम्पर्क में रहने का मौक़ा मिला।.....सभी दल के लोग उसे प्यार करते थे।

१६४६ में जब कांग्रेसी मंत्रिमंडल का गठन हुआ तो एक दिन वह मेडिकल मिनिस्टर के बँगले पर हाज़िर हुआ।.....वह पूर्णिया के किसी गाँव में रह कर मैलेरिया और कालाआज़ार के संबंध में रिसर्च करना चाहता है। उसे सरकारी सहायता दी जाये।.....मिनिस्टर साहब ने कहा था—"लेकिन सरकार तुमको विदेश भेज रही है। स्कालरशिप....."

"जी, मैं विदेश नहीं जाऊँगा।"—पूर्णिया और सहरसा के नक़्शे को फैलाते हुये उसने कहा था—"मैं इसी नक़्शे के किसी हिस्से में रहना चाहता हूँ। यह देखिये, यह है सहरसा का वह हिस्सा जहाँ हर साल कोशी का तांडव नृत्य होता है। और यह पूर्णिया का पूर्वी अंचल, जहाँ मैलेरिया और कालाआज़ार हर साल मृत्यु की बाढ़ ले आते हैं।".....

मिनिस्टर साहब प्रशान्त को अच्छी तरह जानते थे। इस विषय पर प्रशान्त से तर्क में जीतना मुश्किल है।.....लेकिन सवाल यह है कि.....।

"सवाल जवाब कुछ नहीं। मुझे किसी मैलेरिया सेन्टर में ही भेज दीजिये!"

"मैलेरिया सेन्टर में ? लेकिन तुम एम० बी० बी० एस० हो और मैलेरिया-कालाआजार सेन्टरों में एल० एम० पी० डाक्टर लिये जाते हैं।"

"जब तक मैं यह रिसर्च पूरा नहीं कर लेता, मैं कुछ भी नहीं हूँ। मेरी डिग्री किस काम की ?"

बहुत मिहनत से नई और पुरानी फ़ाइलों को उलट कर और पूर्णिया डि० बोर्ड के चेयरमैन से लिखापढ़ी करके मिनिस्टर साहब ने मि० मार्टिन की दी हुई जमीन के बारे में पता लगाया।.....बीस बाईस वर्ष पहले, मिनिस्टर साहब पूर्णिया में ही वकालत करते थे। 'पगला मार्टिन' को उन्होंने देखा था।

अंत में केन्द्रीय सरकार से सलाह परामर्श के बाद एक दिन 'प्रेस नोट' में यह खबर प्रकाशित हुई कि पूर्णिया ज़िले के मेरीगंज नामक गाँव में मैलेरिया स्टेशन खोला गया है। (.....दि स्टेशन विल अन्डरटेक मैलेरिया ऐन्ड कालाआजार इनवेस्टिगेशन इन ऑल ऐस्पेक्ट्स ; प्रिवेन्टिव, क्यूरेटिव ऐन्ड एकोनामिक)

प्रशान्त के इस फ़ैसले को सुन कर, मेडिकल कालेज के अधिकारियों, अध्यापकों और विद्यार्थियों पर तरह तरह की प्रतिक्रिया हुई। मशहूर सर्जन डा० पटवर्धन ने कहा—"बेवक़ूफ़ है।"

ई० एन० टी० के प्रधान डाक्टर नायक बोले—"पीछे आँखें खुलेंगी।"

मेडिसिन के डाक्टर तरफ़दार की राय थी—"भावुकता का दौरा भी एक खतरनाक रोग है। मालूम ?"

लेकिन प्रिंसपल साहब खुश थे—"तुमसे यही उम्मीद थी। मैं तुम्हारी सफलता की कामना करता हूँ। जब कभी तुम्हें किसी सहायता की आवश्यकता हो, हमें लिखना।"

प्रशान्त का गला भर आया था !

मद्रास के मेडिकल गैज़ेट ने सम्पादकीय लिख कर डा० प्रशान्त का अभिनन्दन किया।

·····और जिस दिन वह पूर्णिया आ रहा था। स्टीमर खुलने में सिर्फ़ पाँच मिनट की देरी थी, उसने देखा—एक युवती सीढ़ी से जल्दी जल्दी उतर रही है। कौन है? ममता? हाँ, ममता ही थी।

आते ही बोली—"आखिर तुम्हारा भी माथा खराब हो गया?··· तुमने तो कभी बताया नहीं? बलिहारी है तुम्हारी!·····ओह, प्रशान्त तुम कितने बड़े हो, कितने महान!!·····मैं तो अभी आ रही हूँ बनारस से। आते ही चुन्नी ने तुम्हारी चिट्ठी दी।"

रूमाल से फूल और बेलपत्र निकाल कर प्रशान्त के शिर से छुलाते हुये ममता ने कहा था—"बाबा विश्वनाथ जी का प्रसाद है।·····बाबा विश्वनाथ तुम्हारा मंगल करें। पचहुँते ही पत्र देना।"

—दस

डाक्टर पत्र लिख रहा है—

ममता,

तुमने कहा था, पहुँचते ही पत्र देना। पहुँचने के एक सप्ताह बाद पत्र दे रहा हूँ। तुम्हारे बाबा विश्वनाथ ने मेरे आने के पहले ही अपने एक दूत को भेज दिया है। प्यारू जी सचमुच 'देवदूत' हैं। इसलिए तुमको चिंता करने की आवश्यकता नहीं।·····सात ही दिनों में वह दो बार रूठ चुका है—"कहने को तो डाक्टर हैं मगर समय पर नहीं खाने पीने से देह पर कितना खराब असर होता है, नहीं जानते।"···इसी से प्यारू का पूरा परिचय तुम्हें मिल गया होगा।

यह एक नई दुनिया है। इसे 'बज्र देहात' कह सकती हो। गाँव का चौकीदार सप्ताह में एक बार हाजिरी देने थाने पर जाता है, वही मेरी डाक लायेगा और ले जायेगा।

काम शुरु कर दिया है। सुबह सात बजे से ही रोगियों की भीड़ लग जाती है। अभी जेनरल सर्वे कर रहा हूँ। खून लेकर परीक्षा कर रहा हूँ। प्यारू कहता है, यहाँ कौओं को भी मैलेरिया होता है।

···यहाँ गड्ढों और तालाबों में कमल के पत्ते भरे रहते हैं। कहते हैं, फूलों के मौसम में छोटी छोटी 'गड़हिया' भी क़िस्म क़िस्म के कमल और कमलिनी से भर जाती है।·····लेकिन यहाँ के लोगों को तुम 'लोटस ईटर्स' नहीं कह सकती हो! गड्ढों की परीक्षा कर रहा हूँ।··· यहाँ की धरती बारहों महीने भीगी रहती है शायद।

गाँव के लोग बड़े सीधे दीखते हैं। सीधे का अर्थ यदि अपढ़, अज्ञान और अंधविश्वासी हो तो वास्तव में सीधे हैं। जहाँ तक सांसारिक बुद्धि का सवाल है, वे हमारे और तुम्हारे जैसे लोगों को दिन में पाँच बार ठग लेंगे। और तारीफ़ यह है कि तुम ठगी जाकर भी उनकी सरलता पर मुग्ध होने के लिये मजबूर हो जाओगी। यह मेरा सिर्फ़ सात दिनों का अनुभव है। संभव है, पीछे चल कर मेरी धारना ग़लत साबित हो। मिथिला और बंगाल के बीच का यह हिस्सा वास्तव में मनोहर है। औरतें साधारणतः सुन्दर होती है, उनके स्वास्थ्य भी बुरे नहीं।·····

"डाक्टर साहब!"

"कौन?"

"विश्वनाथ प्रसाद।"

"आइये! कहिये क्या है?"

"डाक्टर साहब! ज़रा एक बार मेरे यहाँ चलिये। मेरी लड़की बेहोश हो गई है।"

"बेहोश?·····क्या उम्र है?·····इसके पहले भी कभी बेहोश हुई थी?"

"जी! दो तीन बार और ऐसा ही हुआ था। उम्र?···यही सोलह सत्रह साल धर लीजिये। ज़रा जल्दी·····।"

"चलिये।"

बंद कमरे में एक चारपाई पर, नीली रज़ाई में लिपटी हुई युवती का गोरा मुखड़ा बाहर है। बाल खुले और बिखरे हुये हैं। आँखें बंद हैं। कोठरी में लालटेन की मद्धिम रोशनी हो रही है। रोशनी कम और धुआँ ज़्यादा।

डाक्टर खिड़कियों को खोलने के लिए कहता है और जेब से टार्च निकाल कर युवती के चेहरे पर रोशनी देता है—चेहरा ठीक है। साँस ?—ठीक है। नाड़ी भी दुरुस्त है।

डाक्टर आँखों की पलकों को उलटता है—मानों कमल की पँखड़ियाँ हों—ब्राइट !···पेट ?···कब्जियत तो नहीं ?

कोई जवाब नहीं देता है। घूँघट काढ़े खड़ी औरतों के घूँघट आपस में मिलते हैं। एक अधेड़ स्त्री आगे बढ़ आती है। युवती की माँ है—"जी कब्जियत नहीं है।"

घर की नौकरानी पर्दा नहीं करती है। कहती है—"डागडर बाबू 'लर' लगा कर देखिये न !"

लर ? अर्थात्—स्टेथिस्कोप। यहाँ के लोगों का विश्वास है कि इससे डाक्टर रोगी के अंदर की सारी बातों को जान लेता है।····क्या खाय है, पेट में पचा है या नहीं—सब।

"सूई दीजियेगा ?"

"हूँ।"

डाक्टर सिरिंज ठीक करता है। युवती आँखें खोल देती है—

"सूई ?···नहीं, सूई नहीं। माँ। अरे बाप ····· !"

"अच्छा, सूई नहीं देंगे। कैसी तबियत है ?···अच्छी बात। हूँ। क्यों बेहोश हो गई ? हाँ, बेहोशी कैसे हुई ? डर लगा था। हूँ। काहे का डर लगा था ?···तब ? इसके बाद ? देह घूमने लगा। ठीक है। अब कैसी है ? डर तो नहीं लगता ? दवा भेज दूँगा अब डर नहीं लगेगा।"

"दवा ?···दवा नहीं। माँ, मैं दवा नहीं पीयूँगी।"

"वाह, सूई भी नहीं और दवा भी नहीं ?···मीठी दवा ?"

सभी हँस पड़ते हैं ? युवती के मुर्झाये हुये लाल होठों पर मुस्कुराहट दौड़ जाती है। आँखों की पलकें जरा उठ कर मानो डाक्टर को डाँट देती हैं—"हट ! दवा भी कहीं मीठी होती है ?"

बाहर आकर डाक्टर तहसीलदार से कहता है—"घबराने की बात नहीं, दवा भेज देता हूँ। इसके पहले···कितनी देर तक बेहोश रहती थी?"

"क़रीब एक घंटा। जोतखी जी से एक बार जंतर बनवा के दिया। झाड़ फूँक भी करवा कर देखा। डाक्टर साहब! बस यही मेरा बेटा यही मेरी बेटी·····सब कुछ यही है।"

"ठीक हो जायेंगी।"

सेन्टर में आकर डाक्टर सोचता है—"क्या दिया जाये? मीठी दवा! कार्मिनेटिव मिक्सचर या ब्रोमाइड!·····अजी तुम्हारा क्या नाम है?"

"मेरा नाम? जी, नाम रनजीत।"

"तहसीलदार साहब के यहाँ कितने दिनों से नौकरी करते हो?"

"बहुत दिनों से। लड़कैयों से।···एक ठो बीड़ी है तो दीजिये दागदर बाबू।"

"प्यारू! रनजीत को बीड़ी पिलाओ।"

प्यारू बीड़ी दियासलाई दे जाता है। बीड़ी सुलगा कर रनजीत अपने आप कहता है—"दागदर बाबू! तहसीलदार को दिन दुनियाँ में बस यही एक बेटी ही है। कितना मानत मनौती के बाद कमला मैया ने निहारा भी तो बेटी ही हुई। मगर·····।"

रनजीत बीड़ी की राख झाड़ कर चुप हो जाता है। डाक्टर ने लक्ष्य किया है, रनजीत 'मगर' पर आकर पूर्णविराम दे देता है।

"मगर क्या?"

"यही देखिये न! तीन जगह बातचीत चली, मगर।···पहली जगह से तो पान देने की बात भी पक्की हो गई थी। ठीक तिलक पान के दिन लड़के की माँ मर गई। दूसरी जगह बातचीत ठीक हुई तो उसके घर में आग लग गई। तीसरे लड़के को 'मैया' हो गया, इन्तकाल हो गया। अब कोई लड़का वाला तैयार ही नहीं होता है। हजार दो

हजार, पाँच हजार रुपैया भी कबूलते हैं, मगर। आखिर में एक 'पछवरिया कैथ' को घरजमैया रखने के लिए लाये, बस उसी दिन से कमली को मिरगी आने लगी।···लोग तो कहते हैं कि कमला मैया नहीं चाहती हैं कि कमली की सादी हो। कमला मैया भी कुमारी ही थीं न! अब आप लगे हैं। किसी तरह कमली दैया को आराम कर दीजिये दागदर बाबू। जो बक्सीस माँगियेगा, तहसीलदार दे देंगे।"

"देखो रनजीत! तीन खुराक दवा है। मीठी दवा है। तुम्हारी कमली दैया आराम हो जायेंगी। कल सुबह फिर एक बार खबर देना। समझे!"

"तीन खोराक। खायेगी क्या?"

"अभी?···अभी रोटी दूध।"

"रनजीत!"—एक आदमी दौड़ा हुआ आता है।

"कौन? रामदेल! क्या है?"

"कमली दैया फिर बेहोस हो गई। तहसीलदार साहेब कहिन हैं कि डागडर बाबू फिर एक बार जरा तकलीफ करें।"

डाक्टर घड़ी देखता है। ६ बज कर दस मिनट। कुछ ही देर में समाचार होंगे। डाक्टर कुछ सोच कर कहता है—"रनजीत! वह बक्सा उठाओ!···ले चलो।"

"बेतार का खबर?"

"हाँ, तुम्हारी कमली दैया का इलाज बेतार से ही होगा।"

कमला फिर पहले की तरह बेहोश पड़ी हुई है। उसकी आँखें बंद हैं। बाल बिखरे हुये हैं। डाक्टर को रोग का निदान मिल गया है। वह अपने बैग से शीशी, सिरिंज वगैरह निकालता है।

"सुई? सुई नहीं।"—कमला फिर होश में आती है।

"बगैर सुई के आपका रोग आराम नहीं होगा।"—डाक्टर सिरिंज ठीक करता है।

"दवा दीजिये। डाक्टर साहब! मैं सुई नहीं लूँगी।'

"फिर डर लगा था ?"

"हाँ।"

"रनजीत ! दवा की शीशी कहाँ है ? लाओ। बक्सा यहाँ लाकर रखो।···हाँ, पी लीजिये।···ठीक है। कैसी है दवा ? मीठी है न ?"

डाक्टर पोर्टेब्ल रेडियो को खोल कर मिटर ठीक करता है—"यह ऑल इन्डिया रेडियो है। रात के सवा नौ बजे हैं ! अब आप हिन्दी में समाचार सुनिये·····।"

"डर लगता है। माँ·····।"

"देखिये, डर की कोई बात नहीं। सुनिये···।"

"मुझे उठा दो माँ।"

"उठिये मत। लेटी रहिये।"

"···अब आप सविता देवी से एक मैथिली लोकगीत सुनिये···"

"···माइगे, हम ना बियाहेब अपन गौरा के जौं बुढ़वा होइत जमाय गे माई।"[1]

"ओ माँ !" कमला खिलखिला कर हँस पड़ती है—"शादी का गीत हो रहा है।"

"हम ना बियाहेब अपन गौरा के···।"

कोठरी और आँगन में घुँघट काढ़े औरतों की भीड़ लग जाती है। कमला पर "ब्रोमाइड" का असर हो रहा है, उसकी आँखों में नींद झाँक रही है।

डाक्टर लौट कर खत को पूरा करने बैठ जाता है। सुबह सात बजे से ही रोगियों की भीड़ लग जाती है। अगमू चौकीदार कल हाजिरी देने जायेगा। पाँच बजे भोर को ही आकर वह पुकारेगा। डाक्टर लिखता है—

"पत्र अधूरा छोड़ कर एक केस को देखने गया था। केस अजीब है। केस हिस्ट्री और भी दिलचस्प है। तुम्हारी शीला रहती तो आज खुशी से नाचने लगती; हिस्टीरिया, फ्रोबिया, कामविकृति और हठ-प्रवृति

जैसे शब्दों की झड़ी लगा देती। शीला से भेंट हो तो कहना—मैंने अपने पोर्टेब्ल रेडियो से उसके दिमाग़ को झकझोर कर दूसरी ओर करने की चेष्टा की है।...''

(१) शिव-विवाह से सम्बन्धित मैथिली गीत।

—ग्यारह

'''नहीं तोरा आहे प्यारी तेग तरबरिया से
''नहीं तोरा पास में तीर जी।'''

''एक सखी ने पूछा कि हे सखी, तुम्हारे पास में न तो तीर है न तरबार''''''!

''''नहीं तोरा आहे प्यारी तेग तरबरिया से'''

''''कौनहि चीजवा से मारलू बटोहिया के

''धरती लोटाबेला बेपीर जी।

''यह सुन कर जो औरत सदाब्रिज पर मोहित थी, बोली—

''सासू मोरा मरे हो, मरे मोरा बहिनी से,

''मरे ननद जेठ मोर जी।

''मरे हमार सब कुल पलिबरवा से,

''फसी गइली परेम के डोर जी'''।

''इतना कह कर वह सदाब्रिज के पास आई और पानी पिला कर परेम की बातें करने लगी'''।

''आजु के रतिया हो प्यारे, यहीं बिताओ जी'''।''

तंत्रिमा टोली में सुरंगा सदाब्रिज की कथा हो रही है। मँहगू दास के घूर के पास लोग जमा हैं। पुरैनियाँ टीसन से एक मेहमान आया है, 'रेलवे' में काज करता है। तंत्रिमा टोली के लोग कहते हैं—खलासी जी। खलासी जी सरकारी आदमी हैं। खलासी जी यदि 'लाल पत्तखा' दिखला दें तो डाकगाड़ी भी रुक जाये। रुकेगी नहीं? लाल पत्तखा देखते ही

...गाड़ी रुक जाती है। लाल ओढ़ना ओढ़ कर गाड़ी पर चढ़ने जाएगी तो ! ...गाड़ी रुक जायेगी और ओढ़ना 'जम्पत' हो जायेगा। खलासी जी बहुत गुनी आदमी हैं। पक्का ओझा[1] हैं। चक्कर पूजते हैं। भूत-प्रेत को पेंड़ में काँटी ठोंक कर बस में करते हैं। बाँझ निपुत्तर को 'तुकताक'[2] कर देते हैं। कुमर बिज्जैभान, लोरिक और सुरंगा सदाब्रिज का गीत जानते हैं। गला कितना तेज है! ...उस बार सुराजी 'हूलमाल'[3] में खलासी जी ने लिखा दिया था—"बैगनबाड़ी के जमींदार के लड़के ने रेल का लैन उखाड़ा है।" बस, फाँसी हो गई। 'हैकोठ'[4] और 'नंदन'[5] तक फाँसी बहाल रही। ...लेकिन मँहगू दास को कौन समझावे? बेचारे खलासी जी एक साल से दौड़ रहे हैं मँहगू दास की बेवा बेटी फुलिया से 'चुमौना'[6] की बात चीत पक्की करने के लिए। हर बार खलासी जी झोरी में मोरंगिया (नेपाली) गाँजा लाते हैं, तंत्रिमा टोली के पंचों को पिलाते हैं, सुरंगा सदाब्रिज गाते हैं, गाँव के बीमार लोगों को झाड़ फूँक देते हैं। उस बार उचित दास की डेरा वाली को तुकताक कर दिया, मरने के चार दिन पहले बूढ़ा उचित दास संतान का मुँह देख गया।...लेकिन मँहगू दास को कौन समझावे? फिर, खलासी जी लेन-देन की बात भी करते हैं। एक कोड़ी नगद देंगे, जाति बिरादरी को एक साम भोज कबूलते हैं। और क्या चाहिये? सरकारी आदमी जमाई होगा। कभी तीरथ करने के लिये जायेंगे तो रेल में 'टिकस' भी नहीं लगेगा।

रमजू दास की स्त्री, तंत्रिमा टोली की औरतों की सरदारिन है। हाट-बाजार जाने के समय, मालिकों के खेतों में धान रोपने और काटने के समय और गाँव में शादी ब्याह के समय, टोले भर की औरतें उसकी सरदारी में रहती हैं। राजपूत, बाभन और मालिक टोले के सभी बाबू-बबुआन से 'मुँहामुँही'[8] बात करती है, दिल्लगी का जवाब हँस कर देती है और समय पड़ने पर हाथ चमका चमका कर झगड़ा भी करती है। एक बार तो सिंघजी की भी 'सीसी सटका दिया'[9] था—"ऊँह, बूढ़ा हो

गया है, चोट लगी हुई है। सिर के बाल सादा हो गये हैं, मन का रंग नहीं उतरा है।'''''हमारा मुँह मत खुलवाइये सिंघ जी।''''''उससे सभी डरते हैं। न जाने कब किसका भेद खोल दे। सभी उसकी खुशामद करते हैं—टोले भर की जवान लड़कियाँ उसकी मुट्ठी में रहती हैं। उससे कोई बाहर नहीं। खलासी जी इस बार लालबाग मेला से उसके लिए असली गिलट का कंगना ले आये हैं। चाँदी की तरह चमक है। '''मौसी! किसी तरह फुलिया से चुमौना ठीक कर दो।"

"अरे सूते ले देबौ हे प्यारे लाली पलंगिया से'''

"खाये ले गुआ खिल्ली पान जी।"

खलासी जी आज दिलखोल कर गा रहे है। उन्हें आज ऐसा लग रहा है कि वे खुद सदाग्निज हैं। लेकिन न तो उसकी फूलिया उसे रहने के लिए बिनती करती है और न मंहगू दास चुमौना की बात मंजूर करता है।'''"अरे सूते ले देबौ है प्यारे लाली पलंगिया से''''''।"

फुलिया क्या करे? माँ बाप के रहते वह क्या बोल सकती है! अंदर ही अंदर मन जल कर खाक हो रहा है, लेकिन मुँह नहीं खोल सकती। लोग क्या कहेंगे!'''रमजू दास की स्त्री फुलिया के जलते हुये दिल की बात जानती है। उस दिन फुलिया कह रही थी—"मामी, काली किरिया, किसी से कहना मत। खलासी जी इतने दिनों से दौड़ रहे हैं। बाबा कोई बात साफ साफ नहीं कहते हैं। आखिर वह बेचारा कब तक दौड़ेगा? यहाँ नहीं तो कहीं और टूढ़ेगा। दुनिया में कहीं और तंत्रिमा की बेटी नहीं है क्या?'''जब एक दिन कुछ हो जायेगा तो सहदेव मिसर देह पर माओ भी नहीं बैठने देगा। तब करो खुशामद नककट्टी चमाइन की और चिचाय की माँ की! मुसब्बर चबाओ और ऐंड़ी से पेट को आँवा की तरह गुंधवाओ। उस बार जोतखी जी का बेटा नामलरैन ने क्या दिया? अंत में नककट्टी को गाभिन बकरी देकर पीछा छुड़ाया'''।"

"याद जो आवे हे प्यारी तोहरी सुरतिया से

"शाले करेजवा में तीर जी''''''।"

खलासी जी का तीर खाया हुआ दिल तड़प रहा है। फुलिया क्या करे? ·····लेकिन रमजू दास की स्त्री का मुँह कौन बंद कर सकता है?—"अरे फुलिया की माये! तुम लोगों को न तो लाज है और न धरम। कब तक बेटी की कमाई पर लाल किनारी वाली साड़ी चमकाओगो? आखिर एक हद होती है किसी बात की। मानती हूँ कि जवान बेवा बेटी दुधार गाय के बराबर है। मगर इतना मत दूहो कि देह का खून भी सूख जाये!"

"अरे हाँ हाँ, बेटा बेटी केकरो, घी ढारी करे मंगरो! चालनी कहे सूई से कि तेरी पेंदी में छेद! हाथ में कंगना तो चमका रही हो, खलासी को एक पुड़िया सिन्दूर नहीं जुटता है?"—फुलिया की माँ ने जब से रमजू दास की स्त्री के हाथ में कंगना देखा है, उसका कलेजा जल रहा है। ···मंहगू दास पर गुस्सा करने से कोई फ़ायदा नहीं। खलासी की बुद्धि ही मारी गई है। रमजू की स्त्री को कुटनी बहाल किया है, कंगना दिया है। रमजू की स्त्री काली माई है जो लोग उसकी बात को मान लेंगे।

"मुँह संभाल कर बात कर नेंगड़ी! बात बिगड़ जायेगी। खलासी हमारा बहन-बेटा है। बहन-बेटा लगा कर गाली देती है। गाली हमारे देह में नहीं लगेगी। तेरे देह में तो लगी हुई है। अपने खास भतीजा तेतरा के साथ भागी तू और गाली देती है हमको। सरम नहीं आती है तुमको! बेसरमी, बेलज्जी! भरी पंचायत में जो पीठ पर झाड़ू की मार लगी थी सो भूल गई? गुआरटोली के कलरु के साथ, रात भर भैंस पर 'रसलीला' करती थी सो कौन नहीं जानता है? तूँ बात करेगी हमसे?"

"रे, सिंघवा की रखेली! सिंघवा के बगान का 'बम्बै आम' का स्वाद भूल गई, 'तरबन्ना' में रात रात भर 'लुकाचोरी' में ही खेलती थी रे?·····'कुरअँखा' बच्चा जब हुआ था तो 'कुरअँखा' सिंघवा से मुँह-देखौनी में बाछी मिली थी, सो कौन नहीं जानता?"

"···एतना बात सुनते ही सदाब्रिज फिर मूर्छित होकर धरती पर गिर

पड़ा·····।"

मँहगू दास के घूर के पास होने वाली सुरंगा सदाब्रिज की कथा में औरतों के झगड़े से कोई बाधा नहीं पहुँचती है। औरतों के झगड़े पर यदि मर्द लोग आँख कान देने लगें तो हुआ! औरतों के झगड़े का क्या? अभी झगड़ा किया, एक दूसरे को गालियाँ सुनाईं, हाथ चमका-चमका कर, गला फाड़-फाड़ कर एक दूसरे के गड़े हुये मुर्दे उखाड़े गये, जीभ की धार से बेटा बेटी की गर्दन काटी गई, काली माई को काला पाठा क़बूला गया, हाथ और मुँह को कोढ़ कुष्ट से गलाने की प्रार्थना की गई और एक दो घंटे के बाद ही सफ़ाई! मेल मिलाप हो गया। एक दूसरे के हाथ से हुक्का लेकर गुड़गुड़ाने लगीं। साग माँग कर ले गईं और बदले में शकरक़न्द भेज दिया—"कल साम को मालिक के खेत से अंधेरे में उखाड़ लाया है लड़के ने। मालिक देखते तो पीठ की चमड़ी खींच लेते।"

पहले झगड़ा का 'सिरगनेस' दो ही औरतों में होता है। झगड़े के सिलसिले में एक-एक कर पास पड़ोस की औरतों के प्रसंग आते जाते हैं और झगड़ने वालियों की संख्या बढ़ती जाती है। झगड़े से उनके काम काज में भी कोई बाधा नहीं पहुँचती है। काम के साथ साथ झगड़ा भी चल रहा है।···जब सारे गाँव की औरतें झगड़ने लगती हैं, तब कोई किसी की बात नहीं सुनती। सब अपना-अपना चर्खा ओंटने लगती हैं।·····लेकिन फुलिया आज झगड़े में हिस्सा नहीं ले रही है। वह टट्टी की आड़ में खड़ी होकर सुरंगा सदाब्रिज की कथा सुन रही है।···खलासी जी के गले में जादू है। ओझा गुनी आदमी है। कथा और गीत में फुलिया यह भी भूल जाती है कि सहदेव मिसर शाम से ही कोठी के बग़ीचे में उसके इंतज़ार में मच्छड़ कटवा रहा है।·····खलासी के गले में जादू है!

"मामी।"

"क्या है रे! बोल ना! सहदेव मिसरवा के पास जायेगी क्या?"

"नहीं मामी। एक बात कहने आई हूँ। काली किरिया, किसी

से कहना मत।·····खलासी जी तो तुम्हारे 'गुहाल' में सोते हैं न? काली किरिया!"

सुरंगा सदाब्रिज की कथा समाप्त हो गई है। झगड़ा, लंकाकांड तक पहुँच कर शेष हो गया है। सहदेव मिसर मच्छड़ों से कब तक देह का खून चुसवाते।·····साला खलासिया! साली हरामजादी!·····अच्छा कल देखूँगा।

गाँव में सन्नाटा छाया हुआ है और रमजू की स्त्री के गुहाल में सुरंगा कह रही है सदाब्रिज से—"अभी नहीं, जब बाबा चुमौना के लिए राजी नहीं होंगे, तब मैं तुम्हारे साथ भाग चलूँगी।"

"उनको राजी कैसे किया जाये? कौन एक मिसर है। सुना है·····।"—सदाब्रिज बेचारा कहता है।

"सब झूठी बात है। तुम बालदेव जी से कहो।"

"कौन बालदेव! पुरैनियाँ आसरम वाला?"

"हाँ। सभी उनकी बात मानते हैं। बाबू-बबुआन भी उनसे बाहर नहीं। तुम बंदगी मत करना, जै हिन्द कहना।"

"लेकिन वह तो हम पर बड़ा नाराज है। 'देश दुरोहित'[२] के 'फिरिस' में नाम दे दिया है।"

"·····माँ के लिए नाक की बुलाकी ले आना। असली पीतल की बुलाकी।"

(१) मन्त्र से भूत प्रेत को भगाने वाला। (२) टोटका, यन्त्र। (३) गोलमाल, आंदोलन (४) हाई कोर्ट (५) पार्लियामेंट, लन्दन (६) पुनर्विवाह (७) बिना पर्दे के (८) सिट्टीपिट्टी गुम कर देना (९) देशद्रोही; कांग्रेस ने देशद्रोहियों की फेहरिस्त तैयार करने का प्रस्ताव किया था।

—बारह

मठ पर 'आचारजगुरु' आने वाले हैं, नये महंथ को चादर 'टीका'[१] देने के लिए! मुजफ्फरपुर जिला का एक मुरती आया है—'लरसिंह

दास'। आचारजगुरु मुजफ़्फ़रपुर जिले के पुपड़ी मठ पर भंडारा में आये हैं। लरसिंघ दास खबर लेकर आया है—आचारजगुरु आ रहे हैं। मठ के सभी 'सेवक सती', आस पास के बाबू-बबुआन लोगों को पहले ही खबर दे दी जाये!

रामदास को महंथी की टीका मिलेगी! महंथ सेवा दास का एकमात्र चेला वही है।·····रामदास सोचता है, यदि खंजड़ी बजाना नहीं जानते तो आज तक बेलाही के जमींदार के भैंस की पूँछ हाथ से नहीं छुटती। महंथ साहब उसकी खंजड़ी सुनकर मोहित हो गये और वह रात को ही महंथ साहब के साथ भाग कर मेरीगंज मठ पर आ गया।·····पंद्रह साल पहले की बात! पंद्रह साल बाद रामदास का 'भाग' फिरा है। 'जै हो सतगुरु साहेब की'।

नियमानुसार सभी पंचों की उपस्थिति में नया महंथ एक 'एकरारनामा' लिख देगा—हमेशा 'संगोटाबंद'[२] रह कर सतगुरु के स्थल की रक्षा करेंगे। किसी तरह का मादकद्रव्य नहीं सेवन करेंगे। दासी-रखेलिन नहीं रखेंगे। आदि आदि। इसके बाद आचारजगुरु एक 'सुरतहाल'[३] पर दस्तखत करके नये महंथ को देंगे। फिर 'चादरटीका' की विधि!····· दही की टीका और सिर पर दूब धान।·····बस नये महंथ साहेब उसी दिन से नौ सौ बीघे की 'पतनी'[४] के एकमात्र मालिक हो जायेंगे।

लरसिंघ दास तो आचारज जी का संदेशा लेकर आया था, किन्तु मेरीगंज मठ पर एक ही रात रहने के बाद उस पर महंथी का मोह सवार हो गया।·····नौ सौ बीघे की काश्तकारी? कलमी आम का बाग़! दस बीघे में सिर्फ़ केला ही लगा हुआ है। एक एक घौर में हजार केले फले हैं। हजरिया केला! दो कोड़ी गाय, चार गुजराती भैंस और सबसे क़ीमती संपति—अमूल्य धन—लछमी दासिन। लछमी दासिन कहती है, महंथ साहेब को बस यही एक चेला है—रामदास! तो क़ानूनन रामदास ही होनेवाला अधिकारी महंथ है। रामदास! काठ का उल्लू रामदास! सतगुरु हो! यह अंधेर है। रामदास महंथ नहीं हो सकता। 'छुछुंदर'

की तरह तो सूरत है, वह महंथ होगा ? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता । और यह लछमी ?·····श्रापभ्रष्टा अप्सरा !

लछमी ने लरसिंघ दास की आँखों में न जाने क्या देखा है कि उसकी छाया से भी वह बच कर चलती है । रात में किवाड़ मजबूती से बंद करके सोती है । किवाड़ की छिटकिली लगाने के बाद, एक ओखल किवाड़ से सटा देती है ।·····लरसिंघ दास को शायद बहुमूत्र की बीमारी है, रात भर में दस ग्यारह बार पेशाब करने के लिये उठता है । हर बार धुनी के पास सोया हुआ रामदास उसे टोकता है—"कौन ?"···लरसिंघ दास किसी बार जवाब नहीं देता । कल रात एक बार गुस्से में जवाब दिया—"महंथ होने के पहले ही अंधे हो गये क्या ? देखते नहीं हो ?···जैसा गुरु वैसा चेला ।" रामदास कुनमुना कर रह गया था । सुबह को सत्संग के समय ही लछमी बरस पड़ी थी—"क्यों आप वैसी 'भाखा' बोले थे ? महंथ होने के पहले ही अंधे हो गये !·····जैसा गुरु·····। गुरु-निंदा-सुनहि जो काना·····। मैं गुरु-निंदा नहीं सुन सकती, नहीं सह सकती । रामदास को आप क्या समझते हैं ? वह इस मठ का 'अधिकारी' महंथ है । आपके जैसे एक कोड़ी 'बिलटा'[५] साधुओं को वह रोज परसाद देगा ।·····बात करना भी नहीं जानते । आने दीजिये आचारज जी को ।"

रामदास भी सुना देता है—"रात में हम छोड़ दिया । लेकिन अब बोलोगे तो सीधे 'पच्छिम का रास्ता' दिखा देंगे । हाँ समझ रखो !"

भंडारी तो नम्बरी शैतान है । कल से ही उसने बदमाशी शुरू की है । दाल की कटोरी में सिर्फ़ पानी रहता है । आलू की भुजिया दुबारा नहीं देता । घी माँगने पर कहता है—"दाल घी से बघारल है ।" केला बिक्री होने के लिये हाट भेज दिया जाता है । दूध में पानी मिला कर देता है । बालभोग में पहले दही चूड़ा देता था, कल से सिर्फ़ चूड़ा लाकर रख देता है ।

बिलटा साधु ?···रंडी की यह हिम्मत ? उसे बिलटा साधू कहती है ?

अच्छा ! अच्छा !!·····

·····लछमी पहले से ही तो उसे नहीं जानती। कैसे जान सकती है ? वह कभी पहले यहाँ आया नहीं। पुपड़ी मठ से भी तो कभी कोई 'मुरती' यहाँ नहीं आया।···सोनमतिया कहारिन भी तो नहीं आई है यहाँ। संभव है उस बार अपनी बेटी रधिया को खोजने के लिए यहाँ भी पहुँची हो ! ठीक है···। रधिया !···रधिया को पहली बार जब देखा था तो उसके मन की ऐसी ही हालत हुई थी। कनपट्टी के पास हमेशा गर्म रहता था। लेकिन रधिया अल्हड़ थी। एक ही चक्कर में जाल में आ गई थी। लछमी तो पुरानी है, खेली खिलाई है। सतर चूहे खाई हुई है।···यदि वह रधिया को लेकर नौटंकी कम्पनी में नहीं शामिल होता तो रधिया हाथ से नहीं निकलती। नौटंकी कम्पनी के मालिक की ही बात रहती तो वह सह ले सकता था, हारमोनियम और 'नगाड़ा' वाले भी रधिया को कभी फ़ुर्सत नहीं देते थे। कभी ताल का 'रिहलसल' करना है तो कभी नाच सिखाना है।·····रधिया साली भी कुती ही थी। वह भी तो बदल गई थी।

लरसिंघ दास अपने सिर के दाग पर हाथ फेर कर मफलर से ढँक लेता है—साले नगाड़ची ने ठीक सामने कपाल पर ही डंटा चलाया था !

·····मठ लौटने पर महंथ साहेब ने खड़ाऊँ से मरम्मत की थी। लेकिन सात दिन से उपवास किये हुये शरीर में इतना दम कहाँ था जो भागते। सिर का घाव ताजा ही था। महंथ साहेब की खड़ाऊँ गुरु की खड़ाऊँ थी। महंथ साहब के पैर पर वह लेटा रहा था। वे बहुत दयालु 'पुरुख' थे। लरसिंघ दास उनका एकलौता चेला था। गुरु ने 'छिमा' कर दिया। महंथ साहेब के शरीर त्यागने के बाद, पुपड़ी मठ की महंथी उसे ही मिलती लेकिन रामबरन कोयरी ने उसकी 'मती' फेर दी थी।··· "लरसिंघ दास, नेपाली गाँजा में बड़ा नफा होता है। दस रुपये का लाओ और चार सौ बनाओ। नेपाल में चार आने सेर गाँजा मिलता

है। बराह छत्तर मेला के समय चलो·····।"

महंथ साहेब ने जब शरीर त्याग किया तो वह जेल में था। महंथ साहेब ने मरने के समय जीऊत दास को चेला क़बूल कर 'वील' लिख दिया। ·····नहीं तो वह भी एक मठ का महंथ होता। तब लछमी उसे बिलटा साधू नहीं कह सकती। तब तो पैर पखार कर, पैर के दसों नाखूनों को धोकर वह परेम से 'चरनोदक' पीती।·····लेकिन वह लछमी को चरनोदक पिला कर छोड़ेगा।

"रामदास।"

"क्या है! रामदास मत बोलिये, अधिकारी जी कहिये।"

"कोठारिन से कहो कि लरसिंघ दास आज जा रहे हैं।"

"जा रहे हैं तो जाइये।"

"तुम कोठारिन से कहो·····।"

"तुम ताम मत करो। कोठारिन जी से क्या कहेंगे। राह खर्चा कल ही कोठारिन जी ने दे दिया है।"

रामदास झोली से एक पाँच रुपये का नोट निकाल कर लरसिंघ दास के आगे फेंक देता है।

"·····हम पूछना चाहते हैं कि कोठारिन ने हमारा अपमान काहे किया? हमको बिलटा काहे बोली? हमारे अचारज गुरु को काहे गाली दिया?"

"अचारज गुरु को कब गाली दिया है?"

"दिया है। बोली नहीं थी?···पूजा बिदाई लेने के समय अचारज गुरु हैं, बेर बखत पड़ने पर सीधा जवाब मिलता है।·····आज अचारज गुरु हुये हैं, कल तक तो गुरुभाई थे। यह गाली नहीं तो और क्या है?"

"संसार में सत्त का भी लेस जरा रहने दीजिये साधू महाराज"—लछमी अंदर से निकल कर कहती है—"साधू का काम झूठ बोलना नहीं है। छिः छिः!"

"छिः छिः क्या ! हमको बिलटा नहीं कहा है आ···आ··· घर से ···तुमने ?" दी

"रामदास !"···लछमी गरज उठती है—"गरदनियाँ देकर निकाल दो इसको। यह साधू नहीं, राक्षस है। इसके सिर पर माया सवार है।·····इससे पूछो कि आज सबेरे जब मैं स्नान कर रही थी तो बाँस की टट्टी में छेद करके यह क्या देखता था ? सैतान !"

लछमी फुफकारती हुई अंदर चली जाती है।

रामदास उठ कर लरसिंघ दास के गले में हाथ लगा कर धक्का देता है। लरसिंघ दास सीढ़ी पर गिर पड़ता है।·····नाक से ख़ून निकल रहा है।

"जायहिन्द रामदास जी !···क्या है ? क्या हुआ ?"—बालदेव जी लहू देख कर घबरा जाते हैं।

"कुछ नहीं 'पछवरिया' साधू है। काया में कहीं साधू सुभाव नहीं। कोठारिन जी से 'बतकुट्टी'[६] करता था।"

"तो मारपीट क्यों हुई ? सांती से सब काम करना चाहिये। हिन्साबात नहीं करना चाहिये।"

"रामदास ! बालदेव जी को अंदर भेज दो।"

लरसिंघ दास नाक का ख़ून पोंछते हुये देखता है—बालदेव नाम का यह खध्धड़धारी आदमी अंदर जा रहा है।·····सीधे लछमी की कोठरी में !·····जायहिंद बालदेव जी !

·····शायद यह खध्धड़धारी और लछमी एक ही आसनी पर बैठे हैं। एकदम आसपास—देह से देह सटा कर !·····अच्छा !

(१) महन्थी की टीका (२) ब्रह्मचर्य (३) महन्थी का दरतावेज़ (४) छोटी जमींदारी (५) आवारा (६) वादविवाद, झगड़ा।

—तेरह

गाँव के ग्रह अच्छे नहीं !

सिर्फ़ जोतखी जी नहीं, गाँव के सभी 'मातबर' लोग मन ही मन सोच विचार कर देख रहे हैं—गाँव के ग्रह अच्छे नहीं !

तहसीलदार साहब को स्टेट के सर्किल मैनेजर ने बुला कर एकान्त में कहा है—"एक साल का भी खज़ाना जिन लोगों के पास बक़ाया है, उन पर चुपचाप नालिश कर दो। 'बलाय बलाय'[1] से नोटिस ५८ बी० तामील करवा लो। क़ुर्क़ी और इश्तहार निकास करवा कर सरज़मीन पर चपरासी को ले जाने की ज़रुरत नहीं। कचहरी में ही बैठ कर गाँव के चमार से अगूंठा का टीप लेकर ढोल बजाने की रसीद बनवा लो।···गाँव के एक दो गवाहों को भी ठीक करके रखो। स्टेट से उनको भत्ता मिलेगा।···इन कांगरेसियों का कोई ठीक नहीं।"

सिंघ जी यादव टोली के 'नढ़ेलों'[2] का सीना तान कर चलना बर्दाश्त नहीं कर सकते। जोतखी जी ठीक कहते थे—बार बार लाठी भाला दिखलाते हैं। हौसला बढ़ गया है। अब तो राह चलते 'परनाम पाती' भी नहीं करते हैं यादव लोग। कलिया कभी कभी चिढ़ाने के लिए 'नमस्कार' करता है। देह में आग लग जाती है सुन कर, लेकिन सिंघ जी क्या करें ? राजपूत टोली के नौजवान लोग भी ग्वालों के दल में ही धीरे धीरे मिल रहे हैं। अखाड़े में ग्वालों के साथ कुश्ती लड़ते हैं। रोज़ शाम को कीर्तन में भी जाने लगे हैं। हरगौरी ठीक कहता था—यदि यही हालत रही तो पाँच साल के बाद ग्वाले बेटी माँगेंगे। तब काली कुर्ती वालों के बारे में जो हरगौरी कहता था, उन लोगों को बुला लिया जाये ! कहता था, लाठी भाला सिखानेवाला मास्टर आवेगा। 'संजोगक जी'[3] या 'सनचालस जी'[4] क्या कहता था, सो आवेंगे। हिन्दू राज—महराना प्रताप और शिवाजी का राज होगा। हरगौरी आज कल बड़ी बड़ी बातें करता है !

भंडारा के दिन सिंघ जी रूठे हुये खेलावन सिंह यादव को घर से जबर्दस्ती खींच कर ले गये थे, लेकिन खेलावन सिंह का मन रूठा ही हुआ था। जोतखी काका रोज आते हैं। उन्होंने कहा है, सकलदीप को अठारह साल की उम्र में माता या पिता का 'बिजोग' लिखा हुआ है। सकलदीप का यह सत्रहवाँ जा रहा है। सकलदीप की माँ बेटे का गौना करवाने के लिये रोज 'तकादा' करती है। बेटे को 'वोकील' बनाने की इच्छा शायद काली माई पूरी नहीं होने देगी।·····गौना के बाद फिर क्या पढ़ेगा? माता पिता 'बिजोग'?·····बालदेव को सारी दुनिया की भलाई तो सूझती है, मगर जिसका नमक खाता है उसके लिए एक तिनका भी तो सोचे। दिन भर तहसीलदार के यहाँ बैठा रहता है और शाम को कीर्तन! कमला किनारे वाले एक 'जमा' में कलरु पासवान के दादा का नाम क़ायमी बटैयादार की हैसियत से दर्ज है। बालदेव से कहा कि कलरु से कह सुन कर 'सुपुर्दी' लिखवा दो या 'रजिस्ट्री' करवा दो तो कान ही नहीं दिया। हलवाहा गोनाय ततमा कल से हल जोतने नहीं आता है। कहता है, पिछले साल का बक़ाया साफ़ कर दीजिये तो हल उठावेंगे। बालदेव टुकुर टुकुर देखता रहा कुछ बोला भी नहीं, उलटे हम से बहस करने लगा, ग़रीब लोगों का दरमाहा नहीं रोकना चाहिये भाई साहब·····।

जोतखी जी की, अठारह साल की नवबधु कनचीरावाली के पेट में रोज खाने के बाद दर्द हो जाता है। पिछले एक साल से वह खाने के बाद पेट पकड़कर सो जाती है। इस साल तो और भी दर्द बढ़ गया है।···डागडरी दवा? नहीं, नहीं। डागडर तो पेट टीपेगा, जीभ देखेगा, आँख की पपनियाँ उलटा कर देखेगा, पेसाब और पाखाना के बारे में पूछेगा। सायद लहू भी जाँच करे। इधर वह रोज कहती है, डागडर बाबू ने कोयरी टोला की छोटी चम्पा को एक ही 'जकशैन' में आराम कर दिया है। इसी तरह उसके पेट में भी दर्द रहता था।····· औरतों को समझाना बड़ा कठिन काम है। सभी औरतें एक समान।

जो जिद्द पकड़ेगी, पकड़े रहेगी। जोतखी जी को अपनी चार स्त्रियों का अनुभव है। पहली बेचारी को तो सिर्फ़ मेला बाज़ार देखने का रोग था। कोई भी मेला नहीं छोड़ती थी वह। जहाँ मेला आया कि जोतखी जी के तीसों दिन परमानन भा की ख़ुशामद करने में ही बीतते थे। परमानन की भैंसागाड़ी पर ही मेला जायेगी·····। परमानन बेचारा ख़ुद गाड़ी हाँक कर मेला ले जाता था, कभी भाड़ा नहीं लिया। आख़िर बेचारी की मृत्यु भी मेले में ही हुई। उस साल अर्धोदय के मेले में बहुत ज़ोरों का हैज़ा फैला था।·····दूसरी को हुक्का पीने की आदत थी। ब्राह्मणी का हुक्का पीना? लेकिन जोतखी जी क्या करते—औरत की जिद्द। जब वह बीमार पड़ती थी तो बहुत बार जोतखी जी को ही हुक्का तैयार कर देना पड़ता था।·····पुरानी खाँसी से खाँसते खाँसते वह भी मर गई। तीसरी को इस बात की जिद्द लग गई थी कि वह गाँव के लड़कों से हँसना बोलना नहीं बंद करेगी।···और कनचीरावाली को डागडरी दवा की जिद्द लग गई है। एकमात्र पुत्र रामनारायण तो कुपुत्र निकला। 'बिदापत' नाच करता है। ततमा पासवानों के साथ रहता है। सारी ब्राह्मण मंडली में उसकी शिकायत फैल गई है। कोई बेटी देता ही नहीं। जोतखी जी क्या करें! हाथ की 'उर्ध्वरेखा' तो सीधे तर्जनी में चली गई है लेकिन कुंडली के दसम घर में 'शनि' है। समझाते समझाते थक गया कि अपना नाम रामनारायण मिश्रः कहा करो। लेकिन वह भी गँवारों की तरह—'नामलरैन' ही कहता है।··· रामनारायण के साथ कनचीरावाली को एक दिन इसपिताल भेज दें? घर पर बुलाने से तो डागडर फ़ीस लेगा।

लरसिंह दास गाँव के घर घर में जाकर पंचों से कह रहा है—आचारज गुरु आ रहे हैं। मठ का अधिकारी महंथ वही है। उसी को 'चादर टीका' मिलनी चाहिये। महंथ की रखेलिन या दासिन को मठ के मामले में कुछ बोलने का अधिकार नहीं। रामदास तो भैंसवार है। इतने बड़े मठ को चलाना मूरख आदमी के बूते की बात नहीं। वह 'बीए' पास

है। अंग्रेजी में ही बीजक बाँचता है। इसीलिए तो वह 'बाबड़ी'[५] केश रखता है, धोती कुर्ता पहनता है और आधी मूँछ कटाता है।..... मठ पर एक स्कूल खोलेंगे, गाँव वालों की भलाई करेंगे। आपलोग बुद्धिमान आदमी हैं, खुद विचार कर देख सकते हैं। दासिन रखेलिन मठ को बिगाड़ देती है। साधू-धरम को भ्रष्ट कर देती है। आपलोग खुद विचार कर देख सकते हैं।

तंत्रिमा टोले में पंचायत हुई है। बंदिश हुई है—तंत्रिमा टोले की कोई औरत अब बाबू टोला के किसी आँगन में काम करने नहीं जायेगी। बाबू-बबुआन लोग शाम को गाँव में आवें, कोई हर्ज नहीं। किसी की 'अंदर हवेली' में नहीं जा सकते। मजदूरी में जो एक आध सेर मिले, उसी में सबों को 'संतोख' करना होगा। बालाई आमदनी में कोई बरकत नहीं। नोखे और उचित दास 'छड़ीदार' हुआ है। जिसे चाल से बेचाल देखेगा, बाँस की छड़ी से पीठ की चमड़ी उधेड़ लेगा।

तंत्रिमा लोगों की इस बंदिश के बाद गहलोत छत्री, कुर्म छत्री, पोलिया टोले, धनुखधारी और कुशवाहा छत्री टोले के पंचों ने भी ऐसी ही व्यवस्था की है।...सिर्फ जनेऊ लेने से ही नहीं होता है, करम भी करना होगा। जाये तो कोई बाबू कभी संथाल टोली में, शाम या रात को! उनकी औरतों से कोई दिल्लगी भी कर सकता है?...संथालों के तीर पर जहर का पानी चढ़ाया रहता है।

कुर्म छत्री टोले के 'लौजमानों' ने कल रात को शिवशंकर सिंह को बेपानी कर दिया। झुबरी मुसम्मात का घर तो टोले के एक छोर पर है न! सिपैहिया टोली की बाँसबाड़ी के ठीक बगल में। लेकिन शिवशंकर सिंह को क्या मालूम कि बाँस की झाड़ियों में छोकरे पहले से ही छिपे हुये हैं।...झुबरी मुसम्मात को दस रुपये 'जरिमाना' हुआ है। जहाँ से दे, देना तो होगा ही। नहीं तो 'हुक्का पानी' बंद। शिवशंकर सिंह से रुपया लेकर दे। इसी बार लालबाग मेला में 'पंचलैट'[६] खरीद होगा। बिना 'पंचलैट' वाली पंचायत की क्या क़ीमत!...'लैट' के दाम

में बीस रुपैया और कम है। एक दिन, फिर बाँसबाड़ी में एक घंटा मच्छड़ कटवाना होगा, और क्या ?

कालीचरन का अखाड़ा आजकल खूब जमता है। शाम को कीरतन भी खूब मचता है। नया 'हरमुनियाँ' खरीद हुआ है। गंगा जी के मेले से 'गंगतीरिया'[७] ढोलक लाया गया है। खूब 'गम्हड़ता' है।

बालदेव जी को कीरतन तो पसन्द है लेकिन आखाड़ा और कुश्ती को वे खराब समझते हैं।·····शरीर में ज़्यादा बल होने से 'हिंसाबाद' करने का खौफ़ रहता है। असल चीज़ है बुद्धि। बुद्धि के बल से ही 'गाँधी महत्मा जी' ने अंग्रेज़ों को हराया है। गाँधी जी के देह में तो एक चिड़िया के बराबर भी मांस नहीं।···काँग्रेस के और लीडर लोग भी दुबले पतले ही हैं।

लेकिन कालीचरन का अखाड़ा बंद नहीं हो सकता! ढोल की आवाज़ में कुछ ऐसी बात है कि कुश्ती लड़ने वाले नौजवानों के खून को गर्म कर देती है।

ढाक ढिन्ना, ढाक ढिन्ना!

शोभन मोची ने ढोल पर लकड़ी की पहली चोट दी कि देह कसमसाने लगता है।

ढिन्ना ढिन्ना, ढिन्ना ढिन्ना···!

अर्थात्—आजा, आजा, आजा, आजा !!

सभी अखाड़े में आये। काछी और जाँघिया चढ़ाया, एक मुट्ठी मिट्टी लेकर सिर में लगाया और "अज्ज्ज्जा" कह कर मैदान में उतर पड़े। कालीचरन "आ-आ-आली" कह कर मैदान में उतरता है। चम्पावती मेला में पंजाबी पहलवान मुश्ताक़ इसी तरह 'आली' (या अली) कह कर मैदान में उतरता था।

···तब शोभन ताल बदल देता है—

चटधा गिड़धा, चटधा गिड़धा!

···आजा भिड़जा, आजा भिड़जा!

अखाड़े में पहलवान पैंतरे भर रहे हैं। कोई किसी को अपना हाथ भी छूने नहीं देता है। पहली पकड़ की ताक में है। वह पकड़ा·····

धागिड़ागि, धागिड़ागि, धागिड़ागि।

···कस कर पकड़ो, कस कर पकड़ो!

चटाक चटधा, चटाक चटधा।

···उठा पटक दे, उठा पटक दे!

गिड़ गिड़ गिड़ धा, गिड़ धा, गिड़ धा।

···वह वा, वह वा, वाह बहादुर!

पटक तो दिया, अब चित्त करना खेल नहीं! मिट्टी पकड़ लिया है। सभी दाव के पेंच और काट उसको मालूम हैं!

ढाक ढिन्ना, तिरकिट ढिन्ना···।

···दाव काटो, बाहर हो जा!

वाह बहादुर! दाव काट कर बाहर निकल आया। फिर, धा—चट गिड़ धा! आजा भिड़ जा!

ढोल के हर ताल से पैंतरे, दाव, पेंच, काट और मार की बोली निकलती है।

'कालीथान' में पूजा के दिन इसी ढोल की ताल एकदम बदल जाती है। आवाज भी बदल जाती है—धागिड़ धिन्ना, धागिड़ धिन्ना।

···जै जगदम्बा! जै जगदम्बा!!

गाँव की रक्षा करो माँ जगदम्बा!

(१) घूस देकर (२) बदमाशों (३) संयोजक जी (४) संचालक जी (५) फैशनेबल कोच (६) पेट्रोमैक्स (७) गंगा स्नान के मेले का।

—चौदह

"चढ़ली जवानी मोरा अंग अंग फड़के से
"कब होइहैं गवना हमार रे भउजिया—S—S—S!"

पक्की सड़क पर गाड़ीवानों का दल भउजिया का गीत गाते हुये गाड़ी

हाँक रहा है। "···आँ आँ। चल बढ़के। दाहिने—हाँ, हाँ, थोड़ा देख कर भी भड़कता है! साला·····।"

"हथवा रंगाये सैंयाँ देहरी बैठाई गइले

"···फिरहू न लिहले उदेश रे भउजिया–S–S–S–S!"

ननदिया के दिल की हूक गाड़ीबानों के गले से कूक बन कर निकल रही है। भउजिया?···कमली की कोई भौजी नहीं। किससे दिल की बात कहे। भउजिया की ननदिया की तो शादी हो चुकी है, कमली का तो हाथ भी पीला नहीं हुआ है।···'प्रेमसागर' में मन नहीं लगता है—'श्री सुकदेव जी बोले कि हे राजा एक दिन कृष्ण कन्हैया बंशी बजैया कदम के बिरिच्च पर बैठके बंशी बजाये रहे थे।'···चीरहरण लीला की तस्वीर को देख कर कमली का जी न जानें कैसा कैसा करने लगता है। वह 'प्रेमसागर' बंद कर देती है।

·····सुबह प्यारू आया था। कितना गो आदमी है प्यारू····· आज क्या बना था प्यारू? डाक्टर साहब आज ठीक समय पर खाये थे या शीशी बोतल लेकर पड़े हुये थे?···प्यारू हँस कर हमेशा की तरह जवाब देगा—अरे, क्या पूछती हो दैया! इस आदमी का हमको कोई 'तालपता'[1] नहीं लगता है। रोज कहेंगे कि प्यारू आज ज़रा खाना जल्दी बनाओ, और खाते खाते फिर वही रात में ग्यारह बजे और दिन में दो बजे। आज बंधा कोबी का झोल बना था। झोल क्या खायेंगे? मिर्च मसाला छूते भी नहीं हैं। खाने का तो कोई 'सौख' नहीं है, जो बना दो खा लेंगे।···और शीशी बोतल? क्या पूछती हो दैया! कल से मच्छड़, खटमल और तेलचट्टे के पीछे पड़े हुये हैं। आज संथाल टोली के जोगिया माँझी को कह रहे थे—चार खरगोश और एक दर्जन चूहा पकड़ कर दे जाओ। पूरा इनाम मिलेगा।

प्यारू को गाँव भर की औरतें प्यार करती हैं। गाँव भर में उसकी मामी, मौसी, नानी, दादी और काकी है। सभी जवान लड़कियों को वह 'दैया' कहता है।

·····डाक्टर की मुस्कुराहट बड़ी जानलेवा है। जब आवेगा तो मुस्कुराते हुये आवेगा—"डर लगता है?"·····हाँ हाँ डर लगता है तो तुमको क्या? तुमको तो मजा मिलता है न। मुस्कुराये जाओ····· गले में 'आला' लटकाये फिरते हैं बाबू साहब। छाती और पीठ में लगा कर लोगों के दिल की बीमारी का पता लगाते हैं। झूठ! इतने दिन हो गये, मेरे दिल की बात, मेरी बीमारी को कहाँ जान सके? या जानबूझ कर अनजान बनते हो डाक्टर! तुम्हारी मुस्कुराहट से तो यही मालूम होती है।·····अच्छा डाक्टर! सच सच बताना, तुम क्यों मुस्कुराते हो?···तुम मुझे जलाने के लिए इस गाँव में क्यों आये? नहीं, नहीं। तुम नहीं आते तो मैं पागल हो जाती। रोज सपने में, कमला नदी की बाढ़ में मैं बह जाती थी। बड़े बड़े साँप! तरह तरह के साँप काटने दौड़ते थे। तुम आये, मैं डूबते डूबते बच गई।···मेरी आँखों की पपनियाँ उलट कर देखो, मेरी पीठ पर आला लगा कर देखो, मेरे दिल की बात सुनो।·····तुम डाँटते हो, बड़ा अच्छा लगता है। तुम मुझे सूई से डराते हो, चिढ़ाते हो!·····कितना अच्छा लगता है मुझे।··· फिर मीठी दवा भेज दूँगा?···हाँ जी, भेज देना, पूछते हो क्या? तुम्हारी बोली क्या कम मीठी है।···लेकिन तुम रोज एक बार जरूर आया करो। नहीं आओगे तो मुझे डर लगेगा।···सिपैहिया टोली की कुसमी कहती थी, डाक्टर मुझ से भी पूछता था—मीठी दवा चाहिये क्या?—मैं नहीं विश्वास करती। डाक्टर ऐसा नहीं है। कुसमी झूठ बोलती है। मीठी दवा और किसी को मिल ही नहीं सकती है। डाक्टर! खबरदार! कुसमी बड़ी चालबाज लड़की है। बहुतों को बदनाम किया है उसने। हरगौरी उसका मौसेरा भाई है लेकिन····· जाने दो, क्या करोगे सुन कर। उसकी ससुराल फॉरबिसगंज में है। घरवाला एक मारवाड़ी का सिपाही है। रात भर सिपाही पहरा करता है और कुसमी 'बैसकोप' देखने जाती है।·····

·····श्री सुकदेव जी बोले कि हे राजा एक दिन यशुमती सभी

गवालिनों को बुलाये……।'

"कमली !"

"माँ !"

पढ़ना बंद करो। डाक्टर बाबू ने मना किया है न ! दवा पी लो। मैं तुम्हारी किताब बक्से में बंद कर, ताला लगा दूँगी। हाँ, ऐसे तुम नहीं मानोगी।"

"पढ़ने से क्या होगा माँ ?"

"लड़की की बात तो सुनो जरा ! पढ़ने से क्या होगा सो तो डाक्टर से पूछना।"

"डाक्टर बाबू से ?…माँ, तुम्हारा डाक्टर क्या है जानती हो ? माटी का महादेव !"

माँ ठठा कर हँस पड़ती है—"एक एक बात गढ़ कर निकालती है तू। अच्छा, ठहर। आज आने दे डाक्टर बाबू को।"

माँ–बाप के नैनों की पुतली है कमला। तहसीलदार साहब बेटी की इच्छा के ख़िलाफ़ कुछ भी नहीं कर सकते। माँ, कमला की हर आवश्यकता को बिना मुँह खोले ही पूरा कर देती है, बाप ने ख़ुद पढ़ाया लिखाया है। रामायण, महाभारत, नल-दमयंती, सावित्री सत्यवान, पार्वती-मंगल और शिवपुराण। कमला रोज़ शिव पूजती है—ऊँ शिवशंकर सुखकर, नाथ वरदायक महादेव।……महादेव।…मिट्टी का महादेव !!

"डाक्टर बाबू ! कमली आपको माटी का महादेव……।"

"माँ, चुप रहो" —कमली माँ से लिपट कर हाथों से मुँह बंद कर देती है—"पूछो न अपने डाक्टर से, ख़रगोश पाल कर क्या करेंगे ?"

डाक्टर कोई जवाब नहीं देता है। सिर्फ़ मुस्कुराता है। फिर गंभीर होते हुये कहता है—"अब तो सूई देनी ही पड़ेगी। दवा से बेहोशी तो दूर हो गई लेकिन पागलपन……।"

सभी ठठा कर हँस पड़ते हैं—तहसीलदार साहब, माँ और प्यारू।

कमली का चेहरा लाल हो जाता है।·····मैं आज ख़ून का दबाव नहीं जाँच कराऊँगी। नहीं। नहीं। ठीक है। हाँ मैं पगली हूँ।

"दीदी!" —तहसीलदार साहब बेटी को दीदी कह कर पुकारते हैं—"आओ! डाक्टर साहब को देर हो रही है।"

ब्लड प्रेशर जाँच करते समय डाक्टर गंभीर होकर यंत्र की ओर देखता है। कमली तिरछी निगाहों से, चोरी चोरी डाक्टर को देखती है—हाँ जी, मुझे पगली कहते हो! लेकिन मुझे पगली बना रहा है कौन?

गाँव में सिर्फ़ तहसीलदार साहब चाय पीते हैं। बढ़िया चाय की पत्ती व्यवहार करते हैं। डाक्टर यहाँ हर शाम को चाय पीने आता है। कमला की माँ का अनुरोध है—रोज़ शाम को चाय पी जाइये।

तहसीलदार साहब कहते हैं, डाक्टर तो अपने 'समौंग' की तरह हो गया है। डाक्टर को भी तहसीलदार साहब से घनिष्ठता हो गई है। तहसीलदार साहब से गाँव घर और जिले की बहुत सी नई पुरानी बातें सुनने को मिलती हैं। '''·····राजपारबंगा स्टेट के 'जरनैल मैनेजर' डफ़ साहब कैसा आदमी है। आजकल एकदम हिन्दुस्तानी हो गया है। धोती कुर्ता पहनता है। कभी कभी रोरी का टीका भी लगाता है। राजपारबंगा के कुमार जी उसकी मुट्ठी में हैं। डफ़ साहब की बेटी जब तक रहेगी कुमार जी डफ़ साहब को नहीं हटा सकते हैं।·····महारानी चम्पावती जाति की सुसहरनी थीं।'''राजा भूपत सिंह को 'मेम रानी' से दो लड़के हैं। बड़ा ऐयाश है राजा भूपत! पोलो का 'जब्बड़'[२] खिलाड़ी! दार्जिलिंग रेस में हर साल उसका घोड़ा जीतता है। आजकल भी बाईस घोड़े हैं। बड़ा ऐयाश! पुन्याह में बनारस, इलाहाबाद और लखनऊ से इतनी बाई जी आती हैं कि तीन दिन तीन रात महफ़िल जमी रहती है। एक मिनट भी बंद नहीं होती।·····पैरिस की शराब पीता है। असल राजा तो वही है। राजपारबंगा वाला तो मक्खीचूस है।'''जिला का सबसे बड़ा किसान है—भोला बाबू! तीस हज़ार बीघा ज़मीन है! रहुआ 'इस्टेट' के गुरुबंशी

बाबू भी किसान ही हैं। उनकी बात निराली है। दाताकर्ण हैं। 'वारफ़न' में सबसे ज़्यादे रुपैया दिया और काँग्रेस के 'सहायताफ़न' में भी सबसे ज़्यादे रुपैया दिया और इसी को कहते हैं दुनिया का इन्साफ़। दिल खोल कर दान देने का सुफल क्या मिला है, जानते हैं? लोगों ने झूठमूठ अफ़वाह फैला दिया है कि 'नोट' बनाता है। अरे भाई, नोट तो बनाती है उसकी 'कोशी गंगा' किनारे की हज़ारों बीघा ज़मीन। जिसमें न हल लगता है न बैल, न मिहनत न मज़दूरी! बाढ़ का पानी हटा और कीचड़वाली धरती पर चना, खेसारी, मटर, सरसों, उरद बग़ैरह छींट दिया। बस छींटने में जितनी मिहनत लगे। कोशी और गंगा के पानी से नहाई हुई धरती माता दिल खोल कर अपना धन लुटा देती है।.....ज़िला काँग्रेस के सबसे बड़े लीडर हैं शिवनाथ चौधरी जी।.....ओ, आप तो जानते ही हैं उनको! वह भी बड़े किसान हैं।.....पूर्णिया कचहरी में जो वकालत सीसी बाबू कर गये, वह अब कोई वकील क्या करेगा? हाइकोर्ट के 'बालिस्टर' भी उसके बनाये हुये 'मिसिल' को नहीं काट सकते थे। लेकिन फ़ौजदारी कचहरी में कभी पैर नहीं रखते थे। एक बार राजा भूपत दस हज़ार फ़ीस देने लगा, ख़ूनी केस था। सीसी बाबू ने अपना 'प्रण' नहीं तोड़ा, कचहरी नहीं गये। काग़ज़ पढ़ कर सिर्फ़ एक जगह एक लाइन काट दिया और एक जगह एक अक्षर जोड़ दिया। राजा भूपत बेदाग़ छूट गया। ...अब तो न वह अयोध्या है और न वह राम।"

"बाबा!"

"दीदी!"

"डाक्टर साहब आज यहीं खायेंगे।"

"प्यारू से झगड़ा मोल लेना चाहती है।"

"प्यारू से कह दिया है।"

"तब डाक्टर साहब!...हमारी तो कभी हिम्मत नहीं हुई। दीदी कहती है, यदि 'शरधा' हो तो.....।"

"श्रद्धा अश्रद्धा की बात नहीं।···बात यह है मड़नी, फिर साल भर की
"मिर्च मसाला नहीं खाते"—कमली बीच में के खाये हुये क़र्ज़ का
"उबाली हुई चीज़ें खायेंगे। यही न?" फिर सादा काग़ज़
डाक्टर समझ रहा है—रोग दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है। भरना रखो
है।·····शीला रहती तो तुरत कुछ कह देती। शायद मन का चक्र
'भावात्मक संक्रमण' अथवा 'प्रत्यावर्तन' के मोड़ पर रोग पहुँच
गया है।

(१) ठौर ठिकाना (२) ज़बर्दस्त।

—पन्द्रह

सुमरित दास को लोग लबड़ा आदमी समझते हैं, लेकिन समय पर वह पते की बातें बता जाता है। आजकल उसका नाम पड़ा है—'बेतार का ख़बर'। संक्षेप में—'बेतार'। बात छोटी हो या बड़ी, कोई भी नई बात बेतार तुरत घर घर में पहुँचा देता है। तहसीलदार का वह 'रोटिया'[1] गवाह है। गवाही देते देते वह बूढ़ा हो गया है। 'बसूल तगादा' के समय तहसीलदार के साथ रहता है। किसी को दाख़िल ख़ारिज करवानी है, किसी रैयत की ज़मीन में झंझट लगा है या किसी को बंदोबस्ती लेनी है—तहसीलदार से पहले सुमिरत दास से बातें करे। वह रैयतों को एकान्त में ले जाकर कहेगा—तहसीलदार तो हमारी मुट्ठी में हैं। हमको 'पानसुपारी' खाने के लिये कुछ दो या नहीं दो, तुम्हारी मर्ज़ी, लेकिन तहसीलदार साहब को तो···वाजिब जो है सो·····।

रैयतों से छोटी छोटी चीज़ें तहसीलदार साहब ख़ुद कैसे माँग सकते हैं! वह सुमरित दास ही माँगता है—कद्दू, खीरा, बैगन, करैला, कबूतर, हल्दी, मिर्चा, साग, मूली और सरसों का तेल। वह सब तो सुमरित दास अपने लिये लेता है। लेकिन चीज़ें लेते समय सुमरित दास युक्ति से एकान्त में कहता है—"अरे भाई, ये सब चीज़ें मैं लेकर क्या

बाबू भी किसान ही हैं। न, न चुल्हा है न चौका। एक पेट के लिए 'वारफ़न' में सबसे ज़्यादे यह सब तो.....।" कभी एक पैसे की तरकारी भी सबसे ज़्यादे कहाँ खरीदी नहीं जाती। सुमरित दास भला मँगनी दिल खोल कर उसकी हालत खराब हो गई है तो क्या वह खान्दान की ने भी लुटा देगा। उसके परदादा के दरबाजे पर हाथी झूमता नोट। सब 'करम' का फेर है।.....सुमरित दास के पेट में कोई बात नहीं पचती। कालीचरन कहता है—मुँह में दाँत है नहीं, बात अटके भी तो कैसे? बेतार!

बेतार को बहुत सी नई बातें मिल गई हैं। पहली बात तो यह कि पच्छिम से मठ पर आचारज गुरु आ रहे हैं, लरसिंघ दास को कलक्टर साहब ने भी महंथ मान लिया है। दूसरी बात यह कि कल से 'खम्हार'[२] खुलने वाला है, बीच में भदवा पड़ गया था। तहसीलदार साहब ने कहा है—कल शुभ दिन है।

तहसीलदार साहब के खम्हार के साथ ही गाँव के और किसानों का खम्हार खुलता है। तहसीलदार साहब का खम्हार, बड़ा खम्हार कहलाता है। 'जरी-दहाड़' से बच कर भी दो हज़ार मन धान होता है।

.....हाँ तीसरी बात तो कहना भूल ही गया बेतार...। वह लौट कर सुना जाता है—"कपड़ा, तेल, और चीनी की पुर्जी बाँटने का काम बालदेव को मिला है। नाम तो उसमें डागडर बाबू का भी है, लेकिन डागडर बाबू कहते हैं—हमको फुर्सत नहीं। हमसे कहते थे कि हमारा काम आपही कीजिये दास जी। हम बोले कि हमको भी फुर्सत कहाँ है.....?"

आचारज गुरु के आने की खबर का कोई मोल नहीं भी हो, बाक़ी दो बातें—यदि सच हैं—तो वास्तव में क़ीमती हैं।

बात सच है। बालदेव जी भी कहते हैं, बात ठीक है।

खम्हार! ...साल भर की कमाई का लेखा जोखा तो खम्हार में ही

होता है। दो महीने की कटनी, एक महीना मड़नी, फिर साल भर की खटनी। दबनी मड़नी करके जमा करो, साल भर के खाये हुये क़र्ज़ का हिसाब करके, चुकाओ। बाक़ी यदि रह जाये तो फिर सादा काग़ज़ पर अंगूठे की टीप लगाओ। सफ़ाई करनी है तो बैल गाय भरना रखो या हलवाहा चरवाहा दो। फिर क़र्ज़ खाओ। ···खम्हार का चक्र चलता रहता है। खम्हार में बैलों के झुंड से दबनी मड़नी होती है। बैलों के मुँह में जाली का 'जाब' लगा दिया जाता है। ग़रीब और बेज़मीन लोगों की हालत भी खम्हार के बैलों जैसी है। ···मुँह में जाली का 'जाब'। ···लेकिन खम्हार का मोह? यह नहीं टूट सकता। 'भुरुकवा' उगते ही खम्हार जग जाता है। सूई की तरह गड़ने वाली, माघ के भोर की ठंडी हवा का कोई असर देह पर नहीं होता। ओस और पाले से तो देह 'शून्न' हो जाता है। जब हाथ से अपनी नाक भी नहीं छूई जाती है तब घूर में फिर से सूखे पुआल डाल कर नई आग पैदा की जाती है। घूर में शकरक़न्द पकता रहता है। घूर के पास देह गर्माने की बारी जिसकी रहती है, वह प्रातवी गाता है—"हरि बिनू के पूरिहैं मोर सुआरथ, हरि बिनू के।···" अथवा—"निरबल के बल राम हो संतो, निरबल के बल राम।"

दिन भर धान झाड़ फटक कर जमा किया। फिर धान के बोझे छींट दिये गये और शाम से फिर दबनी मड़नी शुरू हो गई। शाम को घूर के पास 'लोरिक' या कुमर 'बिज्जेभान' की गीत-कथा होती है—

"अरे राम राम रे दैबा रे इसर रे महादेव,
"बामे ठाढ़ी देवी दुरगा दाहिने बोले काग
"अपन मन में सोच करैये मानिक सरदार
"बात से नाहीं माने बीर कनोजिया गुआर···।"

कपड़ा, तेल और चीनी की पुर्ज़ी कमलदाहा के 'कमरुद्दी' बाबू बाँटते थे। मेरीगंज से कमलदाहा दस कोस है। दस कोस जाना तो कोई बड़ी बात नहीं लेकिन पुर्ज़ी पाना बड़े भाग की बात समझी जाती है।

'कमरुद्दी' बाबू कुँजड़ा हैं, बैगन की बिक्री से ही ज़मींदार हुये हैं। 'मुस्लींग' के लीडर हैं। 'कटिहार पूर्णिया मोटर रोड' के किनारे में ही घर है। हमेशा हाकिम हुक्काम उनके यहाँ आते रहते हैं। महीने में साठ मुर्गियों का खर्च है। लोग कहते हैं कि नये 'इसडियो' जब आये तो सारे इलाक़े में यह बात मशहूर हो गई कि बड़े कड़े हाकिम हैं। किसी के यहाँ न तो जाते हैं और न किसी का 'पान' ही खाते हैं। लेकिन 'कमरुद्दी' बाबू भी पीछा छोड़ने वाले आदमी नहीं। 'इसडिओ' का 'डलेबर' मुसलमान है। उसको 'कुरान की कसम' देकर 'पान-सुपाड़ी' खाने के लिए दिया। बस एक बार कटिहार से लौट रहे थे इसडिओ साहब, ठीक कमरुद्दी बाबू के घर के सामने आकर मोटरगाड़ी खराब हो गई। दस बजे रात को इसडिओ साहब और कहाँ जाते? .....उसके बाद से तो कमरुद्दी बाबू आँख मूँद कर 'बिलेक' करने लगे। एक बार 'पुरैनिया मिटिन' में 'कंगरेसी' खुशाय बाबू ने हाकिम से कहा—पबलिक बहुत शिकायत करती है। कमरुद्दी बाबू ने हँसते हुये पूछा—"हिन्दू पबलिक या मुसलमान?" हाकिम भी समझ गये—कमरुद्दी बाबू लीगी हैं, इसीलिए लोग झूठमूठ 'दोख' लगाते ...अब तो बालदेव जी पुजा देंगे। बालदेव जी को 'बिलैती' कपड़ा से क्या जरूरत। खद्दड़ को छोड़ कर दूसरे कपड़े को छूते भी नहीं।...छूते हैं? छूने में हर्ज नहीं।...

"जै हो गन्ही महतमा की जै हो।" ...कल खम्हार खुलेगा, पिछले साल तो खम्हार खुलने के दिन जालिम सिंह का नाच हुआ था। जालिम सिंह सिपैहिया ने एक डोमिन से शादी कर ली थी। ...लेकिन इस बार 'कीरतन' होना चाहिये। सुराजी कीर्तन! बेतार कहता है—इस बार 'बिदापत नाच' होगा। डागडर बाबू बिदापत नाच देखेंगे। ...तहसीलदार साहब तो हँसते हँसते लोट पोट हो गये। कितना समझाया कि डागडर बाबू, वह तो बहुत पुराना नाच है। खाली 'बिकटै'[४] होता है। डागडर बाबू कहने लगे—"बिदापत ही करवाइये।"

पासवान टोली के लिबड़ू पासवान को ख़बर दे दी गई है, लिबड़ू नाच का 'मूलगैन' है। मूलगैन अर्थात् म्युज़िक डायरेक्टर।

कालीचरन का कीरतन नहीं होगा? अच्छा कोई बात नहीं, डाक्टर साहब को एक दिन कीरतन सुना देंगे।

बालदेव जी को 'डागडर बाबू' की बुद्धि पर 'अचरज' होता है। —बिदापत नाच क्या देखेंगे? बड़ा ख़राब नाच है। कोई भला आदमी नहीं देखता। ख़राब ख़राब गीत गाता है। नाच ही देखने का मन था, तो तहसीलदार साहब से कह कर सिमरबनी गाँव की 'ठेठर कम्पनी' को बुला लेते। आने जाने और पचीस आदमी के खाने का ख़र्चा क्या तहसीलदार साहब नहीं दे सकते थे! ···गाँव वाले देखते तो आँखें खुलतीं। सिमरबनी की ठेठर कम्पनी मशहूर है, महाबीर जब 'जुजोधन' का 'पाठ' लेकर हाथ में 'तरवार' लेकर गरजते हुये निकलता है, तो एक कोस तक उसकी बोली साफ़ सुनाई पड़ती है—"बस बन्द करा दो यह मृदंग बाजा हमको अच्छा नहीं लगता।"

धिन्ना धिन्ना धिन्ना निन्ना निन्ना!

धिन तक धिन्ना, धिन तक धिन्ना!

'बिदापत' नाच का मृदंग 'जमीनका' दे रहा है—चलो! चलो! चलो!!

धिनक धिनक धा तिरकिट धिन्ना।

धिनक धिनक धा तिरकिट धिन्ना।

गाँव भर के लोग तहसीलदार साहब के खम्हार में जमा हुये हैं। शामियाना तान दिया गया है। शामियाना खचमखच है। डाक्टर बाबू, सिंघ जी और खेलावन सिंह यादव कुर्सी पर बैठे हैं! कालीचरन अपने दल के साथ है। जोतखी जी नहीं आये हैं। सिंघ जी ने कहा—"आज भी उनके दाँत में दरद है भाई!" —सभी ठठा कर हँस पड़ते हैं। सभी जोतखी जी के नहीं आने का कारण जानते हैं—उनका बेटा 'नामलरैन' भी बिदापत नाच का समाजी है। ···बाभन नाचे तेली

तमाशा देखे ! कुपुत्र निकला राम नारायण । शिव हो ! ···बालदेव जी नहीं आये हैं, कोई भला आदमी नहीं देखता बिदापत नाच । ···अबे मृदंग पर 'चलन्ती' बज रहा है—

तिरकिट धिन्ना तिरकिट धिन्ना
धिन तक धिन्ना धिन तक धिन्ना
धिनक धिनक धा,
धिक् धिक् तिन्ना !

"ओ··· ! होय··· ! नायक जी !"

'बिकटा'[५] आया । भीड़ में हँसी की पहली लहर खेल जाती है ! सैकड़ों मुक्त हृदय की हँसी ! ···पायल की झनकार !!

मुँह पर कालिख चूना पोत कर, फटा पुराना पाजामा पहन कर लौकाय दास बिकटा बन गया है । वह जन्मजात बिकटा है ! भगवान ने उसे बिकटा ही बना के भेजा है । ऊपर का ओंठ त्रिभुजाकार कटा है । सामने के दाँत हमेशा निकले रहते हैं और शीतला माई ने एक आँख ले ली है । बात गढ़ने में उस्ताद है ।

"···ओ ! होय ! हो नायक जी !"

"क्या है ?"

"अरे, यह फतंग फतंग क्या बज रहे हैं ?"

"अरे, मृदंग बज रहा है ! यह करताल है, यह झाल है ।"

"सो तो समझा ।—यह धड़िंग धड़िंगा, गनपतगंगा क्या बजाते हैं ?"

"नाच होगा नाच । विद्यापति नाच ।"

"ओ, हम समझे कि 'लीलामी'[६] का ढोल बोल रहा है ।"

···धिन ताक धिन्ना धिन ताक धिन्ना ।

"आहे ! उत्तरहि राज से आयेल हे नटुकवा कि आहे मैया
"कि आहे मैया सरोसती है—परथमे बन्दोनि हे तोहार ।
"···हमहूँ मूरुख गँवार कि आहे मैया,
"सरोसती, भूलल आखर जोड़ि के आहे मैया,

"कंठे लीहै हे बास !"

धिन धिन धिन धिन्ना ता, तिरकिट धिन्ना तिन्ना ता।

"ओ···ओ—होय नायक जी।" —बिकटा जोर से चिल्ला उठता है! ताल भी कट चुका है। ठीक ताल काटने के समय बिकटा को चिल्लाना चाहिये। इस लिए मृदंग के ताल का ज्ञान बिकटा को होना ही चाहिये।

"तुम कैसा बेकूफ हो जी !"

"अरे हो नायक जी ! यह आपलोग किसका 'बंदना' कर रहे हैं ?"

···" हा हा ! हा ! ···हा हा हा !" ···हँसी की दूसरी लेकिन हल्की लहर।

"बेकूफ ! सुनते नहीं हो सरोसती माता का बंदना है !"

"यह सुरस्सु···सुरती···सुर···सुरसस्सती माता को तुम देखा है ? ···हमको तुम बेकुफ कहते हो ? बेकुफ तो तुम खुद हो। अरे, सरस्सती का बंदना तो 'पढ़ल पन्डित' लोग करता है।"

"···हा ! हा ! हा ! हा !" —भीड़ में खिलखिलाहट।

"तो हमलोग किसको बंदेंगे ?"

"ऊँह, तुम खाँटी चलानी घी हो। जिस चलानी घी की पूड़ी भंडारा में हुई थी जिसको खाकर हमारा पेट दस दिन खराब रहा था। ···बिना किसी मिलावट के तुम भी खाँटी बेकूफ मालूम होते हो ? इतना भी नहीं जानते ? सुनो ! जरा बजाने कहो—धिनक धिन्ना तिरकिट धिन्ना !"

"अरे दाल बंदो, भात बंदो, साग बंदो बथुआ।

—"यह तो हुआ कच्ची, सरकार ! अब जरा पक्की सुनिये—

"अरे चूड़ा बंदो, भूजा बंदो, रोटी बंदो मड़ुवा।"

···हा ! हा ! हा ! ···हा ! हा !···

"अब फल मेवा, सरकार !

"अरे गुलर बंदो, डुमर बंदो और बंदो अल्हुआ।"

···हा ! हा ! हा ! हा ! ···सैकड़ों खिलखिलाहट !

"हल बंदो, बैल बंदो और बंदो गइआ।

—"अब सबसे बड़ा भगवान!" —बिकटा मुँह बनाता है।

"चटाक पट पट पड़त सिर पर भागत बाप के भूतवा।

"सबसे बढ़ि के तोहरे बंदो मालिक बाबूक जूतवा!!"

—बिकटा खेलावन के पैर के 'सलमसाही' जूते को प्रनाम करता है!

डाक्टर साहेब तो अचरज से गुम हो गये हैं, एकदम खो गये हैं नाच में। ···इस बार नाच जमेगा। आखिर यह सब पुरानी चीज़ है, क्यों भाई! ···सब बात तो ठीक ही कहता है।···

धिक्का धिक्का, धिक्का तिक्का!—समाजी लोगों ने शुरु किया

"आहे लेल परबेश परम सुकुमारी हे,

"हँस गमन बिरखमान दुलारी हे···"

—मृदंग के ताल पर दबे पाँवों नटवा आता है। ताल पर ही चल कर सबसे पहले मृदंग को प्रणाम करता है, फिर 'झाल-करताल' को और अन्त में 'मूलगैन' (म्यूज़िक डायरेक्टर) लिबड़ू पासवान का पैर छूकर प्रणाम करता है। पोलिया टोली के छीत्तन दास का बेटा चलित्तरा लड़कियों की तरह लम्बा बाल रखता है। नाक में 'बुलाक' भी हमेशा पहने रहता है। वही नटवा है। अभी साज पोशाक पहन कर एकदम 'बाभिन' की तरह लग रहा है छौंड़ा। ···कान में 'कनफूल' किसका है? कमली दीदी का? ···वाह रे छौंड़ा, आज यदि यह कान का कनफूल बक्सीस में जीत ले तो समझें कि असल 'बिदपतिया' का चेला है। ···मृदंग बजाता है उचित दास! क्या कहा—असल बिदपतिया? ···हम सहरसा के गैनू मिरदंगिया के चेला के चेला हैं। ···जानते नहीं, गैनू मिरदंगिया एकबार अपने समाजी के साथ कहीं से नाच कर आ रहा था। चोर लोग जानते थे कि गैनू मिरदंगिया का 'समाजी' एक एक सौ रुपैया नकद, धोती, कुर्ता, गमछा वगैरह लेकर घर लौटता है! बस, ठट्ठी 'पाखर' के पेंड़ के पास चोरों ने घेर लिया गैनू मिरदंगिया को। वह पीछे पड़ गया था! दिसा मैदान के लिए सायद। गैनू मिरदंगिया ने क्या

किया ? बोलो तो ? ···नहीं जानते ! हा-हा ! मिरदंग पर थाप दिया । दाहिने 'पूरे' पर अंगुलियाँ फिरकी की तरह नाचने लगीं—धृकिट धिन्ना ना निन्ना ना निन्ना ना ना । —तो मृदंग के पूरे की सूखी चमड़ी मानो जी उठी—साफ आदमी की तरह बोली निकली—'ठुट्ठी पाखैर तर चोर घेरलक हो, चोर घेरलक ! —लिबहू दास का समाजी है, खेल नहीं ! नाच बेटा !···

धिरि नागि धिरिनागि धिरनागि धिनता ।

"आहे तन मन बदन मदन सहजोर हे,

"आहे दामिनी ऊपर···

"है, रे ! है रे ! है रे !" —बिकटा कलेजा पकड़ कर मुँह बनाता है ।

···धिनक धिनक ता, धिनक धिनक ता···

"आहे, दामिनी ऊपर उगलथ चान हे ।"

···धिरकिट धिरकिट धिन्ना ना···

बिकटा मूर्छित होकर गिर पड़ता है ।—"अरे बाप !"

"अरे क्या हुआ ?"

"अरे बाप !"

"अरे ! बोलो भी तो ? क्या हुआ ?"

"अच्छा नायक जी, एक बात बताइये । जल्दी बताइये । आस्मान का 'चान' यदि धरती पर उतर आया है तो धरती के चान को ऊपर जाना पड़ेगा ?"

"अरे धरती पर भी कहीं चान होता है ?"

"सुनिये जरा इसकी बोली ! इसीलिए न कहा था कि खौंटी चलानी थी हो । अजी हमारी तो एक ही बिजली बत्ती खराब है, तुम्हारी क्या दोनों खराब है ? ···आज कल रेलगाड़ी में सुनते हैं कि बत्ती नहीं जलती । पहले 'बिलेकोट' तब तो 'बिलेक मारकेट' ।" ···हा ! हा ! हा ! हा ! —साला कटिहार नानी के यहाँ बराबर जाता है । रेलगाड़ी

कौन भी गलती निकालता है। अंग भंग आदमी सारी दुनिया को अंग भंग ही देखता है। सुनो क्या कहता है, धरती का चान किसको बनाता है।

"·····अरे, भकुआ नायक जी, धरती का चान अपनी छतीसों 'कला' के साथ तुम्हारे सामने खड़ा है, चौंधिया गये हो क्या? जरा 'छट्ठम लैट' जलाकर देखो।"

···हा! हा! हा! हा!—साला अलबत बात बनाता है।

"छट्ठम लैट—नहीं जानते। देखो पंचम लैट तो यही है जो अभी पंच परमेसर के बीच में जल रहा है।···छट्ठम लैट तुम्हारे घर में आजकल जलता है! तेल मिलता ही नहीं—एक पटुआ के 'संठी' में आग लगा कर—हाथ में लेकर खड़ा रहो, भकभक 'गैशबती' की सी रोसनी होने लगेगी। हम आजकल यही करते हैं?···अच्छा आप ही लोग देखिये पंच परमेसर, हम से ज्यादे 'सुन्नर' यहाँ कोई है?"

"नहीं नहीं, आप तो कामदेव के औतार हैं"—सिंघजी कहते हैं।

हा! हा! हा! हा! हा! हा! नाचो रे चलितरा! आज 'मोहड़ा'* पड़ा है। जी खोल के नाच बेटा!···

·····धिनागि धिन्ना, तिरनागि तिन्ना
धिनक धिनता तिटकत ग-द-धा!·····
"आहे चलहु सखि सुखधाम, चलहु!
"आहे कन्हैया जहाँ सखि हे,
"रास रचाओल हे! चलहु हे चलहु!"
·····धिन्ना तिन्ना ना धि धिन्ना!·····
"आहे सिरि बिरनाबन कुंज गलिन में
"कान्हु चरावत धेनु,
"आहे मुड़ली जे टेढ़े बिरीछी के ओट्टे,
"आहे अब ग्रिहे·····"
"·····धिरिनागि धिरिनागि धिरिनागि···
"आहे! अब ग्रिहे रहलो नि जाये—चलहु हे चलहु।"

—ततमा टोली की औरतों के गिरोह में बैठी फुलिया का जी ऐंठता है।···अबे घिहे रहलो नि जाये!···

—तहसीलदार साहब की 'हवेली' की सामने वाली खिड़की खुली हुई है!···कमली दीदी भी देख रही है। नहीं देखेगी तो बक्शीस कैसे देगी?

देख बेटा! फिरकी की तरह ! 'पुरइन'[८] के फूल की तरह घाँघरी खिल जाये!

"अरे हो नायक जी! एक बात तो बताइये। वह हमको छोड़ कर कहाँ जा रही है? चलहु चलहु—कहीं मेला-तमासा है या भोज है? या कपड़ा की पुर्जी बटती है?"

"अजी वह तुम्हारे ही पास जा रही है। तुम्ही किसुनकन्हैया हो न। तुम्हारे रूप पर मोहित हो गई है।"

"ओ!···वही तो हम भी कहते थे कि हमको छोड़ कर कहाँ जा रही है! हम कन्हैया हैं, लेकिन कन्हैया के बाप का नाम तो 'नन्द' था और हमारे बाप का नाम उजाड़ू दास।"

·····हा—हा! हाहा!! हाहा!!·····

"अरे उल्लू! तुम्हारे बाप का नाम तो उजागिर दास था। तुम इसको खराब करके काहे बोलते हो?"

"उजागिर दास तो माय बाप ने रख दिया था। लेकिन जिस मालिक के यहाँ भैंस गाय चराने के लिए भरती होते थे, वही उनको कुछ दिन बाद मारपीट कर निकाल देता था। मेरे बाबू जी, गाय भैंस को लेकर जाते थे और मालिक के ही हरे भरे खेत में छोड़ कर सो जाते थे—मिहनत किया है लछमी ने, बैल ने!···मालिक लोग दूध घी खा खाकर, जिस भैंस के दूध से मोटे हो गये हैं, इस उपजा में तो इनका भी हिस्सा है। खाओ लछमी!···इसलिये लोगों ने उनका नाम 'उजाड़ू' दास रख दिया।"

—नटुवा अब गाँजा में दम मार आया है। अब देखना, नाच

जमावेगा छौंड़ा आज ।—

धिरनागि धिन्ना···

"आहे कुंज भवन से निकलल हो,

"आहे सखि, रोकल गिरधारी !"

"हाँ, चोरी चोरी घर से निकल कर कोठी के बागान में जाओगी 'रसलीला' करने तो रोकेगा नहीं । अच्छा किया है ।"—बिकटा अपने-आप बड़बड़ाता है ।

—नटुवा दोनो हाथ जोड़ कर, फन काढ़े गेहुअन साँप की तरह हिलते डुलते, कमर के सहारे बैठ रहा है । धरती पर घाँघरी 'पुरैन' के पत्ता की तरह बिछी हुई है ।···मिनती करती है । है-रे···। है रे !··· वाह रे छौंड़ा । नाम रख लिया गाँव का ।

"आहे, एकहि न-ग-र बसु माधव हो,

"आहे जनि करू बटवा-वा-री !

"आहे छोड़ू छोड़ू जदूपति आँचर हो,

"हो भाँगत न-ब सारी ।"

—"हाँ भैया । 'कोटा कनट्रोल' का जमान है । कपड़ा नहीं मिलता है । जरा होसियारी से ·····।"

"अरे अपजश होइत जगत्र भरि हो ।"

—"ओह बड़ी कुलमंती बनी है ! लछलछ किरिया खाये कुलमंती, मोर मन नहिं पतिआये ।"—बिकटा बीच बीच में टोकता रहता है ।

"आजु, परेम रस लय लीह हो,

"आहे पंथ छाड़ू झटकारी !"

—"सब दही जुठैलक रे किसना ! आहि रे बाप !"—बिकटा चिल्लाता है ।

"आहे संग के सखि अगुआइल हो

"आहो कान्हा, ह-म-हू एकसरि नारी ।"

—है रे ! है रे ! एकसरि नारि रे !—

—"भनहि विद्यापति गाओल हो, सुनू कूलमंती नारी···

"हरि के संग किछु डर नाहि है···।"

—"हाँ हरि के संग काहे दोख होगा। जितना दोख सब हमलोगों के साथ। अपने खेले रसलीला, हमरे बेला में···पंचायत का झाड़ू और जूता!"····

—क्या है? क्या हुआ·····डागडर साहब का नेंगड़ा नौकर आकर क्या बोलता है?···कमली दीदी ने कनफूल दे दिया?···ऐं··· ···वाह रे छौंड़ा। नाम किया।···जीओ रे चलित्तरा! जीओ!!

बिकटा भी क्यों पीछे रहे? वह भी आज 'थै-थै' कर देगा। नाच जमा है आज!—"अरे होये नायक जी! हमारे दुख को देखने वाला, सुनने वाला कोई नहीं।"

"क्या हुआ?"

"लेकिन कहें कैसे?"—बिकटा तहसीलदार की ओर उँगली उठाकर डरने की मुद्रा बनाता है।

"अरे! हम समझ गये।···तो करो न भाई"—तहसीलदार समझ जाते हैं—"दुनिया में सिर्फ़ हम ही एक तहसीलदार-पटवारी हैं। बात तो तुम ठीक ही कहोगे।···सुनते हैं, डाक्टर साहब! अब तहसीलदार का बिकटै करेगा।"

"नायक जी! हमको धीरज बँधाने वाला कोई नहीं। सुनते हैं कि बराहछत्तर में सरकार बहादुर कोसी मैया को बाँध रहा है, लेकिन हमारे दिल को बाँधने वाला कोई नहीं।"—

"अरे कहो भी तो!"

"अच्छा तो सुनो! पचास साल पहले से सुरु करते हैं। 'सर्वे सितलमंटी'[९] साल से।"

—सुनो! सुनो! जरूर कोई नई बात जोड़ा है। यह भी 'बकसीस' वसूल करेगा।—

"बजाने कहो—ताकधिन-ताकधिन।

"अरे केना के बाँधबै रे धीरजा, केना के बाँधबै रे,
"अरे मुद्दई भेल पटवारी रे धीरजा केना के बाँधबे रे ।
—"सर्वे जब होने लगा !
"दस हाथ के लग्गा बनैलके
"पाँचे हाथ नपाई !"
"···पाँच हाथ पार ?···हा···हा···हा···!"
"गल्ली-कुची सेहो नपलकै,
"ढीप-ढाप सेहो नपलकै,
"घाट-बाट सेहो नपलकै,
"डगर-पोखर सेहो नपलकै,
"तब ?—हाथी जस 'भलवेसन' बैठलकै,
"जम्मा भेलै भारी रे धीरजा के बाँधबै रे !"
—"इधर जमींदारी सिपाही छप्पर पर का कद्दू, लत्तर का खीरा, बकरी का पाठा और चार जोड़ा कबूतर सिरिफ तलबाना में ही साफ कर गया ।"
"तब ?— बेंच पटवारी के देलियै,
"लोटा बेंच चौकीदारी ।
"बाकी ए जे रहलै,
"कलम देलक 'घुराई' रे धिरज ।॥
"आखिर —
"कहे कबीर सुनो भाई साधो
"सब दिन करी बेगारी
"खंजड़ी बजा के गीत गबैछी
"फटकनाथ-गिरधारी रे धिरजा
"ओ-हो-हा—हा खी-खी-खी···हा-हा—शामियाना फट जायेगा । कमाल कर दिया साले ने । अलबत्त जोड़ा । वाह !···वाह रे लौकाय दास !"
डाक्टर तहलीलदार से पूछता है—"गीत तो विद्यापति का गाता है ।

"बिकटा' की रचना किसने की है ?"

"आप भी डाक्टर बाबू क्या पूछते हैं"—तहसीलदार साहब हँसते हैं—"इनकी रचना के लिए भी कोई तुलसी दास और बालमिकी की जरूरत है ? खेतों में काम करते हुये, तुक पर तुक मिला कर गढ़ लेता है।"

—डाक्टर साहब ने बिकटा को क्या दिया ?—पंचटकिया नोट ? ···बाजी मार लिया बिकटा ने भी।···

"आहे परथम समागम पहुसंग हे···

धिरनागि धिरनागि।

'भुरकुआ' उगने के बाद नाच खत्म हुआ। खूब जमा।···अब खुलेगा खम्हार।···

बिछावन पर लेट कर डाक्टर सोचता है—कोमल गीतों की पंक्तियाँ ! अपभ्रंश शब्द भी कितने मधुर लगते हैं।···पिया भइले डुमरी के फूल रे पियवा भइले।···चाँद बयरि भेल बादल, मछली बयरि महाजाल, तिरिया बयरि दुहु लोचन—रिंदये के भेद बताये।···भोंमरा भोंमरी··· रोई रोई कजरा दहायल, घामे तिलक बहि गेल।·····चान के उगयत देखल सजनि गे···लट धोये गइली हम बाबा को पोखरिया···पोखरि में चान केलि करे···।

डाक्टर सोचता है—विद्यापति की चर्चा होते ही कविवर 'दिनकर' का एक प्रश्न बरबस सामने आकर खड़ा हो जाता था—"विद्यापति कवि के गान कहाँ ?" बहुत दिनों के बाद मन में उलझे हुये उस प्रश्न का जवाब दिया—जिंदगी भर बेगारी खटने वाले, अपढ़ गवार और अर्धनग्नों ने—कवि ! तुम्हारे विद्यापति के गान हमारी टूटी झोपड़ियों में जिन्दगी के मधुरस बरसा रहे हैं।·····ओ कवि !·· तुम्हारी कविता ने मचल कर एक दिन कहा था—"चलो कवि ! बनफूलों की ओर !"

···बनफूलों की कलियाँ तुम्हारी राह देखती हैं !

(१) गवाही की रोटी खाने वाला (२) खलिहान (३) सूखा और बाढ़ (४) कोनिक (५) बिहुचक (६) भीखमंगी (७) मोर्चा (८) कबल के फूल (९) सर्वे सेटलमेंट।

—सोलह

मुसम्मात सुनरी।

टक्का कट पीस—एक गज।

छींट—डेढ़ गज।

मलेछिया साटिन—एक गज।

साड़ी—एक नग।

बालदेव जी कपड़े की पुर्जी बाँट रहे हैं। रौतहट टीशन के हंसराज बच्छराज 'मरवाड़ी' के यहाँ कपड़ा मिलेगा!

खेलावन यादव के दरवाज़े पर खड़े होने की भी जगह नहीं। सुबह से पुर्जी बाँट रहे हैं, दोपहर हो गई।···साड़ी नहीं है!—नहीं!··· बालदेव जी! हमको एक साड़ी···रौफा की मायें एकदम नगन हो गई गई है, बालदेव जी!"

बालदेव जी कहते हैं—"देखिये! मौजे भर में सिरफ सात साड़ियाँ दी गई थीं। चार फर्दी है, वह तो मालिक लोगों के घर में पहनने की चीज है—चौदह रुपये जोड़ी। बाकी तीन साड़ियों को हमने इस तरह बाँट किया है, ऐसे लोगों को दिया है जो एकदम बेपर्दे·····।"

"बेपर्दे तो सारा गाँव है बालदेव जी!"

खेलावन यादव कहते हैं—"इतने दिनों से, जब कमरुद्दी बाबू पूर्जी बाँटते थे, उस समय गाँव की औरतें बेपर्दे और नगन नहीं थीं क्या? भाई, जितना है उसी में इनसाफ से बाँट-बखरा कर लो।"

कालीचरन ज़िद कर रहा है, पुर्जी पर दो गज छींट और लिख दीजिये। 'हरमुनियाँ का खोल' बनावेंगे।···बालदेवजी नहीं मानते... आदमी के पहनने के लिए कपड़ा नहीं, हरमुनियाँ ढोलक को चपकन सिला कर पहनावेगा।···देखो तो भला!

बालदेव जी का राह चलना मुश्किल हो गया है। कपड़ा की मेम्बरी मिली है कि बलाये है। 'दिसा मैदान'[1] जाने के समय भी लोग पीछा

नहीं छोड़ते हैं।··· जयहिन्द बालदेव जी। आये थे तो आपके ही पास, दुलारी का गौना है।···अच्छा अच्छा चलिये, हम दिसा से आते हैं··· कपड़ा अब कहाँ है? 'रिचरब'[१] में भी नहीं है। सिरिफ कफन और सराध का कपड़ा है।···उसी में से? कैसे देंगे? कफन और सराध का कपड़ा गौना में?

बालदेव जी को क्या मालूम कि दुलारी का गौना पाँच साल पहले हो गया है और उसके तीन बच्चे भी हैं।

लछमी दासिन ने रामदास को भेजा था—"आचारज जी आ रहे हैं। आप को तो आजकल छुट्टी ही नहीं रहती है। उधर जाते भी नहीं। कंठी लेने की बात हुई थी? ···सो आपकी क्या राय है? आचारज जी आ रहे हैं। चादर टीका के लिए चादर के अलावे, पूजा विदाई के लिए भी एक जोड़ी धोती चाहिये। बिना 'कोर' की, महीन मारकीन की या ननकिलाठ की धोती। ···और कोठारिन जी को भी कपड़ा नहीं है।"

बड़ी मुश्किल है। 'रिचरब' में थोड़ा कपड़ा है सो 'सादी-बिहा' और सराध के लिए। कैसे दिया जाय? ओ! आचारज जी महंथ साहेब के सराध में ही आये हैं। तब ठीक है। ···सिरिमती···नहीं, सिरिमती नहीं। दासिन लछमी कोठारिन—ननकिलाठ, दस गज! फैन मारकीन, दस गज। चद्दर, एक!

रामदास याद दिला देता है—"लंगोटा कोपीन के लिए भी एक गज।"

बड़ी मुश्किल है! बालदेव जी को अब रोज दस पंद्रह बार से ज़्यादे झूठ बोलना पड़ता है। क्या किया जाये। बड़ा संकट का काम है। ···इधर जिला कॉंग्रेस की 'मिटिन' भी है। मेनिस्टर साहब आ रहे हैं। गाँव से 'झंडा-पत्तखा' और जत्था भी ले जाना होगा। जिला सिकरेटरी मंगुली जी ने चिट्ठी दी है। पर्चा भी आया है···।

चलो! चलो!! पुरैनियाँ चलो! मेनिस्टर साहब आ रहे हैं।

औरत-मर्द, बाल-बच्चा, झंडा-पत्तखा और इनकिलास जिंदाबाद करते हुवे पुरैनियाँ चलो । ···रेलगाड़ी का टिकस ? ···कैसा बेकूफ है ! मेनिस्टर साहब आ रहे हैं और गाड़ी में टिकस लगेगा ? बालदेव जी बोले हैं,—मेनिस्टर साहब से कहना होगा । कोटा में बहुत कम कपड़ा मिलता है । ···चलो चलो पुरैनियाँ चलो । —भुरुकवा उगते ही कालीथान के पास जमा होकर जलूस बना कर चलो !

"बोलिये एक बार—काली माय की जाये !"

"जाये ! जाये !!"

"बोलिये एक बार परेम से—गान्ही महतमा की जै !"

"जाये ! जाये !!

फर्रर·····र·····र·····र—पेंड़ पर घोंसलों में सोये हुये पंछी पंख फड़फड़ा कर उड़े । कालीचरन कहता है, यदि गुलेटा रहता तो अँधेरे में भी अभी एक दो हरियल को मार कर गिरा देते । ···बासुदेव कहता है, चुप रहो । बालदेव जी ने नहीं सुना ! नहीं, तो अभी फिर अनसन···।

गिनती करो । कितनी औरत, कितने मरद ? अजी बच्चों को मत लो, झंझट होगा । काल चरन और गूदर सबों का देह छू छू कर गिनता है ।·····कालीचरन कहता है—पाँच कोरी चार औरत । गूदर हिसाब करता है—चार कोरी दस मरद ।···मातबर लोग काहे जायेगा ? मातबर लोग तो हमेशा 'गदारी' करते हैं ।···बालदेव जी ने आज फिर एक नई बात कही—गदारी ! गदार !!···गदारी ?

जुलूस में गाने के लिए बालदेव जी को दो ही गीत याद हैं । एक 'नीमक कानून' के समय का सीखा हुआ—'आओ बीरो मरद बनो अब जेहल तुम्हें भरना होगा' । —दूसरा, 'बियालिस मोमेंट' के समय जेहल में सुना था—'जिन्दगी है किरान्ती की किरान्ती में लुटायेजा ।' लेकिन यह तो 'सोशलिट पाटी' वाला गाता है । ···पुराना गीत ही ठीक है, आओ बीरो मरद बनो·····! आज बालदेव जी खुद गाते हैं । सुनरा भी गीत

का 'आखर' धरता है।

तंत्रिमा टोली के मंगलू ततमा को कँपकँपी लग जाती है। जेहल ! अरे बाप !·····ये लोग जेहल ले जा रहे हैं।—पंद्रह साल पहले उसको चोरी केस में सजा हुई थी। जेल के जमादार की पेटी की मार वह आज भी नहीं भूला है। चार 'हौदा'[3] पानी रोज भरना पड़ता था। नहीं···! ···वह पेशाब करने के बहाने से पीछे रह जाता है और नजर बचा कर घर की ओर भागता है।···सब 'पगला' गया है।

सहर पुरैनियाँ !···यही है सहर पुरैनियाँ—पक्की सड़क, हवागाड़ी घोड़ागाड़ी और पक्का मकान !·····"एक रत्ती चिनगी चिनगल जाये, सहर पुरैनियाँ लूटल जाये ?···क्या है, बोलो तो ? आग !"—गाँव के बच्चे आज भी बुझौवल बुझाते समय शहर पुरैनियाँ का नाम लेते हैं। मेरीगंज के इस जुलूस में चार आदमी ऐसे हैं जो शहर पुरैनियाँ पहले भी आये हैं। बहुत तो आज ही पहली बार रेलगाड़ी पर चढ़े हैं।··· कलेजा धक धक करता है। जिसके हाथ में गन्ही महतमा का झंडा रहता है उससे 'गाट बाबू', 'चिकिहर बाबू' टिकस नहीं माँगता है।··· सचमुच में रेलगाड़ी 'जै जै काली छै छै पैसा' कहते हुये दौड़ती है। जै जै काली ?···यही है कालीपुल। बालदेव जी दिखलाते हैं—यही कालीपुल है। ल बाँधने के समय पाँच आदमी की बलि दी गई थी ! ···बाप रे ! पाँच ?···जै काली ! नीमक कानून के समय इसी पुल के नीचे पुलिस के सिपाहियों ने जाड़े की रात में भोलटियरों को लाकर, पानी में भिंगा-भिंगा कर पीटा था। पानी में डूबा देता था, सिर को हाथ से गोते रहता था। दम फूलने लगता था, नाक में पानी चला जाता था।···यह है इसपिताल। अपने गाँव का इसपिताल तो इसके सामने 'बुतरु'[4] है।···जेहल ? यही है जेहल ? जेहल नहीं ससुराल यार हम बिहा करन को जायेंगे·····आओ बीरो जेहल भरो।···फुलिया पुरैनियाँ टीसन से ही कुछ ढूढ़ रही है,···खलासी जी तो काला कुर्ता पहनते हैं।···यह है कचहरी। यहीं 'कर-कचहरी' में लोग 'मर-मुकदमा'

करने के लिए आते हैं! गाँव के लोग इसी तरह प्रत्यय लगा कर बोलते हैं—कर-कचहरी, खर-खजाना, गर-गरामित, घर-घरहट, चर-चुमौना, जर-जमीन, पर-पंचायत, फर-फौदारी, बर-बरात, मर-मुकदमा या मर-महाजन।···

शहर के लोग भी अचरज से इस जुलूस को देख रहे हैं। इनकिलास ···जिन्दाबाघ!·····कचहरी के मोड़ पर, फल की दूकान पर बैठे हुये मौलवी साहब हँसते हैं—"सब कपड़ा लेने आया है! जाओ जाओ मिलेगा कपड़ा। इनक़लाब बोलता है। मतलब भी समझता है या·····।"

···झंडा? बड़ा झंडा आसमान में लहरा रहा है, वही है रामकिसून आसरम। ऐ! यहाँ सब कोई खड़े हो जाओ। कपड़ा ठिकाने से पहन लो। उस 'कल' के पास जाकर मुँ धोलो। डरते हो काहे? बालदेव जी हैं।·····यहाँ से 'सतरबंदी'[५] होकर चलना होगा। बालदेव जी सबसे आगे रहेंगे। सबसे पहले कालीचरन 'लारा' लगायेगा—इनकिलाब, तब तुम लोग एक साथ कहना—जिन्दाबाघ। वैसे गड़बड़ा जाता है। कालीचरन कहेगा—अंगरेजी राज, तुम लोग कहना—नास हो। लगाओ लारा कालीचरन! कालीचरन छाती का जोर लगाकर चिल्लाता है—"इनकिलाब!···"

···"नाश हो···जिन्दा···नाश!"

"ऐ! ठहरो, ठहरो, नहीं हुआ।"

शिवनाथ चौधरी जी, गंगुली जी, शशांक जी, नाथ बाबू सभी आश्चर्य से देखते हैं। चौधरी जी बालदेव पर बड़े खुश हैं। नाथ बाबू कहते हैं—"ऐसे ही सभी 'वरकर' अपने 'फ़ील्ड' में 'वर्क' करें तब तो? दो महीने में ही इतने गाँवों को अकेले ही 'आरगेनाइज़' कर लिया है। चवन्निया मेम्बर कितना बनाया है?···पाँच सौ? तब तो···तुम··· आप जिला कमिटी के मेम्बर हो गये।"—गंगुली जी तो बालदेव को पहले से ही आप कहते हैं, आज नाथ बाबू भी आप

कहते हैं।

चौधरी जी कहते हैं—"अरे बालदेव, चर्खा सेन्टर खुलवाओ। रचनात्मक काम कुछ होता है या नहीं?"

खादी भंडार वाले छत्तीस बाबू कहते हैं—"खादी भंडार में 'खाँटी गाय का घी' भेजो देहात से बालदेव!"

सचमुच बालदेव जी गियानी आदमी हैं, बड़े आदमी हैं। जिस सीढ़ीवाली चौकी पर बाबू-बबुआन लोग टोपी पहन कर बैठे हैं, उसी पर बालदेव जी भी बैठे हैं।···अरे, यह कौन है? बौना? डेढ़ हाथ का आदमी! देखने में चार साल के लड़के जैसा लगता है, दाढ़ी मूँछ देखो! बोली कितनी भारी है। 'धुधुक्का'[६] में तो सबों की बोली भारी मालूम होती है। किसी की बोली समझ में नहीं आती है। न जाने कौन देश की बोली बोलता है—हिन्दुस्थान, आजादी, और गाँधी जी को छोड़ कर और कोई बात नहीं बूझी जाती है।···ताली काहे बजाया? बस, सभा खतम? मेनिस्टर साहेब कहाँ हैं? कौन? वही दुबला पतला, बड़ी बड़ी मोंछ वाला आदमी? बोलता था एकदम परेम से···आस्ते आस्ते।···माथा की टोपी भी 'लब्बड़-झब्बड़'।···उस बार गाँव में दारोगा साहेब आये थे, देखा था! सारे दाहे में 'चमोटी' लपेटा हुआ था। मेनिस्टर साहब ऐसे ही हैं? यह कैसा हाकिम?

कालीचरन कहता है—

"मेनिस्टर साहेब नहीं। यह रजिन्नर बाबू थे। सुराजी कीर्तन में रोज सुनते हो नहीं···देसवा के खातिर मजरूलहक भइले फकिरवा हो, दीन भेलै रजिन्नर परसाद देसवासियो।·····देस के खातिर अपना सब हक हिस्सा, जगह जमीन, माल मवेशी गँवा कर फकीर हो गये।····· अहा-हा!···हूँ! आजकल मेनिस्टर से भी जादे 'पावर' वाला आदमी हैं।—ठीक है, होगा नहीं? देश के खातिर अपना मजरूल हक माने बिलकुल हक खतम कर दिया।·····"

चौधरी जी ने बालदेव जी को दस रुपैया का नोट दिया है—"सबों

को जलपान करा देना।...."

जै, जै! चलो! चलो!!

कालीचरन कहाँ है? बासुदेव भी नहीं है। नहीं, नहीं लौटते समय 'नारा' लगाने की जरूरत नहीं। लेकिन कालीचरन और बासुदेव कहाँ रह गया?...भीड़ में से किसी ने कहा—"वह दोनों एक पैजामा वाला 'सुराजी बाबू'[८] के साथ न जाने कहाँ जा रहा था। बोला कल जायेंगे।" ...पैजामावाला सुराजी बाबू? लेकिन बिना पूछे क्यों गया? सहरवाली बात है। बालदेवजी, कालीचरन पर आजकल खुश नहीं, कालीचरन भी आजकल बालदेव जी से अलग थलग रहता है।

"कालीचरन नहीं, कॉमरेड कालीचरन। कॉमरेड माने साथी। हम सभी साथी, आप भी साथी। यहाँ कोई लीडर नहीं। सभी लीडर, सभी साथी हैं। ...अच्छा कॉमरेड! आपके गाँव में सबसे ज़्यादे किस जाति के लोग हैं?...यादव! ठीक है। भूमिहार? एक घर भी नहीं? गुड। जुलूस में जितने आदमी थे, सब क्या बालदेव जी से प्रभावित हैं? प्रभावित माने 'ब्लाइंड फ़ौलोवर'...यानी आँख मूंद कर विश्वास करने वाले तो नहीं? अंध भक्त तो नहीं?"

"जी, अंधा भक्त तो महंथ सेवा दास था, सो मर गया। उसकी कोठारिन तो....."

"....ठीक है। अच्छी बात। आपने सारी बातें समझ लीं न? मेम्बरी की जिल्द ले जाइये।...कुछ 'लिटरेचर' दे दीजिये इनको राजबल्लभ जी! जरा, कॉमरेड सैनिक जी को इधर भेज दीजियेगा। ये हैं—कॉमरेड गंगा प्रसाद सिंह यादव 'सैनिक' जी, और आप लोग हैं, कॉमरेड कालीचरन और...क्या नाम? हाँ, बासुदेव जी। आज मेरीगंज से रामकृष्ण आश्रम में जो जुलूस आया था, इन्हीं लोगों की 'सदारत' में। पार्टी प्लेज पर 'साइन' कर दिया है।...मेरीगंज में सबसे ज़्यादे यादवों की आबादी है। वहाँ आपका जाना ही ठीक होगा। वहाँ 'आर्गेनाइज' करने में कोई दिक्कत नहीं होगी।...वही, बस बालदेव है

एक।···अच्छा कामरेड कालीचरन! आपको और भी कुछ पूछना है?" —सोशलिस्ट पार्टी के जिला मंत्री जी पूछते हैं।

"जी, यदि हम कोई काम करने लगें, दस 'पबलिक' की भलाई का काम, और उसको कोई 'हिंसाबात' कह कर रोके तो हम क्या करेंगे?" —कालीचरन को बस यही पूछना है।

जिलामंत्री जी कुछ सोचने लगते हैं। लेकिन कॉमरेड राजबल्ली जी को कुछ सोचने में समय नहीं लगता है; बस, तुतलाने में कुछ देरी लगे तो लगे—"अ-अ-अरे! काम-काम-रेड। उससे साफ ल-प-लप-लफ्जों में कह दीजिये कि फो-फो-फो ट्री-टी टु के मुभमेंट में अहिंसा के भरोसे रहते तो आ-आ-आ-ज ग-ग दी नसीब नहीं होती। उससे साफ लप-लप-लफ्जों में कह दीजिये कि तुम रि रि-रि-ऐक्शनरी हो! डि-डि-डिम-डिमोरलाइज़्ड हो! यह ले जाइये डा-डा-डा डायले···डायलेक्टि··· द···द···द्व···द्वन्दात्मक भौतिकबाद, स-स-समाजबाद ही क्यों, दो किताबें। इसमें सब कुछ लिखा हुआ है। लाल प-प-पताका की एक कॉपी ले जाइये।···इसका ग्राह-ग्राह-आ-ह-ग्राहक बनाइये। लालझंडा ले लिया है न? लाल झंडा?"

"उठ मेहनतकश अब होश में आ
"हाथ में झंडा लाल उठा,
"ज़ुल्म का नामनिशान मिटा
"उठ होश में आ बेदार हो जा।"

कॉमरेड कालीचरन और कॉमरेड बासुदेव।···सुशलिंग पाटी!··· रास्ते में कालीचरन, बासुदेव को समझाता है—"यही पाटी असल पाटी है। गरम पाटी है। 'किरांती दल' का नाम नहीं सुना था?··· 'बम फोड़ दिया फटाक से मस्ताना भगत सिंह'—यह गाना नहीं सुने हो! वही पाटी है। इसमें कोई 'लीटर' नहीं। सभी साथी हैं, सभी लीटर हैं। सुना नहीं! हिंसाबात तो बुरजुआ लोग बोलता है। बालदेव जी तो बुरजुआ है, पूँजीबाद है।···इस किताब में सब कुछ

लिखा हुआ है। बुरजुआ, बेटी बुरजुआ, पूँजीबाद, पूँजीपति, जालिम जमींदार, कमाने वाला खायेगा, इसके चलते जो कुछ हो।'''अब बालदेव जी की लीटरी नहीं चलेगी। हर समय हिंसाबाद, कुछ करो तो बस अनसन।'''कपड़ा की मेम्बरी किसी तरह मिल जाये, तब देखना!"

स्टेशन पर बासुदेव जी ने भी एक किताब खरीदी। सिर्फ़ एक आने में—लाल किताब! एक आदमी झोली में लेकर बेच रहा था—ईशू संदेश!—

दो किताबें हुईं अब—ईशू संदेश और द्वन्दात्मक भौतिकवाद!!

(१) टट्टी (२) रिज़र्व (३) हौज़ (४) बचूचा (५) कतार बांध कर (६) लाउडस्पीकर का भोंपा (७) अस्त व्यस्त (८) कांग्रेसी बाबू।

—सत्रह

आचारज गुरु कासी जी से आये हैं!

सभी मठ के ज़मींदार हैं—आचारज गुरु। साथ में तीस मुरती आये हैं। भंडारी, अधिकारी, सेवक, खवास, चिलमची, अमीन, मुनशी और गवैया। साधुओं के दल में एक नागा साधू भी है। यद्यपि वह दूसरे मत को मानने वाला मुरती है फिर भी आचारज जी उसको साथ में रखते हैं! बड़ा 'करोधी' मुरती है। हाथ में छोटा सा कुल्हाड़ा रखता है। लम्बी दाढ़ी, जटा, सारे देह में भभूत और कमर में सिर्फ़ चाँदी की सिकड़ी। नंगा रहता है। महंथ साहेब के साथ वह जिस मठ पर जाता है, वहाँ के महंथ और अधिकारी को छट्ठी का दूध याद करा देता है। क्या मजाल कि सेवा में किसी क़िस्म की 'तरोटी' हो। इसीलिये आचारज गुरु उसको साथ में रखते हैं।

नागा बाबा जब गुस्सा होते हैं तो मुँह से अश्लील से अश्लील गालियों की झड़ी लग जाती है। आते ही लछमी दासिन पर बरस पड़े —"तेरी जात को मच्छड़ काटे! हरामजादी! रंडी तैं समझती क्या है

रीं। गूँ, दुनियाँ को तैं अंधा समझती है? बोल। ···लाल मिर्च की बुकनी डाल दूँ। छिनाल! तैं आचारज गुरु को गाली देती है! तेरे मुँह में कुल्हाड़े का डंटा डाल दूँ, बोल! साली, कुत्ती! साधू का 'रगत' बहाती है और बाबू लोग से मुँह चटवाती है! दूँ अभी तेरे गाल पर चौंटा। हट जा यहाँ से, कातिक की कुतिया!!"

लछमी हाथ जोड़ कर बैठी रहती है। नागा साधू की गालियों पर लोग ध्यान नहीं देते, बुरा नहीं मानते! वह तो आशीर्वाद है। वह नागा बाबा का पाँव पकड़ कर कहती है—"छिमा कीजिये परभू! दासिन का अपराध!"

रामदास को तो खड़ाऊँ से पीटते पीटते, देह की चमड़ी उधेड़ दी है नागा बाबा ने—"सूअर के बच्चे, कुत्ते के पिल्ले!! तैं महंथ बनेगा रे! आ इधर! तुमको खड़ाऊँ से टीका दे दूँ महंथी का! तेरी बहान को! (खटाक्)।···तेरी माँ को! (खटाक्)। घसियारे का बच्चा!···जा लकड़ लाकर धुनी में डाल!"

लरसिंघ दास खुश है! इसीलिये तो वह 'अगुआनी' करने स्टेशन तक गया था। ···सारी बातें सुन कर आचारज जी भी क्रोध से लाल हो गये थे। ···दासिन को मठ से निकालना होगा। ···नागा बाबा को पाँच भर गाँजा दिया है लरसिंघ दास ने। अधिकारी जी को एक सौ रुपैया कबूला है। ···महंथी तो धरी हुई है। सतगुरु की दया है।

आचारज गुरु ने लछमी से स्पष्ट कह दिया है—"रामदास को महंथी का टीका नहीं मिल सकता। क्या सबूत है कि वह महंथ सेवादास का चेला है? है कहीं लिखा हुआ? कोई 'वील' है? पंथ के नियम के मुताबिक चेलाहीन मठ का महंथ आचारज ही बहाल कर सकता है। तु मठ पर नहीं रह सकती। सेवादास ने तुझे रखेलिन बनाया था। सेवादास नहीं है, अब तु अपना रास्ता देख!"

"साहेब की जो मर्जी!"

'साहेब की मर्जी!···नागा बाबा की जो मर्जी!!

नागा बाबा रात में उठ कर, एक बार चारों ओर देखते हैं, फिर लछमी की कोठरी की ओर जाते हैं खाली पैर। खड़ाऊँ तो खट खट करेगी।

·····हरामजादी किवाड़ बँद करके सोती है। यहाँ कौन सोया है! वही पिल्ला, रामदसवा!—"अरे उठ तेरी जात को मच्छड़ काटे। दासिन को जगा। बाबा का गाँजा मार कर सेज पर सोई हुई है। कहाँ है मेरा गाँजा! जानता नहीं, तीन भर रोज की खुराकी है। कहाँ है?"

"सरकार! आधी रात में गाँजा···।"

"चुप हरामजादे! दासिन को जगा।"

"आज्ञा प्रभू!"—लछमी किवाड़ खोलकर निकलती है।

"गाँजा कहाँ है?"

"हाजिर है सरकार।"—लछमी एक बड़ी सी पुड़िया नागा के हाथ में देती है।

—अरे! हरमजादी के पास इतना गाँजा कहाँ से आया? पूरा तीन भर मालूम होता है!···यह साला रमदसवा, कोढ़ी का बच्चा यहाँ खड़ा होकर क्या करता है?—

"अबे सूअर के बच्चे, तैं यहाँ खड़ा होकर क्या करता है?···"

"खट् खटाक्।"—लछमी जल्दी से किवाड़ें बँद कर लेती है।

"अच्छा!···कल देखना तुझे बाल पकड़ 'मठ से घसीट कर नहीं निकाला तो कसम गुरु मत्येन्दरनाथ की।"

लरसिंघ दास एकान्त में एक बार लछमी से कहना चाहता है—"तुम घबड़ाओ मत लछमी! महंथ तो मैं ही बनूँगा। तुम मठ में ही रहोगी। तुमको मठ से कोई निकाल नहीं सकता।···तुम निराश मत होओ!"··· लेकिन मौक़ा ही नहीं मिलता है। शायद, कल सुबह ही लछमी कहीं चली न जाये।

आचारज गुरु के जवान अधिकारी को भी रात भर नींद नहीं आई—

"पुरैनियाँ जिला में कम्बल के नीचे भी घुस कर समुर मच्छर काटे हैं हो।"

सुबह को लछमी बालदेव जी के पास जाती है। बालदेव जी पुजी बाँट रहे थे। सारी बातें सुनकर बोले—"कोठारिन जी, आचारज गुरु तो सभी मठ के नेता हैं। वह जो करेंगे, वही होगा। इसमें हम लोग क्या कर सकते हैं?·····बड़ा धरमसंकट है। किसी के धरम में नाक घुसाना अच्छा नहीं है।·····तीसरे पहर टीका होगा? हम आवेंगे।"

लछमी दासिन को बालदेव जी पर पूरा भरोसा था। तहसीलदार साहब घर में नहीं हैं। डाक्टर साहब 'पर-पंचायत' में नहीं जाते हैं। सिंघ जी सुन कर गुम हो गये। खेलावन जी ने तो बालदेव जी पर ही बात फेंक दी—जाने बालदेव!···सतगुरु हो! कोई उपाय नहीं।

"साहेब बन्दगी कोठारिन जी!"

"कौन! कालीचरन बबुआ! दया सतगुरु के।"

"हाँ, टीका कब होगा। कीरतन नहीं करवाइयेगा?"

लछमी दासिन कालीचरन को रो रोकर सुनाती है—"काली बाबू! ···ऐसी खराब खराब गाली। उफ्! सतगुरु हो!···मैं अब कहाँ जाऊँगी? ···कौन सहारा है मेरा?"

"अच्छी बात! आप कोई चिंता मत कीजिये।···बालदेव जी क्या करेंगे, वह तो बुरजुआ हैं। रोइये मत।"

लछमी देखती है कालीचरन को—उस बार 'परयाग जी' के जादूघर में एक 'आबलूस' की मूर्ति देखी थी, ठीक ऐसी ही।···

मठ पर सभी साधू-सती, बाबू-बबुआन, दास-सेवकान शामियाने में बैठे हैं। लरसिंघदास ने सिर की जुल्फी छिलवा ली है। अधकट्टी मूँछ को भी मुड़वा लिया है। साधुओं की भाषा में कहते हैं—मोंछ-भदरा। सुफ़ेद मलमल की नई लंगोटी और कोपिन, देह पर चादर नहीं है।···चादर तो अचारज गुरु देंगे। आचारज गुरु का मुन्शी

इकरारनामा और सूरतहाल लिख रहा है। लछमी एक किनारे चुपचाप बैठी है जमीन पर। रामदास के सारे देह में हल्दी चूना लगा है। बालदेव जी को लछमी पर बड़ी दया आ रही है। लेकिन क्या किया जाये!

"···सभी साधू सती, सेवक सेवकान सुन लीजिये!" अचारज जी का मुन्शी दलील पढ़ता है—"लिखतं लरसिंघदास चेले गोबरधन दास मोतफा जात बैरागी फिरके·····।" अब आप लोग इस पर दस्तखत कर दीजिये।···लछमी फूट फूट कर रो पड़ती है।···सत गुरु हो!

"तैं चुप रह हरमजादी! चुप रहती है या लगाऊँ डँडा!"—नागा बाबा चिल्लाते हैं—"तैं चुप!"

जो दस्तखत करना जानते हैं दस्तखत कर रहे हैं।···बालदेव जी ने भी दस्तखत कर दिया? उनका हाथ जरा भी नहीं काँपा?···कालीचरन दलील हाथ में लेकर उठता है—"आचारज जी! आप कहते हैं, महंथ सेवादास बिना चेला के मरा है। आप क्या गाँव के सभी लोगों को उल्लू ही समझते हैं?"···

"कालीचरन!"—बालदेव जी मना करते हैं—"बैठ जाओ।"

"कालीचरन!"— खेलावन यादव डाँटते हैं।

लेकिन कालीचरन आज नहीं रुकेगा। कोई हिंसाबाद कहे या अनसन करे। वह भी भाखन दे सकता है।

"···हम जानते हैं और अच्छी तरह जानते हैं कि रामदास इस मठ का चेला है, महंथ सेवादास का चेला है। उसको महंथी की टीका नहीं देकर, आप एक नम्बरी बदमास को महंथ बना रहे हैं।···मठ में हमलोगों के बाप दादे ने जमीन दान दी है, यह किसी की बपौती संपत्ति नहीं···।"

"तेरी जात को मच्छड़ काटे, चुप साले। कुत्ते के बच्चे!! अभी कुल्हाड़े से तेरा! तेरी माँ को···।"

"चुप रह बदमास।"—कॉमरेड बासुदेव उछल कर खड़ा होता है।

"पकड़ो सैतान को !"—कॉमरेड सुन्दर चिल्लाता है।

"भागने न पावे।"

"मारो।"

—ले-ले ! पकड़-पकड़ !! मार-मार, हो-हो !!···रुको···ऐ वासुदेव ! ऐ सुन्दर !·····ऐ !·····

नागा बाबा दाढ़ी छुड़ाते हैं, जटा छुड़ाते हैं, थप्पड़ों की मार से आँखों के आगे जुगनू उड़ते नजर आ रहे हैं। गाँजे का नशा उतर गया है।···आखिर, दाढ़ी और जटा नोंचवा कर, कुल्हाड़ा छोड़ कर ही भागते हैं।···पकड़ो, पकड़ो।···छोड़ दो, छोड़ दो। अब मत मारो। नागा बाबा भागे जा रहे हैं। भभूत लगाया हुआ नंगधड़ंग शरीर, बिखरी हुई जटा ! दौड़ते समय उनकी सूरत और भी भयावनी मालूम होती है। गाँव के कुत्ते पागल हो जाते हैं। भौं ! भौं !!·····नागा बाबा के पीछे दर्जनों गँवार कुत्ते दौड़ रहे हैं। अधिकारी महंथ लरसिंह दास तो चार चाँटे में ही चें बोल जाते हैं·····"नहीं लेंगे महंथी ! छोड़ दीजिये हमको !!"

"छोड़ दो ! छोड़ दो !!"—कालीचरन हुक्म देता है। लरसिंह दास भी भागते हैं।

पंचों को लकवा मार गया है, साधुओं की हालत खराब है। पंचों के मुँह पर हवाइयाँ उड़ रही हैं। और सबों के बीच, कालीचरन हाथ में दलील लेकर 'सिकन्दरशाह बादशाह' की तरह खड़ा है। पलक मारते ही क्या से क्या हो गया।·····जैसे 'रमलीला' का 'धनुसजग' हो गया।···

"अब आचारज जी। आप से हम अरज करते हैं कि सुरतहाल पर रामदास जी का नाम चढ़ा कर महंथी का टीका दे दीजिये !"

आचारज गुरु काँपते हुये कहते हैं—"ब-बुआ ! हम तो, सतगुरु की दया से···हमको तो लोगों ने कहा कि·····सेवादास को कोई चेला ही नहीं था।·····जब रामदास उसका चेला है तो वही महंथ होगा।···

बुन्नी जी लीखिये सूरतहाल ! ले आओ, चादर, दही का बर्तन !!"

रामदास नहा धोकर, देह के हल्दी चूने के दाग को छुड़ा आया है।·····दही का टीका कपाल पर पड़ते ही सारे देह की जलन मिट गई।···सतगुरु हो ! सतगुरु हो !!

पूजा विदाई लिये बिना ही आचारज जी आसन तोड़ रहे हैं। पंचायत के लोग भी चुपचाप अपने अपने घर की ओर वापस होते हैं। लछमी हाथ में पूजा विदाई की थाली लेकर खड़ी है—"कबूल हो प्रभू ! दासिन का अपराध छिमा करो प्रभू !!"

"काली बाबू !"

बालदेव जी उलट कर देखते हैं, लछमी कालीचरन को बुला कर अँदर ले जा रही है।···कालीचरन ने अन्याय किया है। घोर अन्याय किया है। हिंसाबाद किया है। इस बार दो दिनों का अनसन करना पड़ेगा !

खेलावन जी जाति बिरादरी की पंचायत बुला कर सब बदमाशों को ठीक करेंगे। हे भगवान ! साधुओं के शरीर पर हाथ उठाना !···

"काली बाबू ! तुम देवता हो !!"

कालीचरन कुश्ती लड़ता है। उस्ताद ने कहा है, कुश्ती लड़ने वालों को औरतों से पाँच हाथ दूर रहना चाहिये···वह पाँच हाथ से ज़्यादे दूरी पर खड़ा है।

—बारह

"क्या नाम ?"

'सनिच्चर महतो।"

"कितने दिनों से खाँसी होती है ?···कोई दवा खाते थे या नहीं ? क्या ?···थूक से ख़ून आता है ? कब से ?···कभी कभी ? हूँ !···एक साफ़ डिब्बा में रात भर का थूक जमा कर के ले आना।···इधर आओ।··· ज़ोर से साँस लो।···एक-दो-तीन-बोलो।···ज़ोर से। हाँ।···ठीक है !"

"क्या नाम ?"

"दासू गोप !"

"पेट देखें !···हूँ।···पिल्ही है। सूई लगेगी। सूई के दिन पूर्णी लेकर आना। कल खून देने के लिये सुबह ही आ जाना। समझे !"

"क्या नाम ?"

"निरमला।"

"डागडर बाबू।"—एक बूढ़ा हाथ जोड़ कर आगे बढ़ आता है। गिड़गिड़ाता है—"···हमारी बेटी है। आज से करीब एक साल पहले भौंमरा ने एक आँख में 'झाँप' मारा। इसके बाद दोनों आँखें आ गईं। बहुत किस्म की जंगली दवा करवाये लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। अब तो एकदम नहीं सूझता।"

बला की खूबसूरत है यह निरमला। दूध की तरह रंग है चेहरे का।·····विशुद्ध मिथिला की सुन्दरता। भौंरे ने गलती नहीं की थी। आँख देखें !···और आगे बढ़ आइये।···आह !···एक बूँद आई-डाप के बगैर दो सुन्दर आँखें सदा के लिये ज्योतिहीन हो गईं।···अब तो इलाज से परे हैं।···

डाक्टर ने आँखों की पपनियों को उलट कर रोशनी की हल्की रेखा भी खोजने की चेष्टा की।···ऊँहूं !···पुतलियाँ कफ़न की तरह सुफ़ेद हो गई हैं। वह सोचता है, यदि तूलिका से इन पुतलियों में रंग भरा जा सकता ! हाँ, कोई चित्रकार ही अब इन आँखों को सुन्दर बना सकता है।···ज्योति दे सकता है !

"डागडर बाबू !"—रोगिनी कहती है। आवाज में कितनी मिठास है !—"बहुत नाम सुन कर आई हूँ। बहुत उम्मीद लगा कर आई हूँ, बाइस कोस से। भगवान आपको 'जस' दें।"

प्रकाश दो ? प्रकाश दो !!···अँधेरे में घुटता हुआ प्राणी छटपटा रहा है, आत्मा विकल है—रोशनी दो ! डाक्टर क्या करे ?···डाक्टर को भावुक नहीं होना चाहिये।

"घबराइये नहीं। दवा दे रहा हूँ।···यहाँ नहीं ठीक होगा तो पटना जाना पड़ेगा।"

"हाँ, दूसरा रोगी!···क्या नाम है?"

"रामचलित्तर साह।"

"क्या होता है?"

"जी! कुछ खाते ही कै हो जाता है। पानी भी···।"

"कब से?"

"सात दिनों से।"

"अरे! सात दिनों से?···ज़रा इधर आओ।"

"जी? बेमारी तो घर पर है।"

"घर कहाँ?"

"जी, सरसौनी बिजलिया। यहाँ से कोस दसेक है।"

हठात् सभी रोगी एक ओर हट जाते हैं। ख़ूंख़ार जानवर को देख कर जिस तरह गाये बैलों का झुंड भड़क उठता है!···सभी के चेहरे का रंग उतर जाता है। औरतें अपने बच्चों को आँचल में छिपा लेती हैं। सबों की डरी हुई निगहें एक ही ओर लगी हुई हैं।

डाक्टर उलट कर देखता है—एक अधेड़ स्त्री।···भद्र महिला!

"कहिये! क्या है?"

"डागडर बाबू! यह मेरा नाती है। बस यही एक नाती! मेरी आँखों का जोत है यह। एक साल से पाखाने के साथ खून निकलता है। इसको बचा दीजिये डागडर बाबू!···यह नहीं बचेगा।"

"घबराइये नहीं।···इधर आओ तो बाबू। क्या नाम है?···गनेश! वाह!···ज़रा पेट दिखलाइये तो गनेश जी!"

गनेश की नानी दवा लेकर चली जाती है। रोगियों का झुंड फिर डाक्टर के टेबल को घेर लेता है।

चिचाय की माँ कहती है—"पारबती की माँ थी। डाइन है! तीन कूल में एक को भी नहीं छोड़ा। सब को खा गई। पहले भतार को

इसके बाद देवर, देवरानी, बेटा-बेटी सबों को खा गई। अब एक नाती है, उसको भी चबा रही है।"

चिचाय की माँ ने ऐसा मुँह बनाया मानो वह भी कुछ चबा रही हो।···डाक्टर चिचाय की माँ को देखता है।···काली, मोटी, गंदी और झगड़ालू यह बुढ़िया चिचाय की माँ, जो बेवजह बकती रहती है, चिल्लाती रहती है·····। यह डाइन नहीं? सुमरित दास उस दिन कहता था—"चिचाय की माये तो जनान। डागडर है।·····पाँच महीने के पेट को भी इस सफाई से गिरा देती है कि किसी को कुछ मालूम भी नहीं होता।"·····यह डाइन नहीं और गनेश की नानी डाइन है? आश्चर्य!

···गनेश की नानी! बुढ़ापे में भी जिसकी सुन्दरता नष्ट नहीं हुई है। जिसके चेहरे की झुर्रियों ने एक नई खूबसूरती ला दी है। सिर के सुफेद बालों के घुँघराले लट! होठों की लाली ज्यों की त्यों है। ठुड्ढी में एक छोटा सा गड्ढा है और नाक के बगल से एक रेखा निकल नीचे ठुड्ढी को छू रही है। सुन्दर दंत पंक्तियाँ।···जवानी की सुन्दरता आग लगाती है, और बुढ़ापे की सुन्दरता स्नेह बरसाती है। लेकिन लोग इसे डाइन कहते हैं। आश्चर्य!

"कहाँ रहती है?"

"इसी गाँव में। कालीचरन का घर देखा है न! उसी के पास। बैस बनियाँ है।···कितना ओझागुनी थक गया, इसको बस नहीं कर सका। 'जितिया परब'[1] की रात में कितनी बार लोगों ने इसको कोठी के जंगल के पास, गोदी में बच्चा लेकर, नंगा नाचते देखा है। गैनू भैंसवार ने एक बार पकड़ने की कोसिस की थी। ऐसा 'झरका बान'[2] मारा कि गैनू के सारे देह में फफोले निकल आये। दूसरे ही दिन गैनू मर गया···।"

रोज रात में डाक्टर 'केस-हिस्ट्री' लिखने बैठता है।···अभी उसके हाथ में कालाआजार के पचास ऐसे रोगी हैं, जिनके लक्षण कालाआजार के निदान को भटकाने वाले साबित हो सकते हैं।

१. (क) सेबी मंडल : उम्र ३५, हिन्दू (मर्द) गाँव—मेरीगंज, पोलिया टोल। तकलीफ़—दाँत और मसूड़े में दर्द। दंतुअन करने के के समय ख़ून निकलना, मुँह महकना, देह में खुजली, भूख की कमी। बुखार—नहीं।

निदान—पायोरिया।

दवा—कारबोलिक की कुल्ली। विटामिन 'सी' की सुई।

(ख) पंद्रह दिनों के बाद—शाम को सिर दर्द की शिकायत। बुखार ९९½, रात में पसीना।···कैलशियम पाउडर। (ग) पाँच दिनों के बाद—पेट ख़राब हो गया है। बुखार—१००। कार्मिनेटिव मिक्सचर। काला-आज़ार के लिए ख़ून लिया गया। (घ) अल्डेहाइड टेस्ट का फल—(+ +) कालाआज़ार! चिकित्सा—नियोस्टिबोसन की सुई।

२. (क) तेतरी : उम्र १७, हिन्दू (औरत)। गाँव—पासवान टोली, मेरीगंज।

तकलीफ़—हड्डियों के जोड़ जोड़ में दर्द। कभी कभी नाक से ख़ून गिरता है। बुखार—नहीं। (थर्मामिटर से देखा—९९½)। भूख—नहीं।

रोग अनुमान—गठिया, बात।

दवा—विटामिन 'बी' की सुई। मालिश का तेल।

डब्ल्यू० आर० के लिये ख़ून लिया।

(ख) डब्ल्यू० आर० (गर्मी) का फल—(—) गर्मी नहीं।

(ग) एक सप्ताह के बाद नाक से ख़ून गिरा।···पेट ख़राब हुआ। कालाआज़ार के लिये ख़ून लिया।

(घ) अल्डेहाइड टेस्ट का फल : संदेहात्मक।···फिर ख़ून लिया।

(ङ) ब्रह्मचारी टेस्ट का फल। (+)

चिकित्सा—युरिया स्टिबामाइन (ब्रह्मचारी)।

३ :—(क) रामेसर का बच्चा :: उम्र २ महीना। नाभी में घाव। रात में रोता है, दूध फेंकता है।···माँ को कैलसियम पाउडर।

(ख) एक सप्ताह के बाद सारे देह में चकत्ते।

अनुमान—एलरजिक ।

(ग) चार दिनों के बाद—चक्तों में पानी भर गया है ।

डब्ल्यू० आर० के लिये माँ का ख़ून लिया ।

फल : : (–) नहीं

(घ) कालाआज़ार के लिये माँ का ख़ून लिया ।

फल : : (–) नहीं ।

कालाआज़ार के लिये बच्चे का ख़ून लिया ।

फल (+ + +) कालाआज़ार ।

…और इस बच्चे की यदि मृत्यु हुई तो ज़रूर किसी डाइन के मत्थे दोष मढ़ा जायेगा । देह में फफोले ! गनेश की नानी पर ही संदेह किया जायेगा ।…गनेश की नानी ! न जाने क्यों वह गनेश की नानी से कोई प्यारा सा संबंध जोड़ने के लिये बेचैन हो गया है ।…कमली कहती है—"मौसी ? मौसी में बहुत गुन हैं । 'सीकी'[3] से बड़ी अच्छी चीज़ें बनाती है—फूलदानी, डाली, पंखे । कशीदा कितना सुन्दर काढ़ती है ।…… पर्व त्योहार और शादी ब्याह में दीवार पर कितना सुन्दर चित्र बनाती है—कमल के फूल, पत्ते और मयूर । चौक कितना सुन्दर पुरती है ।"…वह भी उसे मौसी कहेगा ।

"मौसी !"

"कौन ?"

"मैं हूँ । डाक्टर ।…गनेश कहाँ है ?"

"डागडर बाबू ! आप ? आइये, बैठिये । गनेश सो रहा है ।…मैं तो अकचका गई । किस ने मौसी कह कर पुकारा !"—बूढ़ी की आँखें छलछला आती हैं ।

"मौसी ! सुना है तुम एक ख़ास क़िस्म का हलवा बनाती हो ?"

मौसी हँस पड़ती है—"अरे दुर ! किसने कहा तुमसे ?…पगली कमली ने कहा होगा जरूर ।…कमली कैसी है अब ? इधर तो बहुत दिनों से आई ही नहीं है । पहले तो रोज आती थी ।"

"अच्छी है।—अच्छी हो जायेगी। मौसी! एक बात पूछूँ?··· तुम्हारी कोई बहन, माँ, बेटी या और कोई···सहरसा इलाके में, हनुमानगंज के पास कभी रहती थी?"—डाक्टर अपने बेतुके सवाल पर खुद हँसता है।

"सहरसा इलाके में···हनुमानगंज के पास?···रहो, याद करने दो।···नहीं तो! क्यों, क्या बात है?"

"यों ही पूछता हूँ! ठीक तुम्हारी ही जैसी मेरी एक मौसी वहाँ भी है।"—बात को बदलते हुये डाक्टर कहता है—"मुझे एक फूल की डाली दो न मौसी!"

उफ्! ···सचमुच डाइन है यह बुढ़िया। इसकी मुस्कुराहट में जादू ··· रसा करती है। ऐसी आकर्षक मुस्कुराहट?

गनेश बड़ा भोलाभाला लड़का है। बड़ा खूबसूरत! गोरा रंग, लाल ओंठ और घुँघराले बाल उसे नानी के पक्ष से ही मिले हैं।···बड़ा अकेला लड़का मालूम होता है। मौसी कहती है—"किसके साथ खेले? गाँव के बच्चे अपने साथ खेलने नहीं देते!·····मेरे ही साथ खेलता है।"

"गनेश जी, जरा पेट दिखाइये तो!···मौसी! कल इसे सुबह ले आना तो! खून लूँगा।···होंठ मुर्झाये रहते हैं।"

गनेश को अब एक मामा मिल गया।

"सचमुच ऐसा हलवा कभी नहीं खाया मौसी!···विश्वास करो।··· गनेश को भी दो। कोई हर्ज नहीं।"

"मामा देखो!"—गनेश गले में स्टेथेस्कोप लटका कर हँसता है।

"वाह! मेरा भाँजा डाक्टर बनेगा!"

डाक्टर जब मौसी के घर से निकला तो उसने लक्ष किया—कालीचरन के कुएँ पर पानी भरने वाली स्त्रियों की भीड़ लग गई है। सभी आखें फाड़, मुँह बाये, आश्चर्य से डाक्टर को देखती हैं—"इस डाक्टर को काल ने घेरा है, सायद।"

" लाल सलाम !"——कालीचरन मुट्ठी बाँध कर सलाम करता है और डाक्टर को एक लाल पर्चा देते हुये कहता है — "कॉमरेड मंत्री जी आपको पहचानते हैं डाक्टर साहब ! ..... हाँ , कृष्णकांत मिश्र जी ! " ———

आइये ! आइये !! जरूर आइये !!
कमाने वाला खायेगा , इसके चलते जो कुछ हो ।
किसान राज : क़ायम हो ।
मज़दूर राज : क़ायम हो ।

प्यारे भाइयो ! ता०.....को मेरीगंज कोठी के बगीचे में किसानों की एक विशाल सभा होगी । सोशलिस्ट पार्टी पुर्णिया के सहायक मंत्री साथी गंगा प्रसाद सिंह यादव सैनिक जी ..... ।

" परसों सभा है । आइयेगा । ..... लाल सलाम ! "

(१) जीताष्टमी (२) अग्निबाण (३) एक तरह की घास ।

—उन्नीस

चलो ! चलो ! सभा देखने चलो ।

सोशलिस्ट पार्टी की सभा की खबर ने संथाल टोली को विशेषरूप से आंदोलित किया है । गाँव में अस्पताल खुलने की खुशखबरी की कोई खास प्रतिक्रिया संथालों पर नहीं हुई थी, गाँव के लड़ाई-झगड़े और मेल-मिलाप से भी उन्हें कुछ लेना देना नहीं । लेकिन , यह सभा ? ज़मीन जोतनेवालों की ? ..... कर्तव्यनिष्ठ और मिहनती संथाल किसानों के दिमाग की मुद्दत से उलझी हुई गुत्थी का सही सुलझाव । ज़मीन जोतने वालों की ।

" जमीन किसकी ? — जोतने वालों की । जो जोतेगा वह बोयेगा जो बोयेगा वह काटेगा । कमानेवाला खायेगा, इसके चलते जो कुछ हो । " —— कालीचरन समझा रहा है ।

चारों ओर स्वस्थ, सुडौल, स्वच्छ और सरल इन्सानों की भीड़। श्याम मुखड़ों पर सुफ़ेद मुस्कुराहट, मानो काले बादलों में तीज के चांद के सैकड़ों टुकड़े! बिरसा माँझी का जवान बेटा मंगल माँझी कालीचरन के वाक्यों को गीतों की कड़ी में जोड़ने की चेष्टा करता है — "जोहिरे जोतबे सोहिरे बोयबे .....।"

सनियाँ मुरमू कालीचरन की हर बात पर खिलखिला कर हँसती है— हँ -- हँ -- हँ -- हँ -- हँ -- हँ -- हँ --! सरगम के सुर में हँसती है सनियाँ। तीतर की आवाज़ की तरह — हँ -- हँ -- हँ -- हँ! पीछे की ओर झूलता हुआ रंगीन आँचल रह रह कर चंचल हो उठता है, मानो नाचने के लिए मोरनी पंख तौल रही हो। उसके चरण थिरकने के लिए चपल हो उठे हैं।

मानर की मन्द्र आवाज़—रिंग रिंग ता-धिन-ता!
डिग्गा की अटूट ताल --- डा डिगगा, डा डिग्गा!
उन्मुक्त स्वर लहरी --- जोहिरे जोतबे सोहिरे बोयबे!
सुरत्ती के लय पर पायलों का छुम छुम, छन्न छन्न!

डा डिग्गा डा डिग्गा
रिंग रिंग ता धिन-ता।
चल चल रे सभा देखे ला।...

चार पुश्त पहले की बात। संथाल परगना के तीनपहाड़ी अंचल की पथरीली माटी के मोह को तोड़ कर, उबड़खाबड़ पहाड़ी रास्ते को तय कर जब इनके पूर्वज इस गाँव की नरम माटी पर आकर बसे थे! गाँव वालों ने ज़मींदार के पास जाकर फ़रियाद की थी—"हुजूर! माई-बाप!... जंगली लोग हैं। सुनते हैं तीर धनुष से जान मार देने पर भी सरकार बहादुर इनको कुछ नहीं कर सकता है। इन्हें हरगिज नहीं बसाया जाये हुजूर!"

लेकिन ज़मींदार ने समझा कर कहा था — "ऐसी बात नहीं। बे बड़े मिहनती होते हैं। धरमपुर इलाक़े में जाकर देखो, राजा लछमीनाथ

सिंह ने इनसे हजारों बीघा बनजर जमीन 'आबाद' करवा लिया है, परती और भीठ जमीन से ही तेजू बाबू को दो हजार मन गेहूँ उपजा कर संथालों ने दिया है। मालूम!"

जमींदार ने गाँव वालों को विश्वास दिलाया था कि इन्हें गाँव से अलग ही बसावेंगे। सभी जमींदारों ने इन्हें जंगलो में ही बसाया है।

उसके बाद से ही बबूल, झरबेर और 'सोंहुड़' के पेड़ों से भरे हुये जंगल हर साल साफ़ होकर आबाद होते गये। आज जहाँ सैकड़ों बीघे जमीन में, मोती के दानों से भरी हुई गेहूँ की बालियाँ पुरवैया हवा में झूम रही हैं, धरती का वह टुकड़ा "सर्वे" के क़ागज़ात और नक़्शे में जंगल के नाम से दर्ज है। जिस जंगल में बाघ का शिकार खेलने के लिये ज़िले भर के राजा और जमींदार जमा होते थे।···गाँव के नई उम्र के लड़के तो विश्वास नहीं करते!

नीलहे साहबों के नील के हौज़ ज़्यादातर इन्हीं मूक इन्सानों के काले शरीर के पसीने से भरे रहते थे।

साहबों के कोड़ों की मार खाकर, जमींदारों की कचहरियों में दिन भर 'मोगलिया बाँध'[1] की सज़ा भुगतने के बाद शाम को मोहन की जादू भरी 'शी बजी और सब कष्ट दूर हो गये।···

रिंग रिंग ता–धिन–ता
डा डिग्गा डा डिग्गा···

सोने के अनाज से भरे हुये, धरती के गुप्त भंडार का उद्घाटन करने वालों पर धरती माता का कोप होना स्वाभाविक है। यही कारण है कि आज जमीन के मालिकों ने, जमीन के व्यवस्थापकों ने और धरती के न्याय ने धरती पर इनका किसी क़िस्म का हक़ नहीं जमने दिया है। जिस जमीन पर उनके झोंपड़े हैं, वह भी उनकी नहीं।···हल में जुता हुआ बैल दिन भर खेत 'चास'[2] करता है, इसलिए बैलों को भी धरती का हक़दार क़बूल किया जाये? यह कैसी बात है?

१९३७ के काँग्रेसी मंत्रिमंडल के समय इस जिले में एक अंग्रेज कलक्टर आया था, उसने इस व्यवस्था को अन्याय समझ सुधारने की चेष्टा की थी।...जिले भर के भूमिदार, जमींदार और राजा घबरा गये थे। जिला के अधिकांश नेता भूमिदार और जमींदार थे। अंग्रेज कलक्टर पर इल्जाम लगाया गया—संथालों को उभाड़ कर, जिले में अशांति फैला कर काँग्रेसी मंत्रिमंडल को असफल बनाने का षड्यंत्र करता है। 'काँग्रेस संदेश' के सम्पादक ने सम्पादकीय में संथालों के प्रति थोड़ी समवेदना प्रकट की थी। बेचारे विद्यालंकार संपादक को उसी दिन मालूम हुआ था कि विद्या का अलंकार कितना बेमानी है। जिला मंत्री ने आँखें लाल कर के कहा था—"विद्यापीठ का शास्त्र यहाँ काम नहीं देगा। विद्यापीठ में गधे के सर पर सींघ तो नहीं जम सकती है।".....

जमींदारों ने अपने भाड़े के लठैतों को जगह जगह संथालों के लहलहाते फसलों पर 'हुलका'[3] कर, संथाल टोली पर चढ़ाई करवा कर, रुपये लाठी के हिसाब से बटोरे हुये लठैतों को संथालों के तीरों से जख्मी करवा कर सबल प्रमाण पेश कर दिया था—संथालों के जोर-जुल्म का मुख्य कारण है यह अंग्रेज कलक्टर। इसी के बल पर वे कूद रहे हैं।

अंग्रेज कलक्टर की तुरत बदली हो गई। बहुत से संथाल सरकारी गोली से घायल हुये और सैकड़ों ने बिहार के विभिन्न जेलों में 'सफैया'[4] कमान में काम करते करते सारी उम्र बिता दी। इसके बाद फिर कौन चूँ करता है। लेकिन मानर और डिग्गा की आवाज कभी मन्द नहीं हुई, बाँसुरी कभी बंद नहीं हुई और न उनके तीरों में ही जंग लगे। आज भी कभी कभी बनैले जानवरों के शिकार के समय, सूरज की किरणों में चमक कर चकाचौंध पैदा कर देते हैं—इनके तीर!

मलेरिया और कालाआजार की क्रीड़ाभूमि में भी ये सबल और स्वस्थ रह कर क्रीड़ा करते हैं। हड्डियों पर कलापूर्ण ढंग से तराश कर बैठाये जैसे माँस का उभार कभी सूखा नहीं; ताजे फूलो की पँखड़ियों

जैसे उनके ओंठ कभी ज़र्द नहीं हुये और न किसी संथाल के पेट में कभी पिल्ही बढ़ जाने की बात ही सुनी गई ।···अस्पताल खुलने से उनका क्या फ़ायदा होगा ? लेकिन ज़मीन !·····जोतने वालों की ?···

"चलो ! चलो !! सभा देखने चलो !"

किसान राज कायम हो ।

मजदूर राज कायम हो ।

गरीबों की पार्टी सोशलिस्ट पार्टी

सोशलिस्ट पार्टी जिन्दाबाद ।

"·····यह जो लाल झंडा है, आपका झंडा है, जनता का झंडा है, अवाम का झंडा है, इनक़लाब का झंडा है । इसकी लाली उगते हुये आफ़ताब की लाली है, यह ख़ुद आफ़ताब है । इसकी लाली, इसका लाल रंग क्या है ?···रंग नहीं ! यह ग़रीबों, महरूमों, मज़लूमों, मजबूरों, मज़दूरों के ख़ून में रंगा हुआ झंडा है ।"—कॉमरेड सैनिक जी भाषण दे रहे हैं ।

"एँ ! खून में रंगा हुआ झंडा !"—बादर दास ने कालीचरन के कहने से हाथ में झंडा लिया था । बादर दास वैष्णव है, मांस मछली छूता भी नहीं और यह आदमी के ख़ून में रंगा हुआ झंडा ? उसका 'धरम' भ्रष्ट कर दिया कलिया ने । छि : छिः । वह हाथ में झंडे का बाँस थामे खड़ा है ?···वह आचानक ही झंडे के बाँस को छोड़ देता है !···आदमी के खून में रंगा हुआ झंडा···!

जोतखी काका कहते हैं—"पताखा पतन, अशुभ, अमंगल और अनिष्ट की सूचना है ।"

सैनिक जी अपना भाषण जारी रखते हैं । भाषण के बीच में रुक जाने से फिर शुरु से याद करना पड़ता है —"जिस तरह सूरज का डूबना एक महान सच है, पूँजीवाद का नाश होना भी उतना ही सच है । मिलों की चिमनियाँ आग उगलेंगी और उस पर मजदूरों का कब्जा होगा । ज़मीनों पर किसानों का कब्जा होगा । चारों ओर लाल धुँआ

मचरा रहा है। उट्ठो, किसानों के सच्चे सपूतो! धरती के सच्चे मालिकों, उट्ठो। क्रान्ति का मशाल लेकर आगे बढ़ो!"

—"बोलिये एक बार प्रेम से—सोशलिस्ट पाटी की जै।"—यही पाटी असली है। किसानों की पार्टी, गरीबों की पार्टी। सभास्थल पर ही तीन सौ मेम्बर बन गये। संथाल टोली का एक आदमी भी ग़ैर-मेम्बर नहीं रहा। सब—लाल! सिर्फ़ सरदार टुडू का तेरह साल का लड़का रह गया है। वह रोता है। सरदार टुडू सैनिक जी के पास जाकर अपील करता है—"इश्का नाम 'लेम्बरी' में नहीं लिखा जायेगा? क्यों? उमेर कम नहीं, देखिये इश्को मोंच का रेख आ रहा है।"

बालदेव जी कुछ बोलने को खड़े होते हैं। बासुदेव तुरत उठ कर कहता है—"बालदेव जी आपका बिख्यान हम लोग बहुत सुन चुके हैं। आप पूँजीबाद हैं। इस सभा में आप नहीं बोल सकते।"

जनता ने भी विरोध किया—"बैठ जाइये। बैठ जाइये!! जाइये, कपड़ा की पूर्जी बाँटिये। चीनी बिलेक कीजिये।"

—अरे बाप! कितना टीन छोआ कहा नेता जी ने? एक हजार टीन छोआ बिलेक कर दिया मेनिस्टर कांग्रेसी ने! इसी ि ए तो देहात से हुक्का उठ रहा है। अब लोग बीड़ी न पीयें तो क्या करें। हुक्का के तम्बाकू के लिए छोआ गूड़ कहाँ से आवेगा। सब बिलेक हो गया। अन्याय है।

तहसीलदार साहब को तो नेता जी ने भरी सभा में बेज्जत कर दिया, अलबत्त गाली देते हैं नेता जी। ·····जमींदार के दुम ये तहसीलदार! मुफ्तखोर।

मगर तहसीलदार साहब हँसते ही रहे थे। उस रात को बिदापत नाच के बिकटा की भँड़ैती सुनने के समय जैसी मंद मुस्कुराहट उनके चेहरे पर थी, आज भी है।

कालीचरन अब खेलावन सिंह के कब्जे से बाहर है। कालीचरन यादव कुलकलंक है। बूढ़ा कुकरू बुढ़ापे तक खेलावन का बैल चराता

था और उसका बेटा लीडर हो गया। सुश्लिंग लीडर? इसको काबू में रखने का कोई हथियार भी नहीं। अंगूठे का टीप भी कभी नहीं लिया इससे!

सिपैहिया टोली का एक बच्चा भी इस सभा में नहीं था। उनके टोले में कटिहार से काली टोपी वाले दल के संजोजक जी आये हैं। लाठी भाला 'टरेनि' देते हैं। छोटी जाति के लोगों की सभा में वे नहीं जा सकते।

कालीचरन ने सैनिक जी के रहने का प्रबन्ध मठ पर किया है। महंथ रामदास जी तो नाम के महंथ हैं, मठ की असल मालकिन तो लछमी है। ·····पन्द्रह सेर दूध को जला कर खोआ बना है, मालपूआ की सोंधी सुगन्ध हवा में फैल रही है।

लछमी पूछती है —" काली बाबू! नेता जी 'डोलडाल' से आकर स्नान नहीं करेंगे? "

सैनिक जी के साथ में 'लाल पताका' साप्ताहिक पत्र के संपादक श्री 'चिनगारी जी' भी आये हैं। दुबले पतले हैं, दिन भर खाँसते रहते हैं। आँख पर बिना फ्रेम वाला चश्मा लगाते हैं। दिन भर सिगरेट पीते रहते हैं। शायद इसीलिए चिनगारी जी नाम पड़ा है। डाक्टर ने अंडा खाने के लिए कहा है। बिना अंडा खाये इतना गर्म अखबार कोई कैसे निकाल सकता है? ... लेकिन मठ पर अंडे का प्रबन्ध कैसे हो सकता है?

लछमी के अतिथि सत्कार को भूलना असंभव है। चिनगारी जी रात में सोते समय सैनिक जी से कहते हैं — " मैं लछमी जी पर एक मुक्त छंद लिखना चाहता हूँ—

—" ओ महान सतगुरु की सेविका
" गायिका पवित्र धर्मग्रन्थ की
" ओ महान मार्क्स के दर्शन की दर्शिका
" सुदर्शने, प्रियदर्शिनी,
" तुम स्वयं द्वन्द्वयुक्त भौतिकवाद की

" सिनथिसिस हो । "

(१) एक तरह की सज़ा जिसमें पाँव के दोनों अंगूठे में रस्सी बाँध कर गले में बाँध दी जाती है। (२) जोतना (३) धावा करना (४) मेहनत कमाऊ (५) पैखाना।

—बीस

कमली डाक्टर को पत्र लिखती है—

"प्राणनाथ !···तुम कल नहीं आये । क्यों नहीं आये ? सुना कि रात में———।"

कमली डाक्टर को रोज़ पत्र लिखती है । लिख कर पाँच सात बार पढ़ती है फिर फाड़ डालती है । उसकी अलमारी के एक कोने में फाड़ी हुई चिट्ठियों का ढेर लग गया है । पत्र लिखने और लिख कर पढ़ने के बाद उसको बड़ी शांति मिलती है । जी बड़ा हल्का मालूम होता है, और नींद भी अच्छी आती है ।

"·····सुना कि रात में तुम गेहुअन साँप से बाल बाल बच गये । भगवान को इसके लिऐ लाख लाख धन्यवाद । ·····"

रात में डाक्टर गेहुँअन साँप से बाल बाल बच गये । गेहुँअन नहीं, घोड़-करैत । गेहुँअन और करैत का दोगला । घोड़े से भी ज़्यादा तेज़ भाग सकता है । घोड़-करैत का काटा हुआ आदमी ओझा गुणी का मुँह भी नहीं देख सकता । आधी रात को खरगोश और चूहे अपने अपने पिंजड़ों में घबरा कर दौड़ भाग करने लगे । डाक्टर साहब ने प्यारू को पुकारा, लेकिन प्यारू की नींद नहीं टूटी ! जानवरों के कमरे का दरवाज़ा खोल कर टॉर्च देते ही डाक्टर तड़प कर पीछे हट गये—साँप ! साँप ठीक किवाड़ के पास ही अपनी पूँछ पर सारे धड़ को खड़ा किये फुफकार रहा था । तब तक प्यारू भी जग चुका था । उठते ही उसने बायें हाथ से ही ऐसी लाठी चलाई कि साँप वहीं ढेर हो गया । अढ़ाई हाथ का साँप ! ····· डाइन का मंतर अढ़ाई अक्षरों का होता है और डाइन का भेजा हुआ साँप अढ़ाई हाथ का !

सुबह को जिसने यह बात सुनी, बस एक ही राय क़ायम की—"यह तो पहले से ही मालुम था। डाक्टर बाबू को इतना समझाया बुझाया कि पारबती की माँ से इतना हेलमेल नहीं बढ़ावें। नहीं माने, अब समझें। वह राच्छसनी किसी को छोड़ेगी? जिसको प्यार किया, उसको जरूर खायेगी। डाक्टर बेचारा भी क्या करे! वह अपने मन से तो कुछ नहीं करता। उस पर तो पारबती की माँ ने जादू कर दिया है। वह अपने बस में नहीं। मुफ़्त में बेचारे की जान चली जायेगी एक दिन। च् च्।"

कमली को डाइन, भूत और डाकिन पर विश्वास नहीं। तहसीलदार साहब भी इसे मूर्खता समझते हैं। कालीचरन तो आदमी से बढ़ कर बलवान किसी देवता को भी नहीं समझता, फिर डाइन–भूत, ओझा गुणी किस खेत की मूली हैं। इन्हें छोड़ कर गाँव के बाक़ी सभी लोग डाइन के बारे में एकमत हैं। बालदेव जी ने तो बहुत बार भूत को अपनी आँखों से देखा है। भैंस के पीछे पीछे खैनी तम्बाकू माँगता है—भूत। डाकिन का पाँव उलटा होता है और वह पेड़ के डाल से लटक कर झूलती है। भूत प्रेत झूठ है? तब कमला किनारे, कोठी के जंगल के पास में रात को जो 'भक्क' से 'राकस' जल उठता है, दौड़ता है और देखते ही देखते एक से दस हो जाता है—सो क्या है?

"डाक्टर साहब अब रोज मौसी के यहाँ जाते हैं। मौसी के यहाँ एक बार बिना गये उनको चैन नहीं।"—प्यारू कहता है। कमली सुनती है और हँसती है।

"डाक्टर साहब गनेश को देखने जाते है प्यारू।"

"वह लड़का तो आराम हो गया है। मुटा कर कोल्हू होता जा रहा है। उसको क्या देखने जाते हैं!"

"अच्छा प्यारू! डाक्टर साहब तो मेरे यहाँ भी रोज आते हैं।"

"तुम्हारे यहाँ की बात दूसरी है दीदी।"

"क्यों? दूसरी बात क्या है?"

डाक्टर साहब हँसते हुये आते हैं—"अच्छा !···तो प्यारू जी यहाँ दरबार कर रहे हैं। वह बुखार वाला खरगोश कैसे भाग गया ?"

"जी, हम दोपहर को दाना देने गये तो देखा कि पिंजड़ा खाली।"

"सुबह सूई देने के बाद तो मैंने पिंजड़ा बंद कर दिया था ! तुमने पानी पिलाने के बाद पिंजड़ा बंद नहीं किया होगा। महीने भर की मिहनत बेकार गई।"

प्यारू को इन चूहों और खरगोशों से बेहद नफ़रत है।···आदमी के इलाज से जी नहीं भरता है तो जानवरों का इलाज करते हैं। दिन भर पिंजड़ों को लेकर पड़े रहते हैं। बुखार देखते हैं, सूई देते हैं और खून लेते हैं। जब से ये जानवर आये हैं, डाक्टर साहब को प्यारू से बात करने की भी छुट्टी नहीं मिलती।···"अब झाँगड़ टोली के लोगों से कह रहे हैं—दो-तीन सियार के बच्चे की जरूरत है। उस दिन मदारी से बंदर माँग रहे थे। अजीब सौख है !"

प्यारू चुपचाप चला जाता है। माँ हँसते हुये आती है—"डाक्टर साहब ! मैंने 'विषहरी माई'[1] को एक जोड़ी कबूतर और दूध लावा कबूला है।"

"और मैंने भी 'विषहरी' दवा के लिये लिख दिया है !"

"विषहरी दवा ?"

"हाँ, ऐन्टिवेनम एक दवा है, साँप के काटे हुये का इलाज होता है ! मैं एन्टिवेनम से भी ज़्यादा प्रभावशाली और सस्ती दवा की खोज करना चाहता हूँ। सुनते हैं, रौतहट स्टेशन के पास सँपेरों का टोला है। साँप पकड़वा कर रखना होगा।"

"तब माटी के महादेव नहीं, असली महादेव हो जाइयेगा।"—कमली व्यंग करना जानती है।

डाक्टर साहब हँस पड़ते है और माँ हँसी को रोकते हुये कमली को डाँटती है—"जो मुँह में आया बोल दिया। जरा भी लाज लिहाज नहीं। इसके बाप ने तो इसे और भी 'बतक्कड़' बना दिया है ! तुम यहाँ आकर

चुप बैठो तो जरा, मैं चाय बना लाऊँ।"

"तहसीलदार साहब कहाँ गये हैं?"—डाक्टर पूछता है।

"कटिहार। सर्किल मैनेजर के कैम्प में गये हैं।"—कमली जवाब देती है। आज पहली बार कमली ने डाक्टर को अपने पास अकेला पाया है। वह अपने चेहरे को देख नहीं सकती, लेकिन ऐसा लगता है कि उसका चेहरा धीरे धीरे लाल होता जा रहा है। आँखों की पलकों पर भारी बोझ लद गये हैं, कान की इयरिंग थरथरा रही है। सारे देह में गुदगुदी लग रही है। देह हल्का लग रहा है।···बेहोशी? वह बेहोश होना नहीं चाहती। नहीं, नहीं। डा···क्ट···र!

"कमला!"

"जी।"

"कमला! इधर देखो, कमला!!"

"डाक्टर! मुझे बचाओ।"

"कमला।···आँखें खोलो।"

कमला ने आँखें खोल दीं। उसका सिर डाक्टर की गोद में है। माँ हाथ में चम्मच लिये खड़ी है, भय से माँ का मुँह पीला हो गया है। लेकिन डाक्टर साहब मुस्कुरा रहे हैं।

"डाक्टर साहब! इसकी बीमारी का तो 'टेर पता' ही नहीं चलता है।"

"लेकिन रोग तो धीरे धीरे घट रहा है। बेहोश हुई, पर पाँच मिनट में ही स्वस्थ भी हो गई। इसी तरह एक दिन जड़ से यह रोग दूर हो जायेगा।·····कमला को ही चाय बनाने दीजिये। जाओ कमला!"

कमली उठ कर इस तरह दौड़ी मानो कुछ हुआ ही नहीं था। डाक्टर कमला की किताब हाथ में लेकर उलटता है—नल दमयंती!····· अस्याधिकारिणी कुमारी कमला देवी।···दूसरी जगह 'कुमारी' को काट दिया गया है और नाम के अंत में 'बनर्जी' जोड़ दिया गया है। कमला

देवी बनर्जी। डाक्टर जल्दी से पृष्ठ उलटता है—आर्ट पेपर पर *नलदमयंती की तस्वीर*। नल के नीचे नीली पेंसिल से लिखा हुआ है—'प्रशान्त' और दमयंती के नीचे लाल पेंसिल से 'कमला'·····डाक्टर के ललाट पर पसीने की छोटी छोटी बूँदे चमक उठती हैं। उसे याद आता है, एक बार ममता के साथ बाँकीपुर स्टेशन से लौट रहा था। रिक्शा पर बैठने के समय एक भिखारी ने घेर लिया था—"जुगल जोड़ी कायम रहे, सुहाग अचल रहे माँ का, बाल बच्चा बनल रहे!" ममता ने बेग से एकन्नी निकाल कर दी थी और डाक्टर की ओर देख कर खिलखिला कर हँस पड़ी थी। और डाक्टर के ललाट पर इसी तरह पसीने की बूँदें चमक उठी थीं।

"डाक्टर साहब! कमली के लिये···एक···अच्छा सा बर ढूँढ़िये न। आपके देश में···आपके साथी संगी···।"—माँ कहते कहते सिर पर घुँघट सरका कर चुप हो जाती है। तहसीलदार साहब आ गये! रनजीत के हाथ में एक बड़ी रेहू मछली है।

"यह नज़राना कहाँ मिला?"—डाक्टर साहब हँसते हैं।

"पकरिया घाट पर मछुआ लोग आज मछली मार रहे थे।"—तहसीलदार साहब ने मोढ़े पर बैठते हुये कहा।

कमला चाय ले आई।

"डाक्टर साहब, आज पाप की गठरी को फेंक आया हूँ"—तहसीलदार साहब ने चाय की प्याली में चुस्की लेते हुये कहा।

"मतलब?"

"यह तहसीलदारी पाप की गठरी ही तो थी। यह नया सर्किल मैनेजर आते ही 'आग पेशाब' करने लगा। लाल पताका अखबार ने ठीक ही लिखा था—'राजपारबंगा के मीनापुर सर्किल का नया मैनेजर नादिरशाह का भतीजा है।' अब आप ही बताइये डाक्टर साहब कि जिन रैयतों के यहाँ सिर्फ़ एक ही साल का बक़ाया है उन पर नालिश कैसे किया जाये? फिर चुपचाप डिग्री जारी करवा कर नीलाम करो और जमीन

खास कर लो। इतना बड़ा अन्याय मुझसे तो अब नहीं होगा। ज़माना कितना नाज़ुक है, सो तो समझते हैं नहीं। मैंने साफ़ इनकार कर दिया तो कड़क कर बोले—'नहीं कर सकते तो इस्तिफ़ा दे दो।' गंगा स्नान से भी बढ़ कर ऐसे पुण्य का अवसर बार बार नहीं मिलता। तुरत इस्तिफ़ा दे दिया। सारी ज़िंदगी तो ग़ुलामी करते ही बीत गई।··· कमला की माँ, आज 'मत्स भगवान' आये हैं। कमला से कहो, डाक्टर साहब को निमंत्रण दे दे।"

तहसीलदार साहब की रसिकता ने डाक्टर को एक बार फिर नल-दमयंती की याद दिला दी। कमली मुस्कुरा रही है। माँ कहती है—"बग़ैर मिर्च मसाला की मछली कमली ही बना सकती है।"

डाक्टर महसूस करता है, कमला के निमंत्रण को अस्वीकार करने की हिम्मत उसमें नहीं।···कमला बनर्जी।···कमला की आँखें!

चाँद बयरि भेल बादल, मछली बयरि महाजाल
तिरिया बयरि दुहु लोचन·····

(१) नागों की देवी (२) बातूनी।

—एक्कीस

रात को तंत्रिमा टोली में सहदेव मिसर पकड़ा गये!

यह सब खलासी की करतूत है। 'ऊपरी आदमी'[1] के सिवा ऐसा जालफ़रेब गाँव का और कौन कर सकता है? पुश्त पुश्तैनी से बाबू लोग छोटे लोगों के टोले में जाते हैं। खेती बारी के समय शाम को ही 'जनों'[2] को ठीक करना होता है, सूरज उगने से एक घंटा पहले ही खेत पर मज़दूरों को पहुँच जाना चाहिये। इसलिए सभी बड़े किसान शाम या रात को ही अपने अपने जनों को कह आते हैं। तंत्रिमा टोली में जब से खलासी का आना जाना शुरू हुआ है, तभी से नई नई बातें सुनने को मिल रही हैं। देखादेखी, दूसर टोले में भी नियम-क़ानून, पंचायत और बंदिश हो गई है। बेचारे सहदेव मिसर को रात भर तंत्रिमा लोगों ने बाँध कर

रखा ····· फुलिया के घर में घुसा था तो फुलिया ने हल्ला क्यों नहीं किया ? जिसके घर में घुसा उसकी नींद भी नहीं खुली, माँ बाप को आहट भी नहीं मिली और उसका कुत्ता भी नहीं भूँका । गाँव के लोगों को बेतार से खबर मिल गई । यह खलासी की बदमाशी है । यही हालत रही तो छोटे लोगों के टोले में 'जन' के लिए जाना मुश्किल हो जायेगा । कौन जाने, किस पर कब झूठमूठ कौन सी तोहमत लग जाये ? पंचायत होनी चाहिये ! राजपूतों ने यदि इस पंचायत में ब्राह्मणों का पक्ष नहीं लिया तो ब्राह्मण लोग ग्वालों को राजपूत मान लेंगे ।

"हमको कुछ नहीं मालूम ।" —— फुलिया पंचों के बीच हाथ जोड़ कर कहती है — " जब आँगन में हल्ला होने लगा तब मेरी आँखें खुलीं ।"

सहदेव मिसर के पास मँहगू दास के अंगूठे की टीप है — सादा काग़ज़ पर । मँहगू की 'टीक' [3] सहदेव के हाथ में है । सहदेव जो चाहे कर सकता है । दोनों गाये और चारों बाछे कल ही खूँटे से खोल कर ले जायेगा । इसके अलावा, साल भर का 'खरचा' भी तो सहदेव ने ही चला दिया है । एक आदमी की मजदूरी से तो एक आदमी का भी पेट नहीं भरता है । ····· लेकिन, अब फुलिया के हाथ में ही सहदेव मिसर की इज़्ज़त और अपने बाप की दुनिया है, उसकी बोली में ज़रा भी हेरफेर हुआ कि सहदेव की इज़्ज़त धूल में मिल जायेगी और उसके बाप की दुनिया भी उजड़ जायेगी ।

पंचायत में गाँव भर के छोटे बड़े लोग जमा हुये हैं । तहसीलदार साहब 'पुरैनियाँ' गये हैं । पंचायत में अकेले सिंघ जी बोल रहे हैं । काली टोपी वाले संजोजक भी हैं । बालदेव जी भी हैं । कालीचरन बिना बुलाये ही आया है । सिंघ जी अकेले ही 'जिरह-बहस' कर रहे हैं । तहसीलदार साहब रहते तो थोड़ी सहुलियत होती सिंघ जी को ।

"····· बात पूछने पर एक घंटे में तो जवाब मिलता है ! ··· हाँ, जब आँगन में हल्ला होने लगा तब तुम्हारी नींद खुली । ···'·· सुन

लीजिये सभी पंच लोग। ..... अच्छा, जब तुम्हारी नींद खुली तो तुमने क्या देखा ?"

"सहदेव मालिक को आँगन में घेर कर सभी हल्ला कर रहे थे।"

"अच्छा, तुम बैठो। कहाँ, सहदेव मिसर ? अब आप बताइये कि मँहगू दास के यहाँ उतनी रात को आप क्यों गये थे ?"

"रात में हमारे पेट में जरा दर्द हुआ। लोटा लेकर बाहर निकले। जब 'दिसा मैदान' से हम लौट रहे थे तो देखा कि कमला किनारे वाले खेत में किसी का बैल गेहूँ चर रहा है। इसीलिए मँहगू को जगाने गया था।"

"क्यों ?"

"कमला किनारे वाली जमीन का पहरा करने के लिए मँहगू दास को ही दिया है।"

"अच्छा, तब ?"

"जब हम जा रहे थे तो रबिया और सोनमा को आप के खेत में सकरकंद उखाड़ते पकड़ा। दोनों को डाँटडपट दिया। मँहगू दास को जगाकर जैसे ही हम उनके आँगन से निकल रहे थे कि रबिया, सोनमा, तेतरा और नकछेदिया ने हमको पकड़ लिया और हल्ला करने लगे।"

"क्या बतावें, हमारा पाँच बीघा सकरकन्द इन्हीं सालों ने चुरा कर खतम कर दिया। ..... अच्छा, आप बैठ जाइये। ..... कहाँ मँहगू ?"

"जी सरकार।"—— मँहगू बूढ़ा हाथ जोड़ कर खड़ा होता है।

"सहदेव मिसर ने तुमको जाकर जगाया था ?"

"जी सरकार।"

"अब पंच लोग फैसला करें कि असल बात क्या है।"

कालीचरन कैसे चुप रह सकता है ! पंचायत में एकतरफ़ा बात नहीं होनी चाहिये। रबिया और सोनमा पार्टी का मेम्बर है। यह तो पंचायत

नहीं, मुँहदेखी है। कालीचरन कैसे चुप रह सकता है — "सिंघ जी! जरा हमको भी कुछ पूछने दीजिये।"

पंचायत के सभी पंचों की निगाहें अचानक कालीचरन की ओर मुड़ गईं। सिंघ जी गुस्से से लाल हो गये। लेकिन पंचायत में गुस्सा नहीं होना चाहिये। राजपूत टोली के नौजवान आपस में कानाफूसी करने लगे। संजोजक जी ने पाकेट टटोल कर देख लिया —— सीटी लाना भूल तो नहीं गये हैं। जोतखी जी एतराज करते हैं — "कालीचरन को हमलोग पंच नहीं मानते।"

"तो पहले इसी बात का फैसला हो जाये कि पंचायत के कितने लोग हमको पंच मानते हैं और कितने लोग नहीं। एक आदमी के चाहने और नहीं चाहने से क्या होता है। ..... अच्छा, पंच परमेसर! क्या हमको इस पंचायत में बैठने, बोलने और राय देने का हक नहीं। क्या हम इस गाँव के बासिन्दे नहीं है?" —— कालीचरन खड़ा होकर कहता है — "यदि आप लोग हमको पंच मानते हैं तो हाथ उठाइये।"

गुमसुम बैठे हुये सैकड़ों मूक जानवरों के सिर में मानो 'अरना भैंसा'[४] के सिंघ जम गये। सैकड़ों हाथ उठ गये।

"दोनों हाथ नहीं, एक हाथ, ठहरिये गिनने दीजिये।.....एक ...दो, तीन, चार, पाँच...। एक सौ पाँच।"

बालदेव जी ने हाथ नहीं उठाया!

"एक सौ पाँच। अब जो लोग हमको पंच नहीं मानते, हाथ उठावें! .....एक, दो, तीन, चार, पाँच .....। पन्द्रह।"

"सिर्फ पन्द्रह!"...सिंघ जी को विश्वास नहीं होता है। खुद गिनते हैं। राजपूत और ब्राह्मण टोली के लोग कहाँ चले गये? जोतखी जी का लड़का नामलरैन ने भी कलिया के पक्ष में ही हाथ उठाया है...?"

"फुलिया!"—— कालीचरन की बोली सुन कर डर लगता है। फुलिया फिर खड़ी होती है।

"देखो! यह पंचायत है। पंचायत में परमेसर रहते हैं। पंचायत

में झूठ बोलने से हाथोहाथ इसका फल मिलता है। सच सच बताओ! सच्ची बात क्या है!"

"....."

"बोलो!"

"सहदेव मिसर हमारे घर में घुसे थे।"

"तुमने हल्ला क्यों नहीं किया?"

"....."

"बोलो! डरने की कोई बात नहीं।"

"बाबा के डर से।"

"बाबा के डर से?"

"हाँ, बाबा सहदेव मिसर का करजा धारते हैं।"

"बैठ जाओ! .... मँहगू!"

मँहगू हाथ जोड़ कर फिर खड़ा होता है।

"क्या बात है?"

"....."

"फुलिया जो कहती है, ठीक है?"

"....."

"डेरो मत! जो बात है, बताओ!"

"कौन गाछ ऐसा है जिसमें हवा नहीं लगती है और पत्ता नहीं झड़ता है।"

"दूसरों की बात मत कहो, अपनी बात बताओ!"

"अकेले हमको क्यों दोख देते हैं। गाँव भर का यही हाल है। कौन घर ऐसा है.....।"

"मैं तुमसे पूछता हूँ।"

"पहले तुम अपनी माँ से जाकर 'इमान धरम' से पूछो कि तुम किसके बेटा हो।"——जोतखी जी हिम्मत करके कहते हैं। क्रोध से उनकी आँखें लाल हो उठी हैं।

"जोतखी काका, हमको अपने बाप के बारे में मालूम है।"

"जोतखी जी अपनी स्त्री से पूछें कि उनके पेट में किसका बच्चा है।"——बासुदेव चिल्ला कर कहता है।

"कौन नहीं जानता कि जोतखी जी का नौकर·····"

"चुप रहो सुन्दर।"—— कालीचरन लोगों को शांत करता है ——"चुप रहो! शांती! शांती!!"

"टूँ-टूँ; टूँ टूँ"——संजोजक जी सीटी फूँकते हैं।

एक दर्जन से भी ज़्यादे नौजवान राजपूत टोली से हाथ में लाठी लेकर दौड़े आये और पंचायत को चारों ओर से घेर कर खड़े हो गये।

"सिंघ जी! इन लाठी वाले नौजवानों को आपने बुलवाया है? तो ···आप पंचायत नहीं, दंगा करवाना चाहते हैं?"——कालीचरन पूछता है।

सिंघ जी कहते हैं—"अब यह पंचायत नहीं हो सकती। पाटीबंदी से कहीं इन्साफ होता है?"

सिंघ जी राजपूत टोली के पंचों के साथ उठ खड़े होते हैं। काली टोपी वाले जवान, सिंघ जी को, संजोजक जी को और राजपूत टोली के पंचों को चारों ओर से घेरे में लेकर, फ़ौजी क़वायद करते हुये चले जाते हैं।

जोतखी जी के साथ ब्राह्मण टोली के पंच लोग भी चूहेदानी में फँस गये हैं। खेलावन बाबू का सहारा है। बालदेव जी भी हैं। लेकिन कालीचरन का ग़ुस्सा·····?

"तो पंचायत का यह फैसला है कि मँहगू दास अपनी बेटी फुलिया का चुमौना खलासी के साथ करा दे। और आज से सभी टोले के लोग 'बाबू लोगों' पर नजर रखें।"

पंचायत के सभी पंच एकस्वर से कालीचरन की राये का समर्थन करते हैं। जोतखी जी भी हाथ उठाते हैं और बालदेव जी भी।····· यह तो 'नियाय बात' है, इसमें 'डिफेट' करना अच्छा नहीं।

"सहदेव मिसर के पास सादे कागज पर मेरा अंगूठा का टीप है। यदि उसे भर कर नालिस कर दे तब ?"——मँहगू दास गिड़गिड़ा कर कहता है।

"सहदेव मिसर जब मुकदमा करेंगे, सभी पंच तुम्हारी गवाही देंगे। वह एक पैसा भी तुमसे नहीं पा सकते।"

(१) गांव के बाहर का आदमी, परदेसी। (२) मज़दूर (३) चुटिया (४) जंगली भैंसा।

—बाईस

सतगुरु हो ! सतगुरु हो !!

महंथ रामदास भी छींकने, खाँसने और जमाही लेने के समय महंथ सेवादास जी की तरह ही चुटकी बजाते हैं, 'सतगुरु हो, सतगुरु हो' कहते हैं और आँखें स्वयं ही बंद हो जाती हैं।

भजन, बीजकपाठ और सतसंग को अब लछमी ही संभालती है। महंथ रामदास जी पढ़ना लिखना नहीं जानते, 'सतगुरु बचन' की गंभीरता की तह तक नहीं पहुँच सकते, लेकिन खँजड़ी पर तो उनका पूरा अधिकार है। यों तो खँजड़ी भंडारी भी बजाता है, लेकिन कोठारिन लछमी दासिन उसके ताल पर गड़बड़ा जाती है। तब महंथ रामदास जी भंडारी के हाथ से खंजड़ी ले लेते हैं, लछमी मुस्कुरा कर गाने लगती है—

संतो हो, कइ बँहियाँ बल आपनी
छाड़ु बिरानी आस।
संतो हो, जिहि अंगना नदिया बहै,
सो कस मेरे पियास। हो संतो सो कस मरे पियास।

सो कस मरे पियास ? महंथ रामदास के आँगन में नदी बह रही है और वह प्यास से मर रहे हैं।·····सतगुरु वचन में कहा है——"जस खर चंदन लादे भारा, परमिल बास न जानु गमारा।" परमिल बास महंथ रामदास को नहीं लगती, सो बात नहीं। परमिल बास से उनका भी

मन मत्त हो जाता है, लेकिन वह क्या करें ? एक दिन मुँह से निकल गया था——"लछमी ! जरा इधर आना तो·····।" बस, चार घंटे तक कोठारिन ने 'सतगुरु बचनामिरित' की झड़ी लगा दी थी—"अंतर जोति सबद एक नारी, हरि ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी। ते तिरिये भंगलिंग अनंता, तेउन जाने आदि न अंता। ·····महंथ साहेब, आप अपने चित्त को मत बिचलित कीजिये। यह आपके पूर्व जन्म का पुण्य है कि आपको महंथी की गद्दी मिली है, नहीं तो आपके जैसे लोगों को तो भैंस चराने के सिवा और कोई काम भी नहीं मिल सकता। आप मेरे गुरु बेटा हैं, मैं आपकी गुरुमाई !"

एक डेढ़ महीने में ही महंथ रामदास जी का कलेवर बदल गया है। लछमी बड़े जतन से सेवा करती है। दूध, मक्खन और ताजे फलों के सेवन से महंथ साहब के श्यामल मुखमंडल पर भी लाली दौड़ गई है। पेट जरा बाहर की ओर निकल रहा है। और तन का ताप भी कभी-कभी मन को बड़ा बेचैन कर देता है। लछमी सतगुरु वचनामृत बरसा कर शांत करने की चेष्टा करती है। सतगुरु वचनामृत से भी बढ़कर तन के ताप को शीतल करती है, कालीचरन की याद ! कालीचरन रोज मठ पर एक बार, थोड़ी देर के लिए भी जरूर आता है। कभी पार्टी के लिए चंदा, ऑफ़िस घर बनाने के लिए बाँस-खड़ माँगने आता है। लछमी कहती है, कालीचरन असल 'नियायी' आदमी है। गाँव के सभी बड़े लोग सिर्फ कहने को बड़े हैं। काली बाबू का सुभाव जरा 'तिब्र' है, लेकिन दुनिया के लोग अब इतने कुटिल हो गये हैं कि सीधे लोगों की गुजर यहाँ नहीं। फिर सुभाव में जरा कड़ापन तो 'सुपुरुख का लच्छन' है। ·····

महंथ रामदास को पहले कालीचरन पर बड़ा संदेह था। जब वह मठ पर आता तो महंथ साहब छिप कर लछमी और काली की बातें सुनते थे। बाँस की टट्टी में छेद कर के देखते थे। लेकिन, कालीचरन हमेशा लछमी से चार हाथ दूर ही हट कर खड़ा रहता था। उसकी बोली में भी माया की मिलावट नहीं रहती थी। लछमी से बातें करते समय कभी

उसकी पलकें शरमा कर झुकती नहीं थीं। बहुत कम लोगों को ऐसा देखा है रामदास ने। कालीचरन को बस अपनी 'सुशलिट पाटी' से ज़रूरत है। लाल झंडा और 'सुशलिट पाटी' को वह औरत की तरह प्यार करता है। ·····उस पर संदेह करना बेकार है। लेकिन, बालदेव जी? वह तो आज कल आते ही नहीं। उनकी नज़र बड़ी मैली है।

लछमी बालदेव जी को भूली नहीं है। कहती है, साधू सुभाव के पुरुख हैं। किसी का चित्त दुखाना नहीं चाहते। बालदेव जी मठ पर नहीं आते हैं; कहते हैं——लछमी दासिन ने हिंसाबाद करवाया है मठ पर। मठ पर नहीं जायेंगे। ·····बहुत सीधे हैं बालदेव जी। सच्चे साधू हैं। उनसे छिमा माँगना होगा।

महंथ रामदास जी सोच विचार कर देखते हैं, कालीचरन के डर से ही वह प्यासा है। कोई बात हुई कि लछमी उससे कह देगी और उसके बाद? चादर टीका के दिन कालीचरन और उसके 'गणों' ने जो कांड किया था उसे भूलना मुश्किल है। ·····और उन्हीं की बदौलत तो रामदास महंथ बना है।

माना कि कालीचरन के बल से उसे महंथी मिली है। इसका यह अर्थ नहीं कि कालीचरन मठ के सभी मामले में दखल देगा। इन्साफ़न महंथी की गद्दी पर तो उसका अधिकार था ही। यदि कल कालीचरन कहे कि गद्दी पर तुम्हारा हक़ नहीं तो क्या वह मान लेगा?····· महंथ रामदास जी धीरे से उठते हैं। दबे पाँव लछमी की कोठरी के पास जाते हैं। ·····किवाड़ी खुली है? नहीं, बंद है। महंथ साहब बाहर से भी किवाड़ी की 'छिटकिनी' खोलना जानते हैं। पतली सी लकड़ी फँसा कर खोलते हैं। ·····लछमी अब किवाड़ में ओखल नहीं लगाती है। ·····लछमी सोई है। उसके कपड़े अस्तव्यस्त हैं, बाल बिखरे हुये हैं! लालटेन की मद्धिम रौशनी में भी उसकी सूरत चमक रही है। ·····

"कौन?"

"·····!"

"रामदास ?"

"·····।"

"रामदास ! हाथ छोड़ो । बैठो । अखिर तुम चित्त को नहीं संभाल सके । माया ने तुम्हें भी अंधा बना दिया ।"

"माया से कोई परे नहीं । माया को कोई जीत नहीं सकता ।"——महंथ साहब आज लछमी की हर बात का जवाब देंगे ।

"तुम नरक की ओर पैर बढ़ा रहे हो । अब भी चेतो ।"

"अब चेतने से फायदा नहीं । मुझे सरग नहीं चाहिये ।····· इस नरक में पहली बार नहीं आया हूँ ।"

लछमी को बचपन की बातों की याद दिलाना चाहता है रामदास । लछमी हाथ छुड़ा कर बिछावन पर से उठना चाहती है, लेकिन महंथ साहब ने दस मिनट पहले ही चौथी चिलम गांजा फूँका है ।

"मैं तुम्हारी गुरुमाई हूँ रामदास !"

"कैसी गुरुमाई ? तुम मठ की दासिन हो । महंथ के मरने के बाद नये महंथ की दासी बनकर तुम्हें रहना होगा । तु मेरी दासिन है ।"

"चुप कुत्ता !"——लछमी हाथ छुड़ा कर रामदास के मुँह पर ज़ोर से थप्पड़ लगाती है ! दोनों पाँवों को ज़रा मोड़ कर, पूरी ताक़त लगा कर रामदास की छाती पर मारती है । रामदास उलटकर गिर पड़ता है ।·····सतगुरु हो !

संतो अचरज भौ एक भारी
पुत धयल महतारी ।
एके पुरुष एक हि नारी
ताके देखु बिचारी ।

"भंडारी ! भंडारी !!"

"सरकार !"

"पानी लाओ !"

लछमी थर थर काँपती है । महंथ सेवादास की दम तोड़ती हुई मूर्ति

उसकी आँखों के सामने दिखाई पड़ रही है। नहीं, मरा नहीं है। भंडारी कहता है —"महंथ साहब को फिर मिरगी की बीमारी शुरू हुई। कल रामपुर मठ से जो साधू आया है, मिरगी की दवा जानता है। कल ही दिलवा दीजिये।"

सतगुरु हो!

महंथ साहब को बुखार है। छाती में दर्द है। डाक्टर साहब ने मालिश का तेल भेज दिया है। लछमी महंथ साहब की छाती पर तेल मालिश कर रही है। महंथ साहब कराह रहे हैं——"सतगुरु हो! अब नहीं बचेंगे। हमको कासी जी भेज दो कोठारिन। हम अपने पाप का प्राच्छित करेंगे। ·····हमको जान से ही क्यों न मार दिया। ·····हाय रे! सतगुरु हो।"

"जाय हिन्द कोठारिन जी।"

"जै हिन्द! आइये बालदेव जी! बहुत दिनों के बाद?"

"रामदा·····महंथ साहेब को क्या हुआ है?"

"बुखार है। छाती में दर्द है।"

"दर्द है! पुरानी गाये की घी मालिस कीजिये।"

'पुरानी गाये की घी' अर्थात गाय का पुराना, सड़ा घी। सुनते ही लछमी को मिचली आने लगती है। महंथ सेवादास को भी जब दमे का दौरा होता था तो गाये का घी ही मालिश करवाते थे।

"कोठारिन जी! सिबनाथ बाबू आ रहे हैं। यहाँ एक चर्खा सन्टर खुलना चाहिये। कुछ मदत दिया जाये।"

"चर्खा सन्टर। इसमें क्या होगा?"

"चर्खा सन्टर में?·····यही, चर्खा, कर्घा, धुनकी और बिनाई की 'टरेनि' होगी।"

"गाँव में तो रोज नया नया सन्टर खुल रहा है। मलरिया सन्टर, काली टोपी सन्टर, लाल झंडा सन्टर और अब यह चर्खा सन्टर।"

"हाँ, नये जमाने में तो रोज नई नई बात होगी ही। सुनते हैं,

आपने सोशलिट पार्टी को काफी मदत दी है·····लेकिन कोठारिन जी ! गाँधी जी का रस्ता ही सबसे पुराना और सही रस्ता है। नई नई पार्टी खुल रही है, मगर किसी का रस्ता ठीक नहीं। सब हिंसाबाद के रस्ते पर हैं।"

"सतगुरु हो ! सतगुरु हो !! कोठारिन। इसको जो 'चन्ना' देना है, देकर बिदा करो। सतगुरु हो !!"—महंथ साहब दर्द से छटपटाते हैं।···बालदेव जी की नज़र बड़ी मैली है। दस रुपये का एक नोट निकाल कर देते हुये लछमी कहती है—"आजकल तो हाथ एकदम खाली है।·····आप तो आजकल इधर का रास्ता ही भूल गये हैं। हमसे जो अपराध हुआ है, छिमा कीजिये।"

"नहीं कोठारिन जी ! आजकल छुट्टी ही नहीं मिलती है कभी। कपड़े की पूर्जी बाँटने का काम क्या मिला है, एक आफत में जान फँस गई है। काँग्रेस का भी कोई काम नहीं कर सकता हूँ। उधर दूसरी पार्टी वालों को मौका मिल गया है। कालीचरन दिन रात खटता है। हमारे काँग्रेस के मेम्बरों को भी सोसलिट पार्टी का मेम्बर बना लिया है। इसलिये सिबनाथ बाबू को बुला रहे हैं। चर्खा सन्टर खुलेगा। एक पुराना काजकर्ता बावन दास भी आ रहा है। पुराना तो नहीं है, मेरे ही साथ सुराजी में नाम लिखाया था।·····बावन दास, बौना है। सिरफ डेढ़ हाथ ऊँचा। वैष्णव है। आवेगा तो यहाँ ले आवेंगे।····· जायहिंद !"

"जै हिन्द।"

बालदेव जी को फिर लछमी के देह की सुगन्ध लगी। कितनी मनोहर !

लछमी देखती है, बालदेव जी आज कल बहुत दुबले हो गये हैं। बालदेव जी के दिल में जरा भी मैल नहीं। कितने सरल हैं।··· न जाने क्यों लछमी का जी आज बालदेव जी को देख कर इतना चंचल हो रहा है। बालदेव जी सच्चे साधू हैं।

बिरह की ओदी लाकड़ी
सपुचै और धुधुआये
दुख से तबहिं बाचिहौं
जब सकलौं जरि जाये।

—तेईस

गाँव के लोग अर्थशास्त्र का साधारण सिद्धान्त भी नहीं जानते। 'सप्लाई और डिमान्ड' के गोरखधंधे में वे अपना दिमाग नहीं खपाते। अनाज का दर बढ़ रहा है, खुशी की बात है। पाट का दर बढ़ रहा है, बढ़ता जा रहा है, और भी खुशी की बात है। पंद्रह रुपये में साड़ी मिलती है तो बारह रुपये मन धान भी तो है। हल का फाल पाँच रुपये में मिलता है, दस रुपये में कड़ाही मिलती है तो क्या हुआ? पाट का भाव भी तो तीस रुपये मन है। खुशी की बात है।

अनाज के ऊँचे दर से गाँव के तीन ही व्यक्तियों ने फ़ायदा उठाया है। तहसीलदार साहब ने, सिंघ जी ने और खेलावन सिंह यादव ने। छोटे छोटे किसानों की जमीनें कौड़ी के मोल बिक रही हैं। मजदूरों को सवा रुपये रोज मजदूरी मिलती है, लेकिन एक आदमी का भी पेट नहीं भरता। पाँच साल पहले सिर्फ़ पाँच आने रोज मजदूरी मिलती थी और उसी में घर भर के लोग खाते थे।

तहसीलदार साहब ने धान तैयार होते ही न जाने कहाँ छिपा दिया है। दरवाजे पर दर्जनों बखार हैं, लेकिन इस साल सब खाली। चमगादड़ों के अड्डे हैं।.....सरकार शायद धान जप्ती का क़ानून बना रही है।

कपड़े के बिना सारे गाँव के लोग अर्धनग्न हैं। मर्दों ने पैंट पहनना शुरू कर दिया है और औरतें आँगन में काम करते समय एक कपड़ा कमर में लपेट कर काम चला लेती हैं, बारह वर्ष तक के बच्चे तो नंगे ही रहते हैं।

शिवनाथ चौधरी जी सभा में खादी के अर्थशास्त्र पर प्रकाश डाल रहे हैं। आँकड़े देकर साबित कर रहे हैं कि यदि घर का एक एक व्यक्ति चर्खा चलाने लगे तो गाँव से ग़रीबी दूर हो जायेगी। अन्न-वस्त्र की कमी नहीं रहेगी।

चर्खा सेन्टर खुल गया है। अब गाँव में ग़रीबी नहीं रहेगी। पटने से दो मास्टर आये हैं, चर्खा मास्टर और कर्घा मास्टर। एक मास्टरनी भी आई हैं—औरतों को चर्खा सिखाने के लिये। औरतों से कहती हैं—"चर्खा हमार भतार पूत, चर्खा हमार नाती; चर्खा के बदौलत मोरा दुआर झूले हाथी।"

चर्खा की बदौलत हाथी? जै—गाँधी जी की जै!!

सैनिक जी और चिनगारी जी की तरह गर्म भाखन शिवनाथ चौधरी जी नहीं देते हैं, लेकिन बात पक्की कहते हैं। एकदम हिसाब से सब बात कहते हैं। खूब ध्यान की बात कहते हैं। कल का पिसा हुआ आँटा नहीं खाते हैं। चीनी नहीं, गुड़ खाते हैं। त्यागी आदमी हैं। चौधरी जी के साथ में दरभंगा जिले के तमोड़िया 'टीशन' से 'रमलगीना बाबू' आये हैं। सुनते हैं, पानी से ही सब बीमारी का इलाज करते हैं। आग में पकाई हुई चीज नहीं खाते हैं। साग की हरी पत्तियाँ चबा कर खाते हैं, कहते हैं,—इसमें बहुत ताक़त है। वह भी असल त्यागी हैं। देह में सिर्फ़ हड्डियाँ बाक़ी बच गई हैं, मांस का लेश भी नहीं। दिन भर में क़रीब पन्द्रह बार हाथ में लोटा लेकर 'मैदान' की ओर जाते हैं।

सादा काग़ज वाला एक 'फाहरम'[1] बाँट हुआ है। 'फाहरम' पर महत्मा जी की 'छापी'[2] है और नीचे लिखा हुआ है—

बापू कहते है :—जो पहने सो काते,
जो काते सो पहने।

सोशलिस्ट पार्टी वालों ने भी 'फाहरम' बाँट किया था। लेकिन वह लाल रंग का था और उसमें एक 'दोहा' ज़्यादा था—

जो जोतेगा सो बोयेगा।
जो बोयेगा सो काटेगा।
जो काटेगा वह बाँटेगा।

बालदेव जी की जगह पर 'बौन दास' आया है। यही 'पुरैनिया' सभा में 'रजिस्टर बाबू' के सामने भाखन देता था। बालदेव जी को पुर्जी बाँटने से छुट्टी नहीं मिलती है, इसीलिये 'पबलि' का काम करने के लिये बौन दास को यहाँ भेजा गया है, बड़ा बहादुर है बौन दास। कहते हैं, जब ४२ के 'मोमेंट' में लोग कचहरी पर झंडा फहराने जा रहे थे तो मलेटरी ने घेर लिया था। बौन दास एक मलेटरी के फैले हुये पैर के बीच से उस पार चला गया और कचहरी के हाता में झंडा फहरा दिया।···रमैन में हलुमान जी ने सुरसा को मसक रूप धर कर जिस तरह छकाया था, उसी तरह।·····

"इस आर्यावर्त में केवल आर्य अर्थात शुद्ध हिन्दू ही रह सकते हैं।" काली टोपी वाले संयोजक जी बौद्धिक क्लास में रोज कहते हैं—"यवनों ने हमारे आर्यावर्त की संस्कृति, धर्म, कला-कौशल को नष्ट कर दिया है। अभी हिंदू संतान मलेच्छ संस्कृति के पुजारी हो गये हैं।··· शिवाजी, महाराणा प्रताप···।"

बौद्धिक क्लास। सोशलिस्ट पार्टी का वासुदेव कहता है—बुद्धू क्लास। वासुदेव ही नहीं, काली टोपी वाले बहुत से जवान भी बुद्धू क्लास ही कहते हैं।

लाठी, भाला और तलवार हाथ में लेते ही खून गर्म हो जाता है राजपूत नौजवानों का। उस दिन हरगौरी कह रहा था—"संजोजक जी! यवनों पर मुझे क्रोध नहीं होता। यवनों का पक्ष लेने वाले हिन्दुओं की तो गर्दन उड़ा देने को जी करता है।"—संयोजक जी जरा दूर हट गये थे, नहीं तो हरगौरी ने इस तरह तलवार चलाई थी कि संयोजक जी की गर्दन ही धड़ से अलग हो जाती।·····'आरजाव्रत'! ···मेरीगंज का ही नाम अब शायद 'आरजाव्रत' हो गया है? लेकिन इस

गाँव में तो एक भी मुसलमान नहीं·····।

गाँव भर के हलवाहों चरवाहों और मजदूरों का नेता कालीचरन है। छोटा नेता बासुदेव। बासुदेव सबों को समझाता है—"भाई, आदमी को एक ही रंग में रहना चाहिये। यह तीन रंग का झंडा—थोड़ा सादा, थोड़ा लाल और थोड़ा पीला; यह तो खिचड़ी पाटी का झंडा है। काँग्रेस तो खिचड़ी पाटी है। इसमें जमींदार हैं, सेठ लोग हैं और 'पासंग' मारने के लिये थोड़ा किसान मजदूरों को भी मेम्बर बना लिया जाता है? गरीबों को एक ही रंग के झंडे वाली पाटी में रहना चाहिये।"

तहसीलदार साहब भी काँग्रेसी हो गये हैं।

चर्खा सेन्टर के लिये अपना गुहाल घर दे दिया है। खद्दड़ पहनने लगे हैं। बोलते थे, सारी जिन्दगी तो झूठ बेईमानी करते ही गुजर गई। आखरी उम्र में पुन्य भी करना चाहिये।···तहसीलदार साहब चवन्निया मेम्बर नहीं बने हैं। चवन्निया मेम्बर तो सभी बनते हैं। तहसीलदार साहब 'चार-सौ-टकिया' मेम्बर बने हैं। देखा नहीं! शिवनाथ बाबू ने रसीद काट कर दिया और तहसीलदार साहब ने तुरत 'मन्धाता'[3] तम्बाकू के पत्तों के बराबर चार नम्बरी नोट निकाल कर दे दिया।·····खड़ खड़ करता था 'नोट'।·····अब 'सोशलिट पाटी' का चलना मुश्किल है। 'पाटी' में एक भी धनी आदमी नहीं है, मठ की कोठारिन कब तक 'पाटी' चलायेगी?

दफा ४० की 'लोटिस' आई है।

जिला काँग्रेस के मंत्री जी ने 'लोटिस' भेज दिया है। सोशलिस्ट पार्टी तो जोर जबर्दस्ती से जमीन पर क़ब्जा करने को कहती है। काँग्रेस के मंत्री जी ने दफा ४० क़ानून पास करके नोटिस भेज दिया है। बालदेव जी हाट में 'लोटिस' बाँट रहे हैं—दफा ४० कानून पास हो गया। अधिया, बटैयादारी करने वाले किसान अपनी जमीन नकदी करा लें।.....बहती गंगा में हाथ धो लें। नया कानून पास हो गया। हिंसाबाद करने की

जरूरत नहीं। पुरैनियाँ कचहरी में दफा ४० का हाकिम आ गया है। दर्खास दे दो—बस, जमीन नकदी हो जायेगी।

वाजिब बात कहते हैं बालदेव जी। यदि बिना 'तूलफजूल' किये ही जमीन नकदी हो रही है तो सोशलिट पाटी में जाने की क्या जरूरत है? कौंग्रेस का राज है, जिस चीज की जरूरत हो, कौंग्रेस के मंत्री जी से कहो। कानून बना देंगे। तब, एक बात है। इस तरह छिटपुट होकर कहने से कौंग्रेस के मंत्री भी कुछ नहीं कर सकते हैं। सबों को एक जगह मिलना चाहिये, मिल कर एक ही बात बोलनी चाहिये। दस मिल कर करो काज, हारो जीतो क्या है लाज। ···गलती तो 'पबलि' की ही है। कोई कौंग्रेस में तो कोई सुशलिट में तो कोई काली टोपी में। इस तरह 'तितिर बितिर' रहने से पबलि की कोई भलाई नहीं हो सकती। बालदेव जी ठीक कहते हैं।

"फौट्टी बी० टी० ऐक्ट?"——सोशलिस्ट पार्टी के जिला मंत्री जी कॉमरेड कालीचरन को समझाते हैं—"फौट्टी बी० टी० ऐक्ट तो कोई नया क़ानून नहीं। यह तो पुराना क़ानून है। कौंग्रेस के मंत्री ने पर्चे बँटवाये हैं। ठीक है, आप भी गाँव के किसानों से कहिये कि जितने बड़े किसान हैं, सबों की ज़मीन पर धावा कर दें। कोई किसी के खिलाफ़ गवाही नहीं दे। क़ानून से क्या होता है? असल चीज है——साबित करना। सबूत पक्का होना चाहिये। गवाहों के इजहार में ज़रा भी 'डेढ़बेढ़' नहीं हो। यह तो तभी हो सकता है जब सभी गरीब एक झंडे के नीचे, एक पार्टी में, एक सूत्र में बंध जायें। तहसीलदार साहब कौंग्रेसी हो गये हैं? बस, उन्हीं की ज़मीन पर किसानों के द्वारा दावा करवा दीजिये। रंग खुल जायेगा। तब देखियेगा कि कौंग्रेस के मंत्री जी की नोटिस-बाज़ी की क्या क़ीमत है?·····लाल पताका के इस अंक मे चिनगारी जी का इस संबंध में एक विशेष आर्टिकिल है, ज़्यादे कौपी ले जाइये इस बार।"

"·····दफ़ा ४०, आधी और बटैयादारी करने वालों को

जमीन पर सर्वाधिकार दिलाने का क़ानून है। लेकिन क़ानून में छोटी-सी छेद भी रहे तो उससे हाथी निकल जा सकता है।.....जितने दफ़ा ४० के हाकिम नियुक्त हुये हैं, सभी या तो जमींदार अथवा बड़े-बड़े किसानों के बेटे हैं। उनसे गरीबों की भलाई की आशा बेकार है। लेकिन, एकता की शक्ति क़ानून से भी बढ़ कर है। सोशलिस्ट पार्टी के लाल झंडे के नीचे खड़े होकर हम प्रतिज्ञा करें कि जमींदारों और बड़े किसानों के पक्ष में गाँव का एक बच्चा भी गवाही नहीं देगा।...लाल पताका आधीदारों को विश्वास दिलाता है.....।"

कहना वाजिब है !

"बात वाजिब नहीं, यह बात का बतंगड़ है।"

जोतखी जी सभी बात में मीन मेख निकालते हैं——"दो भैंसे की लड़ाई में दूब के सिर आफत। कांग्रेस और सुशलिंग अपने में लड़ रहा है। दोनों अपना अपना मेम्बर बनाना चाहता है। चक्की के दो पाट में गरीब लोग ही पीसे जायेंगे।"

"गरीब पीसे नहीं जायेंगे। गरीबों की भलाई होगी। एक पार्टी रहने से काम नहीं होता है। जब दो दलों में मुकाबला और 'हिड़िम'[४] होता है तो फायदा 'पबलि' को ही होता है। उस बार रौतहट मेला में बिदेसिया नाच वाला आया था। मन लगा कर न तो नाच करता था और न गाना ही अच्छी तरह गाता था। तीसरे दिन 'बलबाही नाच'[५] का भी एक दल आ गया। दोनों में मुकाबला हो गया। साम से ही दोनों दलों ने नाच सुरू किया; कितना गजल, कौवाली, खेमटा और दादरा गाया इसका ठिकाना नहीं। सूरज उगने तक दोनों दलवाले नाचते ही रहे। तब मेला मनेजर बाबू ने दोनों दलों के लोगों को समझा बुझा कर नाच बंद करवाया था।"

चलित्तर कर्मकार आया है !

किरांती चलित्तर कर्मकार ! जाति का कमार है, घर सेमापुर में है। मोमेंट के समय गोरा मलेटरी इसके नाम को सुनते ही पेसाब करने लगता

था। बम पेस्तौल और बंदूक चलाने में मसहूर। मोमेंट के समय जितने सरकारी गवाह बने थे, सबों के नाक कान काट लिये थे चालित्तर ने। बहादुर है। कभी पकड़ाया नहीं। कितने 'सीआईडी' को जान से खतम किया। धरमपुर के बड़े-बड़े लोग इसके नाम से थरथर काँपते थे। ज्यों ही चलित्तर का घोड़ा दरवाजे पर पहुँचा कि 'सीसी—सटक'। दीजिये चंदा। ·····पचास? नहीं, पाँच सौ से कम एक पैसा नहीं लेंगे। नहीं है? चाबी लाइये तिजोरी की। नहीं? ·····ठाँयें। ठाँयें!!·····दस खूनी केस उसके ऊपर था लेकिन कभी पकड़ा नहीं गया। आखिर हार कर सरकार ने मुकदमा उठा लिया। किरांती चलित्तर कर्मकार कालीचरन के यहाँ आया है? बस, तब क्या है? करैला चढ़ा नीम पर। चलित्तर भी सोशलिस्ट पार्टी में है! तब तो जरूर बम पेस्तौल की 'ट्रेनिंग' ही देने आया है। बम पेस्तौल के सामने काली टोपी वालों की लाठी क्या करेगी? हाथी के आगे पिद्दी!

चरखा कर्घा, लाठीभाला और बम पेस्तौल!! तीन ट्रेनिंग!

(१) चर्खा (२) तस्वीर (३) तम्बाकू की एक किस्म जिससे सिगरेट बनता है। (४) प्रतियोगिता (५) बाउल सुर में गीत गाकर गाचने वाला दल

—चौदीस

"हाँ रे, अब ना जीयब रे सैयाँ
"छतिया पर लोटल केश,
"अब ना जीयब रे सैयाँ।"

मँहगी पड़े या अकाल हो, पर्व त्योहार तो मनाना ही होगा। और होली? फागुन महीने की हवा ही बावरी होती है। आसिन कातिक के मैलेरिया और कालाआजार से टूटे हुये शरीर में फागुन की हवा संजीवनी फूँक देती है। रोने-कराहने के लिये बाकी ग्यारह महीने तो है ही, फागुन भर तो हँस लो, गा लो। जो जीये सो खेले फाग। दूसरे पर्व त्योहार को तो टाल भी दिया जा सकता है। दीवाली में एक दो दीप जला दिये।

बस, छुट्टी। लेकिन होली तो मुर्दा दिलों को भी गुदगुदी लगा कर जिलाती है। बौरे हुये आम के बाग से हवा आकर बच्चे बूढ़े को मतवाला बना जाती है।·····चावल का आँटा, गुड़ और तेल! पूआ-पकवान के के इस छोटे से आयोजन के लिये मालिकों के दरवाजे पर पाँच दिन पहले से ही भीड़ लग जाती है। बखार के मुँह खोल दिये जाते हैं। मालिक बही खाता लेकर बैठ जाते हैं, पास में 'कजरौटी' खुली हुई रहती है। धान नापने वाला धान की ढेरी से धान नापता जाता है। ·····बादर दास को एक मन। ·····सोनाये ततमा को तीन पसेरी। ·····सादा कागज पर अंगूठे का निशान देते जाओ। भादो महीने में यदि भदै धान चुका दोगे तो ड्योढ़ा, यानी एक मन का डेढ़ मन। यदि अगहनी फ़सल में चुकाओगे तो डेढ़ मन का तीन मन! सीधा हिसाब है!

गाँव के सभी बड़े बड़े किसानों का अपना अपना मजदूर टोला है। सिंघ जी का ततमा और पासवान टोला; तहसीलदार साहब का पोलिया टोला, धानुक टोला, कुर्मी टोला और कियोट टोला। खेलावन यादव का गुआर टोला और कोयरी टोला। संथाल टोली पर किसी का खास अधिकार नहीं।

इस बार तहसीलदार साहब को छोड़ कर किसी ने मजदूरों को धान नहीं दिया।"·····अंगूठे का निशान नहीं देंगे और धान लेंगे? बाप दादे के अमल से अंगूठे का निशान देते आ रहे हैं, कभी बेईमानी नहीं हुई। इस साल बेईमानी कर लेंगे! कालीचरन ने टीप देने को मना किया है तो कालीचरन से ही धान लो।"

तहसीलदार को नये टीप की जरूरत नहीं। पुराने टीप ही इतने हैं कि कोई इधर-उधर नहीं कर सकता। दूसरे किसानों के मजदूरों को भी तहसीलदार साहब ने ही इस बार धान दिया है, लेकिन कालीचरन को जमानतदार रख कर। धान वसूलवा देना कालीचरन का काम होगा। अरे, ड्योढ़ा नहीं तो सवैया ही सही।·····जो भी हो, तहसीलदार साहब के दिल में दया धर्म है। बाकी मालिक लोग तो पिशाच हैं

पिशाच !

"एक ओर लौटल बारी रे बिहउवा।"

फगुआ का हरएक गीत देह में सिहरन पैदा करता है। फुलिया का चुमौना खलासी जी से हो गया है। खलासी जी विदाई कराने के लिए आये थे। लेकिन फुलिया इस होली में जाने को तैयार नहीं हुई। खलासी जी बहुत बिगड़े। धरना देकर चार दिनों तक बैठे रहे। आखिर में रूठकर जाने लगे। फुलिया ने रमजू की स्त्री के आँगन में खलासी जी से भेंट करके कहा था—"इस साल होली नैहर में ही मनाने दो। अगले साल तो……।"

"नयना मिलानी करी ले रे सैयाँ, नयना मिलानी करी ले!

"अबकी बेर हम नैहर रैहबो, जो दिल चाहे से करी ले!!"

दोपहर से शाम तक रमजू दास की स्त्री के आँगन में रह कर फुलिया ने खलासी जी को मना लिया है। होली के लिये खलासी जी ने एक रुपया दिया है।……बेचारा सहदेव मिसर इस बार किससे होली खेलेगा? पिछले साल की बात याद आते ही फुलिया का देह सिहरने लगता है। भाँग पीकर धुत्त था सहदेव मिसर। एक ही पुआ को बारी बारी दाँत से काट कर दोनों ने खाया था। "…अरे! जात धरम! फुलिया तू हमारी रानी है, तू ही जाति, तू ही धरम—सबकुछ।" ……बाबू को दारू पीने के लिये डेढ़ रुपया दिया था और माँ को अठन्नी।…रात भर सहदेव मिसर जगा रह गया था।…फुलिया के देह के पोर पोर में मीठा दर्द फैल रहा है। जोड़ जोड़ में दर्द मालूम होता है! कोई बाँहों में जकड़ कर मरोड़ दे कि जोड़ की हड्डियाँ पटपटा कर चटख उठें और दर्द दूर हो जाये। "…सहदेव मिसर को खबर भेज दें?……लेकिन गाँव वाले?……ऊँह, होली में सब माफ है।…वह आवेगा? नाराज जो है।"

"अरे बँहिया पकड़ि झकझोरे श्याम रे

"फूटल रेसम जोड़ी चूड़ी

"मसकि गई चोली, भींगावल साड़ी
"आँचर उड़ि जाये हो
"ऐसो होरी मचायो श्याम रे···।"

कमला की आँखें लाल हो रही हैं। पिछले साल होली के ही दिन वह बेहोश हुई थी। इस बार क्या होगा? वह बेहोश नहीं होगी इस बार। इस बार डाक्टर है। उसे बेहोश नहीं होने देगा।···लेकिन सुबह से ही डाक्टर बाहर है। रोगी देखने गया है रामपूर। यदि वह आज नहीं आया तो?·····नहीं, वह जरूर आयेगा। माँ ने एक सप्ताह पहले ही निमंत्रण दे दिया है। रंग, अबीर···गुलाल! पिचकारी!!·····

"माँ।"
"क्या है बेटी।"
"तुम्हारा डाक्टर आज नहीं आवेगा?"
"क्यों, क्या बात है बेटी।"
"मेरा जी अच्छा नहीं।"
"ऐसा मत कहो बेटी, दिल को मजबूत करो। कुछ नहीं होगा।"
"···आजु ब्रज में चहुदिश उड़त गुलाल।"

चारो ओर गुलाल उड़ रहे हैं। डाक्टर को कोई रंग नहीं देता है। रामपुर में भी किसी ने रंग नहीं दिया। रास्ते में एक जगह कुछ लड़के पिचकारी लेकर खड़े थे, लेकिन डाक्टर को देखते ही सहम गये।····· रंग नहीं, गोबर है। रंग के लिये इतने पैसे कहाँ? डाक्टर को लोग रंग नहीं देते। वह सरकारी आदमी है, सरकारी 'उर्दी' पहने हुये है। सरकारी 'उर्दी' पर रंग देने से जेल की सजा होती है। डाक्टर सरकारी आदमी है, बाहरी आदमी है। वह गाँव के, समाज का नहीं।··· यह डाक्टर की ही गलती है। शुरू से ही वह गाँव से, गाँव वालों से अलग थलग रहा है। उसका नाता सिर्फ रोग और रोगी से रहा। उसने गाँव की जिन्दगी में कभी घुलने मिलने की चेष्टा नहीं की। लेकिन

डाक्टर को अब गाँव की जिन्दगी अच्छी लगने लगी है, गाँव अच्छा लगने लगा है और गाँव के लोग अच्छे लगते है। वह गाँव को प्यार करता है। उसे कोई रंग क्यों नहीं देता? वह रंग में, गोबर में, कीचड़ में शराबोर होना चाहता है।

"अर–र–र–र! कोई बुरा न माने, होली है!"

डाक्टर के सुफ़ेद कुर्ते पर लाल-गुलाबी रंगों की छींटें छरछरा कर पड़ती हैं।

"····ओ कालीचरन!"

"बुरा मत मानिये डाक्टर साहब, होली है।"

डाक्टर मनीबैग से दस रुपये का नोट निकाल कर कालीचरन को देता है—होली का चंदा! रंग और अबीर का चंदा!

होली है! होली है!! होली है!!!

गनेश हाथ में पिचकारी लिये मौसी का आँचल पकड़ कर खड़ा है। मौसी हँस कर कहती है—"सुबह से ही रंग खेलने के लिये ज़िद कर रहा है। मेरी एक साड़ी को तो रंग से सराबोर कर दिया है। अब ज़िद पकड़ा है कि गाँव के लड़कों के साथ खेलेंगे।"

"आओ भैया गनेश!"—कालीचरन गनेश का हाथ पकड़ कर ले चलता है। गनेश खुश होकर डाक्टर पर रंग की पिचकारी से फुहारें बरसाता हुआ कालीचरन के साथ भाग जाता है। मौसी खुश है।

"जुग जुग जियो काली बेटा!"

"बड़ा मस्त नौजवान है।"—डाक्टर कहता है।

"कमला पाँच बार पुछवा चुकी है—डाक्टर साहब लौटे हैं या नहीं। मुझे धमकी दे गई है—आज डाक्टर को तुम नहीं खिला सकतीं। आज मेरे यहाँ निमंत्रण है"

ढोल–ढाक, झाँझ-मृदंग और डम्फ!

होली, फगुआ, भड़ौवा और जोगीड़ा।

कालीचरन का दल बहुत बड़ा है। दो ढोल, एक ढाक है, झाँझ–

। सभी अच्छे गाने वाले भी उसी के दल में हैं। सुन्दर लाल, मुँजी लाल, देवी दयाल और जोगीड़ा कहने वाला महन्था। मिडिल में पढ़ता है, पढ़ने में बड़ा तेज है! दोहा कवित्त जोड़ने में उसको चाँदी की 'चकत्ती' मिली है। गाँव के छोटे छोटे दल भी कालीचरन के दल में मिल गये हैं।

"जोगीड़ा सर–रर–

"जोगी जी ताल न टूटे

"तीन ताल पर ढोलक बाजे

"ताक धिना धिन धिनक तिनक

"जोगी जी,"

"होली है! कोई बुरा न माने होली है।"

"बरसा में गड्ढे जब जाते हैं भर

"बेंग हजारों उसमें करते हैं टर्र

"वैसे ही राज आज काँगरेस का है

"लीडर बने हैं सभी कल के गीदड़···जोगी जी सर र र!"

"जोगी जी—ताल न टूटे

"जोगी जी तीन ताल पर ढोलक बाजे

"जोगी जी ताक धिना धिन"

"चर्खा काटो, खधड़ पहनो, रहे हाथ में झोली

"दिन दहाड़े करो डकैती बोल सुराजी बोली—जोगी सर–र–र–र!"

सिर्फ़ जोगीड़ा ही नहीं। महंथा ने नया फगुआ गीत भी जोड़ा है। बटगमनी फगुआ—राह में चलते हुये गाने के लिये।

"आई रे होरिया आई फिर से!

"आई रे!

"गावत गाँधी राग मनोहर

"चरखा चलावे बाबू राजेन्दर

"गूँजल भारत अमराई रे! होरिया आई फिर से।

"बीर जमाहिर शान हमारो ।
"बल्लभ है अभिमान हमारो ।
"जयप्रकाश जैसो भाई रे ! होरिया आई फिर से ।"
होली है ! होली है !! होली है !!!

कोयरी टोले का बूढ़ा कलरू महतो कहता है—"अरे डागदर साहेब ! अब क्या लोग होली खेलेंगे ? होली का जमाना चला गया । एक जमाना था जब कि गाँव के सभी बूढ़ों को नंगा करके नचाया जाता था । एकदम नंगा । उस बार राज के मैनेजर जनसैन साहेब के साथ तीन चार साहेब आये थे, काला बक्सा में आँख लगा कर 'छापी' लेते थे । बाद में खानसामाँ से मालूम हुआ कि बिलैत के गजट में छापी हुआ था । एकदम नंगा !"

कामरेड बासुदेव 'भँड़ौवा' गाने के लिए कह रहे है—"अब एक नया भँड़ौवा हो । एकदम नया, ताजा माल । जर्मनवाला ।"

ढाक ढिन्ना, ढाक ढिन्ना ।
"अरे हो बुड़बक बभना अरे हे बुड़बक बभना ।
"चुम्मा लेवे में जात नहीं रे जाये ।
"भुपति मउनियाँ लाये डोमनियाँ, माँगे पियास से पनियाँ
"कुआँ के पानी न पावे बेचारी दौड़ल कमला के किनारियाँ,
"सोही डोमनियाँ जब बनली नटिनियाँ आँखी के मारे पिपनियाँ
"तेकरो खातिर दौड़ले बौड़हवा, छोड़के घर के बभनियाँ ।
"जोलहा धुनियाँ तेली तेलनियाँ के पीये न छुअल पनियाँ
"नटिनी के जोवना के गँगा जमुनुवाँ में डुबकी लगा के नहनियाँ ।
"दिन भर पूजा पर आगन लगा के पोथी पुरान बँचनियाँ
"राती के ततमा टोली के गलियन में जोतखी जी पतरा गननियाँ ।
"भकुआ बभना, चुम्मा लेवे में जात नहीं रे जाये !"
"कोई बुरा न माने ! होली है ! होली है !!"

तहसीलदार साहब की ड्योढ़ी पर पैर रखते ही डाक्टर के मुँह पर

गुलाल मल दिया गया। डाक्टर की आँखें बंद हैं, लेकिन स्पर्श से ही वह समझ गया है कि गुलाल किसने मला है। कमली।..... बसन्तोत्सव की कमली! डाक्टर याद करने की चेष्टा करता है—एक बार किसी चित्रकार का 'मैथिली' शीर्षक चित्र किसी मासिक पत्रिका में देखा था!.....कौन था वह चित्रकार?

"डाक्टर बेचारे के पास न अबीर है और न रंग की पिचकारी। यह 'एकतरफा' होली कैसी? लीजिये डाक्टर बाबू, अबीर लीजिये। और इस बाल्टी में रंग है।"—माँ बेहद खुश हैं आज। पिछले साल होली के दिन इसी आँगन में मातम हो रहा था और इस साल उसकी बेटी चहकती फिर रही है।...दुहाई बाबा भोलानाथ!

बेचारा डाक्टर रंग भी नहीं देना जानता। हाथ में अबीर लेकर खड़ा है। मुँह देख रहा है—कहाँ लगावे?

"ज़रा अपना हाथ बढ़ाइये तो।"

"क्यों?"

"हाथ पर गुलाल लगा दूँ।"

"आप होली खेल रहे हैं या इन्जेक्शन दे रहे हैं? चुटकी में अबीर लेकर ऐसे खड़े हैं मानो किसी के माँग में सिन्दूर देना है।"—कमली खिलखिला कर हँसती है। रंगीन हँसी!

डाक्टर अब पहले की तरह कमली की बोली को एक बीमार की बोली समझ कर नहीं टाल सकता है। कमरे में लालटेन की हल्की रौशनी फैली हुई है, सामने कमली खड़ी हँस रही है। ऐसी हँसी डाक्टर ने कभी नहीं देखी थी। यह स्वस्थ हँसी है—विकारशून्य! कमली के अंग-अंग मानो फड़क रहे हैं। डाक्टर अपने दिल की धड़कन को साफ़-साफ़ सुन रहा है। उसके ललाट पर आज भी पसीने की बूँदें चमक रही हैं। सामने दीवार पर एक बड़ा आईना है। डाक्टर उसमें अपनी सूरत देखता है—ललाट पर पसीने की बूँदें, मानों दुल्हे के ललाट पर चंदन की छोटी-छोटी बिंदियाँ सजाई गई हैं!.....डाक्टर को भवभूति के माधवमालती

की याद आती है। होली को पहले मदनमहोत्सव कहा जाता था। आम की मंजरियों से मदन की पूजा की जाती थी। इसी मदनोत्सव के दिन माधव और मालती की आँखें चार हुई थीं और वे दोनों प्रेम की डोरी में बँध गये थे।·····जहाँ राधेश्याम खेले होरी·····।

डाक्टर अबीर की पूरी झोली कमला पर उलट देता है। सिर पर लाल अबीर बिखर गया। मुँह पर, गालों पर और नाक पर।····· कहते हैं, सिंदूर लगाते समय जिस लड़की के नाक पर सिंदूर झड़ कर गिरता है, वह अपने पति की बड़ी दुलारी होती है।·····

"ऐसी मचायो होरी हो!"

"कनक भवन में श्याम मचायो होरी!"

—पच्चीस

बावन दास आजकल उदास रहा करता है।

"दास जी! चुन्नी गुसाईं का क्या समाचार है?"—रात में बालदेव जी सोने के समय बावन दास से बातें करते हैं।

"चुन्नी गुसाईं तो सोसलिट पाटी में चला गया।"

बालदेव जी आश्चर्य से मुँह फाड़ कर देखते ही रह जाते हैं।

"बालदेव भाई! अचरज की बात नहीं। भगवान जो करते हैं अच्छा करते हैं।"

"याद है दास जी! चम्पानपट्टी की सभा, तैवारी जी का लेक्चर और तनुकलाल का गीत। याद करके आज भी रोवाँ कलप उठता है!····· गँगा रे जमुनवाँ की धार·····।"

"लेकिन भारथमाता अब भी रो रही है बालदेव!"—बावनदास को नींद आ रही है।

बालदेव जी चमक उठते हैं। भारथमाता अब भी रो रही है? ऐं? ·····क्या कहता है बावन दास?

बावन दास करवट लेते हुये कहता है—"बिलैती कपड़ा के 'पिकेटिन'[1] के जमाने में चानमल-सागरमल के 'गोला'[2] पर पिकेटिन के दिन क्या हुआ था सो याद है तुमको बालदेव ! चानमल मड़वारी के बेटा सागरमल ने अपने हाथों सभी भोलटियरों को पीटा था। जेहल में भोलटियरों को रखने के लिए सरकार को खर्चा दिया था। वही सागरमल आज नरपतनगर थाना काँग्रेस का सभापति है। और सुनोगे ?·····दुलारचंद कापरा को जानते हो न ? वही जुआ कम्पनी वाला। एक बार नेपाली लड़कियों को भगा कर लाते समय जो जोगबनी में पकड़ा गया था — वह कटहा थाना का सिकरेटरी है।·····भारथमाता और भी जार बेजार रो रही है।"

बालदेव जी को आश्चर्य होता है। वह बावन दास से बहस करना चाहता है। लेकिन बावन तो खुर्राटा लेने लगा।·····बालदेव जी के समझ में कोई बात नहीं आ रही है।·····भारथमाता जार बेजार रो रही है ?·····

बावन दास, चुन्नी गुसाईं और बालदेव जी ! तीनों ने एक ही दिन इस संसार के माया मोह को त्याग कर सुराजी में नाम लिखाया था।

गृहस्थ चुन्नी गुसाईं ! चार बीघे जमीन, दो चार आम कटहल के पेड़, एक गाय और दो छोटे छोटे लड़कों का एकमात्र अभिभावक। स्वभाव से धर्मभीरु। चंदन पट्टी में सभा देखने गया। तैवारी जी ने भाखन दिया और तनुकलाल ने गीत गाया। सभी रोने लगे। चुन्नीदास के मन का मैल भी आँसुओं की धारा में बह गया। उसी दिन सुराजी में नाम लिखा लिया। चर्खा-कर्घा, झंडा तिरंगा और खद्दड़ को छोड़ कर सभी चीजें मिथ्या है। सुदेशी बाना, बिदेशी 'बैकाठ'।

"अरे देसवा के सब धन धान विदेसवा में जाये रहे।

"मँहगी पड़त हर साल कृसक अकुलाये रहे।"

दुहाई गाँधी बाबा !·····गाँधी बाबा अकेले क्या करें। देश के हरेक आदमी का कर्तव्य है·····।

"का करें गाँधी जी अकेले, तिलक परलोक बसे
"कवन सरोजनी के आस अबहिं परदेस रही।"

दुहाय गाँधी बाबा! चुन्नी दास को अपने शरण में ले लो प्रभू!··· विदेशी कपड़ा बैकाठ—नीमक कानून—जेल। गाँजा-दारू छोड़िये प्यारे भाइयों—जेल। व्यक्तिगत सत्याग्रह—जेल। १९४२—जेल।·· सब मिला कर दस बार जेल यात्रा कर चुका है चुन्नी गुसाईं।

और वह सोसलिट पार्टी में चला गया?

बावन दास!

पूर्व जन्म का फल अथवा सिरजनहार की मर्जी। प्रकृति की भूल अथवा थायराएड, थायमस और प्युटिटिरी ग्लैड्स के हेर फेर। डेढ़ हाथ की ऊँचाई। साँवला रंग, मोटे होंठ, अचरज में डाल देने वाली दाढ़ी और चौंका देने वाली मोटी-भोंड़ी आवाज। ऊँचाई के हिसाब से आवाज दसगुना भारी। अजीब चाल—मानो लुढ़क रहा हो। अज्ञात कुलशील। जन्मजात साधु। जिस ओर होकर गुज़रता, लोगों की निगाहें बरबस अटक जातीं। फिर ताज्जुब की हँसी—मुस्कुराहट। पीछे पीछे बच्चों का हुजूम। तमाशा। कुत्ते भूँकते—इन्सान हँसते। गर्भवती औरतें छिप जातीं अथवा छिपा दी जातीं। ···और जब भगवान ने उसे चलता फिरता तमाशा ही बना कर भेजा है, लोग उसे देख कर खुश हो लेते हैं तो क्यों न वह पारिश्रमिक माँग ले। — दे दे मैया कुछ खाने को! भगवान भला करेंगे। सेत्ताराम सेत्ताराम।

चंदनपट्टी की उस सभा ने, तिवारी जी के 'भाखन' और तनुकलाल के गीत ने इस डेढ़ हाथ के आदमी को भी झकझोर दिया था।····· न जाने पूर्व जन्म के किस पाप का फल भोग रहा हूँ। क्या होगा यह सरीर रख कर? चढ़ा दो गाँधी बाबा के चरण में, भारथ माता की खातिर!

"अरे देसवा के खातिर मजहरुलहक भइलै फकिरवा से
"दीन भइलै राजेन्दर प्रसाद देसवासियों!"

और वह तो फ़क़ीर ही है।···चुन्नी गुसाईं ने नाम लिखा लिया? ···मेरा भी नाम लिख लिया जाये।···रामकिसुन बाबू की स्त्री उसे देखते ही चिल्ला उठी थीं--भगवान! बावन भगवान!···उन्होंने पूर्णियाँ आने के लिए कहा था।

सेत्तारामः! सेत्तारामः!! बन्देमहातरमः! बन्देमहातरमः! बन्देमहातरमः!

ज़िले की राजनीति के जनक रामकिसुन बाबू के बंगले पर वह जिस समय हाज़िर हुआ, उस समय पुलिस की लौरी खड़ी थी। दारोगा साहब इंतिज़ार कर रहे थे। रामकिसुन बाबू अपनी आभा रानी को ज़रूरी हिदायतें दे रहे थे।

बन्दे महातरमः! बन्दे महातरमः!!

"तुमि जाओ! आमार जन्ये भेवो ना। ओई दुयाको, भगवान आमार काछे निजेई एसे गेछेन।"--आभा रानी की आँखें आनन्द से चमक उठी थीं।

आभा रानी ने बावनदास को भगवान छोड़कर किसी दूसरे नाम से कभी नहीं पुकारा।

कुछ दिनों के बाद आभा रानी भी गिरफ़तार हुईं। बावन भी पकड़ा गया। पुलिस ने एकाध डंटा लगा कर उसे भगा देना चाहा, पर पहले ही डंटे की चोट को आभारानी ने झपट कर अपने शरीर पर ले लिया तो पुलिस के भी पाँव के नीचे की मिट्टी खिसक गई थी। ·····"आमार भगवान के मारो ना।"···ख़ून से लथपथ खादी की सुफ़ेद साड़ी। पत्थर को भी पिघला देने वाली, करुणा से भरी बोली—'आमार भगवान!' बावन के पूर्वजन्म के सारे पाप मानो अचानक ही पुण्य में बदल गये। सूखे ठूँठ में नई कोंपल लग गई। उसके मुँह से मोटी आवाज़ निकली थी—"माँ"।

माँ! महात्मा गाँधी जी भी आभा रानी को माँ ही कहते। १६३४ में भूकम्प-पीड़ित क्षेत्रों के दौरे पर जब बापू आये थे। साथ में थे राम किसुन बाबू, आभारानी और बावनदास। बावनदास के बिना आभा-

रानी एक डेग भी कहीं नहीं जा सकतीं। गाँधी जी हँस कर बोले थे "–माँ, तुम्हारे भगवान से ईर्ष्या होती है।" ···दंतहीन, पोपले मुँह की वह पवित्र हँसी, बच्चों की हँसी जैसी।

फुलकाहा बाजार! लाखों की भीड़। ऊँचा मंच।·····'महत्मा गांधी की जय!'····· रह रह कर आकाश हिल उठता है। जय! ... फिर आकाश हिलता है। रेलमपेल! पुष्पवृष्टि!·····चरणधूलि! सीटी—स्वयंसेवक। कॉर्डन डालो—घेरा—घेरा!!

मंच पर आगे आगे रामकिसुन बाबू, आभारानी के कंधे का सहारा लिये गाँधी जी।·····वही गाँधी जी!·····जै! जै!!····· आभारानी हाथ का सहारा देकर फिर किसको मंच पर चढ़ा रही हैं? कौन है वह?···अरे! बावनदास! बौना!···गाँधी जी तर्जनी से सबों को शांत रहने के लिए कह रहे हैं।···लाखों की भीड़ में बावन दास खँजड़ी बजा कर गाता है—"एक रामनाम धन साँचा जग में कछु ना बाँचा हो।" आवाज दूर तक नहीं पहुंचती, लेकिन बावन दास? डेढ़ हाथ ऊँचा यह 'झर-आदमी'[3] कितना बड़ा हो गया है? महात्मा जी भीख माँगते हैं। हरिजनों के लिए दान दीजिये। रुपये की थैली, सोने की अंगूठी, चेन, तुलाम, हार, कंगन, अठन्नी, चौअन्नी, दुअन्नी, एकन्नी, पत्थर का टुकड़ा। किंतु, सब कुछ देकर भी बावन दास से बड़ा होना असम्भव!

बावनदास को मानो कुबेर का भंडार मिल गया, ठूँठ के कोंपल नवपल्लव हो गये—बापू!

१६३७। पंडित जवाहर लाल नेहरू चुनाव के तूफानी दौरे पर आये हैं। बावन दास को देख कर ताज्जुब की मुद्रा बना कर कुछ देर तक देखते ही रह गये। फिर ललाट पर बल और नाक पर अंगुली डालते हुये, गांगुली जी से अंग्रेजी में बोले—"आई कान्ट रेमेम्बर दि नेम ऑफ दैट बुक" (मुझे उस किताब का नाम याद नहीं आ रहा है)

"किंग ऑफ़ दि गोल्डेन रिवर!"—गांगुली जी ने छूटते ही

जवाब दिया। फिर दोनों एक ही साथ हँस पड़े।

अब बावनदास भजन ही नहीं गाता, 'बिख्यान'[४] भी देना सीख गया है। वह बोलने को उठता है। माइक-स्टैंड काफ़ी ऊँचा है। आपरेटर हैरान है। जल्दीवाज़ी में वह क्या करे। कभी ऊँचा कभी नीचा करता है, फिर भी बावनदास से काफ़ी ऊँचा है माइक स्टैंड। नेहरूजी बड़ी फुर्ती से उठ कर जाते हैं माइक खोल कर हाथ में ले लेते हैं। झुक कर बावन दास के मुँह के पास ले जाते हैं,—"बोलिये!" जनता हँसती है। बावन ज़रा घबरा जाता है। नेहरू जी मुस्कुरा कर उसके गले में माला डाल देते हैं—"बोलिये!" प्रेस--रिपोर्टरों के क़ीमती कैमरों के बटन एक ही साथ 'क्लिक-क्लिक' कर उठे थे। 'नैशनल हेराल्ड' के मुखपृष्ठ पर बड़ी-सी तस्वीर छपी थी — बावन दास के गले में माला है, नेहरू जी हाथ में माइक लेकर झुके हुये हैं, मुस्कुरा रहे हैं। तस्वीर के ऊपर लिखा हुआ था — "माइक ऑपरेटर नेहरू!"

अगस्त, १९४२। कचहरी पर चढ़ाई। धायें-धायें। पुलिस हवाई फ़ायर करती है। लोग भाग रहे हैं। बावन दास ललकारता है, जनता उलट कर देखती है। डेढ़ हाथ का इन्सान सीना ताने खड़ा है।..... बम्बई से आई आवाज़!...जनता लौटती है। बावन दास पुलिस वालों के पावों के बीच से घेरे के उस पार चला जाता है और विजयी तिरंगा शान से लहरा उठता है।...महात्मा गाँधी की जय!

बावन को गाँधी जी जानते हैं, नेहरू जी जानते हैं और राजेन्द्र बाबू भी पहचानते हैं। प्रान्तभर के लीडर और राजनैतिक कार्यकर्ता जानते हैं। कैम्प जेल में सुपरिन्टिन्डेन्ट की बदमाशी के ख़िलाफ़ क़ैदियों ने सामुहिक अनशन किया था। अंत तक बावनदास और चुन्नी गुसाईं ही टिके रहे थे। पच्चीस दिनों का अनशन! रदरफ़ोर्ड और आर्चर ने इन दोनों को 'देखने माँगा' था। गाँधी जी की कठोर परीक्षा में, सत्य की परीक्षा में, सत्याग्रह की परीक्षा में खरे उतरनेवाले दो कुरूप और भद्दे इन्सान!

'सुराजी' में नाम लिखाने के बाद सिर्फ़ दो बार बावन को माया ने अपने मोहजाल में फँसाने की कोशिश की थी। दोनों बार वह चेत गया था। मोह फाँस में फँसते फँसते वह बच गया था।···महात्मा जी की कृपा !

एक बार रामकिसुन बाबू ने सिमरबनी से 'मुठिया'[५] में वसूला हुआ चावल लाने को भेजा था—"चावल बेच कर रुपया ले आना।" पाँच रुपये तीन आने। लौटती बार सिमराहा स्टेशन बाज़ार में जगमोहन साह की दूकान पर वह दही चूड़ा खाने गया था। जगमोहन साह जलेबियाँ छान रहा था और सद्यआईन जलेबियों को रस में डुबा रही थी। बावन दास के मन में बहुत देर तक रस में डूबी हुई जलेबियाँ चक्कर काटती रहीं। ···पथराहा के फागू बाबू ने अपने बाप के श्राद्ध में कंगाल भोजन कराया था। एक युग हो गया, बावन ने फिर जलेबी नहीं चखी। आखिर बावन दास ने दही चूड़ा पर दो आने की जलेबियाँ ले लीं।

लेकिन पेट में पहुँचने के बाद उसे अचानक ज्ञान हुआ। उसकी आँखों के आगे से माया का पर्दा उठ गया।···ये पैसे ? मुठिया ?··· उसकी आँखों के सामने गाँव की औरतों की तस्वीरें नाचने लगीं।····· हाँडी में चावल डालने के पहले, परम भक्ति और श्रद्धा से, एक मुट्ठी चावल गाँधी बाबा के नाम पर निकाल कर रख रही है। कूट-पीस कर जो मज़दूरी मिली है, उसमें से एक मुट्ठी ! भूखे बच्चों का पेट काट कर—एक मुट्ठी ! और बावन ने उस पैसे से अपनी जीभ का स्वाद मिटाया ?···व्रतभंग ! तपभ्रष्ट !·····दुहाई गाँधी बाबा !···छिमा करो ! बावन फूट फूट कर रोने लगा। उसकी आँखों से आँसू झड़ रहे थे और वह कंठ में अंगुलियाँ डाल कर कै करता जाता था।·····सेतताराम ! सेतताराम !! दो दिनों का उपवास। आत्माशुद्धि, प्रायश्चित ! रामकिसुन बाबू ने बहुत समझाया, आभारानी परोसी हुई थाली लेकर सामने बैठी रहीं लेकिन बावन ने उपवास नहीं तोड़ा। ·····"माँ इस अपवित्तर मन को 'डण्ड' देने से मत रोको। अशुद्ध 'आतमा' मुझे बाबा के राह से

डिगा देगी !"

माया का दूसरा फंदा !

नमक क़ानून तोड़ने के समय श्रीमती तारावती देवी पटने से आई थीं। उनकी बोली में मानों जादू था। वह जहां जातीं, लोग उनके भाषण सुनने के लिए उमड़ पड़ते थे।·····जवान औरत ! सिर पर घूँघट नहीं·····भगवती दुर्गा की तरह तेज़ी से 'जलजल'[६] करती है। सरकार को पानी पानी कर देती है। ·····"मुट्ठी भर अंग्रेजों को हम नाच नचा देंगे। गोली, सूली और फाँसी का डर नहीं।" पुलिस दारोग़ा डर से थर थर काँपते हैं।·····"अंग्रेजों के जूठे पत्तल चाटने वाले ये हिन्दुस्तानी कुत्ते !"·····जरूर उसमें भगवती का अंश है। सभा ख़त्म होने के बाद उनके निवासस्थान पर भी भीड़ लग जाती थी। बहुत सी 'बाँझ निपुत्तर' औरतें चरणधूलि लेने आती थीं। भगवती !··· उनके खाने पीने और आराम करने के समय भी लोग जमे रहते थे। आख़िर स्वयंसेवकों के पहरे का प्रबन्ध करना पड़ा था।

एक दिन चंदनपट्टी आश्रम में, दोपहर को तारावती जी बिछावन पर आराम कर रही थीं। सामने के दरवाज़े पर पर्दा पड़ा हुआ था और पर्दे के इस पार ड्यूटी पर बावन दास। फागुन की दोपहरी ! आम के मंजरियों का ताज़ा सुबास लेकर बहती हुई हवा पर्दे को हिला डुला कर अंदर पहुँच जाती थी। तारावती जी की आँखें लग गईं। बावन ने हिलते डुलते पर्दे के 'फांक'[७] से यों ही ज़रा झाँक कर देखा था। उसका कलेजा 'धक्' कर उठा था। मानों किसी ने उसे ज़ोर से पीछे की ओर धकेल दिया हो।·····धीरे धीरे, पर्दे को हिलाने वाली फागुन की आवारा हवा ने बावन के दिल को भी हिलाना शुरू कर दिया। बावन ने एक बार चारों ओर झाँक कर देखा, फिर पर्दे के पास खिसक गया। झाँका। चारों ओर देखा और तब देखता ही रह गया मंत्र मुग्ध सा।·····पलंग पर अलसाई सोई जवान औरत ! बिखरे हुये घुँघराले बाल, छाती पर से सरकी हुई साड़ी, खद्दर की खुली हुई अंगिया !·····कोकटी खादी का बटन !·····

आश्रम की फुलवारी का अंग्रेजी फूल 'गमफ्रोरना', पाँचू राउत का बकरा रोज आकर टप टप फूलों को खा जाता है। बावन के पैर थरथराते हैं। वह आगे बढ़ना चाहता है।·····वह जानवर है! वह इस औरत के कपड़े को फाड़ कर चिथी चिथी कर देना चाहता है, वह अपने तेज नाखूनों से उसके देह को चीरफाड़ डालेगा, वह एक चीख सुनना चाहता है, वह अपने जबड़ों से पकड़ कर उसे झकझोरेगा। वह मार डालेगा इस जवान गोरी औरत को। वह खून करेगा।·····ऐं! सामने की खिड़की से कौन झाँकता है? गाँधी जी की तस्वीर? दीवार पर गाँधी जी की तस्वीर। हाथ जोड़ कर हँस रहे हैं बापू!·····बाबा!·····धधकती हुई आग पर एक घड़ा पानी! बाबा! छिमा···छिमा!!--दो घड़े पानी! दुहाई बापू। पानी, पानी, पानी। शीतल जल। ठंढक···

बावन आँखें खोलता है। रामकिसुन बाबू पानी की पट्टी दे रहे हैं। माँ पंखा झल रही है। गांगुली जी चुपचाप खड़े हैं और घबराई हुई तारावती जी कह रही हैं--"चीख सुनकर मेरी नींद खुली तो देखा यह धरती पर छटपटा रहा है।"

दूसरे दिन आभारानी एक गिलास टमाटर का रस देते हुये बोली थीं--"भगवान, आज थेके तोमाय रोज एक गिलास ऐई रस, आर रात्रे दूध खेते हबे।"

लेकिन, बावन तो सात दिनों का उपवास व्रत ले चुका था। आत्मा-शुद्धि, इन्द्रियशुद्धि--प्रायश्चित! आभारानी हार कर--"ता हले आमियो खाबो ना" की धमकी देकर चली गई; तब बावन ने गांगुली जी के पास जाकर धीरे धीरे सारी कहानी सुना दी थी--"गंगुली जी! आप माँ को समझा दीजिये। मैं व्रत तोड़ नहीं सकता। कल माया ने·····!"

गाँगुली जी ने हँसते हुये आभारानी से कहा था--"भगवानेर व्रत भंग हउबा असंभव। कारण--गुरुतर। तबे आपनार भाग्य भालो जे बेचारा के सूरदासेर कथा मने पड़े नि, नईले एतखन आर भगवानेर चोख थाकतो ना।" [भगवान का व्रतभंग होना असम्भव है। अपका भाग्य

अच्छा है कि उन्हें सूरदास की बात याद नहीं आई, वर्ना अबतक भगवान की आंखें नहीं रहतीं]

आभारानी अवाक होकर गाँगुली जी की ओर देखती रह गई थीं-"को जानी बापू।"

देवताओं और मन्दिरों के नगर, बनारस, में रहकर भी आभारानी को सबसे पहले अपने भगवान की याद आती है। कभी कभी गाँगुली जी के नाम मनिआर्डर आता है--"भगवानेर कापड़ेर जन्य।.....भगवानेर दूधेर जन्य।"

.....और वही बावन दास कहता है, भारतमाता ज़ार बेज़ार रो रही है!

बालदेव जी को लछमी दासिन की याद आती है।...वह भी रो रही थी।...लेकिन कालीचरन? सोसलिट पार्टी!.....

बालदेव निराश नहीं होगा। उसे नींद नहीं आ रही है। बहुत खटमल है।.....हाँ, वह कल बावनदास से पूछेगा—यदि घर में खटमल ज़्यादे हो जाये तो क्या घर में ही आग लगा देना चाहिये?

(१) पिकेटिंग, धरना देना (२) आढ़त (३) विकृतांग (४) व्याख्यान (५) मूष्टि भिक्षा (६) दप दप (७) बेद।

—छब्बीस

बाबू हरगौरी सिंह राज पारबंगा के नये तहसीलदार बहाल हुये हैं। 'बेतार का खबर' सुमरित दास सबों से कहता है—"देखो देखो, कायस्त के जूठे पत्तल में राजपूत खा रहा है। तहसीलदार विश्वनाथ बाबू को राजपारबंगा के कुमार साहेब ने बुलाकर बहुत समझाया बुझाया, लेकिन तहसीलदार ने कहा, थूक फेंक कर चाटना आदमी का काम नहीं। .....तहसीलदारी में अब क्या मजा है? अब तो यह सूखी हड्डी है।"

वास्तव में अब तहसीलदारी में कोई मज़ा नहीं रह गया है। ज़माना

बदल गया है। तहसीलदार साहब के बाप देवनाथ मल्लिक सिर्फ़ पाँच रुपये माहवारी पर बहाल हुये थे। लेकिन ऊपरी आमदनी ? तीन साल बीतते बीतते अस्सी नब्बे बीघे 'धनहर'[1] जमीन के मालिक बन गये थे। आदमी की ऊपरी आमदनी ही असल आमदनी है। और तहसीलदारी रोब का क्या पूछना ! तहसीलदार के खेत में मजदूरी करने वालों को कभी मजदूरी नहीं मिलती थी। राज पारबंगा के राजा तो तिरहुत में रहते थे, उन्हें किसी ने कभी देखा भी नहीं। असल राजा तो बूढ़े देवनाथ मल्लिक ही थे। उस समय कटिहार शहर ठिकाने से बसा भी नहीं था। बूढ़े तहसीलदार साहब अपने सलीमशाही जूतों के तल्ले में दाँतवाली काँटियाँ 'पुरैनिया' से ठोकवा कर मंगाते थे और तीन महीने में ही काँटियाँ झड़ जाती थीं। सुनते हैं, वे बोलते बहुत कम थे, कान से कुछ कम सुनते थे, और जब बोलते थे तो--"मारो साले को दस जूता।" कमला नदी के बग़ल में जो गड्ढा है, उसीमें जोंक पाल कर रक्खा था। जिसने तहरीर, तलबाना[2] या नजराना देने में देर की, उसी गड्ढे में चार घंटों तक खड़ा करवा दिया। पाँव के अंगूठे से लेकर जाँघ तक मोटे मोटे जोंक 'घुँघरू' की तरह लटक जाते थे।.....वह जमाना तो बूढ़े तहसीलदार के साथ ही चला गया।

जब नील कोठी के साहबों के भी जुल्म से ऊब कर जगह जगह किसानों ने बलवा करना शुरू किया तो देशी जमींदारों ने अपने तहसीलदार और पटवारियों को गुप्त रूप से हिदायत दी--ज़्यादे ज़ोर जुल्म मत करो !

विश्वनाथ बाबू ने भी अच्छी तरह ही निभाया। रैयतों पर विशेष ज़ोर जुल्म करने की कभी जरूरत नहीं पड़ी। उनके पूर्वजों ने रैयतों के दिल और दिमाग पर तहसीलदारी की ऐसी धाक जमा रक्खी थी कि उन्हें विशेष कुछ नहीं करना पड़ता था। कहावत मशहूर थी--जमदूत थोड़ा मुहलत भी दे सकता है पर तहसीलदार नहीं। हर बार 'तमादी' के पहले जनरल मैनेजर डफ़ साहब का खीमा आता था। खीमा आने के पहले ही बग़ैर 'जोत जमीन' वाले आदमी भी गाँव छोड़कर मोरंग (नेपाल का एक जिला) भाग जाते थे.....कोठी के बगीचे में पचासों छोटे

बड़े तम्बू और शामियाने तान दिये जाते थे। पचास सिपाही, चार हाथी, मोटरगाड़ी, ख़ानसामाँ, बावर्ची, नाई और धोबी। पाँच गाँव की बैल गाड़ियों पर ख़ीमें के सामान लद कर आते थे।

इलाक़े भर के बदमाश और टेढ़े लोगों की फ़िहरिस्त तहसीलदार पहले ही बना कर रखते थे सुमरित दास 'मोटे आसामियों' को, चुपचाप एकांत में ले जाकर ख़बर सुना देता था--तुम्हारा नाम तो फ़िहरिस्त में सबसे ऊपर है!·····ऐं? सबसे ऊपर? सुनने वाले पर मानो बज्र गिर पड़ता था।·····जैसे भी हो, नाम तो कटाना ही होगा।···

फ़िहरिस्त बनाने के समय तहसीलदार साहब सुमरित दास की भी राय लेते थे। सुमरित दास साल भर की घटनायें याद करते हुये लिखाता था--"हाँ 'अनंत पर्व'[3] के दिन रनजीत दूध लाने के लिये गया था तो गुआरटोली के सतकौड़ी ने झूठ बोलकर बर्तन वापस कर दिया था--भैंस सूखगई। कुंजर टोली के फरजंद मियाँ ने करैला नहीं दिया था।"····· तहसीलदार साहब ऐसे लोगों के नाम याद करते जिन्होंने राज के मुक़दमे में गवाही देने से इनकार किया, 'दास्ख़िल ख़ारिज'[4] करवा कर तहसीलदार का नज़राना हड़प गया। किन लोगों को पैसे की गर्मी हो गई है, कौन राह चलते ऐंठकर चलते हैं और पंचायत में उनके सिपाहियों के विरुद्ध किन लोगों ने गवाहियाँ दी थीं।

डफ़ साहब ख़ज़ाना वसूली से ज्यादे महत्व देते थे राज के रोब को। राज का रोब ही असल चीज़ है। उनका कहना था-"अमारा स्टेट में एक भी बडमाश को अम नहीं डेखने माँगटा। टुम अमारा टेसीलडार को जूठा बोला। अमारा अमला जूठा? टुम साला का बच्चा सच्चा?"

"चेटरु मांडल।"

"माय बाप!"--हाथ जोड़े एक अर्धनग्न आदमी थर थर काँपता हुआ खड़ा हुआ।

"तुम मुकडमा में गुआई क्यों नेई डिया?"

"माय बाप·····।"

"फ़ँ--माय बाप का बच्चा। सिपाय! चाबुक डेगा।"

शपाक्! शपाक्!! शपाक्!!--कोड़े बरसने लगते।

"सिं। तुम चेटरी आय? राचपट आय? तुम अमारा टेसीलडार से नेई जीट सकेगा। हम तुमको बेज्जट करेगा। बडमाश·····।"

और इसके बाद साल भर तक इलाके में अमन चैन का राज। तहसीलदार साहब के डर से लोग थर थर काँपते रहते थे। लेकिन अब? ज़माना बदला ही नहीं है, साफ़ उलट गया है।

सिंघ जी ने बहुत कोशिश पैरवी करके हरगौरी सिंघ को तहसीलदारी दिला दी है। मैनेजर साहब को पूरे चार सौ रुपये की सलामी दी गई है। सुना है, 'बहीबस्ता' लेते समय ही छींक पड़ गई है। अब नये तहसीलदार की तहसीलदारी कैसी चलती है, देखना है।

राजपूत टोली का बच्चा बच्चा खुश है। शिवशंकर सिंह सबों से कहते हैं——"हरगौरी एक किलास और पढ़ लेता तो मनेजरी धरी थी।"·····

काली कुर्ती वाले संजोजक जी बौद्धिक क्लास में समझा रहे हैं—"जिस तरह यह तहसीलदारी कायस्तो के हाथ से राजपूतो के हाथ में आई है, उसी तरह सारे अर्यावर्त के राजकाज का भार हिन्दुओं के हाथ में आयेगा। और उस दिन अर्यावर्त के कोने कोने में हिन्दू राज्य का पताका लहरायेगा।"

जोतखी जी सलाह देते हैं—"बिना लछमी की पूजा किये बही बस्ता में हाथ नहीं लगाया जाये। शुकवार को शुभ दिन है। कार्यारम्भ, यात्रा, गृहनिर्माण आदि।"

बालदेव जी को बार बार अपने सपने की बात याद आती है—"विशाल सभा, हरगौरी माला पहना रहा है लछमी को।"

कॉमरेड कालीचरन और बासुदेव अपनी पार्टी के मेम्बरों से कहते हैं----"पुराने तहसीलदार यदि नागनाथ थे तो यह नया तहसीलदार साँपनाथ हैं। दोनों में कोई फर्क नहीं। दोनों ही जालिम जमींदार के कठ-

पुतले हैं। सोशलिस्ट पार्टी के सिक्रेटरी साहब ने कहा है, लोग संघर्ष के लिये तैयार रहें।"

बावन दास के लिए यह गाँव नया है, गाँव के लोग नये हैं। वह अभी चुपचाप है। न जाने क्यों, उसका जी नहीं लगता है।

चर्खा सेन्टर में सिर्फ़ चर्खा-कर्घा ही नहीं, बूढ़े लोगों को रात में पढ़ाया भी जाता है। औरतों और बच्चों को मास्टरनी जी पढ़ाती हैं और बूढ़ों को मास्टर जी। बूढ़ा बिरंची दास दस दिनों से 'क ख ग घ' पढ़ रहा है, लेकिन 'क' के बदले 'ग' से ही ककहरा शुरु करता है--'ग घ क ख'। मास्टर जी हैरान हैं---क्या सचमुच ही बूढ़ा तोता पोस नहीं मानता?

(१) ज्यादे धान उपजाने वाली जमीन (२) बुलाने के लिए जो सिपाही आता है उसका खर्चा (३) अमांत चतुर्दशी व्रत (४) नाम दर्ज कराना।

—सत्ताईस

डाक्टर की जिन्दगी का एक नया अध्याय शुरु हुआ है। उसने प्रेम, प्यार और स्नेह को 'बायोलोजी' के सिद्धान्तों से ही हमेशा मापने की कोशिश की थी। वह हँस कर कहा करता--"दिल नाम की कोई चीज आदमी के शरीर में है, हमें नहीं मालूम। पता नहीं आदमी 'लंग्स' (फेफड़ा) को दिल कहता है या 'हार्ट' को। जो भी हो, हार्ट, लंग्स या लीवर को प्रेम से कोई संबंध नहीं है।"

अब वह यह मानने को तैयार है कि आदमी को दिल होता है, शरीर को चीर फाड़ कर जिसे हम नहीं पा सकते। वह 'हार्ट' नहीं, वह अगम-अगोचर जैसी चीज है। जिसमें दर्द होता है, लेकिन जिसकी दवा 'ऐड्रिलिन' नहीं। उस दर्द को मिटा दो, आदमी जानवर हो जायगा।.....दिल वह मंदिर है जिसमें आदमी के अंदर का देवता बास करता है।

बचपन से ही वह अपने जन्म की कहानी को कभी भूल नहीं सका। वंश के इतिहास पर गौरव करने वाले युग में पले हुये हर व्यक्ति को अपने खान्दान की ऐसी कहानी चाहिये जिसके उजाले से वह दुनिया में चकाचौंध पैदा कर दे। लेकिन डाक्टर के 'वंश-इतिहास' पर काली रोशनाई पुती हुई है।.....जेल की सेन्सर की हुई चिट्ठियों की तरह। काली रोशनाई से किसी हिस्से को इस तरह पोत दिया जाता है कि कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि उस हिस्से में कभी कुछ लिखा हुआ था।.. जन्म देने वाली माँ ने भी जिसे दूर कर दिया।.....अंधेरे में एक अभागिनी माँ, दिल का दर्द दबाये और आँचल में अपने नवजात शिशु को छिपाये खड़ी है। एक काली और भयावनी छाया आकर हाथ बढ़ाती है, माँ अंतिम बार अपने कलेजे के टुकड़े को, रक्त के पिंड को एक पलक निहारती है, चूमती है। भयावनी छाया उसके हाथ से शिशु को छीन लेती है। माँ, दाँतों से ओंठ को दबाये खड़ी रह जाती है।

डाक्टर ने अपनी माँ के स्नेह को, अंधेरे में खड़ी 'सिल्युटेड तस्वीर'सी माँ के दुलार की क़ीमत को समझने की चेष्टा की है। वह गला टीप कर मार भी तो सकती थी। खटमल को मसलने के लिए अंगुलियों पर जितना ज़ोर डालना पड़ता है, उस पाँच घंटे की उम्र के शिशु की जीवन-लीला को समाप्त करने के लिए उतने से ज़ोर की ही आवश्यकता थी। माँ ऐसा नहीं कर सकी।.....शायद उसने चेष्टा की होगी। गले पर एक दो बार उंगलियाँ गई होंगी। सोया हुआ शिशु मुस्कुरा पड़ा होगा और वह उसे सहलाने लगी होगी। उसने अपनी बेबस, लाचार और अभागिनी माँ के मन में उठनेवाले तूफ़ान के झकोरे की कल्पना की है।... वह अपनी माँ के पवित्र स्नेह का, अपराजित प्यार का जीता-जागता प्रमाण है!

किसी भी अभागिनी माँ की कहानी सुनते ही वह मन ही मन उसकी भक्ति करने लगता है। पतिता, निर्वासिता और समाज की दृष्टि में सबसे नीच माँ की गोद में वह क्षण भर के लिए अपना सिर रखने के

लिए व्याकुल हो जाता है।·····किसी स्त्री को प्रेमिका के रूप में कभी देखने की चेष्टा उसने नहीं की। वह मन ही मन बीमार हो गया था। एक जवान आदमी को शारीरिक भूख नहीं लगे तो वह निश्चय ही बीमार है अथवा 'ऐबनॉरमल' है।

डाक्टर ने एक नये मोड़ पर मुड़ कर देखा--दुनिया कितनी सुन्दर है!

वह लोक-कल्याण करना चाहता है। मनुष्य के जीवन को क्षय करने वाले रोगों के मूल का पता लगा कर नई दवा का आविष्कार करेगा वह। रोग के कीड़े नष्ट हो जायेंगे। इन्सान स्वस्थ हो जायेगा। दुनिया भर के मेडिकल कॉलेजों में उसके नाम की चर्चा होगी। 'प्रशान्त मेथड'। 'प्रशान्त रिऐक्शन'। डब्ल्यू० आर० की तरह पी० आर० कहेंगे लोग। इसके बाद ?·····टेस्ट-ट्यूब बेबी किसे माँ कहेगा ? तब शायद माँ एक हास्यास्पद शब्द बन कर रह जायेगा।·····जानते हो, पहले माँ हुआ करती थी !·····एक अर्धनग्न से भी कुछ आगे लड़की, 'टेली-काफ़े' के द्वारा अमेरिकन पेस्ट्री का घर बैठे स्वाद लेती हुई मुड़ कर कहेगी--"प्री टेस्ट ट्यूब एज ! सि मि !···म्वाँ···! ट्यूब-म्वाँ !!"

---माँ। माँ बसुन्धरा, धरती माता ! माँ अपने पुत्र को नहीं मार सकी लेकिन पुत्र अपनी माँ को गला टीप कर मार देगा।····· सस्य श्यामला !·····भारतमाता ग्राम्यवासिनी !

"खेतों में फैला है श्यामल,
"धूल भरा मैला सा आँचल !"

मैला आँचल !···लेकिन धरती माता अभी स्वर्णांचला है !···गेहूँ की सुनहली बालियों से भरे हुये खेतों में पुरवैया हवा लहरें पैदा करती हैं। सारे गाँव के लोग खेतों में हैं। मानो सोने की नदी में, कमर भर सुनहले पानी में सारे गाँव के लोग क्रीड़ा कर रहे हैं। सुनहली लहरें !··· ताड़ के पेड़ों की पंक्तियाँ, झरबेरी का जंगल, कोठी का बाग़, कमल के पत्तों से भरे हुये कमला नदी के गड्ढे ! डाक्टर को सभी चीजें नई

लगती हैं। कोयल की कूक ने डाक्टर के दिल में कभी हूक पैदा नहीं की। किंतु खेतों में गेहूँ काटते हुये मजदूरों की 'चैती' में आधीरात को कूकने वाली कोयल के गले की मिठास का अनुभव वह करने लगा है।

सब दिन बोले कोयली भोर भिनसरवा···वा···वा
बैरिन कोयलिया, आजु बोलय आधी रतिया हो रामा···आँ···आँ
सूतल पिया के जगावे हो रामा।···आँ···आँ

किसी के पिया की नींद न टूट जाये! गहरी नींद में सोये हुये पिया के सिरहाने पंखा झलती हुई 'धानी' को डर है--पिया की नींद न खुल जाये। सपना न टूट जाये!

डाक्टर भी किसी की दुलार भरी मीठी थपकियों के सहारे सो जाना चाहता है, गहरी नींद में खो जाना चाहता है। जिन्दगी की जिस डगर पर वह बेतहाशा दौड़ रहा था, उसके अगल बगल, आसपास कहीं क्षण भर सुस्ताने के लिए कोई छाँव नहीं मिली। उसने किसी पेड़ की डाली की शीतल छाया की कल्पना भी नहीं की थी। जीवन की इस नई पगडंडी पर पाँव रखते ही उसे बड़े जोरों की थकावट मालूम हो रही है। वह राह की खूबसूरती पर मुग्ध होकर छाँव में पड़ा नहीं रह सकेगा। मंजिल तक पहुँचने का यह कितना जबरदस्त रास्ता है जो राही को मंजिल तक पहुंचने की प्रेरणा देता है।·····वह क्षण भर सुस्ताने के लिए उदार छाया चाहता है। प्यार!·····

सूतल पिया के जगावे हो रामा!

पिया जग गये, धानी ने पिया को विदाई दी।·····पिया को जाना है। हिमालय की चोटी को उषा की प्रथम किरण ने छू कर स्वर्णिम कर दिया। आम के बागों में कोयल- कोयली, दहियल और बुलबुल ने सम्मिलित सुर में मंगलगीत गाये!·····खेतों से गीत की कड़ियाँ पुरवैया के सहारे उड़ती आती हैं और डाक्टर के दिल में हलचल मचा जाती हैं।·····गेहूँ की कटनी हो रही है। झुनाई हुई रब्बी की फसल की सोंधी सुगन्ध चारों ओर फैल रही है।

"डाक्टर साहब।"

"क्या है ?"

"जरा चलिये। मेरी बहन को कै हो रही है।"

"पेट भी चलता है ?"

"जी !"

डाक्टर तुरत तैयार होकर चल देता है। पास के ही गाँव में जाना है।.....डायरिया होगा। लेकिन 'सेलाइन ऐपरेटस' भी ले लेना अच्छा होगा।

"तीस बार पेट चला है ?"

बिछावन पर पड़ी हुई युवती पीली पड़ गई है। उसके हाथ पाँव अकड़ रहे हैं। पेशाब बंद है। हैजा ही है। डाक्टर सेलाइन ऐपरेटस ठीक करता है। स्प्रीट स्टोव जलाता है, नार्मल-सेलाइन का बोतल निकालता है। बूढ़ा बाप हाथ जोड़ कर कुछ कहना चाहता है, और आखिर कह ही डालता है--"डाक्टर साहब, यह जो 'जकसैन' दे रहे हैं इसका फीस कितना होगा ?"

छोटे जकसैन का फीस तो दो रुपैया है। इतने बड़े जकसैन का तो जरूर पचास रुपैया होगा।

"क्यों ? पचास रुपैया।"--डाक्टर मुस्कुराता है।

"तो रहने दीजिये। कोई दवा ही दे दीजिये।"

"दवा से कोई फ़ायदा नहीं होगा।"

"लेकिन मेरे पास इतने रुपये कहाँ है ?"

"बैल बेच डालो।"--डाक्टर पहले की तरह मुस्कुराते हुये सेलाइन देने की तैयारी कर रहा है।

"डाक्टर बाबू! बैल बेच लूंगा तो खेती कैसे करूँगा ? बाल बच्चे भूखों मर जायेंगे।.....लड़की की बीमारी है।"

"क्या मतलब ?"

"हुजूर, लड़की की जात बिना दवा दारू के ही आराम हो जाती है।"

·····लड़की की जाति बिना दवा दारू के ही आराम हो जाती है। लेकिन बेचारे बूढ़े का इसमें कोई दोष नहीं। सभ्य कहलाने वाले समाज में भी लड़कियाँ बला की पैदाइश समझी जाती है। जंगल-झार !

डिग डिग, डिडिग डिडिग।

"·····कल सुबह को इसपिताल में। हैजा की सूई दी जायेगी। सभी लोग। बाल बच्चे। बूढ़े जवान। औरत मर्द। आकर सूई ले लें।"··· डिग डिग डिडिग ।--गाँव का चौकीदार ढोलहा दे रहा है।

हैजा के पहले रोगी को तो बचा लिया गया लेकिन गाँव को नहीं बचाया जा सका। डाक्टर ने ढोल दिलवा कर लोगों को सूई लेने की खबर दी, लेकिन कोई नहीं आया। कूपों में दवा डालने के समय लोगों ने दल बाँध कर विरोध किया--"चालाकी रहने दो ! डाक्टर, कूपों में दवा डाल कर सारे गाँव में हैजा फैलाना चाहता है। खूब समझते हैं।"

डाक्टर ने बालदेव जी, कालीचरन और चर्खा सेन्टर के लोगों को खबर दे कर बुलवाया। सहायता माँगी--"यदि लोगों ने सूई नहीं लगवाई और कूओं में दवा नहीं डालने दिया तो एक भी गाँव को बचाना मुश्किल होगा।"

दोपहर को बालदेव जी, कालीचरन जी और चर्खा सेन्टर के मास्टर-मास्टरनी जी डाक्टर साहब के साथ दल बाँध कर निकले और कूपों में दवा डाल दी गई। सूई देने की समस्या जटिल थी। कालीचरन ने कहा --"एक बात ! आज कोठी का हाट है। हाट लगते ही चारों ओर से घेर लिया जाये और सबों को जबर्दस्ती सूई दी जाये। जो लोग बाकी बच रहेंगे, उन्हें घर पर पकड़ कर दी जाये।"

डाक्टर को यह सुझाव अच्छा लगा लेकिन बालदेव जी ने एतराज किया--"किसी की इच्छा के खिलाफ, जोर जबर्दस्ती करना·····।"

"क्या बेमतलब की बात बोलते हैं।"--चर्खा सेन्टर की मास्टरनी

बालदेव जी की बात को काटते हुये बोलीं--"कालीचरन जी ठीक कहते हैं।"

बालदेव जी की कनपट्टी गर्म हो जाती है।.....यह औरत बोलने का ढंग भी नहीं जानती। नारी का सुभाव 'करकस' नहीं होना चाहिये। कोठारिन जी कितनी मीठी बोली बोलती हैं। और यह तो मर्दाना औरत है। चर्खा सेन्टर की मास्टरनी! हुँ! बहुत महिला कांग्रेसी को देखा है --मायजी, तारावती देवी, सरस्सत्ती, उखा देवी, सरधा देवी। लेकिन कोई तो इतना करकस नहीं बोलती थी।.....हुँ! कालीचरन जी ठीक कहते हैं! जवर्दस्ती करना हिंसाबाद नहीं तो और क्या है?

कालिचरन के दलवालों ने हाट को घेर लिया है। डाक्टर साहब आम के पेड़ के नीचे टेब्ल पर अपना पूरा सामान रख कर तैयार हैं। कालीचरन एक-एक आदमी को पकड़ कर लाता है, मास्टरनी जी स्प्रिट में भिंगोई हुई रुई बाँह पर मल देती हैं और डाक्टर साहब सूई गड़ा देते हैं। तहसीलदार साहब नाम लिखते जाते हैं।.....हाट में भगदड़ मची हुई है। लेकिन भाग कर किधर जाओगे? चारों ओर सुरिलंग पाटी का सिपाही खड़ा है।

"माई गे! माई गे!! हे बेटा काली।"

"क्यों, रोती क्यों है?"

"हे बेटा!"

"सारे देह में गोदना 'गोदाने' के समय देह में सूई नहीं गड़ी थी? चलो।"

सात सौ पचीस लोगों को सूई दे दी गई है। अब जो लोग घर में रह गये हैं, उन्हें कल सुबह ही, सूरज उगने के पहले ही दे देनी होगी।

डाक्टर साहब कहते हैं--"बीमारों की सेवा के लिए स्वयंसेवक चाहिये।"

कालीचरन अपने दल के साठ स्वयंसेवकों के साथ रात को अस्पताल में दाखिल हो जायेगा।

चर्खा सेन्टर की मास्टरनी जी बड़ी निडर हैं। वह भी सेवा करने के लिए अपना नाम लिखाती हैं।

बावन दास हँस कर कहता है--"मुझे देख कर तो रोगी लोग डर जायेंगे डाक्टर साहब। मुझे और कोई काम दीजिये।"

बालदेव जी चुप हैं, उनको हैजा का बहुत डर है।

—अट्ठाईस

डाक्टर आदमी नहीं, देवता है देवता।

तन्त्रिमा टोली, पोलिया टोली, कुर्म छत्री टोली और रैबदास टोली में सब मिला कर सिर्फ़ पाँच आदमी नुकसान हुये। घर-घर में एक-दो आदमी बीमार थे, लेकिन डाक्टर देवता है। दिन-रात, कभी एक पल चैन से नहीं बैठा। मास्टरनी जी भी देवी हैं। कालीचरन भी बहादुर है। क़ै और दस्त से भरे बिछावन पर लेटे हुये रोगी की सेवा करना, कपड़े धोना, दवा डाल कर गंदगी जलाना--आदमी का काम नहीं। देवता ही कर सकते हैं। एक पैसा भी फ़ीस नहीं लिया और मुफ़्त में रात-रात भर जग कर लोगों का इलाज करते रहे। रेसम लाल कोयरी के एकलौते बेटे को 'जम' के मुँह से छुड़ा लिया। रेसम ने डाक्टर को खुशी-खुशी एक गाय 'बक्सीस' दी, लेकिन डाक्टर साहब ने कहा--"अपने लड़के को इस गाय का दूध पिलाओ। दूध बिक्री मत करो। यही हमारा 'बक्सीस' है।"

बावन दास भी अवतारी आदमी है। रात भर नीम पेंड़ के नीचे बैठकर खंजड़ी बजा कर गाते रहते थे--"मालिक सीताराम सोच मन काहे करो! सेत्ताराम! सेत्ताराम! बन्दे महातरम्।...मालिक सीताराम।"

भयावनी रात में, जब कि आदमी अपनी छाया से डरते थे, बावन का गीत डरे हुये लोगों को बल देता था--"मालिक सीताराम सोच मन काहे करो।"...निर्बल के बल राम!

ब्राह्मण टोले में तीन आदमी मरे। और जोतखी जी की स्त्री तो दूसरी बीमारी से मरीं। बच्चा अटक गया था।···कायस्त टोली, संथाल टोली और यादव टोली में एक भी आदमी बीमार नहीं हुआ। राजपूत टोली में पाँच-सात आदमी को रोग ने पकड़ा, लेकिन डाक्टर साहब ने सबों को बचा लिया।···पन्द्रह दिनों के बाद कमला ने डाक्टर की सूरत देखी है।

कमला ने मन ही मन कितनी बातें गढ़ रखी थीं। वह रूठी रहेगी, बोलेगी नहीं।···पन्द्रह दिनों में एक बार भी तो आते! रहने दीजिये, यही होता न कि रोग का छूत मुझे लग जाता। मैं मर जाती। तुम्हारा क्या बिगड़ता? चर्खा सेन्टर की मास्टरनी जी जो थीं।···रातभर खूब चाय बना कर पिलाती थीं न?

लेकिन डाक्टर को देखते ही वह सब कुछ भूल गई। डाक्टर का चेहरा एकदम काला हो गया है। आँखें धँस गई हैं। प्यारू ठीक ही कहता था--'डाक्टर साहब दुनिया भर को आराम कर रहे हैं, लेकिन खुद बीमार होते जा रहे हैं। खाना पीना तो एकदम कम हो गया है।' ···कमला चाहती है कि माँ थोड़ी देर के लिये डाक्टर को अकेला छोड़ दे। आज वह डाक्टर से लिपट जायेगी।

"कहिये हेजा डाक्टर साहब।"--कमला हँसते हुये डाक्टर के पास जाती है।

"हैजा डाक्टर? सुनिये लड़की की बात जरा! मैं पूछती हूँ तुमसे, कि तुम दिन-दिन क्या होती जा रही हो?"--माँ डाँटते हुये कहती है।

"वाह रे! रामपूर के बटैयादार लोग उस दिन आकर बाबूजी से पूछ रहे थे कि हैजा डाक्टर कहाँ रहता है? सुना था नहीं? लोग इन्हें हैजा डाक्टर ही कहते हैं।"--कमला खिलखिला कर हँसती है।

माँ हँसते हुये चली जाती है। डाक्टर मुस्कुराते हुये कहता है--"लोग हैजा डाक्टर कहते हैं, लेकिन तुम को तो कहना चाहिये--बेहोशी डाक्टर।"

"अहा-हा ! बेहोशी डाक्टर की सूरत तो आज पन्द्रह दिनों बाद दूज के चाँद की तरह देखने को मिली है···और बात बनाते हैं।" कमली मुँह फुलाती है।

"नहीं कमला, इस बीच मुझे बराबर यही डर लगा रहता था कि यदि तुमने कुछ गड़बड़ी पैदा की तो क्या होगा ?"

"तो मैं जानबूझ कर बेहोश होती हूँ, क्यों ?"

"हाँ, जानबूझ कर।"

"क्यों ?"

"क्योंकि बेहोश होने से ही बेहोशी डाक्टर आता है।"

"ऊँह ! डाक्टर आवे न आवे मेरी बला से।"

"अच्छी बात है।···तो मैं चला।

"ऊँ !···

"डाक्टर साहब इतने दिनों बाद आये हैं, चाय बनादेगी—सो तो नहीं, बैठ कर झगड़ा कर रही है।"--माँ अंदर से ही कहती है।

कमला दाँत से जीभ को दबाते हुये उठ भागती है--"माँ सब सुन रही थी शायद।"

डाक्टर ने इस बार आसपास के पन्द्रह गाँवों का परिचय प्राप्त किया है। भयातुर इन्सानों को देखा है। बीमार और निराश लोगों की आँखों की भाषा को समझने की चेष्टा की है। उसे मध्यवित्त किसानों की 'अन्दर हवेली' और बेजमीन मजदूरों की झोपड़ियों में जाने का सौभाग्य या दुर्भाग्य प्राप्त हुआ है।···रोगियों को देखकर उठते समय, 'छींके' पर टँगी हुई खाली मिट्टी की हाँडियों से उसका सिर टकराया है। ···सात महीने के बच्चे को बथुआ और पाट के साग पर पलते देखा है। उसने देखा है--गरीबी, गंदगी और जेहालत से भरी हुई दुनिया में भी सुन्दरता जन्म लेती है। किशोर किशोरियों और युवतियों के चेहरे पर एक विशेषता देखी है उसने।···कमला नदी के गड्ढों में खिले हुये कमल के फूलों की तरह। जिन्दगी के भोर में वे बड़े लुभावने, बड़े

मनोहर और सुन्दर दिखाई पड़ते हैं, किन्तु ज्यों ही सूरज की गर्मी तेज हुई--वे कुम्हला जाते हैं। शाम होने से पहले ही पपड़ियाँ झड़ जाती हैं!···कश्मीर के कमल और पूर्णियाँ के कमल में शायद यही फ़र्क़ है। ···और कमला तो राजकमल है!

"मै तुम्हें राजकमल कहूँगा।"

"और मैं तुम्हें प्रशान्त महासागर कहूँगी"—कमला ने आज अनजाने ही 'तुम' कह दिया।

"प्रशान्त महासागर में राजकमल नहीं खिलता, मैं कमला नदी का गड्ढा ही होना पसन्द करूँगा।"—डाक्टर हँसता है।

कमला की बड़ी-बड़ी आँखों की पलकें एक बार ऊपर उठ कर झुक गईं।

"तुमने मुझे आज तक अपना अस्पताल क्यों नहीं दिखलाया? तुम्हारे चूहे, खरगोश, सियार और नेवले·····।"

"माँ और बाबूजी तुम्हें अस्पताल जाने देंगे?"

"क्यों नहीं?"

"तो आज ही चलो। अभी।"

कमला डाक्टर के साथ अस्पताल की ओर जा रही है। चैत का सूरज पच्छिम की ओर निष्प्राण सा, पूर्णिमा के उगते हुए चाँद सा मालूम हो रहा है। दिनभर धू-धू कर चलने वाली पछिया हवा गिर गई है।

गाँव के पनघट पर स्त्रियों की भीड़ आँखें फाड़ कर इन दोनों को देखती हैं। झगड़े बन्द हो जाते हैं। पानी भरना रुक जाता है। नज़र से ओझल होने के बाद फिर सबों के मुँह से अपनी-अपनी राय निकलती है।···कमली अब आराम हो गई। डाक्टर साहब ने इसको बचा लिया।···दोनों की जोड़ी कैसी अच्छी है! सतलरैना 'बैसकोप' का एक किताब लाया है, उसमें ऐसी ही एक जोड़ी की छापी है, ठीक ऐसी ही!···डाक्टर भी कायस्त है क्या? कौन जात है? क्या जाने बाबा, इलाज करते-करते कहीं·····। क्या बकती है—सिर की गर्मी, शाम को मैदान की हवा में ठंढी होती है, जानती नहीं?···मौसी ने जब जुगल-

जोड़ी देखी तो उसके हाथ स्वयं ही आँचल के खूँट पर चले गये। आँचल पसार कर मन ही मन वह बोली—"दुहाई कमला मैया।"

गनेश पास ही गुल्ली खेल रहा था। वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया—

"पूलब छे छाहेब आया"

"पच्छिम छे मेम"

"छाहेब बोले गिटिल-पिटिल"

"खिल-खिल हँछे मेम"

कमला और डाक्टर ने उलट कर देखा। गनेश ताली बजा कर हँस रहा था—"देखो नानी, छाहेब मेम।"

दोनों ने हँसते हुए मौसी को प्रणाम किया। गनेश भाग कर नानी के आँचल में छिप जाता है। कमला चिल्ला कर कहती है—"अच्छा ठहरिये गोबरगनेश जी। अभी लौटती हूँ तो कान पकड़ कर 'चान' दिखाऊँगी।"

तहसीलदार साहब रास्ते में ही मिले। हँसते हुए बोले—

"आज शायद यही पागलपन सवार हुआ था? ···अच्छी बात है, सुबह शाम की हवा में बहुत गुण है।"

सभी एस ही साथ हँस पड़े।

कोठी के बाग में गुलमुहर की बड़ी-बड़ी डालियाँ, लाल लाल फूलों से जलती हुई, हवा के हल्के झोंके में भी हिलडुल रही थीं। अमलतास के पिले फूल नवबधू की पीली ओढ़नी की याद दिला रहे थे। योजन-गंधा शाम की हवा में पागलपन बिखेर रही थी। शिरिस के फूलों की पंखुड़ियाँ मंगलआशीष की तरह झड़ रही थीं।···मार्टिन ने बड़े जतन से ये फूल लगाये थे। बाग़ लगाते समय उसने ऐसी ही शामों की कल्पना की होगी!·····बाँहों में पड़ी हुई 'मेरी' के लाल होठों की ताज़गी को और भी प्राणमय बनाने के लिये।···पानी पटाने वाले मालियों पर वह कड़कते हुए बोला होगा—"डेको। एक भी गाछ सूखने पर पचास बेंट डेगा।"

चैत की गोधूलि में अपनी सारी तेजी खोकर सूरज ने श्याम-सलोनी संध्या के आँचल में अपना मुँह छिपा लिया था। दूर तक फैली हुई ताड़ों की पंक्तियाँ—कुछ मटमैली, कुछ सिंदुरी सी पृष्ठभूमि में--गर्दन ऊँची करके सूरज को अतल गहराई में डूबते देख रही थीं। गाय और बैलों के साथ घर लौटते हुए चरवाहे 'सावित्री नाच' का गीत गा रहे थे--

"आहे सखी चलू फूलवारी देखे हे

"देखिबो सुन्दर रूप

"नाना रतना फूल अनूप, चलू फूलवारी देखे हे।"

गुलमुहर के लाल-लाल फूल बुझ गये और अमलतास की पीली ओढ़नी न जाने कब सरक कर गिर पड़ी। किन्तु योजनागंधा अब भी पागल बना रही है।...डाक्टर देवता नहीं, आदमी बनना चाहता है।

एक जोड़ी निर्मल आँखों की पलकें ज़रा ऊपर की ओर उठीं और फिर झुक गईं।

—उनत्तीस

कल 'सिरवा' पर्व है।

कल पड़मान नदी में 'मछमरी' होगी। मछमरी अर्थात् मछली का शिकार। आज चैत्र संक्रान्ति। कल पहली वैशाख। साल का पहला दिन। कल सभी गाँव के लोग सामुहिक रूप से मछली का शिकार करेंगे! छोटे-बड़े, अमीर-गरीब सभी 'टापी' और जाल लेकर सुबह ही निकलेंगे। आज दोपहर को सत्तू खायेंगे! सतुआनी पर्व है आज। आज रात की बनी हुई चीजें लोग कल खायेंगे। कल चुल्हा नहीं जलेगा। बारहो मास चुल्हा जलाने के लिये यह आवश्यक है कि वर्ष के प्रथम दिन में भूमिदाह नहीं की जाये। इस वर्ष की पकी हुई चीज उस वर्ष में खायेंगे।

सारे मेरीगंज के मछली मारने वालों का सरदार है--कालीचरन।

भुरुकवा उगने के समय ही निकलना होगा। बारह कोस जमीन तय करना होगा। इस बार कालीचरन ने एलान कर दिया है--जुलूस बना कर चलना होगा।--लाल झंडे के साथ। नारा भी लगाते चलना होगा। जमीन्दार फ़ैजबख़्श अली ने इस बार परमान नदी के 'जलकर' को खास में रखा है! उसके अमलों ने कहा है कि मछली नहीं मारने देंगे। मलेटरी मँगा कर तैनात रखेंगे। देखना है मलेटरी को!

नये तहसीलदार बाबू हरगौरी सिंह के यहाँ नया खाता खुलेगा। शाम को सतनारायण पूजा होगी। डाक्टर को भी निमंत्रण है।

तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद ने तहसीलदारी छोड़ दी है तो क्या नया खाता भी नहीं करेंगे? उनके यहाँ भी सत्यनारायण-व्रत कथा होगी। डाक्टर साहब को निमंत्रण है।

मौसी ने होली में डाक्टर को नहीं खिलाया था। इस बार डाक्टर को वही खिलायेगी!

मठ पर भी नया खाता होता है। इस बार नये महंथ रामदास जी के हाथ से खाता खुलेगा। इसीलिए विशेष आयोजन है। बीजक पाठ, साहेब भजनावली, ध्यान और अंत में वैष्णवभोजन। बालदेवजी और बावनदास को विशेष निमंत्रण है। लछमी दासिन ने भंडारी के मार्फत कहला भेजा है—"बालदेव जी जरूर आवें। गाँव में वैष्णव हैं ही और कौन?"

बेतार सुमरित दास अब नये तहसीलदार का 'कारपरदाज' है। वह कहता फिरता है—"हरगौरी बाबू हीरा आदमी हैं। सारा कागज पत्तर हमीं पर फेंक कर निश्चिन्त। देखिये तो, हम कितना समझाते हैं कि बाबू साहेब! बही बस्ता, सेयाहा और कर्चा किसी दूसरे को छूने नहीं देना चाहिये। लेकिन, हरगौरी बाबू हीरा आदमी हैं। बिस्नाथ परसाद तो एक नम्मर के 'मखीचूस' और सक्की आदमी हैं। कायस्त और राजपूत का कलेजा बराबर हो भला?···हूँ···। कँगरेसी हुये हैं। सुमरित दास से कौन बात छिपी हुई है? अब तो गाँव का चालचलन एकदम बिगड़

जायेगा। जवान बेटी को एक परदेसी जवान के साथ हँसी मसखरी करने की, घूमने फिरने की आजादी दे दी है बिश्नाथ परसाद ने। गाँव का चालचलन नहीं बिगड़े तो सुमरित दास का नाम बदल देना।"

नये तहसीलदार बाबू हरगौरी सिंघ के यहाँ रात में एक भी रैयत नहीं आया। पुन्याह में जो सलामी मिलती है, वह रकम जमींदार की होती है, लेकिन खाता खुलने के दिन की सलामी तो तहसीलदार की खास आमदनी है।·····सुमरितदास ने आकर खबर दी—"सभी रैयत बिश्नाथ परसाद के यहाँ गये थे। डेढ़ सौ रुपये सलामी में पड़े थे। मछली मार कर लौटते समय रास्ते में ही रैयतों ने मिटिन किया था कि नये तहसीलदार के यहाँ नहीं जायेंगे। कुकरा का बेटा कलिया 'लीटरी' करता है। बाप काटे घोड़ा का घास और बेटा का नाम दुरगादास। अभी ततमा टोली का बिरंचिया कहता था कि रैयतों का पेट जो भरेगा वही असल जमींदार है। नये तहसीलदार ने कभी एक चुटकी धान भी दिया है?·····शास्तर बचन कभी झूठ नहीं होता—राड़ एड़ं कनमोचड़ं, जूता मारं पवित्तरम। समझे तहसीलदार साहब, राड़ और काँटों को काँटी वाले जूते से बस में किया जाता है।"

बालदेव जी का काम छूट गया।

कपड़े, चीनी और किरासन तेल की पुर्जा अब तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद देंगे। बालदेवजी को क्यों छुड़ा दिया?···सायद उनका बिलेक पकड़ा गया। पाप कितने दिनों तक छिपेगा? खेलावन ने जो परमेसर सिंघ की जमीन मोल ली है, सो किस रुपये से! वह बालदेवजी की ही जमीन है। खेलावन के घर में जाकर देखो, आज भी गाँठ का गाँठ कपड़ा पड़ा हुआ है। टीन का टीन तेल है। खेलावन के सभी सगे संबंधियों के यहाँ कपड़े गये हैं। यह बात कितने दिनों तक छिपी रहेगी? सुनते हैं कि कंगरेस ने अपना 'खौफिया' बहाल किया है। अंगरेज का खौफिया तो ऊपर से ही किसी बात का पता लगाता था, कंगरेस के खौफिया को हाँडी के चावल का भी पता रहता है।

स्त्री की मृत्यु के बाद से जोतखी जी बहुत गुमसुम रहते हैं।···डाक्टर को कितना कहा कि कोई दवा देकर रामनारायण की माँ को उबारिये, लेकिन कौन सुनता है? बस, एक ही जवाब। बच्चा को पेट काट कर निकालना होगा। शिव हो! शिव हो!!···पराई स्त्री को बेपर्दे करने की बात कैसे उसके मुँह से निकली?···पारबती की माँ ने बदला लेलिया। पाँच साल पहले पंचायत में जोतखी जी ने कहा था कि पारबती की माँ को 'मैला' घोल कर पिलाया जाये। बिश्वनाथ प्रसाद ने पारबती की माँ का पक्ष ले लिया था, नहीं तो उसी बार उसका सभी 'गुण मंतर' शेष हो जाता।···इस बार पार्बती की माँ ने बदला चुका लिया।···अच्छा! ब्राह्मण का श्राप निष्फल नहीं होगा। देखना, देखना! इस कलियुग में भी असल ब्राह्मण रहता है, देखना।

अरे! वह जमाना चला गया जब राजपूत और बाभन टोली के लोग बात-बात में लात जूता चलाते थे। याद नहीं है? एक बार टहलू पासबान का गुरु घोड़ी पर चढ़कर आ रहा था। गाँव के अन्दर यदि आता तो एक बात भी थी। गाँव के बाहर ही सिंघ जी ने घोड़ी पर से नीचे गिरा कर जूते से मारना शुरू कर दिया था--"साला दुसाध, घोड़ी पर चढ़ेगा।" ...अब वह जमाना नहीं है। गांधीजी का जमाना है। नया तहसीलदार हुआ है तो क्या? हमारा क्या बिगाड़ लेगा? न जगह, न जमीन है, इस गाँव में नही उस गाँव में रहें, बराबर है।...धमकी देते है कि जूते से 'रैट' करेंगे। अच्छा! अच्छा!!

युगों से पीड़ित, दलित और उपेक्षित लोगों को कालीचरन की बातें बड़ी अच्छी लगती हैं। ऐसा लगता है, कोई घाव पर ठंढा लेप लगा रहा हो। लेकिन कालीचरन कहता है--"मैं आपलोगों के दिल में आग लगाना चाहता हूँ। सोये हुये को जगाना चाहता हूँ। सोशलिस्ट पाटी आपकी पाटी है। गरीबों की, मजदूरों की पाटी है। सोशलिस्ट पाटी चाहती है कि आप अपने हकों को पहचानें। आप भी आदमी हैं, आपको आदमी का सभी हक मिलना चाहिये। मैं आपलोगों को

मीठी बातों में भुलाना नहीं चाहता। वह कांग्रेस का काम है, मैं आग लगाना चाहता हूँ।"

कालीचरन आग उगलता है लेकिन सुननेवालों का जलता हुआ कलेजा ठंढा हो जाता है···जमीन, जोतने वालों की! पूँजीवाद का नाश।

बावनदास ने फिर एक 'फाहरम' लाया है। मंत्री जी ने भेज दिया है। इस बार पटना का 'छापा' फाहरम है, पुरैनियाँ का नहीं। पटना का फाहरम कच्चा नहीं हो सकता।···इस फाहरम पर अपना नाम, अपने बाप का नाम, जमीन का खाता नम्बर, खेसरा नम्बर लिख कर पुरैनियाँ कचहरी में दे दो 'दफा ४०' के हाकिम को। जमीन नकदी हो जायगी। सच? ···हाँ अंगूठे का टीप देना होगा।···और जिन लोगों ने चर्खा सेन्टर में दसखत करना सीख लिया है, उन्हे भी टीप देना होगा?

बालदेव जी क्या करें? खेलावन भैया कुछ समझते ही नहीं। रोज कहते हैं--"बालदेव, कमला किनारेवाली जमीन में कलरू पासवान के दादा का नाम कायमी बटैयादार की सूरत से दर्ज है। कलरू से कह-कर सपुर्दी दिला दो।···लेकिन बालदेव जी क्या करें। चौधरी जी को वह सब दिन से गुरु की तरह मानता आ रहा है। कभी किसी काम में 'तरोटी' नहीं होने दिया। इतना चौअन्नियाँ मेम्बर बना कर दिया। गाँव में चर्खा सेन्टर खुलवा दिया, लेकिन जिला कमेटी के मेम्बर तहसीलदार साहब हो गये! बालदेव को कोई खबर भी नहीं दी गई। कपड़े की मेम्बरी भी नहीं रही। नीमक कानून के समय से जेल जाने का यही 'बख्सीस' मिला है। कालीचरन की पाटी वाले ठीक कहते हैं--"काँग-रेस अमीरों की पाटी है।"···लेकिन वह कालीचरन की पार्टी में तो नहीं जा सकता। कालीचरन की आँखें उसने हीं खोली। रात-रात भर जाग कर कालीचरन को 'जेहल' का कितना किस्सा, गाँधी जी का किस्सा, जमाहिर लाल का किस्सा सुनाया। कालीचरन उसका चेला है। वह आखिर चेला की पार्टी में जायगा? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता!··· खेलावन भैया कुछ भी नहीं समझते हैं, पासवान टोली में अब उसकी

पैठ नहीं। कलरू उसकी बात नहीं मानेगा। उसका लीडर कालीचरन है।···तहसीलदार साहब को तो लोग डर से लीडर मानते हैं।

नये तहसीलदार साहब भी 'फिहरिस्त' तैयार कर रहे हैं। सुमरित दास सबों का नाम लिखा रहा है--"सबसे पहले लिखिये बिरंचिया का नाम। सोनमा दुसाध, किराय कोयरी, यह सब 'देनदार' कलम हैं। अब लिखिये--'झोपड़िया कलम'। हाँ, जिन लोगों को अपनी झोपड़ी के सिवा कुछ भी नहीं।···बस, यह फिरिस्त मनेजर साहेब को दे दीजियेगा और कहियेगा कि खेमा लेकर जल्दी इलाके में आवें, नहीं तो सारा सर्किल खराब हो जायेगा।"

लछमी दासिन के दिल में बालदेव जी ने घर कर लिया है। खाता-बही के दिन आये थे। एकदम सूख गये हैं बालदेव जी। लछमी कितना समझाती है कि काम काज छोड़ कर कुछ दिन आराम कीजिये, लेकिन कौन सुनता है? पहले जान तब जहान! जब शरीर ही नहीं रहेगा तो परमारथ का कारज कैसे होगा? शरीर ही तीरथ है।···कितना कहने पर, सतगुरू साहब की क़सम धराने पर यह मंज़ूर किया है कि एक बेला रोज मठ पर आया करेंगे। शाम के सतसंग में बैठेंगे। भंडारी से कह दिया है, घी और दूध की मलाई रोज कटोरे में चुरा कर रख दिया करेगा। रामदास, बालदेव का आना पसन्द नहीं करता है।···जैसे भी हो, बालदेव जी के शरीर की सेवा करेगी लछमी। अब बालदेव जी के आने में ज़रा भी देर होती है तो लछमी का दिल धड़कने लगता है। मन चंचल हो जाता है। सतगुरू साहेब ने कहा है—

"ई मन चंचल, ई मन चोर,
"ई मन शुध ठगहार
"मन मन करत सुर नर मुनि
"मन के लच्छ दुआर।"

लछमी का मन चंचल है, पर चोर नहीं। बालदेव जी चोरी से उसके मन में नहीं आते हैं। मनके लच्छ दुआर हैं, बालदेव जी एक ही साथ लच्छ

दुआर से उसके मन में पैठ जाते हैं।···एक लल्लू बालदेव जी !

(१) दफ़ा ४०, बिहार टेनेन्सी ऐक्ट।

—तीस

अखिल भारतीय मेडिकल गज़ेट में डॉ० प्रशान्त, मैलेरियोलौजिस्ट के रिसर्च की छमाही रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। गज़ेट के सम्पादक-मंडल में भारत के पाँच विख्यात डाक्टर हैं। इस रिपोर्ट पर उन लोगों ने अपना-अपना नोट दिया है।·····मद्रास के डाक्टर टी० रामस्वामी एम० एस० सी०, डी० टी० एम० (कल), पी० एच० डी० (एडिन), एफ० आर० एस० जे० (एडिन) ने लिखा है—

"हमें विश्वास हो गया है कि डॉ० प्रशान्त मैलेरिया और कालाआज़ार के बारे में ऐसे तथ्यों का उद्घाटन करेंगे जिससे हम अब तक अनभिज्ञ थे।···नई दवा तथा नये उपचार की संभावनाओं के लिए सारा (मेडिकल) संसार उनकी ओर निगाहें लगाये बैठा है।"

प्रशान्त की विस्तृत रिपोर्ट में, मैलेरिया और कालाआज़ार से संबंधित मिट्टी, हवा-पानी तथा इसमें पलने वाले प्राणियों पर नई रौशनी डाली गई है। अपनी रिपोर्ट में डाक्टर ने एक जगह लिखा है :—

"यहाँ के लोग सुबह को बासी भात खा कर, पाट धोने के लिए गंदे गड्ढों में घुसते हैं और क़रीब सात घंटे तक पानी में रहते हैं।·····गंदे गड्ढों को देखने से ऐसा लगता है कि पानी के आध इञ्च धरातल की जाँच करने पर एक लाख से ज़्यादे मच्छड़ के अंडे ज़रूर पाये जायेंगे—किन्तु, यहाँ के मच्छड़ गंदे गड्ढों में बहुत कम अंडे देते पाये गये हैं। इसका कोई-कोई ग्रूप तो इतना सफ़ाई पसन्द होता है कि निर्मल और स्वच्छ तालाबों को छोड़ कर और कहीं अंडे देता ही नहीं।·····बेचारे खरगोशों को क्या पता कि उनकी जीभ में जो दाने निकल आते हैं, कानों

के अन्दर जो खुजलाहट होती है, कोमल से कोमल घास की पत्तियाँ भी खाने में अच्छी नहीं मालूम होती हैं—ये कालाआजार के लक्षण हैं।"

मनुष्य के शत्रु, कीड़ों-मकोड़ों के बारे में डाक्टर ने लिखा है—"मच्छड़ों को नष्ट करने के कुछ उपाय जो हमें बहुत पहले बता दिये गये हैं, हम उन्हींको आज भी आँख मूँद कर दुहरा रहे हैं। जिन कीड़ों को हम नष्ट करना चाहते हैं, उनके बारे में हमारी जानकारी बहुत थोड़ी होती है। हमें उनकी आदत, स्वभाव और व्यवहार के ढंगों के बारे में जानना होगा।···एनोफिल्स के भी कई ग्रुप हैं, हर ग्रुप के अलग-अलग ढंग है। किन्तु, किसी-किसी ग्रुप में भी तरह-तरह के छोटे-छोटे सब-ग्रुप होते हैं जिनकी आदतों और प्रजनन ऋतु में विभिन्नता पाई गई है।····· उनके लुकने छिपने, पसन्दीदगी और नापसन्दीदगी में भी फ़र्क़ है।··· मैंने एक ही ग्रुप के मच्छड़ों को तीन क़िस्म से अंडे छोड़ते पाया है और हर ग्रुप में कुछ दल विशेष हैं जो हवा में (शून्य में) अंडे छोड़ते हैं। ···इनकी चालाकी और बुद्धिमानी का सबसे दिलचस्प उदाहरण यह है कि एक ही मौसम में, एक ही ग्रुप के मच्छड़ हमले के लिए पन्द्रह तरह के तरीक़े व्यवहार करते हैं।···कुछ तो एकदम 'डाइव फ़्लाइंग' करके ही हमला करते हैं।"

इसके अलावा डाक्टर ने मैलेरिया और कालाआजार में 'रक्त-परिवर्तन' पर भी कुछ नई बातें कही हैं।

ममता की चिट्ठी आई है···"पटना मेडिकल कॉलिज को इस बात पर गर्व है कि बिहार का एकमात्र 'मैलेरियोलौजिस्ट' डॉ० प्रशान्त उसीकी देन है।"···ममता ने और भी बहुत सी बातें लिखी हैं। बहुत सी बातें, जिसे प्रशान्त क़रीब-क़रीब भूल गया है या भूल जाना चाहता है।···पटना क्लब का नाम पाटलिपुत्र क्लब हो गया है। मिस रेबा सरकार ने बैडमिन्टन में रोमेश पाल को हरा दिया।···इन बातों में प्रशान्त को अब कोई दिलचस्पी नहीं, लेकिन ममता जब पत्र लिखती है तो वह कुछ भी बाद नहीं देती। छोटी से छोटी बात का भी ज़िक्र करती है।···"पटना मार्केट के सामने जो

चाय की दूकान थी, उसका बूढ़ा मालिक मर गया। तुम्हें याद है? वही जो तुमको रोज सलाम करके चाय के लिए निमंत्रित करता था—कश्मीरी चाय।···प्रशान्त को हँसी आती है। बेचारी ममता! उसे क्या मालूम कि मछली को लेकर पालतू नेवले से झगड़ा करने में जो आनन्द आता है वह किसी खेल में नहीं। प्रशान्त कभी 'स्पोर्ट्समैन' नहीं रहा। वह किसी भी खेल का खिलाड़ी नहीं रहा। फिर भी उसे खेलों से बड़ी दिलचस्पी रहती थी। उसने ताश की पत्तियों को कभी हाथ से स्पर्श नहीं किया, लेकिन साप्ताहिक 'ब्रिज नोट्स' को वह गंभीरता से पढ़ जाता था। चर्चिल का भाषण पढ़ना भले ही भूल जाये, कलकत्ता के आइ० एफ० ए० के मैचों की रिपोर्ट वह सबसे पहले पढ़ लेता था।···लेकिन अब तो वह खुद खिलाड़ी है। नेवले का गुर्राना, चिल्लाना, पूँछ के रोओं को खड़ा कर हमला करना और हमला करते हुये इसका ख़्याल रखना कि चोट नहीं लग जाये, नाखून नहीं गड़ जाये। 'स्पोर्ट्समेन्स-स्पिरट' और किसको कहते हैं?

डाक्टर ममता श्रीवास्तव! दरभंगा के प्रसिद्ध डाक्टर काली प्रसाद-श्रीवास्तव की सुपुत्री ममता ने डाक्टरी पास करने के बाद एक हेल्थ युनिट की स्थापना की है। शहर के ग़रीब मुहल्लों में युनिट ने अपने सेवाकार्य का जो परिचय दिया है, वह प्रशंसनीय है। पटने की महिला समाज-सेविकाओं मे ममता का नाम सबसे पहले लिया जाता है। ग़रीब की झोंपड़ी से लेकर गवर्नमेन्ट हाउस तक उसकी पहुँच है।·····जो उसके निकट सम्पर्क में रह चुके हैं, उनका कहना है कि ममता दीदी दिन रात मिला कर सिर्फ़ चार घंटे ही आराम करती हैं।·····दूर से देखने वाले उसके चरित्र पर भी संदेह करते हैं। उसकी सार्वजनीन मुस्कुराहट लोगों को कभी कभी भ्रम में डाल देती है। और जिनलोगों का काम सिर्फ़ बैठ कर आलोचना करना है, वे कहते हैं कि तरह-तरह के जाल फैला कर सरकार से रुपये वसूलना और उड़ाना ही ममता देवी का काम है।·····विकारपूर्ण मस्तिष्क वाले किसी मिनिस्टर का नाम लेकर मुस्कुरा देते हैं—'मिस

ममता श्रीवास्तव नहीं, मिसेज···कहो !'

डाक्टर प्रशान्त ममता का ऋणी है। ममता से उसे प्रेरणा मिली है।

"·····डाक्टर ! रोज डिस्पेन्सरी खोल कर शिवजी की मूर्ति पर बेल-पत्र चढ़ाने के बाद, संक्रामक और भयानक रोगों के फैलने की आशा में कुर्सी पर बैठे रहना, अथवा—अपने बंगले पर सैकड़ों रोगियों की भीड़ जमा कर रोग की परीक्षा करने के पहले नोटों और रुपयों की परीक्षा करना, मेडिकल कॉलिज के विद्यार्थियों पर पांडित्य की वर्षा करके अपने कर्तव्य की इतिश्री समझना·····और अस्पताल में कराहते हुये ग़रीब रोगियों के रुदन को जिन्दगी का एक संगीत समझ कर उपभोग करना ही डाक्टर का कर्तव्य नहीं !"—

···ममता को प्रशान्त पर संदेह है। वह समझती है कि घोर देहात में प्रशान्त छटपटा रहा है, अपनी गलती पर पछता रहा है! इसलिए वह हर पत्र में, शहर की सामाजिक जिन्दगी पर कुछ लिख डालती है। एक पत्र में उसने लिखा है—"बुश-शर्ट का युग है। पाँच साल पहले बाँकीपुर की सड़कों पर, पार्कों और मैदानों में दानापुर कैन्ट के गोरे फ़ौजियों ने जिन्दगी के जिन कुत्सित और वीभत्स पहलुओं का प्रदर्शन किया, हमारे समाज के अचैतन्य मन पर उसकी ऐसी गहरी छाप पड़ी कि आज हर आदमी के अन्दर का भूखा टामी अधीर हो उठा है। युद्ध के विषैले गैसों ने सारे समाज के मानस को विकृत कर दिया है। काले बाजार के अंधेरे में एक नई दुनिया की सृष्टि हो गई है, जहाँ सूरज नहीं उगता, चाँद नहीं चमकता और न सितारे ही जगमगाते हैं।····· इस दुनिया में माँ-बेटा, पिता-पुत्र, भाई-बहन और स्वामी-स्त्री जैसा कोई संबंध नहीं।·····कल एक ग़रीब ने बिटामिन 'सी' की सूई आठ रुपये में ख़रीदी है। पाँच आने का छोटा सा ऐम्पुल !···मेरे मुहल्ले के महराज महतो को तुम ज़रूर जानते होगे, उसकी छोटी बेटी फुलमातया, जो मिल्क सेन्टर में पिछले साल तक दूध पीने आती थी और ताली बजा

बजा कर नाचती थी, उसे तुम भूले नहीं होगे, शायद।—परसों से अस्पताल में पड़ी हुई है। रामनवमी की शाम को नई रंगीन साड़ी पहन कर फुदकती हुई राममन्दिर गई थी और रात को दो बजे पुलिस ने 'सिटी' के एक पार्क में उसे कराहते हुये पाया। फुलमतिया का बयान है—टेढ़ीनीम गली के पास एक मोटरगाड़ी रुक गई और दो आदमी ने पकड़ कर उसे मोटर में बैठा दिया।···बड़े बड़े बाबू लोग थे।·····

"मंजरअली रोड से लेकर अशोकपथ तक दस विदेशी शराब की दुकानें खुल गई हैं।

"···कल विलिंगडन हॉल में टी० बी० सेनेटोरियम के लिए स्थानीय महिला कॉलेज की लड़कियों ने एक 'चैरेटी-शो' का आयोजन किया था। ज्यों ही वीणा (—बैरिस्टर प्राणमोहन सिन्हा की पुत्री) स्टेज पर उतरी कि ऊपर की गैलरी से दुअन्नी इकन्नी फेंकी जाने लगी और तरह-तरह के भद्दे आवाजें कसे जाने लगे। पुलिस ने शांति क़ायम करने की चेष्टा की, किन्तु उन पर ईंट-पत्थरों की ऐसी बरसा की गई कि हॉल के सभी दरवाजों और खिड़कियों के काँच टूट गये। बहुत लोग घायल हुये। घायलों में महिलाओं और बच्चों की संख्या ही ज़्यादे थी।·····और सबसे आश्चर्य की बात सुनोगे? कहा जाता है कि ख़ुराफ़ातियों का लीडर था अमलेश सिन्हा, वीणा का चचेरा भाई। प्राणमोहन बाबू ने, कुछ दिन हुये, अपने घर में अमलेश का आना-जाना बंद कर दिया था। शराब के नशे में अमलेश ने कई बार घर की नौकरानियों के साथ अशोभनीय व्यवहार किया था। इसलिये (उनकी पुत्री और अपनी चचेरी बहन) वीणा के पीछे हाथ धोकर पड़ गया है।"

·····कोठी के जंगल में संथालिनें लकड़ी काट रही हैं और गा रही हैं। कुछ दिन पहले इसी जंगल में संथालिनों ने एक चीते को कुल्हाड़ी और 'दाब' से मार दिया था। शोरग़ुल सुन कर गाँव के लोग जमा हो गये थे। मरे हुये बाघ को भी देख कर लोगों के रोंगटे खड़े हो गये थे और बहुत तो भाग खड़े हुये थे। किन्तु संथालिनें हमेशा

की तरह मुस्कुरा रही थीं। मकई के दानों की तरह सुफ़ेद दंत-पंक्तियाँ—और वही सरल मुस्कुराहट! चीते के अचानक हमले से दो तीन युवतियाँ सामान्य घायल हो गई थीं—उनके होठों पर भी वैसी ही मुस्कुराहट खेल रही थी। उनके ज़ख्मों को धोकर मरहम पट्टी करते समय डाक्टर के शरीर में एक बार हल्की सिहरन की लहरें दौड़ गई थीं और संथालिनें खिलखिला कर हँस पड़ी थीं·····हँ···!···हँ···हँ! ज़ख्म पर तेज़ दवा लगने पर इस तरह हँसना डाक्टर ने पहली बार देखा-सुना!

आबनूस की मूर्तियाँ, जूड़े में गुँधे हुये शिरिस और गुलमुहर के फूल!·····संथालिनें गाती हैं।

"छोटी-मोटो पुखरी, चरकुलिया पिंड रे

"पोरोइनी फूटे लाले—लाल

"पासचे तेरी फूल देखी फूलय लाबेलब्

"पासचे तेरी आधा दिन लगित्।"

चारों ओर से बँधाये हुये एक छोटे-से पोखरे में पुरइन (कमल) के लाल-लाल फूल खिले हैं। उस फूल पर तुम मुग्ध हुये हो। मुझे भी देख कर तुम मोहित होते हो। किन्तु, वह मोह आधे दिन का ही तो नहीं?·····

नहीं, नहीं! आधे दिन के लिए नहीं। प्राणों में घुले हुये रंगों का मोह आधे दिन में ही नहीं टूट सकता।

—एकत्तीस

मंगलादेवी, चर्खा सेन्टर की मास्टरनी जी बीमार हैं।

डाक्टर ने ख़ून जाँच कर देखा, कालाआज़ार नहीं, टाइफ़ाएड है। चर्खा सेन्टर के दोनों मास्टर, तहसीलदार साहब के गुहाल में रहते हैं और मास्टरनी जी भगमान भगत की एक झोंपड़ी में। भगमान मगत ने

गाड़ी-बैल रखने के लिए एक झोंपड़ी बनाई थी, लेकिन अब अगले साल टीन का मकान देने का इरादा है। इसलिए इस बार गाड़ी बैल नहीं ख़रीद सका। चर्खा सेन्टर खुलने पर गाँव के लोगों ने भगमान भगत से कहा—"घर तो खाली ही है। मास्टरनी जी के रहने के लिए घर नहीं है! चर्खा सेन्टर का घर बनेगा तो आपका घर खाली कर दिया जायेगा।"···कोटा-परमिट के ज़माने में 'कंगरेसी' लोगों की बात काटना ठीक नहीं। नहीं तो कटिहार में इतनी बड़ी झोंपड़ी का ही किराया पंद्रह रुपया मिलता।

मँगला देवी ने हैज़ा के समय रात-रात भर जग कर रोगियों की सेवा की और जब वह ख़ुद बीमार पड़ी तो उसके पास बैठने वाला भी कोई नहीं। चर्खा सेन्टर के दोनों मास्टर साहब बारी-बारी से एक घंटा ड्यूटी दे जाते हैं। रात में चिचाये की माँ आकर सोती है। लेकिन, बूढ़ी इतना हुक़्क़ा पीती और खाँसती है कि मँगला देवी के ज्वर की ज्वाला और भी तीव्र हो जाती है। बुढ़िया जब सोती है तो इतने ज़ोरों से ख़र्राटे लेती है कि पास पड़ोस की नींद खुल जाये। डाक्टर कहता है, यदि यही हालत रही तो सम्हालना मुश्किल होगा। घर ख़त लिख कर किसी को बुला लेना ठीक होगा।

घर? यदि घर से कोई आने वाला होता अथवा ख़बर लेने वाला होता तो मँगला देवी चर्खा सेन्टर में क्यों भर्ती होती? उसे घर छोड़े हुये पाँच साल हो रहे हैं। मँगला देवी ने दुनिया को अच्छी तरह पहचाना है। आदमी के अन्दर के पशु को उसने बहुत बार क़रीब से देखा है। विधवा आश्रम, अबला आश्रम और बड़े बाबुओं के घर 'आया' की ज़िन्दगी उसने बिताई है। अबला नारी हर जगह अबला ही है। रूप और जवानी?·····नहीं, यह भी ग़लत। औरत होना चाहिये, रूप और उम्र की कोई क़ैद नहीं। एक असहाय औरत देवता के संरक्षण में में भी सुख चैन से नहीं सो सकती। मँगला देवी के लिए जैसा घर-वैसा बाहर। उसका कौन है अपना? कोई नहीं।·····

कौन···न ? ···का-ली-चरन बाबू !"

"डाक्टर साहेब ने कहा है कि इस झोपड़ी में आपकी बीमारी अच्छी नहीं होगी।·····हमलोगों का कीर्तन वाला घर साफ सुथरा है, हवादार है।"

मँगला देवी यादवटोली के कीर्तन घर में लाई गई हैं। कीर्तन घर में ही सोशलिस्ट पार्टी का ऑफिस है। कालीचरन इसे ऑफिस ही कहता है।····· लेकिन सोशलिस्ट ऑफिस का नाम सुन कर मँगला देवी शायद नहीं आती।

"दवा पी लीजिये।"

"नहीं पीयूँगा।"

"पी लीजिये।·····मास्टरनी जी ! दवा····· ।"

"काली बाबू। एक बात कहूँ?"

"कहिये।"

"आप मुझे मास्टरनी जी मत कहिये।"

"तब क्या कहूँ ?"

"क्यों ? मेरा नाम नहीं है ?

"मँगला देवी।"

"नहीं।"

"तो।"

"सिर्फ·····मंगला।"

"दवा पी लीजिये।"

"मंगला कहिये।"

"मंगला।"

पंद्रह दिनों से कालीचरन मँगला देवी की सेवा कर रहा है। दिन में तो और लोग भी रहते हैं, लेकिन रात में कालाचरन की ही ड्यूटी रहती है। डाक्टर कहते हैं, अब कोई खतरा नहीं। कमजोरी है, कुछ दिनों में ठीक हो जायेगी।

मंगला देवी के शरीर में सिर्फ़ हड्डियाँ बच रही हैं। बाल झड़ रहे हैं। वह खाने के लिए बच्चों की तरह रूठती है, रोती है और बर्तन फेंकती है।···बार्ली नहीं पीयूँगी। छेना का पानी भी भला आदमी पीता है!··· कालीचरन हाथ में 'पथ्य' का कटोरा लेकर घंटों ख़ुशामदें करता—लीजिये इसमें नीबू डाल दिया है। अब खा लीजिये। कल नहीं, परसों भात मिलेगा।

कालीचरन का व्रत टूट गया है। उसके पहलवान गुरू ने कहा था—'पट्ठे? जब तक आखाड़े की मिट्टी देह में पूरी तरह पचे नहीं, औरतों से पाँच हाथ दूर रहना।' कालीचरन का व्रत टूट गया है। पाँच हाथ दूर रहने से मँगला देवी की सेवा नहीं की जा सकती थी। बिछावन और कपड़े बदलते समय, देह पोंछ देने के समय कालीचरन को गुरूजी की बात याद आती थी, लेकिन क्या किया जाये?

"काली कहाँ गया? काली!"

"क्या है?"

"कहाँ की चिट्ठी है?"

"सिकरेटरी साहेब ने लिखा है—सोमबार को जिला पाटी की रैली है। लेकिन·····मैं कैसे जाऊँगा?"

"क्यों?·····तुम जाओ। मैं तो अब अच्छी हो गई।"

रैली के बाद सिक्रेटरी साहब ने कालीचरन को रोक लिया है—"कॉमरेड! आप दो दिन और रह जाइये। सैनिक जी की स्त्री अस्पताल में भर्ती हैं। सैनिक जी पटना गये हैं। परसों आ जायेंगे। अस्पताल में दोनों बेला खाना पहुँचाना है।·····कोई है नहीं।"

सिक्रेटरी साहब की बात को टालना बड़ा कठिन है। कॉमरेड की स्त्री!···कालीचरन को रह-रह कर मँगला की याद आती है।···वह राह देख रही होगी। बासुदेव जाकर कहेगा कि दो दिन के बाद आवेंगे। सुनते ही उसका मुँह सूख जायेगा। चेहरा 'फक्' हो जायेगा। एकदम बच्ची की तरह है मँगला का मुँह।···कालीचरन ने 'बिहदाना' और 'संतोला'

भेज दिया है, वह छूयेगी भी नहीं। बासुदेव क्या समझायेगा ?···हत्त रे-की···! ये शहर के लौन्डे बड़े बदमाश होते हैं। ठीक पीठ के पास जाकर 'सैकिल' की घंटी बजावेगा। अ···अभी तो सब खाना गिर जाता।···

"उल्लू कहीं का। गिलास ऐसे ही धोता है ?"—उल्लू ? कालीचरन के गाल पर मानो किसी ने ज़ोर से एक तमाचा जड़ दिया। उल्लू। ···उसका सारा शरीर 'झिनझिन' कर रहा है। सैनिक जी की स्त्री ने उसे क्या समझा है ?·····नौकर ?

"बहिन जी गिलास····· ?"

"ख़बरदार ! बहिनजी मत बोल।"

बग़ल की खाट पर जो चमगादड़ जैसी औरत लेटी हुई थी, बोली—"कौन देस का आदमी है। आदमी है या भूत ? बात भी नहीं करना जानता है !"

"अरे जानती नहीं हैं। ग्वाला साठ बरस तक···।"—सैनिक जी की स्त्री बोलीं।

कालीचरन पूरा नहीं सुन सका था। उसका सिर चकराने लगा। सैनिक जी भी तो ग्वाला ही हैं !···कालीचरन की आँखों के आगे सरसों के फूल जैसी चीज़ें उड़ने लगीं। यदि किसी मर्द ने ये बातें कही होतीं तो आज ख़ून हो जाता, ख़ून। कालीचरन की कनपट्टी गर्म हो गई है।··· मँगला देवी भी तो औरत ही है। हुं ! कहाँ मँगला और कहाँ यह भूतनी।···गले की आवाज एकदम 'खिखिर'[1] की तरह है। खेंक—खेंक ! बातें करती है तो लगता है, मानों दाँत काटने के लिए दौड़ रही है। सायद यह भी कोई रोग ही है !

रौतहट स्टेशन पर गाड़ी से उतर कर कालीचरन जल्दी-जल्दी घर लौट रहा है।·····उसे देखते ही मँगला ख़ुशी से खिल जायेगी। 'संतोला'··· सूख गया होगा। बिहदाना पड़ा होगा। दोनों ओर का रेल भाड़ा बचाकर कालीचरन ने एक पैकिट बिस्कुट ख़रीद लिया है। डाक्टर साहब ने मँगला को बिस्कुट खाने के लिए कहा है। कालीचरन ने कभी बिस्कुट नहीं खाया

है। शायद, इसमें मूर्गी का अंडा रहता है। वह रह-रह कर बिस्कुट के डब्बे को छूकर देखता है। इसके अन्दर 'कुड़कुड़' क्या बोलता है! कहीं अंडा फूटकर·····!

"सेत्तिाराम! सेत्तिाराम!! जै हिन्द काली जी।"

"ऐं?·····ओ! बावन दास जी। हम तो चमक गये। यहाँ क्यों पड़े हैं?"

"आप तो इस तरह आँख मून्द कर 'सरेसा घोड़े'[२] की तरह चल रहे हैं कि·····।"

जंगली जामुन के पेड़ की छाया में बावनदास लेटा हुआ था। छाया में जाने पर कालीचरन को मालूम हुआ कि धूप कितनी तेज़ है।

"हम तो रात की गाड़ी से ही उतरे। कल, दफा ४० का फैसला हो गया।"

"हो गया?·····क्या हुआ?"

"अरे होगा क्या? सबों की दरखास खारिज हो गई।···हम पहले ही जानते थे। कल, गाँव के सभी रैयत आये थे। फैसला सुनकर सभी रोने लगे। अब जमींदार जमीन भी छुड़ा लेगा।"

"जमीन छुड़ा लेगा?·····नहीं उस दिन हमलोगों की रैली में 'परसताब' पास हो गया। जमींदार लोग रैयतों को जमीन से बेदखल नहीं कर सकते। इसके लिए पाटी 'संघर्ष' करेगी।"

"कालीबाबू! 'परसताब-उरसताब' से कुछ नहीं होता है।"—बावन-दास के होठों पर भेद भरी मुस्कान दौड़ जाती है।

"आप बैठिये दास जी। हमको जरा जल्दी है।"

"हाँ, आप जाइये।···हम आपके डेग पर जा भी नहीं सकेंगे।"

कालीचरन चलते चलते सोच रहा है—अब ठीक हुआ है। यदि रैयतों की दरखास मंजूर हो जाती तो सभी लोग काँगरेस में चले जाते। अब संघर्ष में सभी सोशलिस्ट पाटी में ही रहेंगे।

"क्या है? बिस्कुट!"—मँगला देवी प्यार भरी झिड़की देती है।

"किसने कहा फ़िज़ूल पैसा खर्च करने को। वह देखो तुम्हारा संतरा और बेदाना पड़ा हुआ है। मैं नहीं खाती।"

"डाक्टर साहेब ने कहा था··· ।"

"डाक्टर साहब ने कहा था।"—मँगला बनावटी गुस्सा दिखाते हुये कहती है—"डाक्टर साहब ने कहा था कि ख़ुद भूखे रहकर संतरा, बेदाना और बिस्कुट खरीद कर लाना ? "

कालीचरन को सैनिक जी की स्त्री की याद आती है—उल्लू !···साठ साल तक नाबालिग— !

"खालो मँगला !"

"पहले तुम एक बिस्कुट खाओ।"

बिस्कुट मीठा, कुरकुरा और इतना 'सुआद' वाला होता है ? इसमें दूध चीनी और माखन रहता है ! अंडा नहीं ?

(१) लोमड़ी (२) तेज़ दौड़ने वाले घोड़े की एक जाति।

—बत्तीस

बैशाख और जेठ महीने में शाम को 'तड़बन्ना' में ज़िन्दगी का आनन्द सिर्फ़ तीन आने लबनी बिकता है।

चने की घुघनी, मूढ़ी और प्याज़, और सुफ़ेद झाग से भरी हुई लबनी।··· खटमिट्ठी, 'शकरचिनियाँ' और 'बैरचिनियाँ' ताड़ी के स्वाद अलग-अलग होते हैं। बसन्ती पी कर 'बिरले' पियक्कड़ ही होश दुरुस्त रख सकते हैं। जिसको गर्मी की शिकायत है, वह पहर-रतिया पीकर देखे। कलेजा ठंढा हो जायेगा, पेशाब में ज़रा भी जलन नहीं रहेगी। कफ़ प्रकृति वालों को संझा पीनी चाहिये, रात भर देह गर्म रहता है।

साल भर के झगड़ों के फ़ैसले तड़बन्ना की 'बैठक' में ही होते हैं और मिट्टी के चुक्कड़ों की तरह दिल भी यहीं टूटते हैं। शादी-ब्याह के लिए

दुल्हे-दुलहिन की जोड़ियाँ भी यहीं बैठकर मिलाई जाती हैं और किसी की बीबी को भगा ले जाने का प्रोग्राम भी यहीं बनता है।

जगदेवा पासमान, दुलारे, सनिच्चर और सुनरा ताड़ी पी रहे हैं। सोमा जट आज आने वाला है। रौतहट के हाट में उसने कहा था, एतवार को तड़बन्ना में आयेंगे। सोमा जट हाल ही में जेल से रिहा हुआ है। नामी डकैत है, लेकिन अब सोशलिस्ट पार्टी का मेम्बर बनना चाहता है। सुनरा ने कालीचरन से पूछा और कालीचरन ने जिला सिक्रेटरी साहब से पूछा। सिक्रेटरी साहब ने कहा, साल भर तक उसके चालचलन को देख कर तब पार्टी का मेम्बर बनाया जायेगा। उस पर नजर रखना होगा।

नजर क्या रखना होगा, बीच-बीच में 'सिकरेटरी' साहब को जाकर कहना होगा—सोमा का चालचलन एक दम सुधर गया है। कालीचरन को बासुदेव समझा देगा।·····सोमा यदि पार्टी में आ जाये तो सारे इलाके के बड़े लोग ठीक हो जायें। पार्टी में आ जाने से थाना-पुलिस क्या करेगा? सिकरेटरी साहब क्या दरोगा साहब से कम हैं? देखते हो नहीं, जब 'भाखन' देने लगते हैं तो 'जमाहिरलाल' को भी पानी-पानी कर देते हैं। मजाल है 'दारोगा निसपिटर'[1] की कि पार्टी के मेम्बर के खिलाफ मुँह खोले? खेल है? 'लालपताका' अखबार में तुरत 'गजट छापी' हो जायेगा—'दारोगा का जुलुम!'···चलित्तर करमकार को तो पार्टी से निकाल दिया है। 'मोमेन्ट' में बहुत पैसा गोलमाल कर दिया। 'हिसाब-पत्तर' कुछ भी नहीं दिया तो उसको निकालेगा नहीं? पार्टी का बन्दूक पेस्तौल भी नहीं दिया।·····लेकिन सिकरेटरी साहब, कालीचरन जी से 'प्रायेविट' में बोले हैं, किसी तरह उससे बन्दूक पेस्तौल ऊपर करो। सरकार को जमा देना है। इसीलिए कालीचरन जी उससे हेलमेल कर रहे हैं।···यह बात एकदम 'गुपुत' है! खबरदार! कहीं बोलना नहीं सनिचरा! हाँ, नहीं तो जानते हो? किरान्ती पार्टी की बात खोलने की क्या सजा मिलती है?···ठाँयें!···लोग पूछें तो कहना चाहिये कि·····

"क्या पार्टी को अब बन्दूक पेस्तौल का काम नहीं है ?"

"नहीं।"—सुन्दर मुस्कुराता है। अर्थात्—इतनी जल्दी तुमलोग सभी बातों को जान लेना चाहते हो। अभी कुछ दिन और मेम्बरी करो। जब तुम्हारा 'कानफारम'[२] हो जायेगा तब सारी बातें जानोगे। नये मेम्बरों का कान कच्चा होता है। यहाँ सुना और वहाँ उगल दिया। 'कानफारम' होने दो।·····

"कॉमरेड सोमा ? आओ ! तुम्हारी ही बात हो रही थी। आसरा में बैठे बैठे दो लबनी ताड़ी खतम हो गई।"—सुन्दर हँसता है।

सुन्दर आजकल हमेशा खद्दर का पंजाबी कुर्ता पहने रहता है। पंजाबी के गले में दो इंच की ऊँची पट्टी लगी हुई है। इसको 'सोशलिटकाट' कुर्ता कहते हैं। 'सोशलिट' को छोड़ कर और कोई नहीं पहन सकता। गाँव के मेम्बरों में सिर्फ़ तीन मेम्बर ही ऐसा कुर्ता पहनते हैं—काली, बासुदेव और सुन्दर। बाक़ी मेम्बरों ने जीवन में कभी गंजी भी नहीं पहनी है। लेकिन बिना 'सोशलिट-काट' कुर्ता पहने कोई कैसे जानेगा कि 'सोशलिट' है, 'किरान्ती' है। एक कुर्ते में सात रुपये खर्च होते हैं।·····बासुदेव आजकल बीड़ी नहीं पीता, 'मोटरमार-सिकरेट' पीता है। सिक्रेटरी साहब, सैनिक जी, चिनगारी जी, मास्टर साहब सभी बड़े बड़े लीडर 'सिकरेट' पीते हैं। 'सोशलिट पार्टी' के मेम्बर को बीड़ी नहीं, 'सिकरेट' पीना चाहिये।···

आज की 'बैठकी' का पूरा खर्चा सोमा ही देगा। इसलिए हाथ खींच कर चुक्कड़ भरने की ज़रूरत नहीं। ढाले चलो। एक लबनी, दो लबनी, तीन लबनी !·····चर्खा सेन्टर वाले कह रहे हैं, अगले साल से ताड़ी का गूड़ बनेगा। कोई ताड़ी नहीं पी सकेगा। इस साल पी लो, जितना जी चाहे।

सोमा का शरीर कालीचरन से भी ज़्यादे बुलन्द है। पुलिस-दारोग़ा की मार से हड्डियाँ टूट कर 'गिरहा'[३] गई है। गिरहवाली हड्डी बड़ी मज़बूत होती है। कालीचरन के देह में हाथी दाँत का कड़ापन है और

सोमा के चेहरे पर लोहे की कठोरता। कालीचरन की आँखों में पानी है और सोमा की आँखें बिल्ली की तरह चमकती हैं।

"कौन हरगौरी ? शिवशङ्कर सिंघ का बेटा ?···तहसीलदार हुआ है ? कालीचरन जी हुकुम दें तो एक ही रात में उसकी हड्डी पसली एक कर दें।" —सोमा मूँछ में लगी हुई ताड़ी की झाग को पोछते हुये कहता है।

"कामरेड ! अब मूँछ कटान ा होगा। पाटी का मेम्बर होने से मूँछ नहीं रखना होगा।"—सुन्दर कहता है।

"कटा लेंगे। लेकिन···कालीचरनजी हुकुम दें तो···।"

"अच्छा, अच्छा, कॉमरेड अभी ठहरो। संघर्ष होने वाला है। परसताब पास हो गया है। तब देखेंगे तुम्हारी बहादुरी।"

"बलदेवा को गाँव से भगा नहीं सकते हो तुमलोग ? सुनते हैं कि मठ की कोठारिन से खूब हेलमेल हो गया है। कालीचरन जी हुकुम दें तो एक ही दिन में उसको चन्ननपट्टी का रास्ता दिखला दें।"

"अरे, बालदेव जी तो मुर्दा हो गये मुर्दा ! अब उनको कौन पूछता है ? उनको एक बच्चा भी अब कुछ नहीं लगाता है। काँगरेस में भी उनकी बदनामी हो गई है। वह तो हमलोगों के बल पर ही कूदते थे। ···कोठारिन तो सत्तर चूहा खाई हुई है। बालदेव जी को उसके फेर में पड़ने तो दो। हमलोग यही चाहते हैं। हाँ·····समझे ?···चर्खा सन्टर पर भी अब अपना ही कब्जा समझो। मास्टरनी जी बिना कालीचरन से पूछे पानी भी नहीं पीती हैं।···कुछ दिन में वह भी कामरेड हो जायेंगी।··· एक बौनदास है, सो डेढ़ बित्ते का आदमी कर ही क्या सकता है ?"

चार लबनी संझा ताड़ी खात्म हो रही है। सूरज डूबने के समय जो लबनी पेड़ से उतारी जाती है उसकी लाली तुरत ही आँख में उतर आती है। नशा के माने हैं और भी थोड़ा पीने की ख़्वाहिश।·····और एक लबनी।

"अरे, बेचारे डाक्टर के पास पैसा कहाँ ? मुफ्त में तो इलाज करता है। एक पैसा भी नहीं छूता है।"

"डाक्टर के पास पैसा नहीं ? क्या कहते हो ?···लोचनपुर के डाक्टर ने पोख्ता मकान बना लिया है, जीवछगंज के डाक्टर ने तीन सौ बीघे की 'पतनी' खरीदी है। सिमवा गरैया का डाक्टर डकैती करता है, सरदार है डकैतों का। कैसा डाक्टर है तुम्हारे गाँव का ?"

"हसलगाँव के हरखू तेली ने अलबत्त पैसा जमाया है। पैसा मँहकता है।"

"महमदिया के तालुकचंद को बंदूक का लैसन मिल गया है और लोहा का बक्सा कलकत्ते से ले आया है।"

"अरे, कितने बंदूक और तिजोरी वालों को देखा है।·····बल्लम बर्छा से ही तो सारे इलाके को हम मछली की तरह भून कर खाते रहे हैं। यदि एक नाल भी बंदूक हाथ लग जाये तो साले भूपत सिंह की कचेहरी के नेपाली पहरेदारों को भी देख लें।"

जो कभी नहीं गाता है, वह भी नशा होने पर गाने लगता है और सुन्दर तो 'कीर्तनियाँ' है। सुराजी कीर्तन भी गाता है और 'किरांती-गीत' भी। नशा होने पर 'किरांती-गीत' खूब जमता है।

"अरे जिन्दगी है किरान्ती में किरान्ती में बिताये जा
"दुनियाँ के पूंजीवाद को दुनियाँ से मिटाये जा।"

सनिचरा लबनी को औंधा कर तबला बजाता है--और मुँह से बोल बोलता है--"चके के चकधुम मकै के लावा·····।"

"दुनियाँ के गरीबों का पैसा जिसने चूस लिया,
"अरे हाँ, पैसा जिसने चूस लिया
"हाँजी, पैसा जिसने चूस लिया,
"उसकी हड्डी हड्डी से पैसा फिर चुकाये जा
"हँस के गोली दागे जा
"हँस के गोली खाये जा।"

"वाह वाह ! क्या बात है ! इनक्लिाब है, जिन्दाबात है। जरा खड़ा होकर 'बतौना'[४] बता के, कमर लचका के सुन्दर भाई।"

सुन्दर खड़ा होकर नाचने लगता है--"जिन्दगी है किरान्ती से--किरान्ती में·····।"

"चके के चकधुम मकै के लावा ।"

कालीचरन ने आज शाम को बैठक बुलाई थी। ऊपर से 'सबसे बड़े लीडर' आ रहे हैं 'पुरैनियाँ'। थैली के लिए चंदा वसूलना है। सिकरेटरी साहेब कह रहे थे--सबसे बड़े लीडर जी पुरैनियाँ आने के लिए एकदम तैयार नहीं हो रहे थे। बहुत कहने सुनने पर, सारे जिले से दस हजार रुपये की थैली पर राजी हुये हैं। कालीचरन को तीन सौ रुपये वसूल कर देना है ।·····इस बार की रसीद बही पर सबसे बड़े लीडर की छापी है।·····

"लेकिन तुम लोग गये थे कहाँ ?·····ओ । आसमान बाग ? बड़ी देर हो गई। ऐसा करने से पाटी का काम कैसे चलेगा ? बोलो कौन कितना रुपैया वसूल करेगा। तीन सौ रुपैया दस दिन में ही वसूल कर देना है ।"

"बस तीन सौ ? कोई बात नहीं। हो जायेगा।"

"दस दिन क्या? पाँच ही दिन में हो जायेगा।"

"तीन सौ रुपये की क्या बात है ?"

"इनकिलाब है, जिन्दाबात है !"

(१) इन्सपेक्टर (२) कन्फर्म (३) गांठदार (४) भाव दिखला कर।

—तैंतीस

"अमंगल !"

"गाँव के मंगल की अब कोई उमेद नहीं।"

हरगौरी तहसीलदार 'दुर्गा के बाहन' की तरह गुर्राता है।"····साले सब ! चुपचाप दफा ४० का दर्खास देकर समझते थे कि जमीन नकदी

हो गई। अब समझो। बौना और बलदेवा से जमीन लो। सब सालों से जमीन छुड़ा लेने के लिए कहा है मैनेजर साहेब ने। लो जमीन! राम नाम का लूट है?···अरे, अंगरेसी राज है तो क्या जमींदारों को घोल कर पी जायेगा?"

सुमरित दास 'बेतार' की जीभ थकती नहीं। सुबह से ही बकबक करता जा रहा है। ततमा टोली में, पासवान टोली में और कोयरी टोले में घूम-घूम कर वह लोगों को सुना रहा है--"मैनेजर साहेब ने परवाना में क्या लिखा है? मालूम? नया तहसीलदार तो एकदम घबड़ा गया था। मैंने कितना समझाया—तहसीलदार, आप एकदम चुपचाप रहिये। जिन लोगों को दरखास देना है, देने दीजिये। जिस दिन मुकदमें की तारीख होगी, उससे एक दिन पहले हम आपको एक 'नोक्स'[२] बता देंगे। ···वही हुआ। 'जमींदारी वकील' तो सुनकर उछलने लगा। चाहे जो भी कहो, तहसीलदार बिस्नाथ परसाद ने कभी कोई नोक्स हमसे छिपा कर नहीं रखा।·····मैनेजर साहेब ने क्या लिखा है, मालूम है? सुमरितदास को एक बार सरकिल कचहरी में भेज दो।·····सुस्लिंग सुस्लिंग क्या करेगा?"

"सुमरित दास! बुढ़ापे में यदि इज्जत बचानी है तो जरा होस हवास दुरुस रख कर बोला करो। समझे?"--कालीचरन की आँखें लाल लाल हैं। सुबह से ही वह सुमरितदास को खोजरहा है। सोशलिस्ट पाटी के खिलाफ़ बूढ़ा कल से ही 'अटर-पटर'[६] 'परोपगंडा' कर रहा है।

"समझे? हाँ।·····पीछे यह मत कहना कि सोसलिस्ट पाटी के लौंडों को बड़े छोटे का विचार नहीं।"

"हम क्या बोले है? पूछो, इन्हीं लोगों से पूछो! बोलो जी गुलचरन। सुस्लिंग पाटी···।"

"सुस्लिंग मत कहिये, सोसलिस्ट कहिये।···बात तो सही मुँह से निकलती ही नहीं है और 'मुँसियार्ती' बघारते हैं।·····जमींदार के तहसीलदार से और अपने मैनेजर से भी जाकर कह दो, रैयतों से जमीन

छुड़ाना हंसी ठठ्ठा नहीं। पाटी के 'ऐजकूटी' में परस्ताब पास हो गया है। संघर्ष होगा संघर्ष! समझे।"

कालीचरन गर्दन ऐंठता हुआ चला गया।···करैत साँप को गुस्से में ऐंठते देखा है न, ठीक उसी तरह। सुमरित दास को कँपकँपी लग जाती है। आस पास बैठे हुये लोगों की भी धुकधुकी तेज हो जाती है।···अभी तो ऐसा लगता था कि जुलुम हो जायेगा।·····अलबत्त देह बनाया है कलिया·····कालीचरन ने। देखकर डर लगता है। सुस्लि···सुस्लि··· सोस्टलिस्ट पाटी में जाकर तो और भी तेजी से 'जल-जल' कर रहा है। संघर्ष क्या होगा?···

डा डिग्गा डा डिग्गा!

संथाल टोली में दो दिनों से दिनरात मादल बजता रहता है। डा डिग्गा डा डिग्गा। औरतें गाती हैं। नाचती हैं—झुमुर झुमुर!!··· दरखास्त नामंजूर हो गई। जमींदार जमीन छीन लेगा। कोठी के जंगल में, जामून और गूलर में बहुत फल लगे हैं इस बार। जंगली सूअरों के बच्चे भी किलबिल कर रहे हैं। हल के फाल को तोड़ कर तीर बनाओ! लोहा मँहगा है। रे! हाय रे हाय!! डा डिग्गा, डा डिग्गा···!

कालीचरन ने कहा है—संघर्ष करेंगे। संघर्ष क्या, परसताब क्या?

रिंग रिंग-ता-धिन ता!

डा डिग्गा, डा डिग्गा!!·····खेत में पाट के लाल पौधों को देखकर जी ललच रहा है। धान की हरी-हरी सूई खेत में निकल गई है। माटी का मोह नहीं टूटता। 'बधना पर्व'[५] की रात में, तूने जो जूड़े में फूल लगाया था, उसे नहीं भूला हूँ। धरती का मोह भी नहीं टूट रहा। प्यारी, हमारे दादा परदादा पुरैनियाँ के जेल में मर खप गये। मकई के बाल की तरह उनके बाल भूरे हो गये होंगे। हमारे बच्चों के दाँत दुधिया मकई के दानों की तरह चमकेंगे। उनसे कहना, धरती माता के प्यार की जंजीर में हम बँध गये। रे! हाय रे हाय!! रिंग रिंग ता धिन ता। डा डिग्गा डा डिग्गा।...

"यदि जमीन पर कोई आवे तो गर्दन काट लो!"

तहसीलदार हरगौरी सिंह ने नये रैयतों के साथ जमीन बंदोबस्ती का एलान कर दिया है।···बस, एक सौ रुपये बीघा सलामी देकर कोई भी रैयत जमीन की बंदोबस्ती के लिये दर्खास्त दे सकता है।···अरे, तुम लोग 'बेकूफ' हो। ये जमीनें एक साल पहले ही नीलाम होकर खास हो गई हैं। पुराने तहसीलदार ने ही सारी कार्रवाई की थी। नीलाम होकर खास हुई जमीन पर दफा ४० की दर्खास्त करने से नकदी कैसे होगी?··· हाँ, नये बंदोवस्त लेने वालों को जमा बाँध देंगे। यह तो हमारे हाथ की बात है। इसके लिए कचहरी की दौड़धूप करने की क्या जरूरत? ····· अरे सूखानू दास, मुकदमा में कितना खर्चा हुआ तुम लोगों का, जरा इन लोगों को बता दो।···हाँ, कंगरेसी और सोशलिस्ट पार्टी वालों की खुराकी भी जोड़ना।···सुना? हरेक तारीख में चंदा वसूल कर पैरवीकार नेताजी लोगों को देना पड़ता था—दस रुपये नकद. सिगरेट और पान की बात तो छोड़ ही दीजिये! यही पेशा है भाई इनलोगों का।···हाँ, जिसकी जमीन नीलाम हो गई है, वह यदि जमीन पर आवे तो उसको गर्दन उड़ा दो। राज से मदद मिलेगी!

राम नाम की लूट है, लूट सके सो लूट!

गाय-बैल, बाछा बाछी और भैंस के पाड़ा की बिक्री धड़ाधड़ हो रही है। दूने सूद पर भी रुपया कर्ज लेकर जमीन मिल जाये तो फायदा ही है। पाट का भाव पंद्रह रुपया है, ऊपर पचास भी जा सकता है, सौ भी हो सकता है। धान सोने के मोल बिक रहा है। जमीन! जिसके पास जमीन नहीं, वह आदमी नहीं—जानवर है। जानवर घास खाता है, लेकिन आदमी तो घास खाकर नहीं रह सकता!·····अरे! छोड़ो जी कंगरेस और 'सुशलिट पार्टी' की बात को।···दरखास नामंजूर होगई। जमीन बंदोबस्ती···।

गाँव के मँगल की अब कोई उम्मीद नहीं।

हर टोले के लोग आपस में ही लड़ेंगे क्या? कोयरी टोले के भजू महतो की जमीन उसी का भगिना सरुप महतो बंदोबस्ती ले रहा है।

सोबरन की जमीन पर उसका चचा रामेसर नजर लगाये बैठा है। सोबरन की जमीन सोना उगलती है। यादव टोली के सभी रैयतों की नीलाम हुई जमीन खेलावन सिंह यादव ले रहे हैं। संथालों की जमीन राजपूत टोले के लोग ले रहे हैं।...सुमरित दास कहते हैं, यह बात गुप्त है। किसी से कहना मत 'संथालों की जमीन खुद तहसीलदार साहब ले रहे हैं। लेकिन, अपने नाम से तो नहीं ले सकते। इसीलिए दूसरों के नाम से लिया है।'

गाँव के मँगल की अब कोई उम्मीद नहीं। तहसीलदार बिश्वनाथ प्रसाद जी, बालदेव और बावन दास को पंचायत बुलाने कहते हैं।..... 'पंचायत तुम्ही लोग बुलाओ। मेरे बुलाने से ठीक नहीं होगा।'

कालीचरन की 'पाटी' के सबसे बड़े लीडर पुरैनियाँ आ रहे हैं। 'कॉमरेडों' ने पाँच ही दिनों में तीन सौ रुपये वसूल किये हैं। अकेले सोमा ने २५०) रु० दिये हैं।...सबसे बड़े लीडर से कहना होगा। गाँव में इस तरह फूट रहने से तो संघर्ष नहीं होगा। फिर, एक बार सैनिक जी और चिनगारीजी को लाना होगा। बहुत दिनों से सभा नहीं हुई है। खेत में कोड़ कमान नहीं करने से जिस तरह जंगलझाड़ हो जाता है, उसी तरह इलाके में सभा मीटिंग नहीं करने से इलाका भी खराब हो जाता है। सिक्रेटरी साहब को भी इस बार लाना होगा। इस बार 'लौडपीसर'[६] भी लाना होगा।

चर्खा सेन्टर की मास्टरनी जी और मास्टरजी लोगों में झगड़ा हो गया है।

करघा मास्टर दुनदुन जी को मँगला देवी का सोशलिस्ट आफ़िस में रहना बड़ा बुरा लगता है। जब तक बीमार थीं, वहाँ थीं तो थीं। अब अच्छी हो गईं तो वहाँ रहने की क्या आवश्यकता? और मँगला देवी को पटने से ही जानते हैं दुनदुन जी। 'गाँव तरक्की सेन्टर' में जब ट्रेनिंग लेती थीं तभी से उड़ती थीं। व्यवस्थापिका जी इनके मिलनेवालों से परीशान रहती थीं। रोज नये-नये लोग।...बहुत बार मँगला देवी को चेतावनी भी दी गई—लेकिन इनके मिलने वालों में कालेज के विद्यार्थी

एम० एल० ए०, साहित्य गोष्ठी के मंत्री जी, चर्खा संघ के कार्यकर्ता तथा कई हिन्दी दैनिकों के सहायक सम्पादक भी थे। व्यवस्थापिका जी हारमान कर चुपचाप हो गईं। मंगला देवी की स्वतंत्रता पर आघात करके वह एक दर्जन से भी ज़्यादा व्यक्तियों का कोपभाजन नहीं बनना चाहती थीं। इसीलिए व्यवस्थापिका जी ने मँगला देवी को इस पिछड़े हुये गाँव में भेजा था। लेकिन यहाँ भी···?

मँगला देवी बात करने में मर्दों के भी कान काटती है। पाजामा और कुर्ता पहनती है। बाहर निकलते समय खद्दर का दुपट्टा भी डाल लेती हैं। क़द नाटा, रँग साँवला और शरीर गठा हुआ है। आँखें बड़ी अच्छी, खास तिरहूत की आँखें! करघा-मास्टर को वह तांत-मास्टर कहती हैं और चर्खा-मास्टर को धुनिया-मास्टर। जोलहा धुनिया मँगला देवी से क्या बात करेंगे?···जब बीमार पड़ीं तो झाँकी मार कर भी देखने के लिए नहीं आते थे और आज नैतिकता पर प्रवचन दे रहे हैं। मँगला देवी इन लोगों को ख़ूब पहचानती है।···व्यवस्थापिका जी को लिखेंगे तो लिखें। क्या करेंगी व्यवस्थापिका जी! ऐसी धमकियों से मँगला देवी नहीं डरती। टुनटुन जी जो चाहते हैं सो वह जानती है। पटना से आते समय समस्तीपुर में लेकर उतर गये। बोले, यहां गाड़ी बदलनी होगी। बाद में मालूम हुआ कि वही गाड़ी सीधे कटिहार जाती है। दूसरी गाड़ी फिर सुबह आठ बजे। रात को बारह बजे धर्मशाला में ले गये।···टुन-टुन जी का परिचय मिल गया है, और कहना नहीं होगा!

बालदेव जी को खेलावन सिंह यादव ने साफ जवाब दे दिया है। सकलदीप का गौना होनेवाला है। नई दुलहिन ससुराल में बसने के लिए आ रही है। बाहरी आदमी का परिवार में रहना अच्छा नहीं। चम्पापुर के आसिन बाबू की बेटी है। ज़रा भी इधर उधर होने से बाप को चिट्ठी लिख देगी। बड़े आदमी की बेटी है···।

बालदेव जी ने 'झोली झंडा' खेलावन के यहाँ से हटा लिया है। बालदेव की मौसी गाँव में घूम-घूम कर शिकायत कर रही है। लेकिन बालदेव जी

साधु आदमी हैं। मान अपमान से परे हैं। वे चुपचाप हैं।

लछमी उन्हें कंठी लेने के लिए ज़िद कर रही है। पुपड़ी मठ के महंथ रामसरुप गुसाईं आये हुये हैं। बालदेव जी कंठी ले लें तो मठ पर रहने में कोई असुविधा नहीं हो!

बावनदास का मन बड़ा अविश्वासी होगया है। किसी पर विश्वास करने को जी नहीं करता है। गाँधीजी को छोड़ कर अब किसी पर विश्वास नहीं होता! वह गाँधीजी को एक ख़त लिखवाना चाहता है। गंगुलीजी ज़रूर लिख देंगे। बराबर लिख देते हैं। उसके मन में बहुत सी शंकायें उठ रही हैं।

(१) बाघ (२) नुक्स। (३) अल्लम गल्लम (४) एक्ज़ेक्युटिव (५) सथालों का एक प्रसिद्ध पर्व।

—चौंतीस

फुलिया 'पुरैनियाँ टीसन' से आई है।

एकदम बदल गई है फुलिया। साड़ी पहनने का ढंग, बोलने-बतियाने का ढंग, सब कुछ बदल गया है। तहसीलदार साहब की बेटी कमली 'अँगिया' के नीचे जैसी छोटी चोली पहनती है, वैसी ही चोली पहनती है। कान में पीतल के फूल हैं। फूल नहीं, फुलिया कहती है--कनपासा। आँचल में चाबी का गुच्छा बाँधती है, पैर में शीशी का रँग लगाती है। ...हाँ, खलासी जी बहुत पैसा कमाते हैं शायद। ...अरे! खलासी के मुँह पर झाड़ू मारो! वह क्या खाकर इतना 'सौखमौज' करेगा, क्या पहनावेगा? फुलिया ने खलासी को छोड़ दिया है। खलासी को 'खोक्सी-बाग' की एक पतुरिया से मुहब्बत थी, रोज ताड़ी पीकर वहीं पड़ा रहता था। 'तलब' मिलने के दिन वह पतुरिया खलासी का पीछा नहीं छोड़ती थी। तलब का एक पैसा इधर उधर हुआ कि पैर की चट्टी खोल कर हाथ

में ले लेती थी। आखिर फुलिया कितना बर्दाश्त करती। ···'टीसन' के 'पैटमानजी' नहीं रहते तो फुलिया की इज्जत भी नहीं बचती। फुलिया अब पैटमानजी के यहाँ रहती है। खलासी एक दिन पैटमैन से लड़ाई करने आया। 'टीसन मास्टर' बाबू ने कहा कि यदि खलासी टीशन के हाता में आवे तो पकड़ कर पीटो। उसी दिन खलासी जो दुम दबाकर भागा तो फिर खाँसी भी नहीं करने आया कभी। पैटमान जी जात के छत्री हैं, तंत्रिमा छत्री नहीं। असल बुंदेला छत्री। पान जर्दा खाते-खाते दाँत टूट गये हैं। पत्थर का नकली दाँत लगाते हैं। कहने को नकली दाँत हैं मगर असली दाँत से भी बढ़ कर है। चना भुट्टा और अमरूद सब कुछ चबा कर खाते हैं पैटमान जी। पचीस साल पहले 'हासाम मुलुक' में 'चाह' पीते और पान जर्दा खाते खाते दाँत टूट गये हैं, 'उमेर' तो अभी कुछ भी नहीं है। दस बरस से 'बेवा' थे, मन के लायक स्त्री मिली ही नहीं।··· पैटमान जी ने मँहगू दास के लिए एक पुरानी नीली कमीज भेज दी है। कमीज पहनने पर मँहगू को पहचानने में गलती हो जाती है। ठीक रेलवे का आदमी!···बुढ़िया के लिए नई साड़ी भेज दी है। एक बित्ता काली किनारी है।···इस बार के कोटा में असली 'सन्तीपूरी साड़ी' मिलेगी तो फुलिया को भेज देगा। फुलिया कहती है--इस बार माँ को भी साथ ले जायेगी।

फुलिया का भाग! रमपियरिया की माँ कहती है—"रमिया भी अब बिहाने के जोग हो गई। बिना बाप की बेटी है! जब से तुम ससुराल गई हो, रोज एक बार तुम्हारा जिकिर करती है रमिया—'फुलिया दीदी कब आवेगी। इस बार फुलिया दीदी आवेगी तो साथ में मैं भी जाऊँगी।' जदि उधर कोई बर नजर में आवे तो रमिया को भी अपने साथ ले जाओ फूलो बेटी! यहाँ कोयरी टोले के छोकड़े दिन-दिन बिगड़ते जा रहे हैं···।"

सहदेव मिसर पर तंत्रिमा टोली का कुत्ता भी भूंकता है! बहुत दिनों के बाद वह तंत्रिमा टोले में आया है—फुलिया के बुलाने पर।···दस दिन रहेगी, फिर चली जायेगी। फुलिया अब जात समाज से नहीं डरती।

वह तंत्रिमा छत्री नहीं, वह असल बूंदेला छत्री की स्त्री है। आँगन में अपने से पका कर खाती है।···माँ का छुआ भी नहीं खाती ?

वह तो मेहमान होकर आई है। उसके जी में जो आवे, वह करेगी। कोई कुछ नहीं बोल सकता।···वह सहदेव मिसर को बैठने के लिए चटाई देती है। एक काँच की छोटी सी 'थरिया' में सुपारी, सौंफ़ और दालचीनी के टुकड़े बढ़ा देती है।···तो फुलिया भूली नहीं है उसे ? वाह ! सहर का पानी चढ़ने पर बाहर तो एकदम बदल गया है पर भीतर जैसा का तैसा। काजल वाली आँखें और भी बड़ी मालूम होती हैं। अँगिया और 'नक्सा कोर' की सुफेद साड़ी। सहदेव मिसर डरते डरते कहता है—

"फुलिया।"

"क्या ?"—फुलिया मुस्कुराती है।

सहदेव मिसर का चेहरा एकदम लाल हो रहा है। कान लाल हो गये हैं। नाक के पास वाला 'सिरा' धकधक कर रहा है—"फुलिया ! जबसे तुम गई मैंने कभी इस टोले में पैर नहीं दिया।"

"रहने दो ! गहलोत टोले में नहीं जाते थे ?···पनबतिया के यहाँ कौन जाता था ? झूठ मत बोलो।"—फुलिया हँसती है।

"नहीं फूलो !"

ढिबरी की रोशनी में सहदेव मिसर फुलिया की आँखों की नई भाषा को पढ़ता है।···हवा के झोंके से ढिबरी बुझ जाती है।···फुलिया बालों में 'महकौआ'[1] तेल लगाती है। अँगिया के नीचे वाली छोटी चोली में 'रब्बड़'[2] लगा रहता है शायद।···फुलिया के देह से अब घाम की गंध नहीं निकलती। सौंफ़, दालचीनी खाने से मुँह गमकता है।···शहर की बात निराली है। शहर की हवा लगते ही आदमी बदल जाता है।··· तहसीलदार की बेटी तो कभी शहर गई भी नहीं।···जाति की बंदिश और पंचायत के फ़ैसले को तो सबसे पहले पंच लोगों ने ही तोड़ा है।···तंत्रिमा टोली का 'छड़ीदार' है नोखे और उचित दास, जिसे चाल से बेचाल देखेगा—छड़ी से पीठ की चमड़ी खींच लेगा। नोखे की स्त्री रामलगन

सिंह के बेटे से फँसी हुई है और उचित दास की बेटी कोयरी टोले के सरबन महतो से।···पंचायत का फैसला ज्यादे से ज्यादे दस दिनों तक लागू रह सकता है। पुश्तपुश्तैनी से जो 'रीत रेवाज' गाँव में चला आ रहा है, उसको एकबार ही बदल देना आसान नहीं। जिनके पास जगह-जमीन है, पास में पैसा है वह भी तो अपने यहाँ का चाल चलन नहीं सुधार सकते।···बाबू टोली के किस घर की बात छिपी हुई है।···पंचलोग पंचायत में बैठकर फैसला कर सकते हैं, उसमें कुछ लगता तो नहीं है। लेकिन पंचायत के फैसले से चुल्हा तो नहीं सुलग सकता? पंचों को क्या मालूम कि एक मन धान में कितना चावल होता है!···'सास्तर' में कहा है-'जोरू जमीन जोर का, नहीं तो किसी और का।' और देह के जोर से आजकल सब कुछ नहीं होता। जिसके पास पैसा है वही 'बोतल मिसर[3]' पहलवान है। वही सबसे बड़ा जोरावर है।

···तहसीलदार साहब की बेटी शाम से ही, आधे पहर रात तक, 'डागडर बाबू' के घर में बैठी रहती है, चाँदनी रात में कोठी के बगीचे में डागडर के हाथ में हाथ डाल कर घूमती है। तहसीलदार साहब को कोई कहने की हिम्मत कर सकता है कि उनकी बेटी का चाल चलन बिगड़ गया है।···तहसीलदार हरगौरी सिंह अपनी खास मौसेरी बहन से फँसा हुआ है।···बालदेव जी कोठारिन से 'लटपटा' गये हैं। कालीचरन ने चर्खा स्कूल की मास्टरनी जी को अपने घर में रख लिया है। उन लोगों को कोई कुछ कहे तो?···जितना कानून और पंचायत है सब गरीबों के लिए ही है!

जमीन के लिए गांव में नई दलबंदी हुई है। जिनलोगों की जमीन नीलाम हुई है, दर्खास्तें खारिज हुई हैं—वे एक तरफ हैं। जिन्होंने नई बन्दोबस्ती ली है अथवा जमींदार से माफी माँग ली है, 'सुपुर्दी' लिख कर दे दी है या जो जमीन बंदोबस्त लेना चाहते हैं—वे सभी एक तरफ हैं। गरीबों और मजदूरों के टोलों पर भी इसका प्रभाव पड़ा है। खेलावन के हलवाहों को कालीचरन ने हल जोतने से मना कर दिया है। तहसीलदार

हरगौरी सिंघ का नाई, धोबी और मोची बन्द करने के लिए कालीचरन घर-घर घूम कर 'भाखन' देता है। गाँव के सारे पुराने बाँध टूट गये हैं। मानो बाढ़ का नया पानी आया हो।···

गरीबों और मजदूरों की आँखें कालीचरन ने खोल दी है। सैकड़ों बीघे जमीन वाले किसानों के पास पैसे हैं, पैसे से गरीबों को खरीद कर, गरीबों के गले पर गरीबों के जरिये ही छुरी चलाते हैं।···होशियार!··· जिन लोगों ने नई बंदोबस्ती ली है, वे गरीबों की रोटी मारने वाले हैं।···

कालीचरन ने चमारटोली मे भात खा लिया?

जात क्या है? जात दो ही है, एक गरीब और दूसरी अमीर।··· खेलावन को देखो, यादवों की ही जमीन हड़प रहा है।···देख लो आँख खोल कर, गाँव में सिरिफ दो जात है।

अमीर-गरीब!

तहसीलदार हरगौरी सिंघ काली टोपी वाले नौजवानों से कहते हैं— "इस बार मोर्चे पर जाना पड़ेगा।···हिन्दू राज कायम करने के लिए पहले गाँव में ही लोहा लेना पड़ेगा ···।"

संजोजक जी आजकल महीने में दो बार घर मनिआर्डर भेजते है। संजोजक जी जो कहेंगे उसे कालीटोपी वाले नौजवान प्राण रहते नहीं काट सकते हैं। आग और पानी में कूद सकते हैं।·····इसी को कहते हैं अनुशासन!

बावन दास जिला काँग्रेस के नेताओं को खबर देने गया है—"गाँव में जुलुम हो रहा है।"

(१) सुगधित तेल (२) रबर (३) मिथिला का एक प्रसिद्ध पहलवान।

—पैंतीस

तहसीलदार बिरंचनाथ प्रसाद के सामने विकट समस्या उपस्थित है। नई बंदोबस्ती वाले किसान रोज उनके यहाँ आते हैं। मामला

मुक़दमा उठने पर बिश्वनाथ प्रसाद की गवाही की जरूरत होगी।..... बेज़मीन लोग अपनी पाटी बंदी कर रहे हैं, जमीन वालों को भी भेदभाव, लड़ाई झगड़ों को भूल कर एक हो जाना चाहिये।...तहसीलदार हरगौरी सिंघ दिन रात बिश्वनाथ बाबू के घर पर ही रहते हैं—

"काका! इस बार इज्जत बचा लीजिये। क्या आप यही चाहते हैं कि नाई धोबी और चमार के सामने हम हाथ जोड़ कर गिड़गिड़ावें?... कल से ही रामकिरपाल काका के गुहाल में गाय मरी पड़ी है। चमार लोगों ने उठाने से साफ इनकार कर दिया है। जीबेसरा चमार को लीडर आप ने ही बनाया है।...राजपूत टोले के लोगों को देखिये, दाढ़ी कितनी बड़ी-बड़ी हो गई है। नाइयों ने काम करना बंद कर दिया है। आपके हाथ में सबों की चुटिया है। आप एक बार कह दें तो सबों की नानी मर जाये।"...

कालीचरन आकर कहता है—"बिसनाथ मामा, आप काँगरेस के लीडर हैं। इसी बार देखना है कि काँगरेस गरीबों की पाटी है या अमीरों की।.....आज तक मैंने आपको देवता की तरह माना है। लेकिन, गरीबों के खिलाफ आप पैर बढ़ाइयेगा तो हम भी मजबूर होकर...।"

तहसीलदार बिश्वनाथ प्रसाद क्या करें, क्या नहीं करें, कुछ समझ नहीं पा रहे हैं।

बावन दास पुरैनियाँ से लौट रहा है।

वह गया था, 'जुलुम हो रहा है' सुनाने। उसने पुरैनियाँ में देखा—'जुलुम हो रहा है'।

कचहरी में जिले भर के किसान, पेट बाँध कर पड़े हुये हैं! दफ़ा ४० की दर्ख़ास्तें नामंजूर हो गई हैं—'लोवर कोट' से। अपील करनी है।...अपील? खोलो पैसा, देखो तमाशा। क्या कहते हो? पैसा नहीं है! तो हो चुकी अपील। पास में नगदनारायण हो तो 'नगदी' कराने आओ।...

क़ानून और कचहरी 'कम्पाउन्ड' में पलने वाले कीट पतंग भी पैसा माँगते हैं।

जिला काँग्रेस ऑफ़िस में 'जुलुम हो रहा है।' जिला काँग्रेस के सभापति का चुनाव होने वाला है। चार उम्मीदवार हैं, दो असल और दो 'कमअसल'[१]। राजपूत और भूमिहार में मुक़ाबिला है। जिले भर के सेठों और ज़मींदारों की मोटर गाड़ियाँ दौड़ रही हैं। एक दूसरे के गड़े मुर्दे उखाड़े जा रहे हैं। कटिहार कॉटन मिल वाले सेठ जी भूमिहार पार्टी में हैं और फ़ॉरबिसगंज जूट मिल वाले राजपूतों की ओर।···पैसे का तमाशा कोई यहाँ आ कर देखे!

बावन दास सोचता है, अब लोगों को चाहिये कि अपनी-अपनी टोपी पर लिखवा लें—भूमिहार, राजपूत, कायस्थ, यादव, हरिजन !····· कौन 'काजकर्ता' किस पाटी का है, समझ में नहीं आता!

"जुलुम हो रहा है?"

"जी हाँ, जुलुम हो रहा है।"

"देखिये बावन दास जी, बात यह है कि सैकड़े ६५ लोगों ने तो ग़लत और झूठा दावा किया होगा इसमें कोई संदेह नहीं। सही और वाजिब हक़ वाले बाक़ी रैयत भी इन्हीं झूठे दावे करने वालों के कारण बेमौत मर गये। इसमें क़ानून का क्या दोष है?···लोगों का नैतिक पतन हो गया है।···देखिये, इस बार जिला कमिटी में, इस संबंध में एक प्रस्ताव पास होने वाला है।"

"बेदखल किसानों से क्या कहेंगे?"

"क्या कहियेगा?···कहिये कि ज़मींदारी प्रथा तो ख़त्म हो रही है। आज बिहार मंत्रीमंडल ने एलान कर दिया है···ज़मींदारी प्रथा को ख़त्म करने के लिए बिहार सरकार कटिबद्ध है!"

बावन दास किसानों से क्या कहेगा?

ज़मींदारी प्रथा ख़त्म हो जायेगी? तब ये काँग्रेसी ज़मींदार लोग क्या करेंगे? सब 'मिल' खोलेंगे शायद। इसीलिए प्रायः हरेक छोटे बड़े लीडर

के साथ एक मारवाड़ी घूमता है।···बावन दास को याद आती है—पाँच महीने पहले की बात! 'पुरैनियाँ टीसन' में तीलभाड़ी के शंकर बाबू ने अपने साथ के दस 'काजकर्ताओं' को पूड़ी-मिठाई का जलपान कराया और पैसा दिया—तीलभाड़ी हाट के मारवाड़ी चोखमल जुहारचंद के बेटे ने। '···हाँ जी, खाओ जी! तुम्हीं लोग तो देश के असल सेवक हो। जेहल में खिचड़ी खाते-खाते जिन्दगी बिता दी।' सारे इलाके के काजकर्ता को खिलाया और एक-एक सेर मिठाई भी खरीद दी।·····चोखमल जुहारचंद का बेटा आजकल अररिया सबडिविजन काँग्रेस का खजांची है। साठ रुपये जोड़ी खादी की धोती पहनता है। चर्खा संघ के बाबू कितना खातिर करते हैं·····।

"जुलुम हो गया।"

"क्या हुआ?"

"जमींदारी परथा खत्तम।"

"जुलुम बात!"

यहाँ के लोग सुख संवाद सुनकर भी कहते हैं—'जुलुम बात!' जुलुम बात। जुलुम हँसी, जुलुम खुसी! बंगला के 'भीषण सुन्दर' की तरह!

"जुलुम बात!"

"क्या है?"

"बावन दास ने जमींदारी परथा खत्तम कर दिया।"—कॉमरेड बासुदेव दौड़ता हुआ आकर कालीचरन को खबर देता है।

"बावन दास ने?"

"नहीं। बावन दास खबर लेकर आया है। काँग्रेस के मंत्री जी ने जमींदारी को नास कर दिया है।"

"जब तक 'लाल पताका' अखबार में यह खबर 'छापी' नहीं हो, इसपर बिसवास मत करो कॉमरेड। यह सब कांगरेसी 'झाई'[५] है। खैर मैं कल ही सिकरेटरी साहेब से पूछ आता हूँ।···तुमलोगों ने मेम्बरी का पैसा जमा नहीं किया आफिस में! सब कॉमरेडों को खबर दे दो। इस

बार आखिरी तारीख है, इसके बाद 'लाल पताका' में नाम निकल जायेगा।"

"सनिचरा ने तो मेम्बरी के पैसे से 'सोसलिट काट' कुर्त्ता बना लिया है। कहता है, 'सन-पटुआ' होने पर पैसा जमा कर देंगे।"

"जुलुम बात है। मेम्बरी के पैसे से कुर्ता ? नहीं, उससे कहो, पैसा जमा करना होगा।"

तहसीलदार हरगौरी और तहसीलदार बिश्वनाथ प्रसाद अब एक पान को दो टुक करके खाते हैं। सच ?···सच नहीं तो क्या ? बेतार सुमरित दास सबों से कहता फिरता है···"कलम और कानून की बात जहाँ आयेगी, वहाँ लाठी भाला चलाने वाले क्या करेंगे ? तहसीलदार बिस्नाथ परसाद पुराने तहसीलदार हैं। राज पारबंगा के नीमक पानी से ही सब कुछ हुआ है। कायस्त नमकहरामी नहीं कर सकता कभी।···कंगरेसी हुये हैं तो क्या अपने पेसे को भी भूल जायेंगे ?···"

संथाल टोली में मादल बज रहा है—

"सोनो रो रूप, रूपे रो रूप

"सोनो रो रूप लेका गातेञ मेलाय

"गातेञ दिसोय रे सोना मुन्दोम

"गातेञ उईहय जीवीदो लोकतिंय।"

डा डिग्गा डा डिग्गा। रिं-रिं-ता-धिन-ता !!

—सोने और चाँदी के बीच मेरे प्रियतम का रूप सोने की तरह है। सोने की अंगूठी को देख कर अपने प्रियतम की याद आती है।

संथाल परगना के आदिवासी संथालों को सोने की झलक लगी है या या नहीं, कौन जाने। लेकिन यहां के संथाल, सोने और चांदी में क्या फ़र्क है, जानते हैं।·····

·····जमींदारी प्रथा खतम हो गई। अब जमींदार जमीन से बेदखल नहीं कर सकता। हमने उन्हें जमीन से बेदखल कर दिया। जो जोतेगा, जमीन उसकी है। जो जितना जोत सके, जिसकी जमीन मिले जोतो,

बोओ, काटो। अब बाँटने का भी झंझट नहीं।···धरती माता का प्यार झूठा नहीं। फिर खेतों में जिन्दगी झूमेगी। असाढ़ के बादल बजा रहे हैं मादल, बिजली नाच रही है। तुम भी नाचो। नाचो !···नाच रे ! मादल बजाओ जोर जोर से। 'पँचाय'[3] का नशा आज नहीं उतरेगा—जब तक पूर्णिमा का चाँद नहीं डूब जाये, घने बादलों में, नाचना बंद नहीं होगा। चाँदनी की तरह प्रियतमा की मुस्कुराहट, बाँसुरी सी मीठी बोली—तीर की तरह दिल पर घाव करती है।···मेरे कलेजे पर फूलों से भरा हुआ सिर रख दो प्रिये !

डा डिग्गा—रिं रिं ता धिन— !

(१) डमी कैन्डिडेट (२) झाँसा पट्टी (३) संथालों के घर में बनी हुई शराब।

—छत्तीस

डाक्टर पर यहाँ की मिट्टी का मोह सवार हो गया। उसे लगता है, मानो वह युग-युग से इस धरती को पहचानता है। यह अपनी मिट्टी है।···नदी-तालाब, पेड़-पौधे, जंगल-मैदान, जीव-जानवर, कीड़े-मकोड़े—सभी में वह एक विशेषता देखता है।···बनारस और पटने में भी गुलमुहर की डालियाँ लाल-लाल फूलों से लद जाती थीं। नेपाल की तराई में, पहाड़ियों पर पलास और अमलतास को भी गले मिल कर फूलते देखा है—लेकिन इन फूलों के रंगों ने उस पर पहली बार जादू डाला है।

गोल्डमोहर—गुलमुहर—कृष्णचुड़ा।···गुलमुहर का कृष्णचुड़ा नाम यहाँ कितना मौजूँ लगता है। काले कृष्ण के मुकुट में लाल फूल कितने सुन्दर लगते होंगे !

आम से लदे हुये पेड़ों को देखने के पहले उसकी आँखें इनसान के उन 'टिकोलों' पर पड़ती हैं, जिन्हें आमों की गुठलियों के सूखे गूदे की रोटी पर

ज़िन्दा रहना है।···और ऐसे इन्सान,—भूखे, अतृप्त इन्सानों की आत्मा कभी भ्रष्ट नहीं हो या कभी विद्रोह नहीं करे, ऐसी आशा करनी ही बेवक़ूफ़ी है।···डाक्टर यहाँ की ग़रीबी और बेवसी को देख कर आश्चर्यित होता है—वह संतोष कितना महान है जिसके सहारे यह वर्ग जी रहा है? आख़िर वह कौन सा कठोर विधान है, जिसने हज़ारों हज़ार क्षुधितों को अनुशासन में बाँध रखा है?

···कफ़ से जकड़े हुये दोनों फेफड़े, ओढ़ने को बस्तर नहीं, सोने को चटाई नहीं, पुआल भी नहीं! भींगी हुई धरती पर लेटा न्युमोनिया का रोगी मरता नहीं है, जी जाता है!!···कैसे?

···यहाँ विटामिनों की क़िस्में उनके अलग-अलग गुण और आवश्यकता पर लम्बी चौड़ी फेहरिस्त बना कर बँटवाने वालों की बुद्धि पर तरस खाने से क्या फ़ायदा?···मच्छड़ों की तस्वीरें, इससे बचने के उपायों को पोस्टरों पर चित्रित करके अथवा मैजिक लालटेन से तस्वीरें दिखा कर मैलेरिया की विभिषिका को रोकने वाले किस देश के लोग थे?···यहाँ तो उन मच्छड़ों की तस्वीरें देखते ही लोग कहते हैं—"पुरैनियाँ ज़िला को लोग मच्छड़ के लिए बेकार बदनाम करते हैं, देखिये 'पच्छिम' का मच्छड़ कितना बड़ा है, एक हाथ लम्बा देह, चार हाथ सूँढ़! बाप रे।"

डी० डी० टी० और मसहरी की बात तो बहुत बड़ी हुई, देह में कड़वा तेल लगाना भी स्वर्गीय भोगविलास में गण्य है।···तेल फूलेल तो ज़मींदार लोग लगाते हैं, स्वर्ग की परियाँ तेल फूलेल लेकर पुण्य करने वालों की सेवा करती हैं···।

खेतों में फैली हुई काली मिट्टी की संजीवनी इन्हें जिलाये रखती है। सश्य श्यामला, सुजला-सुफला—इनकी माँ नहीं? अब तो शायद धरती पर पैर रखने का भी अधिकार नहीं रहेगा। क़ानून बनने से पहले ही क़ानून को बेकार करने के तरीक़े गढ़ लिये जाते हैं। सूई के छेद से हाथी निकाल लेने की बुद्धि ही आज सही बुद्धि है।···और लोग तो बकवास करते हैं, बुद्धि विभ्रम रोग से पीड़ित हैं।··· जिसके पास हज़ारों बीघे

ज़मीन है, वह पाँच बीघे ज़मीन की भूख से छटपटा रहा है ।···बेज़मीन आदमी, आदमी नहीं। वह तो जानवर है।

डाक्टर ममता को लिखता है—

"तुम जो भाषा बोलती हो, उसे ये नहीं समझ सकते। तुम इनकी भाषा नहीं समझ सकती। तुम जो खाती हो, ये नहीं खा सकते। तुम जो पहनती हो, ये नहीं पहन सकते। तुम जैसे सोती हो, बैठती हो, हँसती हो, बोलती हो—ये वैसा कुछ नहीं कर सकते ।···फिर तुम इन्हें आदमी कैसे कहती हो !···"

···वह आदमी का डाक्टर है, जानवर का नहीं ।···'टेस्ट ट्यूबों' में आदमी और जानवर के ख़ून अलग-अलग रखे हुये हैं। दोनों के 'सिरम' की अलग-अलग ज़रूरतें है ।···डाक्टर आदमी के ख़ून वाले ट्यूब को हाथ में लेकर, ज़रा और ऊपर उठाकर, ग़ौर से देखता है ।—वह जानना चाहता है, देखना चाहता है कि इन इनसानों और जानवरों की रक्तकणिका में कितना विभेद है, कितना सामंजस्य है ।···

ख़ून से भरे हुये टेस्ट ट्यूबों में अब कोई आकर्षण नहीं !···

क्या करेगा वह संजीवनी बूटी खोजकर ? उसे नहीं चाहिये संजीवनी। भूख और बेबसी से छटपटा कर मरने से अच्छा है 'मैलेगनेन्ट मैलेरिया' से बेहोश होकर मर जाना। तिल-तिल कर, घुल-घुल कर मरने के लिए उन्हें जिलाना बहुत बड़ी क्रूरता होगी ।···सुनते हैं, महात्मा गाँधी ने कष्ट से तड़पते हुये बछड़े को गोली से मारने की सलाह दी थी···। वह नये संसार के लिए इन्सान को स्वस्थ और सुन्दर बनाना चाहता था। यहाँ इन्सान हैं कहाँ ?···अभी पहला काम है—जानवर को इन्सान बनाना।

उसने ममता को लिखा है—

"यहाँ की मिट्टी में बिखरे, लाखोंलाख इन्सानों की ज़िन्दगी के सुनहरे सपनों को बटोर कर, अधूरे अरमानों को बटोर कर यहाँ के प्राणी के जीवकोष में भर देने की कल्पना मैंने की थी। मैंने कल्पना की थी—

हज़ारों स्वस्थ इन्सान, हिमालय की कन्दराओं में, त्रिवेणी के संगम पर—अरुण, तिमुर और सुणकोशी के संगम पर—एक विशाल 'डैम' बनाने के लिए पर्वत तोड़ परिश्रम कर रहे हैं।···लाखों एकड़ बन्ध्या धरती, कोशी कवलित, मरी हुई मिट्टी सस्य श्यामला हो उठेगी। कफ़न जैसे सुफ़ेद बालू भरे मैदान में धानी रंग की ज़िन्दगी के बेल लग जायेंगे।···मकई के खेतों में घास गढ़ती हुई औरतें बेवजह हँस पड़ेंगी! मोती जैसे सुफ़ेद दाँतों की चमक!!"

डाक्टर का रिसर्च पूरा हो गया। एकदम 'कम्पलीट'। वह बड़ा डाक्टर हो गया।···डाक्टर ने रोग की जड़ पकड़ ली है·····।

ग़रीबी और जेहालत—इस रोग के दो कीटाणु हैं।

एनोफ़िल्स से भी ज़्यादा ख़तरनाक,—सैन्ड फ्लाई[1] से भी ज़्यादा ज़हरीले हैं यहाँ के···

···नहीं। शायद वह कालीचरन की तरह तुलनात्मक उदाहरण दे बैठेगा।···कालीचरन किसानों के बीच भाषण दे रहा था—"ये पूँजीपति और जमींदार, खटमलों और मच्छड़ों की तरह 'सोसख' हैं।···खटमल! इसीलिए बहुत से मारवाड़ियों के नाम के साथ 'मल' लगा हुआ है और जमींदारों के बच्चे 'मिस्टर' कहलाते हैं। मिस्टर—मच्छड़!"

दरार पड़ी दीवार!···यह गिरेगी। इसे गिरने दो! यह समाज कब तक टिका रह सकेगा?

···कविवर हंसकुमार तिवारी की कविता की कुछ पंक्तियाँ याद आती हैं—

दुनिया फूस बटोर चुकी है,
मैं दो चिनगारी दे दूँगा।

गुलमुहर—आग का फूल! सारी कुरुपता जल रही है।···लाल! लाल!!···

कमल—कमला नदी के गड्ढे में कमल की अधमुँदी कलियाँ अपने कोष में नई ज़िन्दगी के पराग भर कर खिलना ही चाहती हैं।···

"ओ ! तुम ! कमला ! इतनी रात में ?···अकेली आई हो !"

"डाक्टर !···बोलो । सच बोलो ! मैं डेढ़ घंटे से खड़ी देख रही हूँ । तुम को क्या हो गया है ? क्या तुम्हें भी अब डर लगता है !···सिर चकराता है ? देखो, कान के पास गर्मी सी मालूम होती है ?···दुनिया घूमती सी मालूम पड़ती है ?···डाक्टर !···डाक्टर ?···प्यारु ?"

···कमल की भीनी-भीनी ख़ुशबू !···कोमल पंखुड़ियों का कमनीय स्पर्श !···कमला !···ओ ! मैं कमला की गोद में हूँ ?···मुझे नींद न लग जाये । मुझे उठ कर बैठ जाना चाहिये । मेरी मंज़िल···।

"कमला ! चलो तुम्हें पहुँचा दूँ ।"

'लेटे रहो बेटा !"

"ओ ! मौसी ! तुम भी आ गईं ?"

प्यारु कहता है—"कल सुबह से ही सिरफ चाये पीकर हैं, तो सिर नहीं चक्कर देगा ?"

(१) काला आज़ार का मरद्दह ।

--सैंतीस

तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद के दरवाज़े पर पंचायत बैठी है । दोनों तहसीलदार के अगल बगल में बालदेव जी और कालीचरन जी बैठे हैं । बाभन-राजपूत के साथ में बैठा है यादव—एक ही ऊँचे 'सफरे'[1] पर ! अरे ! जीबेसर मोची भी उसी कम्बल पर बैठा है ।···बस, अब रास्ते पर आ रहा है । देखो, आज तहसीलदार हरगौरी किस तरह हँस-हँस कर कालीचरन से बात कर रहा है—मानो 'एक पियाली' का दोस्त है । हाँ तो, यादवों को अब 'जमाहिर लाल' भी छत्री मान लिये हैं । कौन क्या बोल सकता है ?···बावन दास कौन जात है ? कहाँ है बावन दास ?··· पुरैनियाँ गया है ? आज पंचायत के दिन उसको रहना चाहिये था ।···अरे

भाई, बाहरी आदमी फिर बाहरी आदमी है। उसको इस गाँव से कौन जरूरत है? यहाँ नहीं, वहाँ। ···लेकिन, कालीचरन···बाल···।···डोमन ठाकुर क्या कहता है,···सुनो!

"ठाकुर (नाई) टोले से और रजक टोले से एक एक आदमी को ऊँचे 'सफरे' पर बैठने के लिए चून लिया जाये।"

"ओ! आओ डोमन भाई! तुम अपने टोले से किसको पंच चूनते हो? बोलो! तुम्हीं आओ!···और रजक टोले से तो प्यारेलाल है ही। आओ, प्यारे!"—कालीचरन प्यारे को अपने ही पास बिठलाता है।

"तो बात यह है कि"—तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद जी सुपारी कतरते हुये कहते हैं—"जमाना बहुत खराब आ रहा है। जो लोग अखबार गजट पढ़ते हैं, वही जानते हैं कि कितना खराब जमाना आ रहा है।···बंगाल की तरह अकाल फैलेगा। बंगाल के अकाल के बारे में नहीं जानते?···अरे, चरवाहा सब गाता है, सुने नहीं हो—

'बड़ जुलुम कइलक अकलवा रे
'बंगाला मुलुकवा में।
'चार करोड़ अदमी मरल···।'

"—पूछो कालीचरन से, बालदेव भी कहेगा कि बंगाल के अकाल जैसा अकाल कभी पड़ा?···उग्र ज़्यादे होने से क्या हुआ? जो लोग अखबार नहीं पढ़ते हैं वे दुनिया की बातों से वाक़िफ़ कैसे हो सकते हैं? मैं ही पहले से यदि कर-कचहरी, कटिहार-पूर्णिया नहीं जाता तो 'कूपमंडू' रहता। कुएँ का बेंग!···देखो, सरकार सभी धानवालों से धान वसूल रही है। क्यों? सरकार को पूरा डर है कि अकाल फैलेगा, इसलिए अपने हाथ में 'बेरवख़्त' के लिए पूरा 'स्टौक' रखना जरूरी है। अरे, तुमको तो तीन आदमी की फ़िक्र करनी पड़ती है तो साल भर बाप-बाप चिल्लाते हो, कभी इन्द्र भगवान से पानी माँगते हो, सूरज भगवान से धूप उगाने के लिए कहते हो—नौकरी करते हो, क़र्ज़ लेते हो! और जिसको समूचा 'भारथवरश'···हिन्दुस्थान की फ़िक्र करनी पड़ती है—उसकी क्या हालत

होती होगी ? अभी तुरत ही तो सभी लीडर 'जेहल' से निकले हैं, तुरत मिनिस्टरी लिया है। यदि अकाल पड़ गया तो जो सुराज मिलने वाला है, वह नहीं मिलेगा। यदि मिलेगा भी तो उसकी सारी ताक़त तो लोगों को खिलाने में ही लग जायेगी। इसलिए हमलोगों को धरती से ज़्यादा अन्न उपजाना चाहिये।···अभी मान लो कि कर-कचहरी, फ़र-फ़ौजदारी करके तुम खेत पर दफ़ा १४४ लगा देते हो, फिर १४५ होगा—इससे ज़मीन में धान तो रोपा नहीं जायेगा ! खेत परती रहेगा और अन्न होगा नहीं। इसके बाद मालिक लोगों से ही यदि धान माँगोगे तो कहाँ से देंगे मालिक लोग ? अपने खर्च के लायक धान मालिकों के पास होगा नहीं और सरकार वसूल करेगी लाठी के हाथ से, कानून से। बड़े मालिकों के बखारों में भी चमगादड़ झूलेंगे।···तो हमारा यही कहना है—कि सभी भाई आपस में विचार कर, मिलाकर देखो कि किस काम में भलाई है !"

···ओ ! तो यह पंचायत सिरफ़ बेजमीन वालों को ही सीख देने के लिए बैठाई गई है ?···चुप रहो ! तहसीलदार जो कह रहे हैं, नहीं समझ रहे हो। पक्की बात कहते हैं तहसीलदार !···काबिल आदमी हैं। अरे आज न यह कालीचरन और बालदेव आया है। पहले तो हम लोगों के 'आँख-कान' यही थे। इन्हीं के यहाँ बैठ कर गजट में सुना था कि नेताजी सिंघापूर में 'पुसूप बिमान' पर आ गये हैं।···तहसीलदार ठीक कहते हैं।

"तहसीलदार बाबू ! माय बाप···आप ठीक ही कहते हैं।···अब आप ही कोई रास्ता बताइये।"

"हाँ हाँ, तहसीलदार काका आप ही जो कहिये।"

"ठीक है !···क्या कालीचरन जी ?"—तहसीलदार हरगौरी हँसकर पूछता है।

कालीचरन को 'जी' कहते हैं हरगौरी बाबू भी ?

"ठीक है। ठीक है। तहसीलदार साहब ठीक कहते हैं।"

"····तो भाई। हम तो हिन्दुस्थान, 'भारथवरश' की बात नहीं जानते। हम अपने गाँव की बात जानते हैं। आप भला तो जग भला।

हम तो इसीमें गाँव का कल्याण देखते हैं कि सभी भाई, क्या ग़रीब क्या अमीर—सब भाई मिलकर एकता से रहें। न कोई जमीन छुड़ावे और न कोई ग़लत दावा करे। जैसे पहले जोतते आबादते थे—आबाद करें, बाँट दें। न रसीद माँगें न नक़दी के लिए दर्ख़ास्त दें।···दोनों को समझना होगा।···क्यों हरगौरी बाबू! सुनते हो तो? अपने मैनेजर से जाकर कह देना कि हुज़ूर अब भी होश करें। यदि इस तरह रैयतों के साथ दुश्मनी करेंगे--कम से कम हमारे यहाँ के रैयतों से--तो फिर बात बिगड़ जायेगी।···सभी बात तो हमारे ही हाथ में है। हम अभी गवाही दे दें कि--हाँ हुज़ूर आली! यह सब फ़र्ज़ी काम हम से करवाया गया है, और कुल काग़ज़ पत्तर, चिट्ठी-चपाटी, रुक्का-परवाना दिखला दें तो बस खोप सहित कबूतरायनमः।"

···"हूँ। हूँ···हो हो।"--पंचयात के सभी लोग मुक्त अट्टहास कर उठते हैं।

"अरे तो, किस खान्दान का तहसीलदार है, यह भी तो देखना चाहिये।"--सिंघ जी हँसते हुये कहते है।

"महारानी चम्पावती····· ?"

"हो-हो-हो-हो।"--हँसी का दूसरा वेग, सैकड़ों सरल हृदय इन्सानों को गुदगुदी लगाता है।

"अच्छा! अच्छा!! अब काम की बात हो।···सुनो कालीचरन बेटा!···लीडर बने हो तो बड़ा अच्छा काम है बाबू, गाँव का नाम तो इसी में है। कोई सोशलिस्ट का लीडर है, तो कोई काँगरेस का तो कोई काली टोपी का।·····लेकिन देख लो भैया, हम गाँव के सभी लौंडों के अकेले मालिक हैं। यदि गाँव में इधर उधर कुछ किये तो पीठ की चमड़ी भी उधेड़ लें।···खेलावन? जोतखी जी?···आप ही लोग कहिये--जो लौंडे हमको कहते हैं--काका, मामा, भैया, फूफा! उन लड़कों की ग़लती पर यदि हम कान पकड़ कर मल दें या दो कड़ी बात कह दें तो हमको कोई दोख देगा?"

"नहीं। नहीं। आप वाजिब बात कहते हैं।"

"हम गाँव से बाहर थोड़े ही है। लेकिन एक बात हम भी पहले ही कह देते हैं, अभी आप जैसा करने के लिए कहते हैं, हमलोग करें। बाद में फिर हमारी गर्दन पर छूरी चले तब ?"--कालीचरन कहता है।

"इसका जिम्मा हम लेते हैं। अरे, हमने कहा न कि सभी 'खेता' मेरे हाथ में है।"

"तो ठीक है। हम गाँव से बाहर थोड़ो हैं।

"ठीक बात ! ठीक बात !!---"

"लेकिन सभी भाई सुन लीजिये, यदि गाँव के बाहर का कोई बाहरी हम पर हमला करे तो इसका मुकाबला सभी को मिल कर करना होगा। ···हाँ, यदि बाहर वाले इस गाँव के जमीन वालों पर हमला करें तो सबों को सहायता करनी होगी।·····गाँव की जमीन गाँव में रहेगी। बाहर वाले क्यो लेंगे ? समझे"

"हाँ-हाँ, ठीक है ! ठीक है। बहुत रात हो गई। आसमान में बादल उमड़ आये हैं। बरसा होगी।·····दुहाई इन्द्र महाराज ! बरसो ! बरसो !"

हर साल बरसात के मौसम में यही होता है। भगवान के हाथ की बात इन्सान क्या जानें ! इन्द्र भगवान से प्रार्थना की जाती है--बरसाओ ! हे इन्द्र महाराज !·····जरा भी आसमान के किसी कोने में काले बादलों का जमाव हुआ, बिजली चमकी कि--'बरसो बरसो' की पुकार घर-घर से सुनाई पड़ती है। जमीन वालों, बेजमीनों--सबों की रोजी रोटी का प्रश्न है।·····और यदि लगातार पाँच दिनों तक घनघोर बरसा हुई और खेतों के आल डूबे कि'···जरा एक सप्ताह सबुर करो महराज !·····'

इन्द्र महाराज की खुशी ! यदि उनका मिजाज अच्छा रहा तो प्रार्थना पर विचार कर--एक सप्ताह सब्र कर गये !·····मौके से बरसा होती गई, धूप भी उगती रही तो फिर धान रखने की जगह नहीं मिलेगी। ·····'मूसिन पूछे मूस से कहाँ के रखब धान'[२]।···तहसीलदार विश्वनाथ

प्रसाद के पास डाक वचनामृत, भविष्यफल और खनाबचन है। पंजिका से हिसाब निकाल कर बता देंगे कि यह पक्ष सूखेगा या भरेगा।···नक्षत्रों की गणना में यदि स्त्री-स्त्री का संयोग हुआ तो शून्य, यदि पुरुष-पुरुष संयोग निकला तो शून्य। एक बूंद भी बरसा नहीं होगी--चिल्लाने से क्या होगा?·····

···ततमा टोला, पान्डवान टोला, धानुक-कुर्मी टोला तथा कोयरी टोला की औरतें हर साल ऐसे समय में इन्द्र महाराज को रिझाने के लिए, बादल को सरसाने के लिए--'जाट-जट्टिन' खेलती हैं·····

आज भी 'जाट-जट्टिन' का आयोजन है। कल तो पिछुयारी टोले की औरतों ने किया था, बादल का एक टुकड़ा थोड़ी देर के लिए आकर चाँद को ढँक गया था। आज 'पुरनिमो' है। कल से यदि 'बरखा' नहीं हुई तो सारा 'पख' सूखा रहेगा।·····ततमा टोली की औरतों ने बाबू टोला की औरतों को निमंत्रण दिया है—"एक साथ सब मिल कर जाट-जट्टिन खेलें, जरूर बरखा होगी।"

गुआर टोली और कायस्त टोली के बीच में जो पन्द्रह रस्सी मैदान खाली है, उसी में औरतें जमा हुई हैं।

·····जाट के पास हजारों हजार भैंसें हैं। वह उन्हें चराने के लिए कोशी के किनारे जाता है। जट्टिन घर में रहती है। दूध, घी और दही की बिक्री करती है, हिसाब रखती है।·····सास या पति से झगड़ कर, रुठ कर जट्टिन नैहर चली गई। जाट उसे ढूँढ़ने जा रहा है। जट्टिन बड़ी सुन्दरी थी, उसकी सुन्दरता की चारों ओर चर्चा होती थी!

"सुनरी हमर जटिनियाँ हो बाबूजी,
"पातरी बाँस के 'छौंकिनियां' हो बाबूजी
"गोरी हमर जटिनियाँ हो बाबूजी
"चाननी रात के इंजोरिया हो बाबूजी।
"नान्ही-नान्ही दँतवा, पातर ठोरवा···
"छटके जैसन बिजलिया·····!"

इसलिए जाट को गाँव के हरेक मालिक, नायक या मंडल पर सन्देह है।···जट्टिन नैहर नहीं जा सकेगी, किसी ने जरूर उसे अपने घर में रख लिया होगा।···रास्ते में कितने गाँव हैं, कितनी नदियाँ हैं, कितने घाट हैं और घटवार हैं।···वह रास्ते के हर गाँव के मालिक, 'मड़र'[3] और नायक के यहाँ जाता है—

"नायक जी हो नायक हो
"खोले देहो किवड़िया हो नायक जी,
"डूढ़े देहो जटानियाँ हो नायक जी···..."

जट्टिन बनी है—रमपियरिया और जाट बनी है कोयरी टोला की मखनी। मखनी ठीक मर्दों जैसी लगती है!·····

'जाट-जट्टिन' अभिनय के साथ और भी सामयिक अभिनय तथा व्यंग नाच्य बीच-बीच में होते हैं।···फुलिया बनी है डाक्टर। उसने कमल के फूल की डंटी को किसी तरह जोड़-तोड़ कर, डाक्टर के गले में झूलने वाला 'आला' बनाया है। सनिचरा का नया पैजामा माँग लाई है और बिहुला नाचनालों के यहाँ से साहबी टोपा और कोट माँग लाई है।···

"ऐ मैन! इदार आता हाए। बोलो क्या होता हाए।"

"हजुर! थोड़ा सिर दुखता है, थोड़ा आँख भी दुखता है, थोड़ा कान भी दरद करता है और कलेजा भी धुकधुक करता है, सर्दी भी होता है गर्मी भी लगता है। भूख नहीं लगता है और जब भूख लगता है तो खाना नहीं मिलता है।"—रोगी बनी है धानुक टोले की सुरती। खूब बात जोड़ती है।···हा-हँ-हँ-हँ-हँ।···

"अरे बाप रे बाप! ऐसा बेमारी तो कभी नाही देखा। तुम्मारा नेबज देखे, (देखकर) उँहू! तुम नेही बचेगा। तुमारा बेमारी को कीड़ा हो गया।···जक्सैन लगेगा।"

दूसरी रोगिनी आती है—कुर्मा टोले की तराबत्ती।

"ऐ औरत! तुमको क्या हुआ?"

"हमरा दिल 'दकदक' करता है ।"

"अरे बाप ! यहाँ तो सबों का दिल दकदक करता हाए ।···अमारा भी दिल दकदक करने लगा !"

डाक्टर और रोगिनी दोनो डरते हुये एक दूसरे को बाहों में पकड़ लेती हैं—दिल धकधक, दिल दकदक !!

·····औरतों की मंडली हँसते-हँसते लोटपोट हो जाती है । बूढियों की खाँसी उभर आती है । हो – हो – हो – खों-खों, अक्खों !! ···खूब किया !

मर्दों को जाट-जट्टिन देखने का एकदम हक नहीं है । यदि यह मालुम हो गया कि किसी ने छिप कर भी देखा है तो दूसरे ही दिन पंचायत में चली जायेगी बात !···जिसको मूछें नही उगी हैं, वह देख सकता है ।···

अंत में औरतें मिल कर हल जोतती हैं । हल और बैल किसी का ले आती हैं और हल जोतते समय गाँव के बड़े-बड़े किसानों को गाली देती हैं—"अरे विस्नाथ तहसीलदरवा ! जल्दी पानी ला रे !····· पियास से मर रहे हैं रे !"

"अरे ! सिंघवा सिपैहिया रे !···पानी लाओ रे !"

"अरे रमखैलोना रे !···पानी ला रे !

·····इस गाली को कोई बुरा नहीं मानते । बल्कि किसी बड़े किसान का नाम छूट जाये तो उसे तकलीफ़ होती है ।·····बहुत दुख होता है !

इस बार डाक्टर को भी गाली दी जाती है—अरे डकटरवा रे !··· अरे परसन्तो रे, जल्दी से बोतल में पानी लेके आ रे !···

हो-हो-हा-हा·····

आसमान में काले बादल घुमड़ रहे हैं ।·····बिजली भी चमक रही है ।···

(१) बिछावन, दरी (२) घाघ की एक सूक्ति (३) (मंडल) मालिक ।

—अड़तीस

दो दिन से बदली छाई हुई है। आसमान कभी साफ नहीं होता। दो तीन घंटों के लिए बरसा रुकी, बूँदाबूँदी हुई, फिर फुहिया। एक छोटा सा सुफेद बादल का टुकड़ा भी यदि नीचे की ओर आ गया तो हरहरा कर बरसा होने लगती है। असाढ़ के बादल !···

रात में मेंढकों की टरटराहट के साथ असंख्य कीट पतंगों की आवाज शून्य में एक अटूट रागिनी बजा रही है। टर्र ! मेंक्-टर्रर·····भैंकू ! ·····झिं-झिं-चि···किर किर्र·····सिं, किटिर किटिर !·····झिं··· टर्र·····।

कोठारिन लछमी दासिन को नींद नहीं आ रही है। चित्त बड़ा चंचल है। रह-रह कर ऐसा लगता है कि उसके शरीर पर कोई पतंगा 'घुरघुरा' रहा है। वह रह-रह कर उठती है, बिछावन झाड़ती है, कपड़े झाड़ती है। लेकिन वही सरसराहट···। वह लालटेन की रौशनी तेज कर बीजक लेकर बैठ जाती है—

"जाना नहिं बूझा नहिं
"समुझि किया नहीं गौन !
"अंधे को अंधा मिला
"राह बतावे कौन ?"

कौन राह बतावे ? नहीं, उसने बालदेव जी को जाना है, अच्छी तरह पहचाना है।···महंथ सेवादास जी कहते थे—'लछमी ! बालदेव साधु पुरुख है।'·····लेकिन बालदेव जी तो इतने लाजुक हैं कि कभी एकान्त में बात करना चाहो तो थरथर काँपने लगें ; चेहरा लाल हो जाये। लाज से या डर से ?···लेकिन बिरहबाण से घायल, लछमी का मन सिसक सिसक कर रह जाता है।

"बिरह बाण जिहि लागिया
"औषध लगै न ताहि।

"सुसकि सुसकि मरिमरि जिवै,
"उठे कराहि कराहि ।।"

किन्तु बालदेव जी को क्या पता ?···लछमी क्या करे ?
···टर्र-र-मेंक, मेंक, भी···ई···टिंक टिंक—भी रिं !!···

नहीं । लछमी अब नहीं सह सकेगी । वह बालदेव जी के पास जायेगी, मसहरी नहीं है बालदेव जी को ! मच्छड़ काटता होगा ।···नहीं । वह नहीं जायेगी । वह क्यों जायेगी ?···

"पानी प्यावत क्या फिरो
"घर घर सायर बारि,
"तृषावन्त जो होयगा,
"पीवेगा झख मारि ।"·····

रामदास—महंथ रामदास अब लछमी से बहुत कम बोलते हैं । वे नाम के महंथ हैं । वे कुछ नहीं जानते, कुछ नहीं समझते—उन्हें कुछ भी नहीं मालूम । कितनी आमदनी और कितना खर्च होता है उनको क्या पता ? बीस से ज़्यादा तो गिनना नहीं जानते । कौड़ी का हिसाब जानते हैं ।·····रामदास जी समझ गये हैं कि यदि लछमी मठ को एक दिन के लिए भी छोड़ दे तो रामदास के लिए यहाँ टिका रहना मुश्किल होगा ।··· लछमी जादू मंतर जानती है । क्या काग़ज़-पत्तर, क्या खेतीबारी और क्या हाकिम-महाजन- सभी में वह अव्वल है ।···महंथ रामदास जी समझ गये हैं कि यदि इज़्ज़त के साथ बैठ कर दूध मलाई भोग करना हो तो लछमी को जरा भी अप्रसन्न नहीं किया जाये ।···तन का ताप मन को चंचल तो करता है, लेकिन क्या किया जाये !···यदि एक दासिन रखने का हुकुम लछमी दे दे तो···!

गड़गड़ाम···गड़ गड़···बादल घुमड़ा । बिजली चमकी और हरहरा कर बरसा होने लगी !···

हाँ, अब कल से धनरोपनी शुरू होगी ।···जै, इन्दर महराज बरसो बरसो !!···लेकिन 'बीचड़'[1] के लिए धान कहाँ से मिलेगा ? आज तो पंचा-

यत में सभी बड़े मालिक लोग बड़ी-बड़ी बात बोलते थे, कल ही देखना कैसी बात करते हैं, 'अपने खर्चा के जोग ही धान नहीं है', 'बीहन नहीं है' अथवा 'पहले हम को बोने दो'।

गड़गड़ाम—गुडुम !

"बीहन का धान मालिकों को देना होगा। हमेशा देते आये हैं, इस बार क्यों नहीं देंगे।"—कालीचरन आफ़िस में सोये अधसोये और लेटे लोगों से कहता है—"और बार दूना लेते थे—बीहन का दूना—इस बार सो सब नहीं चलेगा। यदि तहसीलदार मामा ने ऐसा प्रबन्ध नहीं किया तो फिर···संघर्ष।"

बिजली चमकती है। बादल झूम-झूम कर बरस रहे हैं।···

मंगला अब कालीचरन के आँगन में रहती है। कालीचरन की माँ अंधी है। कालीचरन की एक बेवा अधेड़ फूफू है। मंगला की मीठी बोली सुन कर कालीचरन की माँ की आँखें सजल हो उठती हैं और फूफू की आँखें लाल ! जब-जब बिजली चमकती है, पछवरिया घर के ओसारे पर सोई फूफू पुअरिया घर की ओर देखती है। आदमी की छाया ?··· नहीं। बांस है।···पुअरिया घर में सोई मंगला भी जगी है। बादलों के गरजने और बिजली के चमकने से उसे बड़ा डर लगता है। बचपन से ही वह बादल, बिजली और आँधी से डरती है। और यहाँ की बरसा तो···। फिर बिजली चमकी। "कौन···?" मंगला फुसफुसा कर पूछती है—"कौन !"

भीगे हुये पैरों के छाप बिजली की चमक में स्पष्ट दिखाई देते हैं।

सोनाई यादव अपनी झोपड़ी में बारहमासा का तान छेड़ देता है।

"अेहि प्रीति कारन सेत बाँधल, सिया उदेस सिरी राम हे।"

"सावन हे सखी, सबद सुहावन,

"रिमिझिमि बरसत मेघ हे···"

रिमिझिमि बरसत मेघ।···कमली को डाक्टर की याद आ रही है। कहीं खिड़कियाँ खुली न हों। खिड़की के पास ही डाक्टर सोता है।

बिछावन भींग गया होगा। कल से बुखार है।···सर्दी लग गई है।··· न जाने डाक्टर को क्या हो गया है?···कहीं मौसी सचमुच में डायन तो नहीं? डाक्टर को बादल बड़े अच्छे लगते हैं। कल कह रहा था—"मैं वर्षा में दौड़-दौड़ कर नहाना चाहता हूँ।"

छररर! छररर!···बादल मानो धरती पर उतर कर दौड़ रहे हैं। छहर—छहर···छरर···!

बिरसा माँझी अब लेटा नहीं रह सकता।···परसों गाँव वालों ने 'मिटिन' किया है, बाहरी आदमी यदि चढ़ाई करे तो सब मिल कर मुक़ाबला करेंगे।···कालीचरन भी था और बालदेव भी!···संथाल बाहरी लोग हैं।

तहसीलदार हरगौरी का सिपाही आज ज़मीन सब देख रहा था—अखता भदै धान पक गया है! काटेंगे क्या? किस खेत में कौन धान बोयेंगे। तो क्या, सचमुच में संथालों की ज़मीन छुड़ा लेंगे तहसीलदार? ···ज़मींदारी 'पर्थी' ख़तम हुई लेकिन तहसीलदार ज़मीन से बेदख़ल कर रहा है!···बात समझ में नहीं आ रही है।···क्या होगा?···कल ही देखना है। ज़मीन पर हल लेकर आवेगा तहसीलदार, भदै धान काटने आवेगा, तब देखा जायेगा। पहले से क्या सोच फ़िक्र?···वह अब लेटा नहीं रह सकता।···लेटे ही लेटे मादल पर वह हाथ फेरता है—रिं रिं ता धिना ता।

गुड़गुड़ुम-गुड़ुम-गुड़ुम।

बिजलियाँ चमकती हैं!

कल बीचड़ मिलेगा या नहीं?···बालदेव जी को मच्छड़ क्यों नहीं काटता है,···कालीचरन की फूफी सोती क्यों नहीं और डाक्टर की खिड़की बन्द है या खुली—इसका जवाब तो कल मिलेगा। अभी जो यह सोनाय यादव बारहमासा अलाप रहा है, इसको क्या कहा जाये?···गाँव घर में गाने की चीज नहीं बारहमासा।···अजीब है यह सोनाय भी। कुमर बिजैभान या लोरिक नहीं—बारहमासा? खेत में रोपनी करते समय गानेवाला

गीत बारहमासा, धान के खेतों में पाँवों की छप-छप आवाज़ के साथ। यह गीत इतना मनोहर लगता है कि आदमी सब कुछ भूल जाये?··· यह संथाल टोली में माँदर क्यों बजा रहा है, बेवजह और जब यह सोनाय बारहमासा गा ही रहा है तो चार कड़ी सुनने दो बाबा···बेताल का ताल बजा रहे हो! बरसा की छपछपाहट और बादलों की घुमड़न में माँदर की आवाज़ स्पष्ट नहीं सुनाई पड़ती है, गनीमत है।···ओ! सोनाय ने अब भूमर बारहमासा शुरू किया है—

"आरे फागून मास रे गवना मोरा होइत
"कि पहिरू बसन्ती रंग हे,
"बाट चलैत-आ-केशिया संभारि बान्हू,
"अँचरा हे पवन-झरे हे···ए···ए···!!"

डाक्टर अब गाँव की भाषा समझता ही नहीं, बोलता भी है। ग्राम्य गीतों को सुन कर वह केस हिस्ट्री लिखना भी भूल जाता है।···गीतों का अर्थ शायद वह ज़्यादे समझता है? सोनाय से भी ज़्यादे?···अँचरा हे पवन झरे हे!···आँचल उड़ी उड़ी जाये!

···गाँव के और लोग कहेंगे कि रात में रह-रह कर वर्षा होती थी। आधा घंटा बंद, फिर झर-झर!—लेकिन डाक्टर कहेगा—सारी रात बरसा होती रही। कभी बून्द रुकी नहीं। विशाल 'बड़' के तले, 'करकट टीन' के छप्परवाले घर पर जो बून्दें पड़ती थीं! कोठी के बाग में जो झर-झराहट कभी बन्द नहीं हुई!!···

—तो सुबह हो गई?···सोनाय अब खेत में गीत गा रहा है। सोनाय अकेला नहीं है, सैकड़ों कंठों में एक एक बिरहनी मैथिली बैठी हुई कूक रही है—

"आम जे कटहल, तूत जे बड़हल
"नेबुआ अधिक सुरेब!
"मास असाढ़ हो रामा! पंथ जनि चढ़िह,
"दूर ही से गरजत-मेघ-रे-मेरो!"

बाग में आम-कटहल, तूत और बड़हल के अलावा कागजी नीबू की डाली भी झुकी हुई है और दूर से मेघ भी गरज कर कह रहा है 'ओ पंथी ! अभी राह मत चलना !'···लोग दूर के साथी को अपने पास बुलाते हैं, बिरह से तड़पते हैं, मेघों के द्वारा संदेश भेजते हैं और घर आया हुआ परदेशी बाहर लौट जाना चाहता है ! नहीं नहीं !···बिजली की हर चमक पर मैं चौंक-चौंक कर रह जाऊँगी। बादल जब गरजते हैं तो कलेजे की धड़कन बढ़ जाती है ?

"आरे मास आ सा···द, हे ! गरजे घन
"बिजूरी-ई-चमके सखि हु-ए-ए !
"मोहे तजी कंता जाये पर···देसा आ···आ···
"कि उमड़ू कमला माई हे !! "
—हे रे ! है रे !!···

कमला में बाढ़ आ जाये तो 'कंत' रुक जायें।···इसलिए कमला नदी को उमड़ने के लिए आमंत्रित किया जाता है।···जिनके 'कंत' परदेश से लौट आये हैं, उनकी खुशी का क्या पूछना ! झुलनी रागिनी उन्हीं सौभाग्यवतियों के हृदय के मिलनोच्छ्वास से झूम रही है खेतों में।

"मास असाढ़ चढ़ल बरसाती
"घर घर सखी सब झूलनी लगाती
"झूली गावे,
"झूली गावति मंगलबानी
"सावन सखि अलि-हे-मस्त जवानी···
"देखो, देखो !!
"देखो देखो सखि री बृजबाला
"कहाँ गये जशोधा कुमार, नन्द लाला
"·····देखो देखो !!"

घर का कंत कहीं गाँव में ही राह न भूल जाये !···देखो देखो, कहाँ गये ? किसी की झूलनी पर झूल तो नहीं रहे ?

"चाय !"

"कौन ? कमला !"—डाक्टर अकचका जाता है।

"हाँ, चमकते हो क्यों ? तुमको भी सूई का डर लगता है ? यह यह मीठी दवा नहीं, मीठी चाय है डाक्टर साहब ! जब चाय पीकर ही जीना है तो आँख खुलते ही गर्म चाय की प्याली सामने रखने की जरूरत है।"—कमला पास की कुर्सी पर बैठ कर चाय बनाती है। यारू खड़ा-खड़ा मुस्कुरा रहा है।···प्यारू को इतना खुश बहुत कम बार देखा गया है।·····'अब समझें ! यह प्यारू नहीं कि हर बात में 'नहीं' कर टाल दिया। चाय बनावें ? तो नहीं। अन्डा बनावें ?—तो नहीं।··· खाना परोसें ? तो नहीं।···अब समझें !'

(१) बीहन धान, धान का छोटा पौधा।

—उन्तालीस

संथाल लोग गाँव के नहीं। बाहरी आदमी हैं ?

"·····जरा विचार कर देखो। यही तो तंत्रिमा का सर्दार है—अच्छा तुम्हीं बताओ जगरू, तुम लोग कौन ततमा हो ? मगहिया हो न ? अच्छा कहो, तुम्हारे दादा ही पच्छिम से आये और तुम्हारी बेटी तिरहुतिया तंत्रिमा के यहाँ ब्याही गई है। मगहिया चाल-चलन भूल गये, अब तिरहुतिया और मगहिया एक हो गये हो। लेकिन, संथालों में भी कमार हैं, माँझी हैं—वे लोग अपने को यहाँ के कमार और माँझी में कभी खपा सके ? नहीं ! वे तो हमेशा हमलोगों को ही छोटा कहते हैं। गाँव से बाहर रहते हैं।···कहो तो गाने किसी संथाल को, बिदेशिया का गाना या एक कड़ी चैती ! कभी नहीं गावेगा। इस देश का दारू हरगिज नहीं पियेगा। जब पीयेगा तो 'पचाय' ही। समझो ! सोचो ! विचारो !"—तहसीलदार साहब, दरवाजे पर बैठे हुये-बीहन लेने वालों से कहते हैं।

···डेढ़ सौ से ज़्यादा लोग हैं। कालीचरन जी भी हैं, बासुदेव जी और बालदेव जी भी हैं।

तहसीलदार साहेब एकदम ठीक कह रहे हैं।···नहीं भाई, जो भी कहो,—तहसीलदार साहेब ही एक आदमी हैं जो कि गाँव की भलाई-बुराई की बात समझते हैं।···ठीक कहते हैं तहसीलदार साहेब। एकदम से 'फाटक खोल' हुकुम दे दिये हैं—"कोई बात नहीं। इस बार तुम लोगों को संदेह क्यों हुआ? अधियादार लोग तो बीहन के वाजिब हक़दार हैं। और जो लोग मेरे अधिया नहीं हैं, उन्हीं से पूछो कि किसी साल हमने लौटाया है किसी को? तब बात यह है कि पिछले साल जैसी उपज हुई थी सो तो देखा ही हुआ है। तिस पर 'पेडीलाभी'[1] क़ानून का देना अभी बाक़ी है। बहुत कोशिश पैरबी कर के किसी तरह एक सौ मन कराया है। हरगौरी बाबू की किरपा से तो पाँच सौ मन लग गया था। इनसे शायद दारोगा साहेब ने पूछा और इन्होंने बता दिया कि पाँच हज़ार मन धान होता है। वह तो थाना काँग्रेस के सिकरेटरी ने कितनी कोशिश करके इसको एक सौ मन बनाया है।···कल हरगौरी बाबू से पूछ रहे थे कि कहिये बाबू हरगौरी जी! यदि पाँच सौ मन धान अभी दे देते तो गाँव वालों को बीहन और खर्चा कहाँ से मिलता? तहसीलदार होने से ही नहीं होता है···।"

ठीक बात! ठीक बात!!···वाजिब कहते हैं तहसीलदार साहेब।

·····कालीचरन के मन में बहुत से सवाल आते हैं, पर वह नहीं पूछेगा। उस दिन सिकरेटरी साहब ने साफ़ कह दिया कि कॉमरेड! अभी 'संघर्ष' मत छेड़ो। सब से पहले अभी किसी एक इलाक़े में, एक एरिया लेकर इसको 'इसपारमिन'[2] करेंगे तब इसके बाद और इलाक़े में इसके लिए हुकुम देंगे।···सो भी संघर्ष से एक महीना पहले दरख़ास्त लेना होगा लोगों से, फिर इनक्वाएरी फिर 'ऐजकूटीमिटि'[3] तब जाकर राय निकलेगी कि संघर्ष करना चाहिए कि नहीं। 'मेल-माफत' और पंचायत से अभी जो काम चले, चलाइये।···कुछ दिनों के बाद तो पार्टी एकदम धावा बोल देगी।

"हाँ, तहसीलदार साहेब ठीक कहते है।" कालीचरन भी कहता है, बालदेव जी भी कहते हैं।···बौनदास कहाँ है? पुरैनियाँ से लौटकर नहीं आया है?

हरगौरी बाबू भी अच्छी तरह समझ गये हैं कि काली टोपी वाले नौजवानों की लाठियों से ज़्यादे ख़तरनाक हथियार है—क़ानूनी नुक्ता! तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद इसके माहिर हैं। उनसे अभी बैर मोल लेना ठीक नहीं।

सिंघजी को हरगौरी की तहसीलदारी पर पूरा भरोसा था; काली टोपी वाले संयोजक जी पर पूरा विश्वास था।···लेकिन तहसीलदार बिश्वनाथ ने तो क़ानून की ऐसी लकड़ी लगाई है कि भूमिहार भी मात! राजपूत का बल्लम-बर्छा उसके आगे क्या करेगा?···ऊपर से कितना हँसमुख और कितना 'मीठबोलिया'[6] है तहसीलदार 'बिसबनाथ' लेकिन पेट में जिलेबी का चक्कर है। राज का नया सरकिल मैनेजर दाँतों तले ऊंगली दबाता है। ऐसा क़ानूनची आदमी?···कहा, इस्तिफा दे दो। इसीलिए, तड़ाक से दे दिया। काँग्रेस का लीडर हो गया। हद है। इससे पार पाना मुश्किल है।

हरगौरी ने सिंघजी के नाम संथाल टोली की पचीस एकड़ जमीन बेनामी करवाई है, जिसमें से दो एकड़ सिंघ जी को मिलेगी।···

खेलावन ने भी पाँच बीघा संथाल टोली की जमीन बंदोबस्त ली है।

सुमरित दास 'बेतार का ख़बर' कोयरी टोले वालों से कहता है—"यदि हरगौरी तहसीलदार ने तहसीलदार बिसवनाथ परसाद के नाम दो सौ बीघे और मेरे नाम से पचास बीघे की लिखापढ़ी नहीं की तो फिर देख लेना, हाँ! कायस्त हैं—खेल नहीं।"

सुमरित दास बेतार अब फिर तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद के साथ है। अब तो जैसे हरगौरी तहसीलदार वैसे विश्वनाथ तहसीलदार। लेकिन शर्त यही है···।

संथालों को सब मालूम है।

अभी बालदेव जी, बौनदास जी और कालीचरन जी सब एक हो गये। संथाल लोग अच्छी तरह जानते हैं, कोई साथ देनेवाला नहीं। धरमपुर में देखा नहीं ? ऐसा ही हुआ ! इसीलिए, बड़े-बूढ़े ठीक कह गये हैं—यहाँ के लोगों का 'बिसवास' मत करना। जब जिससे जो फायदा हो ले लेना मगर किसी के साथ मत होना। संथाल, संथाल है और दिक्कू दिक्कू। पचाय देह को पत्थल की तरह मजबूत बनाता है और पीकर देखो यहाँ का दारू, पत्थल को गला देगा। हरगिज नहीं। दिक्कू आदमी, भट्ठी का दारू। इसका बिसवास नहीं।···अरे तीर तो है ? यही सब से बड़ा साथी है। साथी साथ छोड़ सकता है, तीर कभी अचूक नहीं···।

चुनका माँझी क्या बोलता है ?···डाक्टर से क्या पूछने गया था। पूछना चाहिये था कालीचरन से, बालदेव जी से, तहसीलदार साहेब से।···

बालदेव और कालीचरन लोगों को धान दिला रहा है तहसीलदार से···?

"डाक्टर ने कहा कि तुमलोग ही जमीन के असल मालिक हो। कानून है, जिसने तीन साल तक जमीन को जोता बोया है—जमीन उसी की होगी !···"

"डाक्टर ने कहा है ?"—

डाक्टर ने ?···सनियाँ मुरमुर हँसती है-हँ-हँ-हँ-हँ ! 'डाक्टर हमलोगों का नाच देखना चाहता है। रोज टोकता है। हँ-हँ-हँ।

जवान जोगिया माँझी तीर के पूँछ पर जंगली हांस के परों को बाँधते हुए कहता है—"डाक्टर ने एक खरगोस का दाम दिया था दस रुपैया। बारह रुपैया दर्जन चूहा।···दो सियार के बच्चों का दाम पचास रुपया। दे सकता है कोई बड़ा आदमी इतना दाम ?···सरकारी आदमी है मगर घुसखोर नहीं।"

कालीचरन को एकान्त में कहती है मंगला देवी। एकदम अनुनय करके कहती है—"काली ! तुम मत जाना। संथाल लोग नहीं मानेंगे, जरूर तीर चलावेंगे। मैं जानती हूँ।···तुम नहीं जानते काली बाबू, ये

लोग कैसे होते हैं। उनकी सूरतें भ्रम में डालने वाली हैं—देखने से पता चलेगा कि बहुत सीधे हैं, मगर···। तुम मत जाना काली! तुम्हें मेरे सिर की क़सम!"

ठीक ही तो है, जो लोग सरगना मेम्बर हैं, वे क्यों जायेंगे।

—बासुदेव, सुनरा और सनिचर भी नहीं जायेगा!

—हाँ, प्यारे भी नहीं जायेगा।

—सोमा जट जायेगा? जाने दो, वह मेम्बर नहीं है।

बालदेव जी तो ऐसी जगह जायेंगे ही नहीं, वहाँ हिंसा का भय है। वे नहीं जा सकते।···तहसीलदार साहब लीडर हुये हैं, ख़ुद जायें या लठैतों को भेजें। हिंसा करें या अहिंसा करें। बालदेव जी तो सिर्फ़ 'चवन्नियाँ' मेम्बर हैं। बावन दास यदि रहता तो अभी अकेले सबों को, मय तहसीलदार 'बिसवनाथ' के क़ानून के, मात कर देता। लेकिन उसका भी दिमाग़ ख़राब हो गया है। सात दिन हुये, चिट्ठी लिखाने गया है सो लौटा नहीं है। गाँधीजी को चिट्ठी देगा।···गाँधीजी को इतनी फ़ुर्सत कहाँ है बाबा, जो तुमको जवाब देंगे?···लेकिन नहीं, बावन ने बहुत बार चिट्ठी लिखवाई है और हर बार जवाब आया है—'भाई बावन दास जी, आपका ख़त मिला।"—उस बार ससांक जी सबों को पढ़ कर सुना रहे थे—महत्माजी ने बावन दास को परनाम लिखा है।···बावन दास को महत्मा जी भी—'भगवान' कहते थे।···बावन जरूर अवतारी आदमी है। वह ठीक कहता था—'भारथ माता और भी जारबेजार रो रही है।'

"मैया रे मैया! बाबा हो बाबा!!···"

कौन रोती है?···कौन? रमपियरिया रोती है, उसके भाई गनोरी को तीर लग गया?···कहाँ लगा: किसने मारा?···संथालों ने? कहाँ? लोग भागे क्यों आ रहे हैं?—

गाँव में कुत्ते भूँक रहे हैं। कौए काँव-काँव कर रहे हैं।···जोतखी काका ठीक कहते थे—गाँव में चील काग उड़ेगा।···

—हसेरी! बलवा! लाठी निकाल रे!

"कहाँ हँसेरी ?"

"भाला निकालो रे !"

"कहाँ हँसेरी । कैसा बलवा ? क्या बात है ?"

"संथाल लोग तहसीलदार बिस्नाथ प्रसाद के चालीस बीघा वाले बीहन के खेत में बीहन लूट रहे हैं ।"

"नई बंदोबस्ती वाली जमीन में ?"

"नहीं भाई ! अपनी खास जमीन में ।···कोठी के पास वाली जमीन में !···लाठी निकालो ।"

"गनोरी ने हल्ला किया—तीर छोड़ दिया । जाँघ में लगा है तीर । लहू की नदी बह रही है ।···बेहोस है । इसपिताल में टांग कर लाया गया है । ···संथाल लोग बेखौफ धान का बिचड़ उखाड़ रहे हैं ।"

चलो ! चलो ! मारो !···साला संथाल ! बाहरी आदमी !···जान जाये तो जाये । तहसीलदार बिस्नाथ परसाद की ही जमीन पर धावा किया है ?···चलो रे !·····

—भौं भौं-भूँ-ऊं ऊँ--कुत्ते परिशान हैं भूँकते भूँकते ।

—रिंग रिंग रिंग रिंग !

—डा-डा-डा-डा-डा-डा·····

संथालों के डिग्गा और मादल एक स्वर में बोल उठे—रिंग रिग रिग, रिंग रिंग । डा-डा-डा-डा ।

आज रिंग-रिंग ता-धिन-ता अथवा डा डिग्गा-डा-डिग्गा नहीं; सिर्फ रिंग रिंग रिंग रिंग···, डा-डा-डा-डा··· ! यह खेत में बजा रहा है, संथालिनों को सचेत कर रहा है, तुम लोग भी तैयार रहो····· डा-ड-डा-डा- !!·····संथालिनें जवाब देती हैं—रिं रिं रि रिं । अर्थात, तैयार है । जूड़े में फूल खोंसने में बस जितनी देर लगे ।····· तैयार हैं !·····

"जै काली माई की जै !"—दो सौ गलों की आवाज सुनकर काली-थान के बड़गाछ पर बैठे हुये कौये एक ही साथ काँव-काँव कर उड़ते हैं ।

कुत्ते और भी जोर से भूँकने लगते हैं।

"जै काली माई की जै !"

"महतमा गाँधी की जै।"

"इनकिलास जिन्दाबाघ।"

"भारथमाता की जै।"

"सोशलिट पाटी जिन्दाबाद।"

"झंडा हिन्दू राज का !"

"हिन्दू राज की जै।"

"तहसीलदार बिस्नाथ परसाद की जै।

"बालदेव जी की जै।"

घेर लो चारों ओर से। भागने न पावें !·····हो-हो-हो-हो-हो !·····

—अब नारा नहीं ! सिर्फ़ हो-हो-हो-हो !!

—घेर ! घेर !!···मारो ! हो-हो-हो।

"तीर चला रहा है।···लेट जाओ !···तीर चलाओ !"

"मारो ! गुलेटा चलाओ !"

"बिरसा माँझी भागा जा रहा है, मारो भाला।"

—बिरसा पानी में गिर पड़ा—छप् ! भाला लग गया !

—सुखानू को क्या हुआ ? तीर लग गया, कलेजे में ?

—संथालिनें भी तीर चलाती है !

—बच्चे भी ?

"—बिरसा माँझी गिर पड़ल रे !"—डा-डा-डा-डा-डा-!!

···रिं-रिं-रिं-रिं-!—"गिरने दो। तुम भी गिरो।"

"बैठ के तीर चला सोनिया !"

"सुखी मुरमू गिरल रे !"—डा-डा-डा-डा-।

"गिरने दो !···तुम भी गिरो !"—रिं-रिं।

"जगारी बेटा, ठीक निसाना लगा बेटा। हरगौरी तहसीलदार के

कलेजे पर ! हाँ—। वाह बेटा···।"

···डा-डा-डा-डा-।—"हरगौरी तहसीलदार गिरल रे !"

"गिरने दो !"—रिं-रिं-रिं-रिं-!!

—तहसीलदार ? हरगौरी तहसीलदार गिर पड़ा ?···भागो मत ! ऐ ! ऐ !! सुनो ! तुम लोगों को अपनी माँ-बहन की कसम, गुरु-देवता की कसम, काली किरिया !·····जो भागे वह दोगला !·····संथालों के तीर खतम हो रहे हैं। अब घेर के मारो ।···मंगल दास को संभालो ।··· चलो ! जै, काली माई की जै !···

"मारो भाला। अरे बच्चा नहीं है, इसी ने तहसीलदार को मारा है ।"

"वाह बहादुर ! ठीक है ।···अब लगाओ गुलेटा उस बूढ़े को—माला डिग्गा बजा रहा है ।"

"भाग रहा है। साले सब भाग रहे हैं। घेरो ! भागने न पावें। संथालिनें पाट के खेत में छिपी हुई हैं। घेर लो ।"···

—एकदम 'फिरी'। आजादी है, जो जी में आवे करो !···बूढ़ी, जवान, बच्ची जो मिले। आजादी है। पाट का खेत है। कोई पर्वाह नहीं है।···फाँसी हो या कालापानी, छोड़ो मत !

संथालिनें भी रोती हैं, दर्द से छटपटाती हैं !···चिल्ला चिल्ला कर रोती हैं या गाती हैं ?

—कुहराम मचा हुआ है-पाट के खेतों में। कोठी के जंगल में।··· कहाँ दो सौ आदमी और कहाँ दो दर्जन संथाल, ऊपर दर्जन संथालिनें ! सब ठंढा !···सब ठंढा !!

संथाल टोली के चार आदमी ठंढे हुये। सात घायल हुये और एक लड़के की हालत खराब है। संथालिनें दुहरे दर्द से कराह रही हैं।···

तहसीलदार की हँसेरी में दस ठंढे हुये ! बारह बुरी तरह जख्मी हुये हैं और तीस आदमी को मामूली घाव लगा है।

संथाल टोली को लूट लिया गया !···तहसीलदार हरगौरी की हालत

बहुत खराब है, शायद नहीं बचेंगे।

(१) पैंडी लेवी कानून (२) एक्सपेरिमेन्ट (३) एक्जे क्यूटिव, कार्यकारिणी (४) मीठी बोली बोलने वाला। (५) संथाल लोग गैर संथाल को दिक्कू कहते हैं।

—चालीस

जोतखी जी ठीक कहते थे—गाव में चील कौए उड़ेंगे और पुलिस दरोगा गली-गली में घूमेगा।···

पुलिस-दरोगा, हवलदार और मलटरी—चार लारीगाड़ी में भर कर आये हैं।···दुहाई माँ काली!

इस-पी, कलस्टर, हाकिम अभी आने वाला है।

लहास!···लहास!···बाप रे—कौन कहता था कि अंगरेज बहादुर का अब राज नहीं रहेगा?

"तहसीलदार हरगौरी भी मर गये?···ए! कोई घर से मत निकलो! पाखाना पेसाब सब घर के ही अन्दर करो।···घर से निकले कि 'गिरिफ्फ' कर लेगा।···दुहाई काली माई।"

"बालदेव जी को दारोगा साहेब ने बुलाया है? कलिया···कालीचरन जी को भी?···देखें, यह दोनों तो किसी से डरने वाले नहीं हैं, क्या होता है?···दो लीडर तो है।"

"ओ! आप ही यहां के लीडर हैं"—दारोगा साहब बालदेव जी से पूछते हैं।···'इसपिताल' के फालतू घर में दारोगा साहब कचहरी लगा कर बैठे हैं।···'मलेटरी' ने संथालों को 'गिरिफ्फ' कर लाया है। जखमी, घायल, और बूढ़े बच्चों को भी!···सबों को गिरिफ्तार किया है? नहीं, जखमी लोगों की मरहम पट्टी तो कल ही डाक्टर साहब ने कर दी है। दो संथाल और चौदह गैर-संथाल घायलों को 'पुरैनियाँ' 'बड़ी इसपिताल' भेजा गया है।···सबों की 'लहास' भी चली गई है। सिंघ जी, शिवशंकर

सिंघ और हरेक टोला से दो चार आदमी 'लहास' के साथ गये हैं ।···न जानें कब 'लहास' मिले ? उँह, चीर-फाड़ कर तब मिलेगी ! हे भगवान !···

बालदेव जी क्या जवाब दें ?···लीडर हैं । किसके लीडर ! संथालों के या गैर-संथालों के ?—खखार कर गले को साफ़ करते हुये बालदेव जी के मुँह से बस वही पुराना जवाब निकलता है, जो उसने हरगौरी को दिया था···जिस दिन कलिया पगला गया था !·····

"नहीं हुजुर ! हम तो मूरख और गरीब ठहरे । मूरख आदमी··· चाहे गरीब आदमी कभी लीडर हुआ है हुजूर !"

दारोगा साहब बालदेव जी को पास की कुर्सी पर बैठने को कहते हैं—"अरे हम आपको जानते हैं बालदेव जी । बैठिये !"

बासुदेव और सुन्दर एक दूसरे का मुँह देखते हैं !···कालीचरन जी को कुछ पूछा भी नहीं ?···लो तहसीलदार साहब सम्हाल लेते हैं ।

"दारोगा साहब ! यही हैं कालीचरन बाबू, यहाँ के सोशलिस्टों के लीडर । बड़े बहादुर हैं ! लेकिन सिर्फ बहादुर ही नहीं—मगज भी है !"

"ओ हो !···कालीचरन जी हैं ? आइये साहब, आपलोग तो साहब, क्या कहते हैं, जो न करवाइये ।"—दारोगा साहब मुँह में पान जर्दा डालते हुये कहते हैं—"लेकिन यहाँ तो सुना कि आपलोगों ने बड़े दिमाग से काम लिया है ।" हमको तो, सुबह आते ही सारी बातों का पता चल गया । तारीफ़ करने के क़ाबिल ! वाह !···बैठिये ।"

कालीचरन बैठते हुये कहता है—"देखिये दारोगा साहेब, यदि आपस की पंचायत से सारी बातों का फैसला हो जाये तो हम लोगों को पागल कुत्ते ने नहीं काटा है जो···।"

"आपस की पंचायत से ? यह खूनी केस···?"—दारोगा साहब का पान भरा मुँह एक दम गोल हो जाता है ।

"नहीं, यह नहीं, यही आधी बटेदारी का सवाल ।"

"ओ !"—दारोगा साहब ने पीक की कुल्ली फेंकते हुये कहा—"ओ ! सो तो ठीक है ! अरे आप ही हैं, सोशलिस्ट पार्टी वाले हैं । कहिये तो,

जो काम पंचायत से या चार आदमी की राय से नहीं होगा, वह क्या कहते हैं, 'तूल फ़ज़ूल' से हो सकता है ?"

"हिंसा के रास्ते पर तो हरगिज जाना ही नहीं चाहिये ।"—बालदेव जी बहुत गंभीर होकर कहते हैं।

"क्या कहते हैं !"—दारोगा साहब बालदेव जी की बात में टांग का बंद लगा देते हैं—"क्या कहते हैं !"···दारोगा साहब बात करते समय हाथ ख़ूब चमकाते हैं और कनखी भी मारते हैं ।

बासुदेव और सुनरा एक दूसरे को देखते हैं—बालदेव जी, जानते ही क्या हैं जो बोलेंगे। देखा ! कालीचरन जी ने कैसा गटगटा कर जवाब दे दिया ?

"हिंसा अहिंसा का सवाल नहीं है बालदेव जी, असल है—बुद्धि। यहीं पर हमारी पार्टी के कोई और कॉमरेड रहते तो—हो सकता है, दूसरी बात होती। बुद्धि की बात है ।"—कालीचरन बालदेव जी को जवाब देता है ।

कालीचरन और बालदेव जी ने दारोगा जी को दिखला दिया कि बुद्धि है ! 'उमेर' देख कर मत भूलिये दारोगा साहब—अब वह बात नहीं है ।

"अच्छा तो बालदेव बाबू ! जब यह 'बकुआ' हुआ तो, क्या कहते हैं, आप कहाँ थे ?"—दारोगा साहब पूछते हैं ।

बालदेव जी फिर खखारते हैं—"ह-ख्- जी ! हुजूर !···हम तो मठ पर थे ।·····जी, बात यह है कि हम बैष्णव हैं । उस दिन हमको गुरुजी कंठी देने वाले थे । सुबह तो धान दिलाने में ही कट गयी । पिछले पहर को हम जैसे ही कठी लेकर उठे कि·····ततमा टोली की रमपियरिया रोती हुई गई !"

"ओ ! आपको पहले से कुछ पता नहीं था ?"—दारोगा साहब गंभीर होकर पूछते हैं ।

"जी ! इनको क्या, किसी को पता नहीं ।"—खेलावन सिंह यादव हिम्मत से काम लेते हैं । आखिर, दारोगा साहब के लिए इतना खाने का

इंतजाम भी तो वही कर रहे हैं। वह दारोगा साहब से क्यों नहीं बोलेंगे ? तहसीलदार साहब कुछ नहीं बोलते हैं।

"ओ ! खेलावन जी ! आइये, बैठिये !"—

"ठीक है। हम यहीं हैं।···जरा हुजूर जल्दी किया जाये !···उधर ठंढा हो जायेगा।"—खेलावन जी कहते हैं।

सिर्फ़ यहाँ के दोनों लीडर ही बुद्धि वाले नहीं। और लोग भी बुद्धि रखते हैं !·····

"हुजूर ! हमारा लड़का अभी रहता तो हुजूर से अभी अंग्रेजी में बतिया लेता। रमैन के जैसी एक किताब है, लाल, मोटी···· उसी में देखकर वह आप से अंग्रेजी में बतिया लेता।"—खेलावन सिंह यादव कहते हैं।

"अच्छा ? आप का लड़का अंग्रेजी बोल लेता है ?"

"हाँ, डागडर बाबू से बराबर अंग्रेजी में ही बोलता है।"

"मोकदमा का राय भी पढ़ लेता है।"—बालदेव जी कहते हैं।

"एड क्लास में पढ़ता है।"--कालीचरन जी कहते हैं।

"अच्छा, आप कहाँ तक पढ़े हैं कालीचरन जी ?·····कोई स्कूल में नहीं ?···· वाह साहब, क्या कहते हैं, आपकी बोली सुन कर तो कोई नहीं कह सकता है कि आप जाहिल····· । ओ ! पढ़ लिख लेते हैं, अखवार भी पढ़ लेते हैं ? वाह ! रमैन भी पढ़ते हैं। महाभारत भी ! ओ, क्या कहते हैं कि·····।"

"बालदेव भी अकबार पढ़ता है।"--खेलावन सिंह यादव कहते हैं- "अकबार तो हमलोग भी पढ़ लेते हैं।···लेकिन बहुत झूठ बात लिखता है अकबार में—उस बार लिखा था कि एक औरत थी, सो कुछ दिनों के बाद मर्द हो गई। कहिये भला ?"

"अच्छा तो कालीचरन जी ! आप कहाँ थे, जब यह 'वक़ूआ' हुआ ?"—दारोगा साहब कमर के बेल्ट को खोलते हुये कहते हैं।

अगमू चौकीदार को डर होता है, कहीं दरोगा जी पेटी खोल कर

मारना न शुरू कर दें, बालदेव और कालीचरन जी को।···जहाँ दारोगा जी पेटी खोलते हैं कि अगमू का चेहरा फक् हो जाता है।···नहीं, ऐसा नहीं कर सकते हैं दारोगा जी!

"जी, मैं तो उसी दिन सुबह को धान दिला कर, ठीक बारह बजे दिन में ही पुरैनियाँ चला गया था। तहसीलदार हरगौ···तहसीलदार बिस्नाथ परसाद जी जानते हैं।"

"ओ! आप पुरैनिया गये थे।"—दारोगा साहब एक लम्बी साँस छोड़ते हैं।

"अच्छा तो अब उस पहर को काम कीजियेगा दारोगा साहब।"—तहसीलदार साहब कहते हैं।

"नहीं तहसीलदार साहब! एस० पी० आनेवाले हैं। हमको अभी सब काम खत्म कर रखना है। गवाहों के इजहार···!"

"जी, कुछ असल गवाही, दो-तीन ले लीजिये। और सब बाद में।···अरे काली बाबू, बालदेव बाबू! तुम लोग तो जो सच्ची बात है, वही कहोगे।···कोई झूठी गवाही तो नहीं।···लिख लीजिये इन दोनों के बयान, दस्तखत करना दोनों जानते हैं।"

"आपलोगों का क्या खयाल है?"—दारोगा साहब धीरे से पूछते हैं।

"हाँ, दसखत करने में क्या है?"—कालीचरन कहता है।

—कालीचरन जी हाथ झाड़ कर दस्तखत करते हैं और बालदेव जी बड़े 'प-रे-म' से, 'आस्ते-आस्ते' लिखते हैं।···भाई बालदेव जी सचमुच में साधू हैं।

"बलदव?"—दारोगा साहब कहते हैं—"बालदेव जी, जरा 'ब' में एक लाठी लगा दीजिये और 'द' के ऊपर—क्या कहते हैं, एक तलवार सा।·····और बाक़लम खुद!"

"दारोगा साहब, बालदेव जी नाम में भी लाठी तलवार नही लगाते हैं। हिंसाबाद···।"—कालीचरन मुस्कुरा कर खड़ा हो जाता है।

दारोगा साहब ठठा कर हँस पड़ते हैं। इसके बाद सभी लोग हँस पड़ते हैं।

अलबत्त जवाब दिया कालीचरन जी ने।···दारोगा साहेब पानी पानी हो गये।

···देखो! बुद्धि है या नहीं !!

—एकतालीस

नौ आसामी को चालान कर दिया।

नौ संथालों के अलावा जो लोग घायल होकर 'इसपिताल' में पड़े हैं वे लोग भी 'गिरिफ्फ' हैं। पुरैनियाँ 'इसपिताल' में बंदूक वाले मजेटरी का पहरा है।

गैर-संथालों में कोई 'गिरिफ्फ' नहीं हुआ !···लेकिन,यह मत समझो कि मुफ्त में यह काम हुआ है।···दारोगा साहब कहने लगे कि खेलावन जी, आपके बारे में इस० पी० साहब को संदेह हो गया है कि आप ने सभी यादवों को 'हँसेरी' में जाने के लिए जरूर हुकुम दिया होगा।···खेलावन जी की हालत खराब हो गई। वह तो तहसीलदार भाई थे, तो पाँच हजार पर बात टूट गई। नहीं तो—नहीं तो अभी 'बड़े घर' की हवा खाते रहते खेलावन जी। सिंघ जी घर में नहीं थे, शिवशङ्कर सिंघ भी नहीं। अब सिंघ जी लोगों के मन में क्या है सो कौन जाने ?···दारोगा भी तो राजपूत ही है। आदमी के मन का कुछ ठिकाना नहीं, कब क्या करे।···मुफ्त में सबों की गर्दन नहीं छुटी है। पाँच हजार !

तहसीलदार बिस्नाथ को कुछ लगा कि नहीं ?···सुमरित दास बेतार को आज तीन दिनों से पेट में सूल हो गया है, नहीं तो सब बात कह जाता।···अरे ! बहुत दिन जीयेंगे सुमरित दास जी ! बहुत उमेर है।

"तो हमारा उमेर तुम लोग क्या लगाते हो ?···"

"यही चालीस।"

"चालीस नहीं। पैंतीस।···जामुन का सिरका बिना पानी के पी गये थे, इसीलिए दाँत सब झड़ गये।"

"अच्छा सुमरित दास जी कुछ पता है कि···?"

"अरे! यह मत समझो कि सुमरित दास सूल से घर में पड़ा हुआ था। राम झरोखे बैठ के सब का मोजरा लें···। पूछो, क्या जानना चाहते हो?"

"क्या तहसीलदार साहेब को भी रुपैया लगा है?"

"तहसीलदार बिस्नाथ परसाद को इतना बेकूफ नहीं समझना।··· वह दरोगा तो यह तहसीलदार।···तुम कौआ तो हम 'कैथ' वाली कहानी नहीं सुने हो?"

"तहसीलदार हरगौरी बेचारा···।"

"अति संघर्ष करे जो कोउ,

"अनल प्रगट चन्दन ते होहिं सियावर रामचन्द्र की जै!···"

"लेकिन राजपूत टोले को तो 'इसपी' साहेब भी नहीं छोड़ सकते हैं। जानते हो 'इसपी' साहेब क्या कहते थे? '···यह समझ में नहीं आता है कि तहसीलदार बिस्नाथ परसाद की जमीन से 'बाँहन' बचाने के लिए तहसीलदार हरगौरी सिंह क्यों गये!···जरूर कोई बात है।'···सिंघ जी को एक चरन लगेगा।"

"गवाही में किन लोगों का नाम है?"

"अरे, गवाही क्या? बोलो तुम्हीं, इमान-धरम से, कि संथाल लोग ने जोर जबर्दस्ती किया है या नहीं?"

"इसमें क्या संदेह?"

"तो, गवाही के लिए कोई बात नहीं।···लेकिन गाँव की तकदीर चमकी है—इतना बड़ा 'केस' कभी हाथ नहीं लगेगा। इसमें जो गवाही देने जायगा, उसको तो तीन-तीन खिलाने वाले रहेंगे। तीनों एक ही केस में नत्थी हैं।···समझे? खबरदार!···मेरा नाम नहीं लेना। हाँ। ...और मेरा भी तो फैसला नहीं हुआ है। हम को क्या देते हैं लोग?

जितना कागज-पत्तर, लिखापढ़ी होगी—सब तो सुमरित दास के मत्थे पड़ेगा। लेकिन इस बार नहीं। पहले फैसला कर लें।"

"संथालों में किसकी-किसकी गवाही हुई?"

"अरे, संथाल टोली में गवाह आवेगा कहाँ से, सभी तो आसामी हैं। बड़का माँझी का बारह साल का बेटा भी।..... दारोगा जी ने जब पूछा कि बताओ क्यों बीचड़ लूट रहे थे, तो बिरसा ने जवाब दिया कि हम लगाया है। इसके बाद, दारोगा जी ने झाड़-झपट के पूछा तो बिरसा के बाद सबों ने तुरत कबूल कर लिया कि बीचड़ तहसीलदार बिस्नाथ परसाद का है। औरतों और बच्चों ने भी कहा—तहसीलदार का बीचड़ है। तब? उखाड़ता था जबर्दस्ती क्यों तुम लोग? तो जवाब दिया कि जमींदारी परथा खत्तम हो गई लेकिन हमारे गाँव के जमींदारों ने मिल कर हमारी जमीन छुड़ा ली है।.....इसी लिए लूट लिया।"

"हा—हा—हा—हा—! साफ जवाब? जमीन छुड़ा लिया तो बीहन लूट लिया। हा—हा—हा—! सच? काली किरिया? ऐसा ही जवाब दिया?"

"नहीं तो, तुम समझते हो कि सुमरित दास झूठ कहता है? अरे, यदि संथालों ने ऐसा बयान नहीं दिया होता तो क्या समझते हो? तुम लोग अभी घर में बैठ कर 'हा—हा—ही ही' करते। अभी जेहलखाना में कंद्दू पेड़ते रहते।.....समझे? दारोगा जी ने भी सोचा कि 'आग लगते झोंपड़ा, जो मिले सो लाभ'।.....इसीलिए न कहा कि तहसीलदार इतना बेकूफ नहीं। तब, दारोगा जी का इलाका है, जो ऊपरी 'झाड़-झपड़','पान-सुपाड़ी' वसूल सकें। इसमें तहसीलदार साहेब क्या कर सकते हैं?..... सिंघ जी को पाँच हजार और सिवसक्कर सिंघ को भी उतना ही लगेगा।... डागडर से भी कुछ पूछा है दारोगा साहेब ने। पता नहीं, अंग्रेजी में क्या डिमडाम बात हुई? इसपी साहेब से भी डागडर साहेब अंग्रेजी में ही बोल रहे थे। आदमी काबिल है यह डागडर!.....हरेक लहास के बारे में क्या लिखा है, जानते हो? लिखा है कि संथालों की मार से मालूम

होता है और घाव के मुँह देख कर मालूम होता है कि किसी ने अपनी जान बचाने के लिए ही इस पर हमला किया है।···और, इधरवालों का लहास को लिखा·····।"

"लहास ?"

—लहास। लाश !!···पुलिस-दारोगा, मलेटरी ! मार ! जेहल !!··· कालापानी ? नहीं, फाँसी ?···सचमुच ! यदि तहसीलदार बिश्नाथ प्रसाद नहीं होते तो आज—फाँसी।···कालीचरन के आफिस में जाने से और बातों का पता लग जायेगा।·····

सोशलिस्ट पार्टी आफिस में भीड़ लगी हुई है।···कालीचरन ने कहा है, आज सुराजी, सोशलिस्ट और भगवान कीर्तन एक साथ गाये जायेंगे। ···सबसे पहले पुराने जमाने का कीर्तन नारदी-भठियाली कीर्तन होगा। ···बूढ़े लोगों के गले में अब भी जादू है।—

"आजु से बिराजू श्याम कदली के छैयाँ,

"आवत मोहन लाल बंशी बजैयाँ !···

"पीतबसन मकराकृत कुन्डल····· ।"

यही नारदी है ! मृदंग कैसा बजता है—धिधनक-तिधनक ! धिधनक-तिधनक !!·····

"अब किरान्ती कीर्तन।···गंगा रे जमुनवाँ' बहुत पुराना हो गया। यह स्लाने वाला कीर्तन मत गवाइये कालीचरन जी !···"

"बम फोड़ दिया फटाक से मस्ताना भगत सिंघ।"

—हैं ! वाह रे सुनरा ! क्या संभाला है।···वाह ! भारथ का बीर लड़ाका था, मस्ताना भगत सिंघ !···सिंघ ? भगत सिंघ कौन जात था ? ···मस्ताना भगत सिंघ। जानते हो ?···कालीचरन जी कहते थे—पाँच बार फाँसी की रस्सी खींचा। दस-दस आदमी एक-एक ओर लटक गये। खींचने लगे—खींचते रहे और उधर भगत सिंघ के मुँह से निकलता जाता था—इनकिलास, जिन्दाबाघ।

"इनकिलाब, जिन्दाबाद !!"

जै ! जै !·····

—हाँ। आज कौन इतने जोरों से लारा लगा रहा है ? सोमा जट ? ·····अरेबाप ! तीन दिन से एकदम लापता था। एकदम लापता ! लेकिन जानते हो ? हँसेरी में सबसे ज्यादे मार किसने किया था ?···चार को सोमा ने अकेले गिराया है।·····हाँ, खबरदार ! तहसीलदार साहेब ने मना किया है, सोमा का नाम कोई नहीं ले।·····दागी है। लेकिन—देखते हैं—इधर सुधर रहा है ? कालीचरन जी सुधार देंगे।·····

अब एक सुराजी कीर्तन होना चाहिये। हाँ, भाई !···सब संतन की जै बोलो !···गाँव के देवताओं के परताप से, काली माय की कृपा से, महत्मा जी की दया से और किरान्ती···इनक्लिास जिन्दाबाघ से गाँव के लोग बाल-बाल बच गये। सभी कीर्तन होना चाहिये !

"भारत का डंका लंका में
"बजवाया बीर जमाहिर ने।"

राजबल्ली महतो भी 'हरमुनियाँ' बजाता है ? कहाँ सीखा ?···सिरिफ दाँत बड़े हैं सामने वाले। गाने के समय मुँह कुदाली की तरह हो जाता है।···भारथ का डंका लंका में बजवाया बीर जमाहिर ने !·····

···बालदेव जी कहाँ हैं ?—सुना कि बालदेव जी साधू हो रहे हैं। कंठी ले ली है, कंठी पर किसका नाम जाप करेंगे ? महत्मा जी का या सतगुरु का ?·····

चर्खा स्कूल की मास्टरनी जी कितना मुटा गई हैं ! अरे बाप !··· सिरिफ कालीचरन जी से ही हँस कर बोलती हैं। कालीचरन जी आज कुर्ता में गोल—क्या लगाये हुये हैं ? सुसलिट पाटी का मोहर है ?···देखो··· कालीचरन जी मोहर वाले लीडर हो गये हैं। बालदेव जी को, बावनदास को या तहसीलदार साहब को मोहर है ? मास्टरनी जी उसमें क्या लगा रही हैं ? फूल ? वाह ! अब और बना ! फूलमोहर छाप सिकरेट !··· ···डाक्टर साहब का नौकर कहाँ आया है !···ऐ ! चुप रहो ! चुप रहो !!

शांती, शांती।.....

"कालीचरन जी को डाक्टर बाबू बुलाते हैं।"—प्यारू मंगला देवी से कहता है।

"अ...ज्जा!...काली? डाक्टर बाबू को निमंत्रण नहीं दिया? तहसीलदार साहेब, खेलावन जी वगैरह तो कचहरी गये हैं। डाक्टर साहेब तो थे।...जाओ, बुला रहे हैं।"

क्या बात है?.....जरूर कोई बात है।.....सुमरित दास बेतार कहाँ है?

एक बार बोलिये प्रेम से...
कालीमाई की जै!
महत्मा गाँधी की जै!
सोसलिट पाटी की जै!!
इनकिलास..... !!

"कालीचरन जी।"

"जी।"

"एक बात कहें! बुरा मत मानियेगा।...हरगौरी बाबू की माँ रो रही है और दूसरे टोले में भी औरतें रो रही है। आप लोग कीर्तन कर रहे हैं? यह अच्छा नहीं लग रहा है। मुझे लगता है कि आज के कीर्तन से आपके भगवान भी दुखी होंगे।"

"हमलोग 'भगमान' को नहीं मानते।"—कॉमरेड बासुदेव ने बीच में ही टोक दिया।

"तुम चुप रहो!"—कालीचरन कहता है—"हर जगह मत टपका करो।"

सब चुप हैं। हरगौरी की माँ अब भी रो रही है—"राजा बेटा रे! गौरी बेटा रे...।"

कालीचरन की भी आँखें सजल हो जाती हैं। बचपन से ही वह हरगौरी के साथ खेला-कूदा था। पूँजीबाद हो या 'बुर्जुआ,' आखिर वह

बचपन का साथी था। वह आज नहीं है। उसकी माँ रो रही है। यह हरगौरी की माँ नहीं रो रही है—सिर्फ़ 'माँ' रो रही है!

"बासुदेव!"

"……।"

"सबों से जाकर कहो—कीर्तन बंद करें।…और कोठी के बगीचे में कल 'सोक सभा' होगी।…एलान कर दो।। समझे?"

बासुदेव सोचता है, सब बात तो समझे, मगर सोक सभा का क्या मतलब? उसमें गीत नहीं गावेगा, भाखन नहीं होगा?…बस पाँच मिनिट चुपचाप खड़ा रहना होगा!…वाह रे सभा!

—बयालीस

हरगौरी की माँ रो रही है—"राजा बेटा रे!…गौरी बेटा रे!" हरगौरी की सोलह साल की स्त्री बिना गौना के ही आई है—वह बहुत धीरे-धीरे रोती है। घूँघट के नीचे, उसकी आँखें हमेशा बरसती रहती हैं।

शिवशंकर सिंघ पुर्णिया से लौट आये हैं। पुत्र का 'दाहकर्म' करके लौटे हुये पिता को देख कर डर लगता है। झुकी कमर पर हाथ रखे शिवशंकर सिंह बैलों की ओर देख रहे हैं। दो दिनों से घास पानी छोड़े बैठे हैं दोनो बैल।…आँखों में आँसू भर-भर कर, दोनो कभी-कभी चौकन्ना होकर इधर-उधर देखते हैं। फिर एक लम्बी साँस लेकर एक दूसरे को देखते हैं? एक दूसरे को जीभ से चाटते हैं, मानो ढाइस बँधा रहे हों।…हरगौरी इन्हें कितना प्यार करता था। जब ये दो साल के 'बाछे' थे तभी से हरगौरी इनके साथ खेलता था। उसकी बोली सुनते ही दोनो खुशी से नाचने लगते थे। जान से भी बढ़ कर प्यार करता था वह…।

शिवशंकर सिंघ की आँखें आँसू से धुँधली हो रही हैं।…जब तक हरगौरी की लाश नहीं मिली थी, उन्हें अपने गिरफ़्तार होने का डर लगा

हुआ था। दाहक्रिया समाप्त करके 'वोकील साहेब' के बासा पर लौटते समय, कप्तान पुल पर जब दारोगा साहब ने रामकिरपाल सिंघ को रोका, तो शिवशङ्कर सिंघ को लगा कि पुल नीचे धँस रहा है। धरती हिल रही है।

दारोगा साहब रामकिरपाल सिंघ को 'गिरिफ्फ' करके उधर ले गये और शिवशङ्कर सिंघ अपने साथियों के साथ वहीं से लौट गये। 'टीसन' तक दौड़ते ही आये थे। न जाने दारोगा साहब के मन में कब क्या हो? .....भाग की बात हुई कि बिरजू सिंघ फिसल कर गिर गये और गाड़ी खड़ी हो गई—नहीं तो शिवशङ्कर सिंघ वहीं 'लाटफारम' पर खड़े ही रह जाते। सबों ने तो कूद-कूद कर 'हथ्था' पकड़ लिया, सिंघ जी ने ज्यों ही एक 'हथ्था' में हाथ लगाया कि एक काले कोट वाले ने पकड़ कर खींच लिया। 'सिकन्नर' के पास जाते-जाते बिरजू सिंघ गिर गये तो गाड़ी खड़ी हो गई। बेचारे बिरजू सिंघ का एक हाथ कट गया है। 'गाट बाबू' उसको कटिहार 'इसपिताल' ले गये। जब तक घर नहीं पहुँच गये थे, शिवशङ्कर सिंघ को भरोसा नहीं था। क्या जाने किधर से लाल पगड़ी वाला निकल पड़े! हसलगाँव हाट के पास एक लाल चादर वाले को देख कर उनका कलेजा 'धुकधुका' उठा था।...भले आदमी ने लाल चादर की पगड़ी क्यों बाँध ली थी?

घर आते ही हरगौरी की माँ को छाती पीटते और जमीन पर लोट कर रोते देखा तो वे भी बच्चों की तरह बिलख-बिलख रोने लगे। 'पुबरिया घर' के ओसारे पर हरगौरी की विधवा बहू घूँघट काढ़े रो रही थी। ...सामने दीवार पर हरगौरी का फोटो टँगा हुआ है। रौतहट मेला में छपाया था—पगड़ी बाँधकर, हाथ में तलवार लेकर!

"बेटा रे! गौरी बेटा रे!"

शिवशङ्कर सिंघ बैल की गर्दन पकड़ कर रो रहे हैं—"बेटा रे! गौरी बेटा रे!!"

सुमरित दास के कान में सब से पहले आवाज पहुँचती है—"...ओ!

शिवशङ्कर सिंघ आ गये सायद !"

"शिवशङ्कर बाबू ! रोइये मत ! देखिये, कलेजा 'पोख्ता' कीजिये। ···आप ही इतना जी छोटा कीजियेगा तो औरतों का क्या हाल होगा ? हे···!···हरगौरी की माँ मर जायेगी। उसको समझाइये सिंघ जी ! रोइये मत !"···सुमरित दास शिवशङ्कर सिंघ को 'अकबार'[१] में पकड़ कर ले आते हैं। समझाते हैं तथा आसपास खड़े लोगों से कहते हैं—"भाई ! क्या समझाया जाये, किसको समझा जाये ? 'पुत्रसोक' से बढ़कर और कोई 'सोक' क्या हो सकता है ? हम क्या समझावेंगे ? हम को तो···खुद भोगा हुआ है। एक-एक कर चार 'लाल' को कमला किनारे अपने हाथ से जला आये हैं। कलेजा 'पत्थल' हो गया है। पुत्रसोक ? हे भगवान ! किसी को न हो।"

शिवशङ्कर सिंघ और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगते हैं ! धीरे-धीरे भीड़ बढ़ती जाती है। सभी आकर यही जानना चाहते हैं कि और आगे क्या हुआ ?···हरगौरी की मृत्यु से ज़्यादा दिल दहलाने वाली बात थी—राम-किरपाल सिंघ की गिरफ़्तारी !···क्यों गिरफ़्तार किया ? कैसे गिरफ़्तार हुआ ? और किन लोगों पर 'उवारन्ट' है ? तहसीलदार विश्वनाथ पर भी ? "···तहसीलदार साहेब आ रहे हैं। मोढ़ा दो रे !"

तहसीलदार को देखते ही शिवशङ्कर सिंघ फिर धरती पर लोट गये और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे—"बिस्नाथ भैया ! कलेजा टूक-टूक हो रहा है। भैया हो।···कलेजा···।"

तहसीलदार साहब समझाते हैं—"शिवशङ्कर सिंह ! रोइये मत। यह रोना तो ज़िन्दगी भर के लिए मिला है। एक दिन रोने से दिल ठंडा नहीं होगा। लेकिन, अभी रोने का समय नहीं। मालूम होता है, मुक़दमा ख़राब हो गया। सिंघ जी के गिरफ़्तार होने का मतलब ही है कि मुक़दमा ख़राब हो गया। अब किसके सिर पर कौन आफ़त है, कौन जाने ? ख़ूनी केस है ! उठिये, आप से 'प्राइविट' में एक बात करना है।"

शिवशङ्कर सिंघ तुरत उठ कर खड़े हो गये और तहसीलदार साहब के

साथ दरवाज़े से ज़रा दूर चले गये। सुमरित दास भी 'प्राइवेट' सुनेगा ? ···तब ठीक है, असल बात का पता अभी तुरत लग जायेगा।

दरवाज़े पर खड़े सभी एक ही साथ लम्बी साँस छोड़ते हैं—'अब किसके सिर पर क्या आफत है, कौन जाने ! हे भगवान !!'

"परनाम जोतखी काका !"

जोतखी काका के साथ खेलावन भी आया है। जोतखी जी पास के खाली मोढ़े पर बैठ जाते हैं। खेलावन भी तहसीलदार साहब के 'प्राइवेट' में जाकर शरीक हो जाता है। जोतखी जी धीमा आवाज़ में लोगों से कहते हैं—"तुमलोग यहाँ खड़े होकर क्या कर रहे हो ?" उनके कहने का ढंग ही ऐसा था, जिसके माने निकलते थे—'तुम लोगों की जान 'बलाई' हुई है क्या ? यहाँ से, जितना जल्दी होसके, खिसक जाओ ! वर्ना क्या ठिकाना···?'

सब जल्दी से मौक़ा देख कर उठ खड़े होते हैं। जोतखी जी कहते हैं—"यहीं चले आइये तहसीलदार ! सभी चले गये।"

"···लेकिन बात यह है कि 'एसपी' ने तो यह 'नोत्स' पकड़ा है—तहसीलदार विश्वनाथ की ज़मीन का बीहन बचाने के लिए तहसीलदार हरगौरी क्यों गया था ?"—तहसीलदार साहब कहते हैं।

"रामकिरपाल भैया तो हैं नहीं। हम आपको क्या कहें ?···लेकिन मोकदमा तो आपका ही है। बाजिबन खर्चा तो···आपको ही देना चाहिये।"—शिवशक्कर सिंघ गिड़गिड़ा कर कहते हैं।

जोतखी जी कुछ कहने के लिए खखनते हैं, लेकिन सुमरित दास 'बेतार' बीच में ही जवाब दे देता है—"शिव-शक्कर सिंघ ! मोकदमा तहसीलदार विश्वनाथ का नहीं, तहसीलदार हरगौरी का है। पूछिये कैसे ? तो बात यह है कि असल में यह सब 'खुरखार', बेदखली-नीलामी तो हरगौरी बाबू ने ही सुरू किया था।···हमसे ज्यादे कौन जानेगा ?··· तहसीलदारी 'कारबार' को आप क्या समझियेगा ? यदि बेदखली और नई बंदोबस्ती की बात नहीं उठती तो गाँव में यह 'लंकाकांड' नहीं होता।

पहले तो तहसीलदार हरगौरी ने ही सुरू किया। तहसीलदार बिस्नाथ उनके मदतगार हुये तो इन्हीं की जमीन पर संथालों ने धावा कर दिया। ···अब बताइये कि असल में यह मोकदमा किसका हुआ? असल बात हम जानते हैं·····दारोगा को दस हजार देना ही होगा।"

खेलावन कहता है—"तहसीलदार! अब जैसे भी हो, सब कोई सलाह करके गाँव के इस 'गरह' को टालिये।"

"रामकिरपाल भैया हैं नहीं, हम क्या···कहेंगे?"—शिवशक्कर सिंघ बस यही एक जवाब देते हैं।

बहुत देर के बाद जोतखी जी कहते हैं—"जो भी हो, न्याय बात तो यही है कि बिश्वनाथ बाबू इस मुकदमें में अभी पूरी पैरबी करें।"

अंत में यही तय हुआ कि सबसे पहले रामकिरपाल सिंघ जी को जमानत पर छुड़ाया जाये। इसके बाद, सब मिलकर, जो वाजिब हो, सोचें। जो खर्चा होगा सिंघ जी लोगों को देना होगा।

जोतखी जी ने मुस्कुराते हुये कहा—"आज 'शोशलिष्ट' लोग शोक शभा करने गये। एक भी आदमी शभा में नहीं गया। अब लोग 'शभा' का अर्थ समझ रहे हैं।···हुं···कोई भी बात हो तो 'फुच्च' से शभा! हम कहते थे न, गाँव में एक दिन चील काग उड़ेगा।"

"जोतखी काका! सभा जुलूस को दोख मत दीजिये।"—कालीचरन बगल में, अँधेरे में खड़ा था।

"आओ काली!"—तहसीलदार साहब हँसते हुये कहते हैं—"तुम लोगों को गवाही देनी होगी—सो जानते हो न? बालदेवजी को भी। तुम्ही दोनों 'लीडरों' की गवाही पर सारी बात है।"

कालीचरन ने मोढ़े पर बैठते हुये कहा—"गवाही देनी होगी तो देंगे। जो बात जानते हैं वह कहने में क्या है! दारोगा हो, इसपी हो, चाहे मजिस्टर-कलक्टर हो। सच्ची बात कहने में किसका डर है?"

"वाजिब बात! वाजिब बात!!"—जोतखी जी को छोड़ कर बाक़ी सभी कहते हैं—"बाजिब बात।"

तहसीलदार साहब का नौकर रनजीत दौड़ता हाँफता आता है—"कमली दैया···फिर !"

"तो यहाँ क्या है ? डाक्टर के यहाँ जाओ ।"—तहसीलदार साहब झुँझलाते हुये उठते हैं—"भगवान जाने क्या दवा करते हैं डाक्टर लोग । इतने दिन हो गये—बीमारी सोलह आना से बारह आना भी नहीं हुई !"

···तो असल बात खुल गई ! मामले मुकदमें की सोलहो आने बात 'जो-है-सो' कालीचरन और बालदेव के हाथ में है !

"शिव हो ! शिव हो !!"—जोतखी काका उठते हुये कहते हैं—"कालो बाबू ! कल जरा अपना हाथ दिखाना तो ! देखें, तुम्हारे हाथ की रेखा क्या कहती है । जन्म दिन और महीना याद है ?"

जोतखी जी के पेट में डर समा गया है—कालीचरन और बालदेव के ही हाथ में जब सब कुछ है तो वे जिसका नाम बतला दें, वह 'गिरिफ्फ' हो जायेगा—तुरत । और···कालीचरन, कालीचरन ही क्यों, बालदेव भी उन पर मन ही मन नाराज है ।···बालदेव का तो उतना डर नहीं, मगर कलिया··· शिव हो ! शिव हो !!

(१) बाँहों में भरकर ।

—तैंतालीस

लछमी दासिन आज मन के सभी 'दुआर' को खोल देगी । एक 'लच्छ' दुआर !

"बालदेव जी !"

"जी ।"

"रामदास फिर 'बौरा' गया है । कल भंडारी से कह रहा था—लछमी से कहो, एक दासी रखने की 'आज्ञाँ' दे ।·····कहिये तो भला ?"

बालदेव जी क्या जवाब दें ? दासी रखना 'धरम' के खिलाफ है यह

उनको नहीं मालूम।···दो-तीन महीने ही हुये, उन्होंने 'कंठी' ली है।··· मठ के 'नियम-धरम, नेम-टेम' के बारे में वे क्या कह सकते हैं? लेकिन महंथ सेवादास ने भी तो·····।

लछमी कहती है—"आप उसे समझाइये बालदेव जी! वह बौरा गया है। आजकल ततमा टोली में आना जाना सुरू कर दिया है। भगवान भगत ने कल हिसाब किया है—रमपियरिया की माँ को चार सेर चावल दिलवा दिया है रामदास ने। मैंने पूछा तो बोला—'मठ का पुराना नौकरान है, भूख से मरेंगे वे लोग?'·····जब दिन भर बैठ कर सिरिफ बीजक बाँचने वाला दूध मलाई खाता है तो···।"—लछमी कहते-कहते रुक जाती है।

बालदेव जी आजकल कुछ 'मतिसून्न' हो गये हैं। सीधी बात भी समझ में नहीं आती!···कुछ नहीं समझते हैं।···कितने सीधे-सूधे हैं!

"आपका मठ पर रहना उसको पसन्द नहीं।"—लछमी बालदेव की ओर देखती है।

"तो हम चले जाते हैं। यदि हमारे रहने से मठ का नियम भंग होता है तो हम चले जाते हैं।"

"कहाँ जाइयेगा?"

"चन्नपट्टी।"

लछमी का कलेजा धड़क उठता है। धक्···! इधर कई दिनों से बालदेव जी बहुत उदास रहते हैं खाना-पीना भी कम हो गया है। कहीं घूमने फिरने भी नहीं जाते। आसन पर पड़े बीजक पाठ करते रहते हैं।··· तहसीलदार साहब कह गये हैं-'बालदेव की गवाही पर ही मुकदमें की सारी बात है।'···बालदेव जी सुन कर बोले—गवाही के लिये हम 'कठघरा' में नहीं चढ़ सकते। महतमा जी कहिन हैं—'झगड़ू न जाहू कचहरिया, बेइमनमाँ के ठाठ जहाँ।'···आज मठ सूना है, आज ही लछमी सब कुछ कह देगी बालदेव जी से।

"आप चन्नपट्टी चले जाइयेगा···और···मैं?"

"आप ?"

लछमी बालदेव की आँखों में आँखें डाल कर देखती है। लछमी जब-जब इस तरह देखती है, बालदेव न जाने कहाँ खो जाता है !···एक मनोहर सुगन्ध हवा में फैल जाती है। पवित्र सुगंध ! बीजक मे जैसी 'सुगन्धी' निकलती है।

"हाँ ! मैं कहाँ जाऊँगी ? मेरा क्या होगा ? महंथ की दासी बन कर ही मैं मठ पर रह सकती हूँ।"—लछमी की आँखें भर आती हैं।

"नहीं लछमी ! तुम·····रामदास की दासी नहीं। मैं···तुम····· आप।"

"बालदेव जी !"—लछमी पगली की तरह बालदेव जी से लिपट जाती है—"रच्छा करो बालदेव !···तुम कह दो एक बार—तुम्हें रामदास की दासी नहीं बनने दूँगा !···तुम बोलो—चन्ननपट्टी नहीं जाऊँगा।···मुझे छोड़ कर मत जाओ बालदेव। दुहाई !"

"लछमी !"—बालदेव जी लछमी को सम्भालते हुये कहते हैं—"कोई देख लेगा।"

लछमी बालदेव जी के गले से हाथ छुड़ा कर अलग बैठ जाती है। सिर नीचा करके सिसकती है।

बालदेव का सारा देह 'झन्न-झन्न' कर रहा है। कनपट्टी के पास, लगता है तपाये हुये नमक की पोटली है।·····एक बार 'आसरम' में उसके कान में दर्द हुआ था। गंगुली जी ने नमक की पोटली से सेंकने के लिए कहा था।···कलेजा धड़-धड़ कर रहा है। लछमी की बाँह ठीक बालदेव के नाक से सट गई थी। लछमी के रोम-रोम से पवित्र सुगन्धी निकलती है। चंदन की तरह मनोहर···शीतल गंध निकल रही है। बालदेव का मन इस सुगन्ध में 'हेलडूब'[1] कर रहा है।···वह लछमी को छोड़कर चन्ननपट्टी में कैसे रह सकेगा ?···रूपमती, माय जी, लछमी !!

"महतमा जी के पंथ को मत छोड़िये बालदेव जी ! महतमा जी अवतारी पुरुख हैं। आजकल उदास क्यों रहते हैं ?···महतमा जी पर

भरोसा रखिये।···जिस नैन से महतमा जी का 'दरसन' किया है उसमें पाप को मत 'पैसने' दीजिये। जिस कान से महतमा जी के उपदेस को 'सरबन' किया है उसमें माया की मीठी बोली को मत जाने दीजिये। महतमा जी सतगुरु के 'भगत' हैं।"—लछमी आँखें मूंद कर ध्यान की आसनी पर बैठी है। सुफ़ेद मलमल की साड़ी पर बिखरे हुये लम्बे-लम्बे, काले बाल!···और गोरा मुखमंडल! 'ध्यान-आसन' पर इस तरह बैठ कर उपदेश देनेवाली यह लछमी कोई और है!···बालदेव जी के हाथ स्वयं ही जुड़ जाते हैं।

लछमी की पवित्र आत्मा की वाणी फिर मुखरित होती है—"दुनिया के दोखगुन को देखने के पहले अपनी काया की ओर नीहारो! मन मैला तन सूथरो, उलटी जग की रीत!···पहले मन को साफ करो। मन पवित्र नहीं, इसलिए वह दुखी होता है, निरास होता है।··· तुम पंथ पर उदास होकर क्यों बैठ रहे हो? क्यों?···डरते क्यों हो?—

"चलते चलते पगु थका
"नगर रहा नौ कोस,
"बीचहिं में डेरा परा
"कहहु कौन का दोख।"

बालदेव को लगता है, खुद भारथमाता बोल रही है। यही रूप है!···ठीक यही रूप है जिनके पैर खून से लथपथ हैं। जिनके बाल बिखरे हुये हैं।···बावन दास कहता था, भारथमाता जार बेजार रो रही है। नहीं, माँ रो नहीं रही। अब 'पंथ' बता रही है। उचित 'पंथ' पर 'अनुचित' करम करने वालों को चेता रही है। बावन दास 'भरम' गया है।···और खुद बालदेव, महतमा जी के पंथ पर निरास और उदास होकर चल रहा है।···

"···भारथमाता की जै! महतमा जी की जै!! भारथमाता····· भारथमाता!!"

महंथ रामदास बहुत देर से कनैल गाछ की आड़ में खड़े होकर देख-

सुन रहे थे।···'धयान-आसन' पर बैठी हुई लछमी उपदेश दे रही है और बालदेव जी हाथ जोड़े 'एक टक' से लछमी को देख रहे हैं।···अचानक, बालदेव जी लछमी के 'चरन' पकड़ कर हल्ला करने लगे—"भारथमाता की जै।"

"भंडारी! भंडारी!!"—महंथ रामदास पिछवाड़े की ओर भागते हुये चिल्लाते हैं—"भंडारी! बालदेव पगला गया! दौड़ो!"

मठ पर तुरत भीड़ लग गई। डाक्टर साहब, तहसीलदार साहब, कालीचरन और खेलावन सिंह यादव भी आये हैं। बालदेव की बूढ़ी मौसी बीच-बीच में गा-गाकर रोने को 'सुरखुर'[२] करती है, किन्तु एक ही साथ इतने लोग डाँट देते हैं कि वह चुप हो जाती है और बारी-बारी से सबों के मुँह की ओर देखती है। कुछ देर के बाद ही वह फिर शुरू करती है—"बाबू रे!···"

"ए बूढ़ी! ठहर!!···चुप।"

डाक्टर साहब बालदेव के बाँह में 'रबर की पट्टी' बाँधकर, मुट्ठी से एक छोटे से गेंद को दबाते हैं।···ओ! इसी 'मीसीन' से तो तहसीलदार की बेटी कमली का भी जाँच होता है! ओ!!

बालदेव जी रह-रह कर बाँहें ऐंठ कर, हाथ छुड़ा कर उठ खड़े होते हैं—"आप लोग क्या समझते हैं? मैं पागल हो गया हूँ? कभी नहीं—'हरगिस' नहीं।···हम को पागल कहते हैं? इस गाँव में क्या था? कोई जानता भी था इस गाँव का नाम? इसको 'हौल इन्डिया' में मसहूर कौन किया? हमको छोड़ दीजिये!···हम महतमा जी के पंथ से नहीं हँट सकते।"

भीड़ में कोई कहता है—"मठ पर रहने से गाँजा पीने की आदत लग ही जाती है।"

"कौन कहता है हम गाँजा पीते हैं? दारू-गाँजा-भाँग की दुकान में 'पिकेटिन' किया है हम, और हम गाँजा पीयेंगे? छिः छिः!! हम महतमा जी के पंथ को कभी छोड़ नहीं सकते। 'साच्छी' हैं महतमा जी!"

बालदेव की बुढ़िया मौसी अब नहीं मानती, वह गा-गाकर रोती है —"डागडर ने तहसीलदार की बेटी कमली की बेमारी को उतार कर बालदेव पर चढ़ा दिया है ।···यह भले आदमी का काम नहीं ।··· तहसीलदार की बेटी अभी तक कुमारी है ।···हे भगवान ! अब बालदेव का 'बिहा' नहीं होगा ! दैबा रे दैबा !!"

"बालदेव जी !"—लछमी कहती है—"चित्त को सान्त कीजिये ।"

"ओ ! लछमी !···लछमी दासिन ! साहेब बंदगी !···ठीक है, कोई बात नहीं ।···हम पर कभी-कभी महतमा जी का 'भर'[3] होता है । चुन्नी गुसाईं को तो रोज भोर को होता है ।"—बालदेव जी चुपचाप बैठ जाते हैं ।

"डाक्टर साहेब ! बालदेव जी इधर कई दिनों से बहुत उदास रहा करते थे । रात में नींद···पता नहीं, आती थी या नहीं । एक सप्ताह पहले, एक दिन बोखार लगा था । बोखार की 'पीली गोली' एक ही साथ सात ठो खा गये ।"

"पीली गोली ? सातों एक ही बार ?"—डाक्टर आश्चर्य से पूछता है ।

"जी । बोखार की पीली गोली बाँटने के लिए मिली थी न ! उसी में से सात ठो एक ही बार खा गये । बोले कि रोज कौन खाये ! एक ही साथ सात दिनों का खोराक ले लेते हैं !"

डाक्टर ठठा कर हँस पड़ता है—"कितना बढ़िया हिसाब है ।··· बालदेव जी । दस दिनों तक घोल का शर्बत पीजिये ।···ठीक हो जायेगा । कुछ नहीं है, दवा की गर्मी ही है ।"

रामकिरपाल सिंह कहते हैं—"बिहदाना, अनार, संतोला का रस तो ठंढ़ा होता है, गरमी को सान्ती करेगा ।···जेहल में हम सिरिफ बिहदाना संतोला खाकर रहते थे । दो बिहदाना मेरे पास अभी भी है ।"

बालदेव और कालीचरन के बयान पर ही सब कुछ है—जिसको चाहे फँसा दे, चाहे बचा दे । खुद दरोगा साहेब कहते थे कि बालदेव की

गवाही की बहुत कीमत है।

खेलावन सिंह यादव आजकल कालीचरन का 'आगा-पीछा' खूब करते हैं।···पाटी ऑफिस के बगल में एक 'चौखड़ा'[४] घर बनवा देंगे, सुनते हैं। 'साथी निवास' घर! जैसा घर जिला पाटी ऑफिस में है। मिटिंग के दिन जितने साथी आते हैं उसी घर में रहते हैं। जो सिकरेटरी होगा, वह ऑफिस घर में रहेगा।···कालीचरन ने खेलावन सिंह से कहा तो वे तुरत तैयार हो गये।

जोतखी काका ने कालीचरन का हाथ देखा है—"खूब नच्छत्तरबली है कालीचरन। राजशभा में 'जश' है। बेटा-बेटी भी है। धन भी है। मगर एक 'गरह' बड़ा 'जब्बड़' है·····।"

सिंघ जी बालदेव जी को 'बिहदाना-मंतोला' खाने के लिए मना रहे हैं—"खा लो बालदेव! बड़ा 'पूस्टीकारी' चीज है। दवा की गरमी दूर हो जायेगी।"

गवाही ने बालदेव जी की खोई हुई कीमत को फिर बहुत 'तेजदर' कर दिया है!

बालदेव जी कहते हैं—"महतमा जी का 'रस्ता' हम कभी छोड़ नहीं सकते।···झगड़ू न जाहू कचहरिया, दललवा के ठाठ जहाँ।"

···लेकिन बालदेव जी को तो कुछ भी नहीं कहना पड़ेगा। उनसे पूछा जायेगा कि यह 'दसखत' आपका ही है? ये कहेंगे कि—हाँ, बस और कुछ कहना ही नहीं है। 'दसखत' तो बालदेव जी ने किया था।···यह तो झूठ बात नहीं। कालीचरन ने भी किया था।

···चाहे जैसे भी हो, बालदेव जी को गवाही के लिए राजी करना ही होगा, नहीं तो सारे गाँव पर आफत है।···कोठारिन लछमी दासिन को तहसीलदार साहेब समझा कर कह दें तो बात बैठ जायेगी।

(१) डूबना-उतराना (२) तैयारी करना (३) देवी-देवता जब किसी पर सवार हो तो उसे 'भर' कहते हैं (४) फूस का बँगला; चौपाल।

—चौआलीस

इधर कुछ दिनों से डाक्टर मौसी के यहाँ ज़्यादा देर तक बैठने लगा है। मौसी के यहाँ जब तक रहता है, ऐसा लगता है मानो वह वह शीतल छाया के नीचे हो।···काम में जी नहीं लगता है। ऐसा लगता है, उसका सारा उत्साह 'स्पिरिट' की तरह उड़ गया। क्या होगा मानव कल्याण करके ?···मान लिया कि उसने काला-आज़ार की एक रामबाण औषधि का अनुसंधान कर लिया। अमृत की एक छोटी शीशी उसे हाथ लग गई, किन्तु इसके बाद?···इसके बाद जो होता आया है, होगा। आखिर, पाँच आने का एक 'ऐम्पुल' पचास रुपये तक बिकेगा !···यहाँ तक उसकी पहुँच नहीं होगी !···और यहाँ का आदमी जी कर करेगा क्या ? ऐसी ज़िन्दगी ? पशु से भी सीधे हैं ये इन्सान। पशु से भी ज़्यादा ख़ूँख़ार हैं ये···।···पेट ! यही इनकी बड़ी कमज़ोरी है।···मौजूदा सामाजिक न्यायविधान ने इन्हें अपने सैकड़ों बाज़ुओं में जकड़ कर ऐसा लाचार कर रखा है कि ये चूँ तक नहीं कर सकते।···फिर भी ये जीना चाहते हैं।··· वह इन्हें बचाना चाहता है। क्या होगा ?

मौसी कहती है—"बेटा ! तुम 'भागवत गीता' नहीं पढ़ते ?

डाक्टर मौसी की ओर 'अकचका' कर देखता है ?···जेल में उसने 'गीता-रहस्य' पढ़ने की चेष्टा की थी।···ममता भी हमेशा 'गीता' तथा 'राम-कृष्ण कथामृत' झोली में लिए फिरती है। शायद, समझती भी हो।···ममता ने कई बार कहा है 'फ़ुरसत के समय गीता ज़रूर पढ़ो··· नहीं समझो—कुछ ढुँढो। कुछ-न-कुछ ज़रूर मिलेगा।'···वह गीता पढ़ेगा !

"डाक्टर साहेब। जय हिंद !!"

"आओ कालीचरन ! क्या हाल है ?···तुम भी पूर्णिया गये थे न ?"

"जी। अभी तुरत···आ ही रहा हूँ।···उम्मेद है, गाँव के सभी लोग छुट जायेंगे। हमलोगों को तो सत्तो बाबू वोकील ने 'जिरह' में बहुत

तोड़ना चाहा । मगर उनको भी मालूम हो गया । बालदेव जी की बात हम नहीं जानते, लेकिन सुना है वह भी खूब डट कर, जबाब दीहिन हैं । ···हमसे कहा कि आप पढ़ना लिखना नहीं जानते, आप 'दसखत' करना नहीं जानते । मैंने कहा, मैं पढ़ना लिखना भी जानता हूँ और 'दसखत' करना भी जानता हूँ । दारोगा साहेब के सामने भी 'दसखत' किया था आप कहिये तो आप को भी दिखा दूँ ।···हाकिम ने कहा कि आप अपना दसखत 'चिन्हिये' । हमको भी क्या चसमा की जरूरत है ? फटाक से चिन्हिये तो दिया !"

"लेकिन जिस कागज पर तुमलोगों ने दस्तखत किया था उसमें क्या लिखा हुआ था ?"—डाक्टर पूछता है ।

"क्या लिखा हुआ था ?···सो तो···सो···तो···नहीं पढ़ा । दारोगा साहेब ने तो अंगरेजी में लिखा था ।···सरकारी कागज पर कोई 'खिलाफ बात' थोड़ो लिखेगा ?"

"हो-हो-हो-हो- ।"—डाक्टर ठठा कर हँस पड़ता है—"और बालदेव जी ने भी वही कहा होगा ?"

"हाँ, लेकिन इसमें हँसने की क्या बात है ?"—कालीचरन जरा रूखा होकर कहता है ।

"हाँ भाई, हँसने की बात नहीं ।···बात रोने की है कालीचारन ! ···मुझे तो कुछ बोलना नहीं चाहिये···लेकिन !···मत समझना कि संथालों की जमीन छुड़ा कर ही जमींदार संतोष कर लेगा । अब गाँव के किसानों की बारी आवेगी । और तुमको तथा बालदेव जी को ही उन्होंने अपना पहला हथियार बना कर इस्तेमाल किया है । यह रोने की बात नहीं ?"—डाक्टर एक ही साँस में सब कह गया ।

"लेकिन···लेकिन, आपने भी तो लिख दिया है कि संथालों की मार को देख कर पता चलता है कि किसी ने अपनी जान बचाने के लिए इन पर हमला किया है ?"—कालीचरन तमतमा गया है ।

"यह किसने कहा तुमसे ?"—डाक्टर आश्चर्य से मुँह फाड़ते हुये

कहता है—"ऐसा भी कहीं लिखा जाता है ?···मैंने तो सिर्फ़ ज़ख़्म के बारे में लिखा है। संथाल अथवा ग़ैर-संथाल मैं नहीं जानता। मैं तो रोग और घावों की जाति के बारे में ही जानता हूँ" —डाक्टर उत्तेजित होकर कहता ही जाता है—"काली। तुमलोगों ने अच्छा नहीं किया। लेकिन, तुमलोगों को दोष भी तो नहीं दे सकता हूँ।"

"तहसीलदार साहेब तो आपको खूब मानते हैं।"—कालीचरन सीधी बात करना जानता है—"कमली दीदी···कमली दीदी !!"

"क्या मतलब ?"—डाक्टर बीच में ही टोक देता है।

मौसी कहती है—"क्या कहना चाहता है ?···कमली दीदी खूब मानती है। उसकी माँ भी इज्जत-खातिर करती हैं।···यही न ?"

"हाँ।"—कालीचरन को मानो सहारा मिलता है।

"तो क्या हुआ ? तहसीलदार साहब गाँव के रईस हैं। मुझसे उम्र में बड़े हैं। कमला की बीमारी के चलते मुझे कुछ ज़्यादा आना-जाना पड़ता है। वे मुझे बहुत प्यार करते हैं। मैं भी उनलोगों की इज़्ज़त करता हूँ। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मैं तहसीलदार साहब के अन्याय का भी समर्थन करूँगा···अथवा पक्ष लूँगा ?"

कमला बहुत देर तक मौसी के आँगन में खड़ी होकर सुन रही थी।

डाक्टर की अंतिम बातों को सुन कर उसका कलेजा 'धक्-धक्' करने लगता है। वह अपने को संभाल नहीं सकती है। उस पर घटनाओं की प्रतिक्रिया बड़ी तीव्र गति से होती है। नाटकीय ढंग से वह प्रवेश करती है—

"इसीलिए आप आजकल मेरे यहाँ नहीं आते ?···इसीलिए आपने उस दिन कहला भेजा था कि तहसीलदार साहब कमली को पटना ले जायें, यहाँ इलाज नहीं होगा। क्यों ?

सभी एक ही साथ चमक उठते हैं। मौसी हँस कर कहती है—"तू आज लड़ने के लिए कमर कस कर आई है ? पगली !···बैठ।"

डाक्टर कमला की ओर टकटकी लगा कर देख रहा है—चेहरा लाल हो गया है कमला का। आँखें डबडबाई हुई हैं। गले के पास की रग

तीव्र गति से फड़क रही है।···डाक्टर ने बहुत बड़ा अन्याय किया है। रक्त का दबाव जरूर बढ़ गया होगा।···कमला के ओंठ फड़क रहे हैं, थर-थरा रहे हैं···! वह रो पड़ती है—"मौसी!"

"कमला!"—डाक्टर जोर से कहता है—"तुमने तो कुछ समझा-बूझा नहीं और लगीं आकर बरसने। मैं तो कालीचरन को समझा रहा था कि यदि मैं किसी राजनीतिक पार्टी में होता तो ऐसा नहीं करता···।"

डाक्टर ने वातावरण को हल्का बनाने की पूरी कोशिश की।··· लेकिन, अच्छा होता यदि कमला उससे रूठी रहती। इसी दिन के इन्तिजार में वह था। आज कमला को पूर्ण स्वस्थ बनाया जा सकता था। लेकिन अब वह चूक गया।···अब परिणाम के लिए तैयार रहना है।···

जब तक डाक्टर बोलता रहा कमली चुपचाप सुनती रही। अचानक उसके सुखमंडल पर छाये हुए बादल फट गये। एक हल्की मुस्कुराहट उसके ओठों पर धीरे-धीरे जगने लगी, नाक के बगल की नीली रेखा धीरे-धीरे खिल रही है। मानो कमल की पंखड़ियाँ धीरे-धीरे खुल रही हों!

मौसी चुपचाप कभी कमला की ओर, कभी डाक्टर की ओर देखती है। उसके ओठों पर भी मंद मुस्कुराहट खिंची हुई है।

"प्यारू मेरे यहाँ दो बार खोज गया है।···शायद आज भी कोई खरगोश भाग गया है।"—कमली मौन भंग करती है। उसकी बोली सहज हो गई है।

कालीचरन, कमला के चेहरे पर कुछ देख कर चमक उठता है।··· उससे बातें करते-करते, कभी-कभी मंगला के चेहरे पर भी ऐसे ही भाव आ जाते है।···इसी तरह 'तुनुक-तुनुक' कर बोलती है। वह डाक्टर की ओर देखता है, फिर उठ खड़ा होता है—"अच्छा तो बैठिये डाक्टर साहब! हम अभी चलते हैं।···फिर कल भेंट करेंगे।"

मौसी भी उठ कर जाते हुये कहती है—"तुमलोग चाय तो जरूर पीयोगे?"

···कुछ देर तक दोनों चुप रहते हैं।···कमला पास में पड़ी सीकी की बनी हुई एक 'फूलडलिया' को उठा कर उसकी 'बिनावट' देखने लगती है। डाक्टर मुस्कुराते हुये पूछता है—"एक बात पूछूँ कमला, बुरा तो न मानोगी ?···अपने बाप की शिकायत कोई नहीं बर्दाश्त कर सकता है। क्यों ?"

"कैसे बरदाश्त कर सकता है कोई ?"—

"मुझे क्या मालूम ? मुझे···मुझ को अपने बाप की याद नहीं।"

कमला मुस्कुराती जाती है। कहती है—"विवाह के गीत में···एक जगह शिवजी पारवती के पिता की टोकरी भर शिकायत करते हैं,—

"एक बेर गेलौं गौरा तोहरो नैहरवा से,
"बइठे ले देलक पुआर,
"कोदो के खिचुड़ी रँधाओल मैना सासू···।"

"हा-हा-हा-हा-!"

"हा-हा-हा-हा।"—दोनों एक ही साथ हँस पड़ते हैं। मानो पंछी का एक जोड़ा, एक ही साथ दिल खोल कर 'किलक' पड़ा हो।···नर और नारी के पवित्र आकर्षण की रूपहली डोरी 'लकपक' कर रही है। नर आगे बढ़ता है···। नारी को खींच लेता है···।

बड़ी-बड़ी, मदभरी आँखों की जोड़ी ने मुस्कुरा कर पूछा—"आप··· मेरी शिकायत बर्दाश्त कर सकते हैं ?"

"रोज़ तो कर रहा हूँ।"—दो लापर्वाह आँखों ने मानो चुटकी ली—"कमली दवा नहीं पीती है। कमली रात में देर तक बैठ कर पढ़ती है।···कमली पगली है।···पगली है कमली।···तू पगली है! तू मेरी पगली है!···पागल-पगली···

"···अधरक मधु जब चाखल कान्ह,
तोहर शपथ हम किछु यदि जानि!"

दूसरा खण्ड

—एक

'सुराज' मिल गया ?

"अभी मिला नहीं है, पंद्रह तारीख को मिलेगा।···ज्यादे दिनों की देर नहीं, अगले 'हफ्ता' में ही मिल जायेगा। 'डिल्ली' में बातचीत हो गई।···हिन्दू लोग हिन्दुस्थान में, मुसलमान लोग 'पाखिस्थान' में चले जायेंगे।"—बावनदास जी फिर एक खबर ले आये हैं। ताजा खबर !

···दफा ४० की 'लोटस' की तरह फिर झूठ-मूठ कोई 'फाहरम' तो नहीं लाया है बावन दास ?···झूठ नहीं, बात सच है। डागडर बाबू के बेतार में भी बोला है, सुनते हैं।

"तहसीलदार साहेब भोज खिलायेंगे उस दिन।"—सुमरित दास बेतार घर-घर खबर फैला रहा है—"सब 'इसमिट'[१] अभी-अभी हम पक्का करके आ रहे हैं। पूड़ी, जिलेबी, हलुआ, दही और चीनी !"

"जै हो ! जै हो !!"

"महतमा गांधी की जै।"

महंथ साहेब के 'भंडारा' से भी बड़ा भोज होगा। तीन 'मेर' नाच होगा। बलवाही, बिदेसिया, कमला और महमदिया की 'नौटंगी' कम्पनी। कालीचरन का 'सुसील कीरतन' भी होगा। पुरैनियाँ से अंग्रेजी बाजा

अरे ! अंग्रेजी बाजा नहीं जानते । रौतहट मेला में 'सरकस' । बजते नहीं सुना है—भेकर-भेकर-भें-भें- !!···धमदाहा-संकरपुर दापद । बँसगड़ा की बलवाही और औराही-हिंगना का 'भठियाली कतै' । सुध 'नारदी'[२] गाते हैं औराही वाले । कोयलू खोलवाहा और सीतानाथ बाबू मुलगैन ! सीतानाथ बाबू का गला 'बुढ़ारी' में भी कितना तेज है !

"मुसलमानों का हिस्सा सुराज 'पाकिस्थान' में चला जायेगा ?··· एकदम काट कर हिस्सा लेगा ?"

"हाँ, जब हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई हैं तो 'भैयारी' हिस्सा तो रकम आठ आना के हिसाब से ही मिलेगा ।"

"बावन दास ने सुराज को काटते देखा है या अंदाज से ही बोल रहा है ?···चलो पूछें ।"

बावनदास कहता है—"अरे सुराज क्या 'कद्दू-कोंहड़ा' है जो काट कर बँटेगा ?"

···"तब सुराजी कीरतन में जो कहा है कि···जब तक फल सुराज नहीं पावें, गाँधी जी चरखा चलावें, मोहन हो ! गाँधी जी चर्खा चलावें"

"कीर्तन की बात छोड़ो ! सुराज माने···"—बावन दास जी समझाते हैं—"सुराज माने अपना राज । भारथबासी का राज । अब अंगरेज लोग यहाँ राज नहीं कर सकते ।···ए अंगरेजो ! भारथ छोड़ो' क्यों कहा था गाँधी जी ने ? इसीलिए ।"

"अपने गाँव का तो राज तहसीलदार साहेब को ही मिलेगा ।····· राज पारबंगा के तहसीलदार हरगौरी तो अब हैं नहीं ।"

बालदेव जी का दिमाग बहुत शांत हो गया है । जिस दिन उन्होंने 'परसाद'[३] उठाया उसी दिन से माथा ठंढा हो गया ।···लछमी तीन-चार दिनों तक 'सतसंग' करती रही । आखिर बालदेव जी हार गये । बालदेव जी अब गृहस्थ नहीं रहे, साधू हो गये ।···'मांछभदरा'[४] करवा कर बालदेव जी का मुँह ठीक 'सोहल पटनियाँ आलू' की तरह हो गया है ।

…साहेब बंदगी बालदेव जी !

"साहेब बंदगी ! जाय हिंद ।"—बालदेव जी आजकल "साहेब बंदगी' और 'जय हिंद' को एक साथ नत्थी करके बोलते हैं ।

"जाय हिंद कौमरेड बालदेव जी ।"—कालीचरन मुट्ठी बाँध कर कहता है—"कौमरेड"

"नहीं । हम कौमरेड नहीं हैं ।"—बालदेव जी ने नाक सिकोड़ते हुये कहा—"हमको कौमरेड क्यों कहते हो ?"

"कौमरेड कोई गाली नहीं बालदेव जी । कौमरेड माने साथी । जो भी देस का काम करे, 'पबलि' का काम करे वह कौमरेड है ।"—कालीचरन हँसते हुये कहता है ।

"तुम नहीं जानते ।"—बालदेव जी चिढ़ कर कहते हैं—"तुम तो आज आये हो, हम 'सन्-तीस' से ही जानते हैं । 'टीक-मोंछ' काट कर मूर्गा का अंडा खिला कर कौमरेड बनाया जाता है । 'कम्फ-जेहल' में कितने लोगों को कौमरेड होते देखा है ।……मोजफ्फरपुर के एक सोसलिट नेता थे । उनका काम ही यही था, लोगों की 'टीक-मोंछ' काटना । जेब में कैंची रखे रहते थे ।…जाति के बाभन थे ।…और हमको कौमरेड का माने सिखाते हो तुम ?"

लगता है बालदेव जी फिर 'सनकेंगे'[५] ।

सबों ने एकमत होकर कहा—"हाँ कालीचरन बाबू ! यह गलती तुमसे हो गई । आज तुम लीडर हो गये हो, खुसी की बात है । लेकिन हो तो तुम बालदेव जी के ही चेला ! तुम मानो या नहीं मानो, बात वाजिब है ।"

कालीचरन लजा जाता है ।…तब उस दिन सिकरेटरी साहेब जो कह रहे थे कि बाप-बेटा दोनो कौमरेड हो सकता है ?…सायद सुनने में ही गलती हो गई । …वह अपनी गलती मान लेता है—"हाँ, 'अभिमन्यू बध' नाटक में अरजुन ने 'दुरनाचारज' के पैर पर फूल का तीर मारा था ।"

वाहरे कालीचरन ! अब बात समझता है !···पहले तो बात समझने के पहले ही लड़ाई कर लेता था ।

बालदेव जी भी हँसते हैं । कहते हैं—"सुराज उतसब के लिए तुमलोगों को पाटी की ओर से क्या हुकुम आया है ?"

"ठीक है । सुराज क्या अकेले काँगरेस को ही मिला है ?"

"सुराज उतसब के दिन रहोगे या नहीं ?"—बालदेव जी पूछते हैं ।

"जरूर ! उस दिन हाथी पर भारथमाता की मुरती बैठा कर जुलूस निकलेगा ।"—कालीचरन गर्व से छाती फुला कर कहता है—"अपने गाँव का जुलूस, कटहा थाना में क्या···'हौल इन्डिया' में 'फस्ट' होगा । मुरती का औडर दे दिया है !"

बालदेव जी की आँखों के सामने भारतमाता के विभिन्न रूप आ रहे हैं—माँ, रूपमती, माय जी और लछमी !

···लछमी को हाथी पर नहीं बैठाया जा सकता है ?···भारतमाता का रूप ? आजकल लछमी भी 'खधड़' पहनती है । चर्खा कातती है ।··· महीन सूत कातना तो वह पहले से ही जानती है ।

जै भारथमाता की ! जै !!

(१) एस्टिमेट । (२) भठियाली कीर्तन, नारदी सुर (३) वैरागी धर्म कबूल करने को परसाद उठाना कहते है । (४) चौर कर्म, (५) पागल होंगे ।

—दो

मुकदमा में भी 'सुराज' मिल गया !

सभी संथालों को 'दामुल हौज'[1] हो गया ।···धूमधाम से 'सेसन' केस चला ।···संथालों की ओर से भी पटना से 'बालिस्टर' आया था । बालिस्टर का खर्चा संथालिनों ने गहना बेच कर दिया था । लेकिन बालिस्टर पर भी बालिस्टर है ! यदि इस मुकदमा में तहसीलदार साहेब जैसे

'कानूनची' आदमी नहीं लगते तो इस 'खूनी-केस' से शिवशङ्कर सिंह, रामकिरपाल सिंह और खेलावन सिंह तो 'हरगिस' नहीं छूटते।···खर्चा? अरे भाई! जान है तो जहान है। जब फाँसी ही हो जाती तो जगह-जमीन, रुपैया-पैसा क्या काम देता?

रामकिरपाल सिंह ने संथाल टोली की नई बन्दोबस्ती वाली जमीन में से दस एकड़ तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद को लिख दी है।···हाँ, सुमरित दास 'बेतार' को भी चार कट्ठा जमीन मिली है।···खेलावन सिंह यादव को भी 'देन' हो गया है।···देन कैसे नहीं होगा भाई, पास में जितना 'कच्चा रुपैया'[२] था वह तो दारोगा साहेब के पान-सुपाड़ी में ही चला गया। पुराना पटुआ हाथ से पहले ही निकल गया था। इसीलिए करीब डेढ़ हजार 'हथफेर पैंचा' हो गया है।···तहसीलदार साहेब ने कहा, कागज बनाने की क्या जरूरत है, जब सन-पटुआ बिके तो दे देना।

'मुकदमा उतसव' भी 'सुराज उतसव' के दिन होगा?···हाँ, सुराज उतसव दिन में, मुकदमा उतसव रात में।

तहसीलदार साहब ने कहा है, महमदिया की नौटंगी कम्पनी जितना में हो, एक सौ, दो सौ, जो ले मगर 'सट्टा' करा लेना।···सुमरित दास कहते हैं— "इसमें कनकसन है, पीछे बतावेंगे।"

सुनते हैं, उधर महमदिया वाले भी पूरी तैयारी कर रहे हैं। 'नखलौ' से 'बाई जी' मँगाया है, चंदा करके। नौटंगी के कंपनी[३] हैं, नितलरैन बाबू। लछमी महारानी ने उनको खूब 'निहारा' है, अपनी आँखों से ही निहारा है।···

इस इलाके के मँझले दर्जे के किसानों के पास यदि थोड़ी पूँजी हो गई, तम्बाकू, धान, पाट और मिर्चा का भाव एक साल चढ़ गया, घर में शादी गमी नहीं हुई तो वह तुरत 'टनमना'[४] जाते हैं। यदि मालिक जवान हो तो तुरत 'औन-पौन'[५] करने लगता है। 'हरमुनियाँ', फर्श, शतरंजी, शामयाना, जाजिम, 'लैट, पंच-लैट', पहड़िया घोड़ा, शम्पनी, टेबुल-कुर्सी, बेंच खरीद कर ढेर लगा देता है। इससे भी जब 'गरमी' कम नहीं होती

है तब 'बन्नूक' (बन्दूक) के 'लैसन' (लाइसेन्स) के लिए आफ़िसरों को डाली देना शुरू करता है।···लाल बाग मेला के समय रात-रात भर मुजरा[६] सुनता है और दिन भर आफ़िसरों के साथ कचहरी में घूमता है। 'बन्नूक' के 'लैसन' के बाद नौटंगी कम्पनी खोलता है। इससे भी 'मगज' ठंढा नहीं होता तो कोई 'खूनी केस' होकर समापत्तन[७]।···महमदिया के नितलरैन बाबू नौटंगी के 'कम्पनी' हैं। तहसीलदार साहब ने कहा है महमदिया की नौटंगी कम्पनी का सट्टा लिखा जाना चाहिये।

"बड़ा भारी कनकमन है जी, इसमें"—सुमरित दास बेतार कबतक पेट में बात रखे—"एकदम प्राइबिट गप है। महमदिया वालों को क्यों बुलाया जा रहा है, समझे नहीं? नौटंगी की बाई जी के 'बिलौज'[८] पर टका साटा जायेगा।···अब समझे कुछ···?"

संथाल लोग इस सुराज उत्सव में नाचेंगे।···कहीं नाचने के समय तीर चला दें ···तब? नहीं, नहीं—डागडर साहेब बोलते थे कि संथालिनें खुद आकर कह गई हैं—'नाचबौ'। तहसीलदार साहेब को भी इसमें एतराज नहीं होना चाहिये।···भाई, जो भी कहो—संथाली नाच देखते समय होस गुम हो जाता है। जूड़े में सादे फूलों के गुच्छे, 'कसमकस' देह, उजले 'दाँत की पाँती' की चमक! सुफेद आँचल!···जब 'झुमुर-झुमुर' कर नाचने लगती है तो मन करता है···नाच में उतर पड़ें!

डा डिग्गा डा डिग्गा!
रिं रिं ता धिन ता !!

आज से ही वे 'पराटिस' कर रहे हैं।···लेकिन माँदर और डिग्गा की बोली सुन कर डर लगता है! 'हँसेरी' के दिन तो ऐसा लगता था कि जमराज नगाड़ा बजा रहा है और जमदूत सब उसी ताल पर नाच-नाच कर तीर चला रहे हैं!

(१) आजीवन कारावास (२) चाँदी का रुपैया, ऐसा रुपैया मिट्टी के नीचे गाड़ने के निमित्त रखा जाता है (३) मालिक (४) खुशहाल, अमीर हो जाना (५) जल्दीबाज़ी अन्धाधुन (६) वेश्या का गीत (७) समाप्तम (८) ब्लाउज़।

—तीन

"खबरदार ! गरम जिलेबी मत खाना।"

आजकल सुमरित दास 'बेतार' का बोलबाला है। हमेशा, एक नई खबर ! आजकल किसी भी टोले के नौजवान से भेंट होते ही वह फिक् से हँसकर एक दिल्लगी कर लेता है—"खबरदार ! गरम जिलेबी मत खाना !"

"माने ?"

"माने सुनोगे ?···गरम जिलेबी का तासीर बड़ा गरम होता है। सर्दी से नाक बंद हो, सिर दुख रहा हो—गरम जिलेबी खा लो ! भक से नाक खुल जायेगी। इतना जल्दी असर करता है !···आज हम डागडरी में जरा दिनाय[1] की दवा लाने के लिए गये थे। जानते हो ? डागडर बाबू ने फुलिया···अरे वही मँहगू दास की बेटी—फुलिया को क्या कहा है ?···फुलिया को 'गरमी' बेमारी हो गई है। चेहरे पर 'फुसरी-फुसरी[2]' सा हो गया है। डागडर ने कहा कि पुरैनियाँ जाओ।···इसीलिए लौजमान लोगों से कहते हैं कि खबरदार ! गरम जिलेबी मत खाना।"

"लेकिन दास जी ! लौजमानों से पहले बूढ़ों को संभालिये !"

"चुप, चुप ! सभी बेपर्दे हो जायेंगे।"

सुमरित दास बेतार जब 'फिक' से हँसता है तो उसके लाल मसूढ़े दिखाई पड़ते हैं। लाल हँसी हँसता है बेतार।···बेतार फिर 'फिक' से हँस कर कहता है—"और कुछ मालूम है ? महंथ रामदास जी रमपियरिया को दासिन रखेंगे। कोठारिन ने हुकुम दे दिया है।···बालदेव तो कोठारिन के पीछे बैरागी ही हो गया !"

कालीचरन का चेहरा अनायक उतर जाता है।···अब मंगला के बारे में तो कुछ नहीं बोलेगा बेतार ? लेकिन बेतार जानता है कि कहाँ कैसी बात करनी चाहिये। बात में उससे जीतना मुश्किल है।

चर्खा सेन्टर के मास्टरों और मास्टरनी में लड़ाई-झगड़े हो गये हैं।

टुनटुन जी इस्तिफ़ा देकर चले गये। दूसरे मास्टर साहब को 'सूल' उखड़ गया, देस चले गये। अब, अकेली मंगला देवी चर्खा सेन्टर के नाम पर गाँव-घर में घूमती है, बातें करती है गाँधी जी की, 'जमाहिरलाल' की और 'सुराज' की।···कालीचरन कहता है—"हाथी पर भारतमाता की मुरती के पास बैठ कर भुरछल[3] डुलाने के लिए मंगला देवी को ही कहना चाहिये।"

बालदेव जी तहसीलदार साहब से कहते हैं—"लेकिन यदि अपने गाँव में औरत नहीं रहे तब बाहरी औरत से कहना चाहिये। यदि गाँव में ही मिल जाये! कमली दीदी ही क्यों न बैठेंगी?

"नहीं कमली की बीमारी का बड़ा डर है। कब क्या हो जाये?"

"तब, कोठारिन जी से कहा जाये। अब तो खद्दड़ पहनती हैं। खूब 'नेम-टेम' भी करती हैं। रोज नहाने के बाद महतमा जी की 'छापी' पर फूल चढ़ाती हैं।"

—लो मजा! मंगला देवी को हाथी का बड़ा डर है! हाथी को देखते ही उसका सब सरीर केले के 'भालर'[4] की तरह थर-थर काँपने लगता है। कालीचरन ने कितना समझाया-बुझाया,—'बूध-भरोसा' दिया मगर तैयार नहीं हुई।···आखिर में कहने लगी, कालीचरन यदि साथ में रहे तब तो वह हाथी पर चढ़ सकती हैं।···लेकिन कालीचरन को लाज हो गई, सायद। बोला—"धत्त!"

दुलरिया भी अलबत्त बात जोड़ता है। इधर-उधर देख कर मटकी[5] मार कर देह हाथ फैलाकर कहता है—"मंगला देवी जी जब लीला 'सिलवार' पहन कर निकलती हैं तो लगता है कि 'मोकनी हथिनी'[6] झूमती चली जा रही है।"

"हो-हो-हो-हो-! हा-हा-खी-खी"

भौऔथ···! ओ...ओ!

डाक्टर साहब की घड़ी में ठीक दोपहर रात का 'टैम' देख कर टीन के 'करनाल' में मूँह सटा कर कालीचरन ने हल्ला किया—"भौ औ-थ

···औ औ।"

इसके बाद 'लौजमानों' ने दुहराया—"भारथ-आ-जा-द !"

मठ पर खँजड़ी डिमक उठी—डिम-डिम-डिम-डिमिक !! बालदेव जी ने भावावेश में, चौकीदार की तरह हाँक लगाई—"ह-ह-ह-ह-ह-ह ! भारथ आजाद हो गया ! ह-ह-ह-ह-हो-य ! महतमा गाँधी की जै !"

रिं-रिं-ता-धिन-ता !

डा-डिग्गा····· !

—संथाल टोली में माँदर और डिग्गा घनघना उठते हैं।

"तू-ऊ-ऊ-ऊ !" मौसी शंख फूँकती है—"तू-ऊ-ऊ-ऊ !!"

सात माइल दक्खिन, कटिहार की पाँचों बड़ी-बड़ी मिलों के 'भोंपे' एक साथ बज रहे हैं—"भौं-औं-औं···धू-ऊ-ऊ !" आवाज़ एकदम साफ़ सुनाई पड़ती है।···

···डिल्ली में बाँटबखरा करके सुराज मिल गया। जै ! जै !! इस-लामपुर पाखिस्थान में रहेगा या हिन्दूस्थान में ?···पाखिस्थान में ?··· अभी पाखिस्थान में मारे खुसी के खचा खच 'गोरू' काट रहा होगा।··· भेत्त् गोरू ने क्या बिगाड़ा है ?···बड़े भाग से मेरीगंज बच गया। दस मुसलमान भी होते तो पाखिस्थान लेकर ही छोड़ता !

(५) दाद। (२) फुन्सी। (३) चँवर। (४) केले का पत्ता। (५) कनखी। (६) जवान हथिनी।

—चार

भौं-औ-थ ! औ-औ !

···कालीचरन का गला बैठ गया है। नारा लगाते समय भाथी की तरह गले से आवाज़ निकलती है—फोंयें-फोयें-सोंयें-सोंयें !···सुबह से कॉमरेड बासुदेव और कॉमरेड सोमाजट बारी-बारी से नारा लगा रहे हैं।

···नारा बन्द नहीं हो, जारी रहे।···'अष्टजाम कीरतन' की तरह! सुराज-उतसब जब तक खतम नहीं हो, नारा बन्द नहीं हो!···

टन-टनाक्, टन-टनाक्···!--सजाई हुई मोकनी हथिनी जा रही है।

ढन-ढन-ढनाँग-ढनाँग।—कीर्तनियों का 'घड़ीघंट' बोल रहा है।

धू-ऊ-ऊ, तू-तू-तू!— शंखनाद!

भों-ओं-पों!···भों-पों-पों।—अंगरेज़ी बाजा!

तक-तक-तक-तक-धिनाग-धिनाग—अमहरा का चानखोल[1] बजा।

पीं-पीं-पीं-ई-ई-ई-पीं-पीं-पीं...।—चानखोल वालों की पीपही गा रही है।

"चाँदो बनियाँ साजिलो बरात-ओ-हो

"एक लाख हाथी साजिलो, दुई लाख घोड़ा

"चार लाख पैदल, दुलहा बाला लखिन्दर"—पीपही पर 'बिहला'[2] नाच का—बरात वाला गीत बजा रहा है!

धू-धू-धू-धू-धू-तु-धुतु-धुतु—करनाल[3] बोलता है।

हिं-हिं-हिं-हिं···हिं-हिं-हिं। पहड़िया घोड़ा हिनहिनाया।—किसका घोड़ा है? धरमनाथ बाबू का या हरि बाबू का?

"भारथ में आयल सुराज

"चलु सखी देखन को'···'—यह नया सुराजी कीर्तन किसने जोड़ा है? वाह! एकदम ताजा माल है। सुनो सुनो!!

"कथि जे चढ़िये आयेल

"भारथ माता

"कथि जे चढ़ल सुराज

"चलु सखी देखन को!

"कथि जे चढ़िये आयेल

"बीर जमाहिर

"कथि पर गंधी महराज! चलु सखी···

"हाथी चढ़ल आवे भारथ माता
"डोली में बैठल सुराज ! चलु सखी···!!
"घोड़ा चढ़िये आये बीर जमाहिर
"पै-द-ल-गंधी महराज ! चलु सखी देखन को !"

"वाह ! खूब कीर्तन जोड़ा है उजाड़ू दास ने। उजाड़ू दास को नहीं चीन्हते हो ? बारा मानिकपुर में घर है। वह भी 'सनतीस' से ही सुराजी में है।"

कू-कू !—मोकनी हाथी ठीक ताल पर कैसा कूकती है। वाह !

अलबत सजाया है हाथी को 'फिलबान' ने ! ठीक कपाल पर 'पुरैन'[४] का फूल बनाया है—फुलखल्ली से। कितना रँग-टीप किया है।···भारथ-माता की 'मुरती' तो ठीक 'दुरगा माई' की 'मुरती' जैसी लगती है। लछमी, सरस्सत्ती, पारबती-गौरा और भारथमाता सब सगी बहन हैं। ओ !···इसी लिए ! बालदेव जी देखते हैं—सादा खद्दड़ की साड़ी ! गले में फूल की माला ! लम्बे-लम्बे काले बाल बिखरे हुये हैं पीठ पर ! ठीक भारथमाता के 'ठोर'[५] पर जैसी हँसी है, कोठारिन वैसी ही हँसी हँस रही है और धीरे-धीरे मुरछल डुला रही है !!

धिन, तक-तक-तक, ताकधिना-धिन !—भठियाली कीर्तन का खोल बोल रहा है—ताकधिनाधिन तिन्नक-तिन्नक !!

"हाँ-रे-मोरी रे-ए-ए-ए-!! हाँ-आँ-आँ-
"आँ-आँ-आँ-आरो हे !
"बहु कस्टे सू-रा-ज पैलो रे
"भारSSथSS संतान ओ-रे-
"कोटि कोटि छइला-पोयेला
"दिलो बो-लि-दान-ओ-रे···
"हाँ रे-मोरी रे-ए-ए-ए-!! हाँ-आँ आँ !!"

'औराही-हिंगना' का भकतिया है बाबू ! खेल नहीं !! सीतानाथ बाबू ने 'पूआ बोली'[६] में कैसा भठियाली कीर्तन जोड़ा है, देखो।···सीतानाथ

बाबू ने जोड़ा है कि उनका छोटका बेटा महेन्दर ने ?···महेन्दर बाबू भी गीत खूब जोड़ते हैं, सुना है।

झरक–झरक–झर–झर्र–र–र–र ! एकपुरिया ढोल तो सब बाजा को मात कर देता है। सभी बाजा को 'झाँप' लिया है।

डिमाक् डिमाक् डिम—एकपूरिया ढोल के साथ एक छोटी ढोलकी बोलती है।

भौ–औ–थ ! औ औ !

"महतमा गाँधी की जै।"

"जमाहिर लाल नेहरू की जै।"

"रजिन्नर बाबू की जै।"

"जयपरगास जिन्दाबाघ !"

"यह आजादी झूठी है !"

"देस की जनता भूखी है !"—यह नया 'लारा' कौन लगाता है ?

"ऐ ! ऐ !!···नहीं हुआ।"

"सुनलो पहले !"

"आजादी झूठी है। मारो साले को ! कौन बोला ?"

"जरूर गाँव का नहीं, बाहरी आदमी है।"

"ऐ–ऐ ! बाजा बन्द करो।"

"हटो ! हटो !!"

"ऐ ! कालीचरन !···ऐ ! बासुदे···!"

"बालदेव !···सान्ती करो !"

"अरे ! बात क्या हुई ?"

"हर बात में ऐसे ही कोई 'लेकिन' लगायेगा यह लोग।"

"सुनिये तहसीलदार साहेब !···बात यह हुई कि···"—बालदेव जी आज फिर सनके हैं—"बात यह हुई कि बाबू कालीचरन के पेट में रहता है कुछ और, और कहता है कुछ और !···हम इससे पहले ही पूछ लिये थे कि तुम्हारी पाटी की ओर से क्या हुकुम हुआ है सुराज उतसब के बारे

में ? तो बोला कि सुराज क्या सिरिफ कंगरेसी को मिला है ?···अभी देखिये सुभलाभ करके जब हमलोग जुलूस निकाला है तो एक बाहरी आदमी को मँगा कर के हम लोगों के उतसब को भंग कर रहा है ? यह कैसी बात ?···अरे भाई, हिंगना-औराही का सोसलिट है तो हिंगना-औराही में जाकर अपने गाँव का लारा लगावे ! यहाँ काबिलयती छाँटने की क्या जरूरत थी ? अपना मुँह है—बस लगा दिया लारा—'यह आजादी झूती है' !"

"ठीक बात ! वाजिब बात !"—जनता एक ही साथ कहती है।

"ओंयें-सोंयें-सोंयें···।"—कालीचरन क्या कहता है, समझा भी नहीं जाता है।

"अरे हाँ-हाँ, गलती हो गई !"—कॉमरेड वासुदेव समझा रहा है। यानी कालीचरन जी की बात को जोर-जोर से सुना रहा है—"अरे ! गलती हो गई।···वह नहीं जानता था। चमड़े की जीभ है लटपटा गई। कालीचरन जी का इसमें कोई दोख नहीं।"

यहाँ के 'सोसलिट पार्टी' वालों को भी यह बात अच्छी नहीं लगती है।···दूसरे गाँव से आकर यहाँ लारा लगाने की क्या जरूरत थी ?··· कालीचरन जी का गला बझ गया था तो वासुदेव और सोमा तो लारा लगा ही रहे थे। बीच में फुटानी छाँट कर सब गड़बड़ा दिया।

"अच्छा ! अच्छा !! माफ कर दो !"

"हाँ-हाँ, छोड़ो ! आज सुराज का दिन है।"

टन् टनाक्-टन टनाक् !—मोकनी हथिनी फिर चली।···जुलूस आगे बढ़ा। सभी ढोल-बाजे एक ही साथ बजने लगे ! डिम् डिम-झर्र झर्र···पी-ओ-धू-ऊ-तक-तक-धिन

भों-ओं-ऊँ···धू-तू—ताक धिना धिन···।

कूई-कू ! कूई-कू !—मोकनी हथिनी ताल पर कूकती है।

बालदेव जी फिर सनके हैं क्या ?···हाथ में झंडा लेकर अब हाथी के आगे-आगे नाच रहे हैं। झंडे को इस तरह भाँजते हैं मानो 'गाट

साहेब' रेल गाड़ी को झंडी दिखला रहे हों !···हाँ भाई, सूराज का असल हथियार है तेरंगा झंडा। पहले के जमाने में तलवार से लड़ाई होती थी, इसलिए लोग हाथ में तलवार लेकर नाचते थे। सुराज की लड़ाई का हथियार झंडा है। इसलिए झंडा नचा रहे हैं बालदेव जी। सनके हैं नहीं। जिसका जो हथियार···!

किर्र-र-र-घन-घन धड़ाम धा, धड़ाम धा !—नौटंगी का नगाड़ा बोल रहा है।

···भोज तो दिन से ही खाते-खाते मन अघा गया है।···इधर देरी करोगे तो आगे में जगह नहीं मिलेगी। चलो, जल्दी !

किर्र-र-र-घन-घन-धड़ाम धा, धड़ाम धा !

"अरे खिस्सा होता सुरु अब सुनहु पंच भगवानों की,
"गाँधी महतमा बीर जमाहिर करे सदा कलियानों की।"

किर्र-र्र-घन-घन-धड़ाम धा, धड़ाम धा !

···कौन खेला होगा ? क्या कहा ? मस्ताना भगत सिंह ! वाह !! अभी जाकर 'रंग औट' किया। दिन से पूछते थे तो बोलता था कि 'सुलताना डाकू' का 'पाठ' होगा।···

जिसका जो हथियार !···भगत सिंह का 'पाठ' खुद नितलरैन बाबू लिये हैं। दाहिने हाथ में पिस्तौल है और बायें हाथ में बेल के बराबर गोल क्या है ? बम !···अरे बाप !! हाँ, जिसका जो हथियार !! भगत सिंह का हथियार तो बम पिस्तौल ही था !···

कि-र्र-र-घन-घन धड़ाम धा, धड़ाम धा !

"अजी बेटा हम माद-रेब-तन-भारथ का !
"हमें डर नहीं फाँसी सूली का···।"

किर्र-र्र-किर-किर-धड़ाम-धड़ाम।

भगत सिंह नाच रहा है। एक हाथ में बम और दूसरे में पिस्तौल। नाच कर 'स्टेट'[७] के एक कोने से दूसरे कोने पर जाता है। खूब-नगाड़ा बजाता है नगाड़ची। ठीक पन्नालाल कम्पनी के तरह ! इटहरा का नक्कछेदी

है। और कौन ऐसा साफ हाथ बजावेगा ?···सिरिफ ताल काटने के समय जरा डर लगता है। ताल काटने के समय, धड़ाम-धा, धड़ाम-धा ताल पर भगत सिंघ बम वाले हाथ को दो बार 'पबलि' की ओर चमकाता है, मानो बम फेंक रहा हो।···और जब-जब वह ऐसा करता है···आगे में बैठे सभी लोग जरा करवट होकर एक दूसरे की पीठ के पीछे मुँह छिपा लेते हैं।···कौन ठिकाना, कहीं इधर ही फेंक दे तब ?···कभी नकली तलवार से देह नहीं कटता है क्या ? तब नकली बम हो चाहे असली, हाथ से छुट जाने पर कुछ-न-कुछ 'घवैल' तो जरूर करेगा।···अरे नखलौ की बाई जी कहाँ है ? उसको सामने लाओ ! 'डोली' में क्या छिपा कर रखा है।···ताली बजाओ, तब निकलेगी !

"आ गई ! ए ! देखो नखलौ की बाई जी को !"

"आकर चुपचाप खड़ी काहे हो गई ?"

"देखने से तो मालूम होता है कि जमान है, मगर···।"

"गला से तो जरूर पकड़ी जायेगी। गाने तो दो जरा।"

"रोगन-पौडर लगा कर खपसूरत लगती है। दिन में देखना, खपरी की पेंदी की तरह···।"

"हो-हो-हो ! साला दुलरिया बात बनाने जानता है।"

बाईजी शुरू करती है—

"खाधी के चुनरियाँ रंग दे छापेदार रे रंगरेजबा !

"बहुत दिनन से लागल बा मन हमार रे रंगरेजबा।"

धड़ धड़ाम—धड़ धड़ाम !!

"नाचती है तो नाचती है,—दाँत बिचका कर हँसती क्यों है ?"

"ए राम ! दाँत और ठोर तो एकदम 'काला भुजुंग' है।"

"अजी दाँत नहीं ! 'काबली-अनार' के दाने हैं दाने !"

—हो-हो ! हो-हो !!···वाह, ठीक कहा दुलरिया ने।

बाईजी गा रही है—

"कहीं पे छापो गंधी महतमा

"चर्खा मस्त चलाते हैं,
"कहीं पे छापो बीर जमाहिर
"जेल के भीतर जाते हैं।
"अँचरा पे छापो झंडा-तेरंगा
"बाँका लहरदार रे रंगरेजवा !···"

किर्र-रि-रि-रि-रि धड़क-धड़क-धड़म बा धड़म धा !!

"अजी अंगिया पर छापो·····।"

—ऐ ! ऐ ! वाह ! हो—हो !!···वाह वाह !!

"साटो इसके बिलोज पर टका !"—एक आवाज आती है।

"जरूर साटो !"

"अरे 'टका' मत बोलो। 'मिडिल' बोलो 'मिडिल'। देहाती की तरह काहे बात करते हो ! चाँदी की चकती को मिडिल कहते हैं।"

"सुनो···भगत सिंह फिर काहे 'स्टेट' पर आया।"

"प्यारे भाइयो, आपलोग हल्ला मत कीजिये···। अब एक गाना होगा—मोरा बाँका सिपैहिया टट्टू से गिरा जाये !"

"अरे 'लचकर' काहे झाड़ता है। बजाओ नगाड़ा।·····रात भर का खट्टा है।—तेरी सिपैहिया की ऐसी-तैसी। खेला शुरू करो !"

"हाँ, ये लोग तो यही चाहते हैं कि बस इसी तरह 'रिव-रिब' में ही रात काट दें।···नाचो !"

"ऐ ! पंचलैट में हवा दो ! भुकभुका रहा है !"

"हवा क्या देगा—आँधी आ रही है। पानी भी बरसेगा।"

किर्र घन घन धड़ाम धा, धड़ाम धा !—नगाड़ा घनघनाया।

गुड़ गुड़म—आसमान में बादल घुमड़े।

फटाक् !—पटाखा फूटा।

"·····अजी भगत सिंह है नामी इनमें सरदार !
"अजी करना है उसको गिरिफ्तार।
·····किर्र किर्र—घन घन धड़ाम धा !

"मारो साले को! यही साला सब असल 'देसदुरोहित' है—पहचान रखो।"

"मारो! मारो!!·····रे मार साले को!"

·····"हो हो!! हो हो!!"···आँधी आ रही है सायद···। गाय-बैलों को घर से निकाल कर बाहर करना होगा! चुल्हा में आग छोड़ कर ही 'जलाना लोग' सो जाता है। बहुत खराब आदत है। आग रखती है हुक्का पीने के लिए।···चलो रे।···बाँस-फूस के घर का क्या ठिकाना। आँधी आई—उड़ा ले गई। बरसा हुई तो टपकने लगी और एक चिनगी भी कभी उड़ी तो 'सोहा'!···चलो···! क्या देखेंगे अब नाच! कटिहार की 'चरनियाँ माल' को उठा लाया है और कहता है कि 'नखलौ' की है। चलो!

गुड़गुड़ुम! गुड़गुड़ुम!!

कमला को डाक्टर ने अपनी बाहों में जकड़ लिया है!···तीन बजे दिन में ही संथाली नाच देखने अस्पताल आई थी कमली!···नाच खत्म हो गया, शाम हो गई, उधर नौटंगी कब शुरू हुई, कब खत्म हुई···शायद दोनों में से कोई नहीं बता सकेंगे।···जब बादल गरजे, बिजलियाँ चमकीं और 'हरहरा' कर वर्षा होने लगी तो कमली को डाक्टर ने अपनी बाहों में जकड़ लिया!

कमली ने बाहें छुड़ाने की एक हल्की चेष्टा की।···

बिजली चमकी!

गुड़गुड़ुम—गुड़गुड़ुम!!

रिं सिं ता धिन ता!

डिग्गा—डा—डिग्गा!!

संथाली नाच के माँदर और डिग्गा के ताल पर दोनों की 'धुकधुकी' चल रही है।···छम्म छम्···आज कमली इस इलाके में पहने जाने वाले सभी क़िस्म के गहनों से लदी है।···बाँक, हँसुली, बाजू, कँगना, अनन्त, चूर, झंझनी अर्थात् झुनुक-झुनुक बजने वाली बेड़ियाँ, जिसे 'झंझनी-कड़ा'

कहते हैं।···और 'चूर' तो देह के 'सिहरन' पर भी खनकते हैं !!···टुन-टुन-टुन—!!

टुन—टुन।
छम्—छम् !!
गुड़ गुड़ुम !
छम्म, छम् ! छम्म, छम् !!
टुन—टुन !!
डाक्टर !···डा···क···ट···र !! ओ !!·····
राजकमल !·····

(१) एक तरह का बाजा, ढोलकी। (२) सती बेहुला। (३) सिंघा बाजा। (४) कमल (५) ओंठ। (६) बंगला बोली। (७) स्टेज, मंच।

—पाँच

बावन दास को अब अपने पर भी 'परतीत' नहीं होता है।···बालदेव जी कहते हैं—चित्त चंचल हो गया है बौन दास का और थोड़ा 'भरम' भी गया है ! बस, सिरिफ गाँधी जी पर भरोसा है बावन को।··· बापू सब पार लगावेंगे ! बहुत-बहुत कठिन 'परीच्छा' में बापू अकेले सब को संभाल लेंगे। जै ! बाबा ! बापू !!

···लेकिन उसके दिल में न जाने क्या समा गया है कि हर बात का खराब रूप ही पहले देखता है। सन्देहात्मक दृष्टिकोण से ही वह सारी दुनिया को परखता है। बापू ने चिट्ठी का जवाब दिया है—

"भगवान बावन दास जी। आप ही धीरज छोड़ देंगे तो भक्तजनों का क्या होगा ?···बापू के प्रणाम।"

बावन 'कठहँसी' हँसते हुये, कहता है—"गंगुली जी ! बापू को देखिये ···अब हम क्या करें ? मन में सन्देह होता है, दिल उदास हो जाता है

फिर आदमी को अपने 'करम' पर भी 'बिसवास' कैसे हो ? बापू से पूछते हैं···तो दिल्लगी में ही टाल देते हैं ।···लिखते हैं कि आप ही धीरज छोड़ दीजियेगा···। अरे ! छलिया रे ! जनम-जनम छल कर के ठगा—कभी रामा औतार तो कभी क्रिसना औतार और···

"कभी बावन अवतार !"—गाँगुली जी चट से कह देते हैं

"धेत् ! आप भी तो···हो-हो-हो- !"—बहुत दिनों के बाद आज ही बावन ऐसा दिल खोल कर हँसा है ।

बावन दास जब दिल खोल कर हँसता है तो उसकी आँखें ख़ुद-बख़ुद बंद हो जाती हैं···और तब ऐसा लगता है मानो एक बड़ा सा 'सेलुलाइड' का खिलौना हिल रहा हो !···बावन अवतार !

'रावन' अवतार !···यह चलित्तर 'रावन' का 'औतार' बन कर आया है भाई, सुने हो या नहीं हसलगंज के हरखू तेली के घर में डकैती हो गई !!

···आँयें !! कब ?···सुराज उतसब की रात में ही ? बंदूक वाले थे ? 'घवैल' तो नहीं कुआ कोई ?···दो खून ? एँ ?

सुमरित दास 'धेतार' अभी तुरत कटिहार से आया है !

····"बात यह है कि हसलगंज के हरखू तेली की कंजूसी के बारे में तो सभी जानते ही हो !···चलित्तर करमकार···या भगवान जाने कौन था—सो एक दिन ठीक दोपहर को उसके दरवाज़े पर आया । पानी पीने के लिए माँगा तो, सुनते हैं, कि पैसा माँगा । लेकिन सहुआइन कहती है—दूकान पर जलपान करके, हाथ मुँह पोछ के जाने लगा तो हम पैसा माँगा, बोला कि तुम्हारे यहाँ एक गिलास पानी पीयेंगे तो पैसा माँगोगी ? भाई, हम भी 'सुनती-उड़ती' बात कहते हैं, खाँटी हाल एक दो दिन में खुद 'औट' हो जायेगा ।···सुनते हैं कि सुराज उतसब की रात में एक दर्जन लोगों को लेकर—पहड़िया घोड़ा पर सवार होकर आ गया । आते ही बोला—कहाँ, सहुआइन ! पूड़ी बनाओ !!···नहीं बनायेगी कैसे ? हाथ में 'रैफल-बन्नूक' लेकर दो-दो आदमी सहुआइन के अगल-बगल में एक दम तैयार । हरखू साह को चारों ओर से घेर कर चौकी पर बैठाया और

कहा कि 'रमैन' पढ़ो ।···गाँव में दो आदमी चले गये, लोगों से कहा कि हमलोग हरखू साह की लड़की को देखने आये हैं ।···सुबह होते-होते सब काम 'फिनिस' ! जहाँ-जहाँ मिट्टी के नीचे 'घड़ा' गाड़ कर रखा था, सब खोद लिया । ···एक जगह खोद कर गिनता था और हिसाब करके कहता था—'नहीं, और है । बताओ बुढ्ढे !···नहीं तो चढ़ाओ इसको चुल्हे पर···ढालो ऊपर से किरासन तेल ।'···सहुआइन तो रात भर पूड़ी छानती रही और मिठाई बनाती रही ।···सुनते हैं, सहुआइन बीच-बीच में कहती थी—'ऐ बेटा ! तीरथ करे खातिर कुछ रखली है, कुछ छोड़ दिह ऽऽ···।' उसको एक हजार रुपैया दे दिया ।···हरखू साह को कहा कि तुम तो आठ साल से एक ही धोती पहन रहे हो, तुमको रुपये की क्या जरूरत है ।···जनाना लोगों के देह पर हाँथ भी नहीं दिया, सुनते हैं । मगर जाते-जाते दो खून कर दिया ।"

·····सुमरित दास बात करते-करते चारों ओर देखते हैं । क्यों ?··· कहते-कहते रुक क्यों जाते हैं ?···आज 'फिक' से हँसते भी नहीं हैं ! मुँह बड़ा चटपटाया हुआ देखते हैं । क्या बात है ? ऐसा तो कभी नहीं देखा ?···'सुनते हैं, सुनते हैं' की झड़ी लगाये हुये हैं । आखिर, असल बात क्या है ?

"अरे दास जी ! कोई प्राइबिट बात ?"

"नहीं, प्राइबिट बात कुछ नहीं है भाई ।···दंगा हो रहा है । सुनते हैं कि डिल्ली, कलकत्ता, नखलौ, पटना सब जगह हिन्दू-मुसलमान में लड़ाई हो रही है । गाँव के गाँव साफ ! ···आग लगा देते हैं ।"—सुमरित दास हाथ में लोटा लेकर 'दिसा-मैदान' की ओर चले जाते हैं ।

···बालदेव अनसन करेंगे ! क्यों, क्या बात हुई इस बार ?—बालदेव जी कहते हैं—"पियारे भाइयों ! हम अभी डाक्टर साहेब के 'बेतार' में खबर सुन कर आ रहे हैं । अंधेर हो गया ।···एकदम, सब पगला गये हैं ,मालूम होता है । गाँधी जी 'खिलाफत' के जमाना से ही कह रहे हैं—हिन्दु-मुसलमान भाई-भाई हैं । तैवारी जी भी गीत में, आज से पन्द्रह-

बीस साल पहले कहिन हैं—

"अरे, चमके मन्दिरवा में चाँद
"मसजिदवा में बंसी बजे !
"मिली रहू हिन्दू-मुसलमान
"मान-अपमान तजो ।···

"···सो, गाँधी जी की बात काट कर जो लोग यह सब अन्धेर कर रहे हैं, वे भी एक दिन अपनी गलती मान लेंगे ।···गाँधी जी अनसन करेंगे सायद ।···आजकल 'नूवाँखाली' गये हैं । अभी बानन दास आया है पुरैनियाँ से, बोलता है कि गाँधी जी ने रामलाल बाबू को 'नूवाँखाली' बुलाया है । गाँधी जी ने सिबनाथ चौधरी जी को चिट्ठी दिया कि 'सन तीस' में गाँधी आसरम में जो आदमी पूरैनियाँ से आया था, उसको नूवाँखाली भेज दो । 'रमैन' पढ़ेगा ।···रामलाल बाबू जब गा-गाकर 'रमैन' पढ़ने लगते हैं तो सुनने वालों को आँखों से खुद ही 'लोर' ढरने लगता है ।·····"

जोतखी काका आजकल बहुत चुपचाप रहते हैं । फिर भी इतनी बड़ी-बड़ी घटनाओं पर वह कुछ नहीं बोलें—यह कैसे हो सकता है ? उनकी राय है कि यह सब सिर्फ़ सुराज का नतीजा है ।···जिस बालक के जन्म लेते ही माँ को 'पक्षाघात' हो गया और दूसरे दिन घर में आग लग गई—वह आगे चल कर और क्या-क्या करेगा—देख लेना ।—कलियुग तो अब समाप्ति पर है । ऐसे-ऐसे ही लड़-झगड़ कर सब 'शेश' हो जायेंगे ।"

अब लोग सोशलिस्ट पार्टी ऑफ़िस में भी 'दरखास-फरियाद' लेकर आते हैं ! जुमराती मियाँ रोता हुआ आया है । सुमरित दास ने उससे पाँच रुपैया छीन लिया है—"काली बाबू । जुलुम···अब गरीब लोग कैसे रहेंगे ?"

"अच्छा अच्छा ! आज साम को यहीं पार्टी आफिस में रहिये । रात में हम आपकी पंचैती कर देंगे ।"—कालीचरन विश्वास दिलाता है ।

"कॉमरेड बासुदेव !···सुमरित दास को बुला लाओ तो ।"—शाम

को कालीचरन गंभीर मुद्रा बनाये हुये है।

मच-मच्-मच !···बासुदेव कल 'पुरैनियाँ' से लौटा है, 'भाटा कंपनी' का जूता खरीदा है, चौबीस रुपये में। चलने के समय मच्-मच् बोलता है। रात में भी, आँख पर 'धूप-छाँहीं काला चसमा' लगा कर पैजामा-कुर्ता पहन कर, जूता मच मचा कर चलने के समय थोड़ा 'नसा' जैसा लगता है !···'परेड करते हुये चलने का मजा आ जाता है।···बासुदेव, स्टेशन पर, 'पान-बीड़ी सिकरेट' वालों की तरह बात को ऐंठ कर आवाज गहरी करके पुकारता है—"सो-म-रे-ट—डै-स !"

सुमरित दास की 'पिल्ही चमक' गई होगी !!···बासुदेव मन ही मन हँसता है···। "स्-यो-म-रे-ट डैस !"

एक छोटी सी छपरी में किथर छिपेंगे दास जी !···बासुदेव ने पहले ही देख लिया है, वह उसे हाथ पकड़ कर घसीट लाता है।···सुमरित दास थर-थर काँप रहे हैं।···"ह···जौ···र। दुहाई···।"

"बेतार !···बुलाहट है !!"—बासुदेव हँसते हुये कहता है।

"कौ···कौन··· ? बा···बासुदेव ! हेत्···हम···समझे कि···दरोगा साहेब हैं।···वाह ! खूब डराया !···अलबत्त बोली सीखे हो बाबू। होनी ही चाहिये। देस बिदेस घूमते हो तुमलोग।···किसने बुलाया है ?··· कालीचरन ने ?···अच्छा, एक बात बहुत दिन से पूछते-पूछते भूल जाते हैं। कहो तो···तुम्हारी पाटी में भी दो पाटी है क्या ?···"

"काहे ?"

"पहले बताओ तो।"—सुमरित दास 'फिक' से हँसता है।

"नहीं, पहले आप बताइये।"—बासुदेव कम जिद्दी नहीं।

"यही···कालीचरन एक दिन बोल रहा था कि सिकरेटरी साहेब बासुदेव पर 'बिसवास' नहीं करते हैं।···हम बोले कि बासुदेव में तो कोई 'डिफेट' नहीं तो बोला कि दास जी आप क्या जानियेगा भीतरी बात···। इसीलिए पूछते हैं···कि···।"

"अरे हाँ-हाँ दास जी, हम समझ गये।···असल में कालीचरन है

'धरमपुरी जी' की पार्टी का। धरमपुरी जी भी सोशलिट पार्टी में ही हैं, मगर···हमारे सिकेरटरी साहब के सामने वह कुछ नहीं हैं। एकदम ठंढा खेयाल के आदमी हैं—सभी से हँस-हँस कर बोलेंगे—काँगरेसियों के साथ बैठ कर दुकान में दही चूड़ा खाते हैं। अब सोचिये कि···यह फलहार करनेवाला आदमी···इस किरान्ती पार्टी में कैसे···? आप ही सोचिये दास जी।···"

"वाजिब बात है।"—सुमरित दास गंभीर होकर कहता है—"ओ! ओ···ओ! यह बात है?"

"हाँ, और यह कालीचरन जी उन्हीं की पार्टी में हैं।···(फिस-फिसा कर)···मंगला देवी के साथ आजकल ऐसा 'रसलील्ला' होता है कि क्या कहेंगे। ···यही सब बात हम सिकरेटरी साहेब से बोले। कालीचरन को सिकरेटरी साहेब ने डाँटा है। इसीलिए ऐसा बोलता होगा।···देखिये न। इसी बार मजा लगेगा···सम्मेलन में जाने के समय।"

"ओ—ओ—ओ।।···हाँ भाई। हर जगह यह पार्टीबंदी ठीक नहीं।··· लेकिन आखिर एक हद है—धरमपुरी जी के बारे में तुमने जैसा कहा, वैसा आदमी किरान्ती पार्टी में कैसे रह सकता है?·····वाजिब बात! ·····अलबत्त बोलता है तुम्हारा सिकरेटरी किसन कान्त जी—गरमा-गरम! बोलने के समय बाँह जब मरोड़ता है तो लगता है कि···। अच्छा···हाकिम का 'परबाना' क्यों जारी हुआ है? क्यों हुलाहट है?"

"अरे, वही जुमराती मियाँ ने न जाने क्या-क्या कहा है जाकर। ···बोलता था कि रुपैया छीन लिया है।" —बासुदेव आँख पर काला चश्मा चढ़ाते हुये कहता है—"मुसलमानों का क्या बिस्वास?"

"समझो जरा!"—सुमरित दास 'फिक' से हँस कर कहता है—"समझने की बात है।"

"मैं जाकर कह दूँगा कि घर पर नहीं हैं।···कोई 'लाट' साहेब थोड़ो हैं जो लोग हाथ बाँधे खड़े रहेंगे।···हम किसी का पर्वाह नहीं करते"—बासुदेव पैकेट से सिगरेट निकाल कर दियासलाई के डब्बे पर ठोंकता है

—"दिन भर हम पर लेक्चर झाड़ते रहे हैं—सिकरेट मत पीयो।···अंडा मत खाओ।···और भीतरे भीतरे···।"—बासुदेव 'माचिस' जला कर सुलगाने लगता है।

···दियासलाई की रौशनी चश्मे के दोनों शीशों पर चमक उठती है। काले चश्मे पर जलती हुई माचिस! सुमरित दास के सारे देह में एक सिहरन दौड़ जाती है। रोयें खड़े हो जाते हैं।···लेकिन वह हँसते हुये कहता है—"डूब कर पानी पीयो, एकादसी का बाप भी न जाने!"

"हूँ!"—बासुदेव धुयें का गुबारा छोड़ते हुये, खाँसता है।

···दारू की महक? सुमरित दास की आँखें चमक उठती हैं—"बासुदेव बाबू!···कुछ 'नेपलिया माल' आया है क्या?···जरा हमको भी तो चखाओ!"

"औल रैट। कल चखावेगा।···लाल सलाम!"

मच-मच, मच-मच···।

—छः

तंत्रिमा टोली में आज 'धमाधम'[1] पंचायत हो रही है!!

···बहुत दिनों की बंदिश है कि पंचायत में कोई भी घर की बोली नहीं बोले। 'काहे-कूहे', माने, 'कचलाही मोगलाही' जितना बोल सको—अच्छा है। पंचायत में कोई हटा नहीं सकता। 'लौजमानों' के दल ने रमपियरिया के दासिन होने का घोर विरोध किया है।

"खेल बात है? जात है कि ठट्ठा है? जब जिसका मन हुआ किसी की रखेलिन बन गई, दासिन बन गई, रंडी बन गई? खेल है?"—आज गरभू भी गरम होकर बोलता है?

···पंचायत में सबों को बोलने का हक है, इसीलिए 'धमाधम' पंचायत हो रही है।

"कहाँ है रमपियरिया की माये"

सबों की निगाह टट्टी के आड़ में खड़ी औरतों पर जाती है। रमजू दास की स्त्री 'खखास' कर गला साफ़ करती है—"रमपियरिया की माये को क्या कहते हैं ?"

"तुम मत बोलो !"

"धान न बोले, बोले भूसा 'टन' !"

"हम बोलेंगे ही !"—रमजू दास की स्त्री उठ खड़ी होती है।····· लगता है आज मारपीट भी होगी !

"कहाँ, उचित और नोखे ! छड़ीदार काहे बने हो ?"

"हाँ, मारने कहो छड़ी !···जो न छड़ी से पीटे वह दोगला का बेटा ! ···रमपियरिया की माये के मुँह में बोली नहीं है तो आज 'पोंघी' का भी मुँह खुला है !···रमपियरिया जवान है, उसके जो जी में आवे कर सकती है।···पंचायत में तो बड़ा 'फड़फड़' करते हो गरभू—रमपियरिया तो तुम्हारी भतीजी लगेगी न ?···बोल—खोल दें बात ?···सात बेटे का बाप है छीत्तन—इससे पूछिये कि रमपियरिया के माये के मचान पर दिन रात—भूख-पियास भूल कर पेट के बल क्यों पड़ा रहता है ? यही 'निसाफ' है···? अरे 'जवान-जहान' की बात हो तो कहा जा सकता है कि एक दिन 'पैर-भैंस'[2] गया। इस 'थुर-थुर' बूढ़े की यह चाल···?"

"चुप रहो।···ऐ ! चुप !···कहाँ, छीत्तन ?"

"सिर में तो अब एक भी काला बाल खोजने पर मिलेगा नहीं और यह तेजी ?·····काहे जी छीत्तन ? क्या कहती है रमपियरिया की माये ?"

छीत्तन का 'तोतरहवा'[3] बेटा गर्म हो जाता है—"मूँ ससंभाय कय बोओ !"

"मारो ! पकड़ो !"

"ऐ ! ऐ !!"

"लगाओ गले में कपड़ा ! मारो झाड़ू ऊपर से !·····सान दिखाता है !"

···नोखे और उचित दास छड़ीदार हैं। पंचायत जब 'घमाघम' होने

लगती है, तब वह दोनों छड़ी हाथ में लेकर नचाते रहते हैं।···नोखे और उचित दास, छीत्तन को पकड़ कर गले में कपड़ा लगा देते हैं। मँहगू दास, चेथरू, मुसहरू, अनपू और घोतन बीचबिचाव करते हैं—"मारो मत।"

"सभी बूढ़े एक तरफ हैं।"—एक आवाज आती है।

अब रमपियरिया की माये के बदले छीत्तन दास की 'पंचैती' होती है।···छिः छिः···लाज से डूब मरने की बात है !···इस बार पाँच ही रुपैया 'जरिमाना' हुआ—सस्ते छूट गये।

छीत्तन दास को पाँच रुपैया जुर्माना हुआ है और उसके तोतरहवा बेटा को पाँच बार कान पकड़ कर उठने-बैठने की सजा। नोखे गिनता है—"एक-दो-तीन-चार-पाँच—बस !"

रमपियरिया की माये को 'एक साम' भोज देना होगा। महंथ साहेब 'जात' ले रहे हैं तो 'भात' दें।···क्या कहती है रमपियरिया की माये ?···देगी ?···तब ठीक है।···बोलिये पंच परमेसर क्या बिचार ?···जो दस का बिचार !

दस का विचार हो गया—रमपियरिया दासिन बन सकती है। 'जाति' की बंदिस में जरा भी 'ढील' देने से सब गड़बड़ा जाता है। इसी तरह बराबर 'पंचायत' होती रहे तब तो ?···अभी यह भोज तो 'फोकट' में चला जाता हाथ से।

रमजू की स्त्री रमपियरिया की माये के आँगन में बैठी समझा रही है रमपियरिया को—"·····जब दूध की छाली और मालभोग केला खाकर आँख पर 'चरबी' चढ़ जायेगी, तब मौसी को पहचानोगी भी नहीं। महंथ से कह देना—'जोड़ा साड़ी' से काम नहीं चलेगा। दही खिलाने से 'बाकी मोजर'[४] नहीं होगा।···'कठसर'[५] लेकर छोड़ेंगे।"

रमपियरिया हँसती है—"उनको तो जो कहेंगे, करेंगे। मगर कोठारिन·····।"

"कैसी पगली है रे ! कोठारिन वह कैसी ? अब तो कोठारिन तैं है। इसी मुँह से 'मठ' पर रहेगी रे ?·····लछमिनियाँ को कम मत समझो।

उसका 'जहर चौआ'[६] यदि नहीं उखाड़ सकी···तब तो तुम्हारा महंथ सब दिन खंजड़ी बजा कर 'फटकनाथ गिरधारी' गाता रहेगा।···पगली! इसी 'लूरमुँह' से···"

"सुनती है रे! रमपियरिया?···कहाँ गई उठ कर?···सायद महंथ आया है पिछवाड़े में।"—उसकी माँ पुकारती है।

"साहेब बंदगी हो महंथ!···तो पिछवाड़े में अब काहे छिपे हो?··· अब तो तुम अपने आदमी हुये।···इधर आओ!"—रमजू की स्त्री आँख टीप कर मुस्कुराती है।

महंथ साहेब रमपियरिया के साथ 'केलाबाड़ी' से निकल कर आँगन में आते हैं।···

"पीढ़ी दो रे!···बैठिये।"

"जात वाले तो भात माँग रहे हैं। हमने तो कबूल लिया है।"—रमपियरिया की माये चिलम फूँकते हुये कहती है।

"—लछमी से पूछेंगे···।"—महंथ साहेब आँखें नीची करके कहते हैं।···रमपियरिया की माये अब उनकी सास है। सास के सामने जरा लिहाज से बातें करनी चाहिये।

"क्या बोले?"—रमजू की स्त्री फटे कनस्तर की तरह झनझना उठती है—"लछमी से पूछेंगे?···रमपियरिया की माये! सुनती हो? हम कहा था न—उसने तो इनको भेंड़ा बना लिया है।···अरे, महंथ साहेब···लछमी कौन होती है जो आप उससे पूछियेगा?"

"नहीं, वह बोली है···!"

"महंथ साहेब! बुरा मत मानियेगा—आप 'हिजड़ा' हैं।"—रमजू की स्त्री जाने के लिए उठकर खड़ी होती है— "रमपियरिया को लछमिनियाँ की लौंड़ी बनावेंगे महंथ साहेब, हम सब समझ गये।"

"नहीं, नहीं! ऐसा नहीं हो सकता। 'डमपियाड़ी' जो कहेगी··· वही होगा।"—रामदास जी के दोनों हाथ जुड़ जाते हैं।

···डमपियाड़ी जो कहेगी! महंथ साहेब हर बात में अब कहते हैं···

'जाने रमपियाड़ी ।'

"रमपियरिया क्या जानती है ?"—लछमी कुढ़ जाती है—"साल भर तो उसे मठ के 'नेम-टेम' सीखने में ही लग जायेगा ।···हाथ की सभी अँगुलियों को सही-सही गिन भी नहीं सकती है···और उसके पास 'जन-मजूरों' का हिसाब है ! सतगुरु हो, सतगुरु हो ।"

···जिस दिन से रमपियरिया मठ पर दासिन होकर आई है—लछमी का मुँह हाँडी की तरह लटका रहता है ।···महंथ रामदास सब कुछ समझते हैं ।···रमपियरिया को 'मजूरों' की मजूरी का धान नापने को कहते हैं महंथ साहेब ।—"नहीं जानती है हिसाब किताब—तो समझा दो । 'सिखावेगी-पढ़ावेगी' तो कुछ नहीं ! बस, खाली 'लचकर' झाड़ती रहेगी !"

"मैं 'लचकर' झाड़ती हूँ ?···सतगुरु हो ! मुझे अपने पास बुला लो प्रभू !···अरे, अभी उसके देह में एक मन साबून घँसो तब कहीं उसके सरीर में 'प्याज लहसून' की गंध कम होगी ।···भोर को उठना सिखाओ । मुँह तो कभी धोती भी नहीं है ।···बीड़ी पीती है । 'डोलडाल' से आकर नहाती भी नहीं है । जूठे हाथ से 'बीजक' उठाती है ।···मैं क्यों सिखाऊँ-पढ़ाऊँगी ? तुम क्या करते हो ? आँचल में चाबी लटकाये बिना कुछ नहीं सीख सकती, तो लो न चाबी अपने भंडार की । मुझे चाबी लटकाने का सौख नहीं है ।···जानते हैं सतगुरु ।"—लछमी 'झन' से चाबी का गुच्छा फेंक देती है ।

महंथ रामदास देखते हैं—यह तो सिर्फ गुदाम घर की चाबी है ! संदूक की चाबी कहाँ है ?—"चाबी काहे फेंकती हो ?···बात-बात में इतना गुस्सा होने से कैसे काम चलेगा ?"—महंथ साहेब गंभीर होकर कहते हैं—"तुम मेरी 'गुरुभाई' हो !···रमपियाड़ी को रास्ते पर लाना तुम्हारा काम है ।"

"देह का मैल भी मैं ही छुड़ा दूँगी ?···कपड़ा मैं ही साफ कर दूँगी ···दस दिन भी नहीं हुये हैं, 'गद्दीघर'[७] की दीवाल पर 'शूक-खसार' की

ढेरी लग गई। अधजली बीड़ी के टुकड़ों से घर भरा हुआ है। वह भी मैं ही साफ करूँगी ?·····अब यह 'मठ' नहीं, सूअर का खुहार है खुहार।"

"तुम को इमपियाड़ी के देह का मैल छुड़ाने के लिए कहेंगे ? हम पागल नहीं हैं।···तुम बाबू बालदेव की गर्दन का मैल छुड़ाओ···।" —महंथ रामदास क्यों छोड़ देंगे। सच्ची बात तो लोग अपने बाप के मुँह पर भी कह देते हैं।

"बालदेव जी का नाम मत लो···!"

"क्यों नहीं लेंगे ?···मठ को सुअर का खुहार बनाया कौन ?"

"मैंने बनाया है ?"

"हाँ, तुमने बनाया है।···मेरा 'भीतर' जल रहा है। बात मत बढ़ाओ !"

"भीतर जलता है तो मार कर ठंढा कर लो।"

···मारपीट का नाम सुन कर बालदेव जी कैसे चुप रहें ?····· 'हिंसाबाद' का डर है।····"महंथ साहेब !···कोठारिन जी ! सान्ती ! सान्ती से सब बात कीजिये।"

"अहा-हा ! कोठारिन रे कोठारिन !"—रमपियरिया को बचपन से ही झगड़ने की तालीम मिली है। वह किवाड़ की आड़ से निकल आती है और हाथ चमका-चमका कर कहती है—"रोज आध पहर रात को 'कोठारिन' की कोठरी खुलती है।···संदूक की चाबी कहाँ है ? ···गुदाम घर में है क्या ? सब तो 'बेंच-बाँच' कर छुट्टी कर दिया।"

लछमी के नथने फड़कने लगते हैं। लगता है किसी ने बाँस की पतली छड़ी से उसकी पीठ पर 'शपाक' से मार दिया।···बारह बजे रात को कोठरी खुलती है !···सब 'बेंच-बाँच' कर छुट्टी कर दिया !···सतगुरु हो, किस पाप का 'डंड' दे रहे हो प्रभू ?···

"रामदास ! अपनी 'फेकसियारी'८ का मुँह बंद करो, नहीं तो अच्छा नहीं होगा।···क्या चाहते हो तुमलोग ?···संदूक की चाबी के लिए 'कलेजा'

ऐंठ रहा है—तो ले लो।"—लछमी संदूक की चाबी भी फेंक देती है।

रमपियरिया अब 'गद्दीघर' से 'बकर-बकर' कर रही है।···अलबत्त बोल सकती है रमपियरिया! 'लौंगी-मिरचा' की तरह वह तेज है। उसकी बातें सुन कर देह लहरने लगता है। बात में भी ऐसा···'झाल'?

"···लड़ि मरे बरदा, बैठल खाये तुरंग। दिन भर बैठ कर 'महतमा जी-महतमा जी' करता है बालदेव, कभी एक लोटा पानी भी किसी पेंड़ में दे तो समझें कि—हाँ!···सुबह से साम तक 'ऐना-ककही' लेकर 'महरानी' सिंगार-पटार करेगी···यहाँ कोई किसी का नौकर नहीं।···मेरे देह में मैल है—मन मे नहीं। ऊपर से तो गमकौआ साबुन और 'चंपा-चमेली' का तेल लगाती हो—भीतर?···राम राम!!···रात भर 'मुँह-में-मुँह' सटा कर सोने वाली भोर मे मुँह धोकर 'सुध' तो नहीं हो सकती।···नट्टिन! कसबिन!!"—रमपियरिया बड़बड़ा रही है।

"ड़मपियाड़ी! बेसी मत बोलो—सिर में दरद हो जायेगा।"—रामदास जी कहते हैं—"ऐसा जानता तो···।"

लछमी दासिन कुछ नहीं बोलती है। चुपचाप, टकटकी लगाकर नींबू के पेड़ की ओर देखती है।

रमपियरिया की एक-एक बात तीर की तरह उसके मर्मस्थल में गँथ गई है।···गमकौआ साबून और चमेली का तेल?···महंथ सेवा दास ने उसे यही एक बहुत खराब आदत लगा दी है—बिना साबून के वह नहा ही नहीं सकती है। मन पवित्र ही नहीं होता है बिना साबून के। केशरंजन तेल तो सिर-दर्द के दिन ही अब लगाती है वह।···महंथ साहेब जब पुरैनियाँ कचहरी से लौटते···तो झोरी में तेल, साबून, किसमिस, अखरोट और तरह-तरह का फल-मेवा ले आते थे।···कोई भी नई चीज बिकते देखा—बस खरीद लिया।···

···महंथ सेवा दास के साथ सभी 'तीरथ' कर चुकी है लछमी···क्या इसी 'नरक' भोग के लिए?···उसकी तकदीर ही खराब है। अब मठ में रहना 'नरकबास' है!···छिः छिः, दस दिन हुये—'परसाद' जरा भी नहीं

रुचता है···पानी में मछली की गंध पहले ही रोज लग गई चुके हैं। पानी पीते ही कै हो जाती है।···मठ पर आने के समय रमपिया[१] बातें माये ने ठूँस-ठाँस कर मछली खिला दिया था।—सतगुरु हो!···सब ऊपर करो—पंथ मत 'भरस्ट' करना गुरु···!!···वह कल ही अलग हो जायेगी मठ से। महंथ साहेब उसके नाम से तीस बीघा जमीन और एक कलमी आमों का बाग लिख गये हैं। उस पर मठ का कोई अधिकार नहीं।··· सब एक सप्ताह में ही—सतगुरु की कृपा से—ठीक हो जायेगा।···

लछमी की आँखों के आगे सपनों जैसी एक दुनिया बस रही है।··· कलमी आम के बाग में···ठीक बम्बई आम के पेड़ के पास—दो खूबसूरत झोपड़ियाँ हैं,—वह चर्खा चला रही है—बालदेव जी 'बीजक' बाँच रहे हैं!···

"बालदेव जी! अब आसन तोड़िये!"

—बालदेव जी लछमी के चेहरे की ओर 'भकर-भकर'[२] देखते हैं।··· जब-जब वह लछमी की आँखों में खोते हैं—उनका चेहरा ठीक ऐसा ही 'अर्थ-भाव-हीन' हो जाता है।···आसन तोड़ना होगा?

"हाँ, आसन तोड़ना होगा।···यहाँ 'धरम' नहीं बचेगा।" लछमी की आँखें डबडबा आती हैं।

···आ रे! जोगिया के नग्र बसे मति कोई
···आहो संतो···जो रे बसे सो···जोगिया होई!
···डिम डिमिक डिमिक्, डिम डिमिक डिमिक्!!

(१) सरगर्म। (२) गलत कदम। (३) तोतला। (४) बाकी चुकता। (५) गले का एक गहना। (६) विषदन्त। (७) जिस कोठरी में 'बीजक' रहता है। (८) लोमड़ी की एक जाति। (९) अर्थ-भाव-हीन दृष्टि से देखना

ऐंठ रहा है

—सात

बोल कमली दिन-दिन खूबसूरत होती जा रही है।

···गले में अब दो रेखायें ऐसी उभरती हैं जो उसके मुखमंडल को और भी आकर्षक बना देती हैं। आँखों में चंचलता नहीं, एक 'मद' है। ···अचानक देखने पर मालूम होगा कि आँखों में काजल पड़े हैं।

"माँ !···अब तुम्हारा डाक्टर···खुद बेहोश होने लगा !···आधा घंटा से दीवार की ओर एकटक देख रहा है।"—कमला अपने कमरे में बाल झाड़ रही है।

माँ डाँटती है—"कमली !···डाक्टर साहेब 'गोल कमरे' में बैठे हैं।"

"तो क्या हुआ ?"

···कई दिनों से माँ चाहती है कि कमली को कहे···इतना 'हेलमेल' अच्छा नहीं। लेकिन, अभी उसकी ओर देखते ही माँ ने न जाने क्या देखा कि मोम की तरह गल गई।···दुधिया गौर वर्ण···सुडौल बाँहें···लम्बे-लम्बे बाल···सुगठित माँस पेशियाँ और आँखों में यह क्या ?···काँप जाती है माँ।···यह क्या रे अभागी ?···हतभागिन !···आँचल को मैला मत करना बेटी, दुहाई !···नहीं, नहीं···वह भी कैसी है ?···, उसकी बेटी तो 'माँ कमला' है···वह जो चाहे, करे ! माँ के ओठों पर स्वाभाविक मुस्कुराहट लौट आती है—"मालूम होता है, तुम्हारा रोग उतार कर डाक्टर ने अपने ऊपर ले लिया है।"

"हो ! हो !!"—डाक्टर अब हँसी जब्त नहीं कर सकता है—"हो ! हो !!"

कमला पर्दे की आड़ से गला निकाल कर, इशारे से कहती है—"चुप !···आप बीमार हैं। मालूम ?"

···तहसीलदार साहब की खँड़ाऊँ खटखटाती है।···हँसी सुन कर वे भला कोई और काम करें ?

···डाक्टर को तहसीलदार साहब के दोनों रूप के दर्शन हो चुके हैं। जब वह घर-गृहस्थी, मामले-मुक़दमे, लेन-देन, नफ़ा-घटी वग़ैरह की बातें करते रहें तो उनका कोई और रूप देखियेगा। घर में, आराम से बैठकर 'दीन-दुनिया' की बातें करते समय अथवा 'रमैन-महाभारत'···देश-बिदेश से लेकर घरेलू चीज़ों पर 'टीका' करने के समय किसी और तहसीलदार साहब को आप देखियेगा।···हास्यप्रिय, रसिक और कुशल गृहस्थ! भोला-भाला इन्सान!

···डाक्टर को उनके प्रथम रूप से बेहद घृणा है, किन्तु दूसरे रूप के 'इन्द्रजाल' में तो वह फँस ही चुका है।

"क्या बात थी?"—तहसीलदार साहब हँसी का 'टटका' स्वाद लेने के लिए तुरत पूछ बैठते हैं—"कमली की माँ!···क्या बात थी। ये दोनों नहीं बतावेंगे!"

"अरे, तुम्हारी पगली बेटी के मुँह में जो आता है बक देती है।··· तुम्हारी बहकाई हुई बेटी अभी कह रही थी कि डाक्टर साहेब अब खुद बेहोस हो जाते हैं।···"

"अच्छा,·····तब?"—तहसीलदार साहब मुस्कुराहट को रोकने की मुद्रा बनाकर, चाय के प्याले में चुस्की लेते हुये पूछते हैं—"तब, फिर?"

माँ हँसी को रोकते हुये कहती है—"तो मैंने कहा कि मालूम होता है, तुम्हारा रोग उतार कर उन्होंने अपने ऊपर ले लिया है।···डाक्टर साहेब भी सुन रहे थे···।"

"हा—हा—हा—हा!!"—तहसीलदार साहब की ऐसी हँसी को कमली कहती है—'बाबा पछतिया हँसी हँसते हैं।'

तहसीलदार साहब भी देखते हैं—कमला के स्वभाव में बहुत परिवर्तन हुये हैं। ऐसी बेटी का बाप···चुपचाप बैठा है?···लाचार है!··· भगवान! शंकर भगवान!!···कमली पर कृपा दृष्टि फेरो।···

डाक्टर, तहसीलदार साहब की बुझती हुई हँसी को ग़ौर से देखता है।

···यह शायद एक तीसरा रूप है जिसे देखकर पत्थर भी पिघल जाये !! कितना करुण !·····

"डाक्टर साहेब !"—माँ दो प्लेट में जलपान ले आती है—"कमली 'रेडियो' की दीदी से 'मटर-पोलाव' सीख कर आई है उस दिन !"

"तो यह ऑल-इंडिया रेडियो वाला मामला है !···शुरू कीजिये डाक्टर साहब ।···देखिये कि मटर की घुघनी को किस सफ़ाई से 'मटर-पुलाव' बना दिया है"

"कुछ भी हो, 'ख्याली पुलाव, से तो अच्छा है ।"—डाक्टर कमला की ओर हँसते हुये देखता है ।

"हो—हो—हो—हो !!"

'हँसी-ख़ुशी' के इन्द्रजाल में फँसकर डाक्टर अपने कर्त्तव्य की अवहेलना तो नहीं कर रहा है ? वह कभी-कभी रुक कर सोचता है—वह जो कुछ भी कर रहा है, उसके विरोध में हृदय के किसी कोने का तार बेसुरा तो नहीं बज उठता है ?···नहीं, वह जो भी कर रहा है—सही हो या ग़लत —अच्छा लगता है उसे !···

प्यारू ने कई बार कहा है—आँगन की ओर खुलने वाली खिड़की पर भी पर्दा रहना चाहिये !···नंगी सी लगती है यह खिड़की ।···डाक्टर प्यारू को इसीलिए इतना प्यार करता है ।···कमला अब रोज़ डाक्टर के यहाँ आती है ।

"मौसी कहती थी···कहती थी कि—तू ग़लत कर रही है । तुम दोनों ग़लत कर रहे हो ।···इसके बाद क्या होगा, सोचा है कभी ?···क्या होगा इसके बाद—डाक्टर ? कहो तो !"—कमला 'आम के फाँकों' जैसी आँखों से मधु ढालते हुये पूछती है—

"कहो तो डाक्टर ! क्या होगा ?"

"क्या होगा ?···जो भी हो, बुरा नहीं होगा ।"

"तुम हमेशा मेरे पास नहीं रह सकते ?"

"फिर पागलपन ?"

"डाक्टर !···तुम 'जिन' तो नहीं ?"

"जिन ? क्या 'जिन' ?"

"जिन एक पीर का नाम है।···वह कभी-कभी मनमोहन वाला रूप धर कर कुमारी और बेवा लड़कियों को 'भरमाता'[1] है।···गरीब से गरीब को धनी बना देना उसकी 'चुटकी' बजाने भर की बात है।···जिस पर बिगड़े—बरबाद कर दे। जिस पर 'ढरे' उसे निहाल कर दे।"—कमला के गले की दोनों नई रेखायें जल्दी-जल्दी बनती-बिगड़ती हैं,—वह डर तो नहीं रही ?···वह डाक्टर को पकड़ लेती है।

"क्यों झूठ-मूठ डरने लगीं ? जिंजूल की बातें भरे रहती हो दिमाग में।"

"नहीं। मुझे डर नहीं लगता है।···यदि तुम 'जिन' भी रहो तो··· मैंने तुमको जीत लिया है।"

"इतना भरोसा ?"—डाक्टर कमला की आँखों में चमकते विश्वास का स्पष्ट रूप देख लेता है !···कमला नीरोग है ! स्वस्थ है कमला !!

"तुम बाहों पर उन दिन कौन सा जेवर पहन कर आई थीं ?···अब क्यों नहीं पहनतीं ?"

"बाज़ू !···क्यों ग्वालिनों जैसी लगती थी ?—गोकुल की ग्वालिन ?" —कमला ठठा कर हँस पड़ती है।

···इसी को 'रसलीला' कहते हैं।···देखते हो ? अभी दोपहर रात को डाक्टर का 'नेंगड़ा' नौकर 'लैट' भुकभुकाता हुआ, तहसीलदार की बेटी को घर पहुँचाने जाता है।···सारी ही क्यों न करा देते हैं। एकदम साहेब-मेम।···डाक्टर साहेब भी कैसे आदमी है ?

"डाक्टर साहेब कैसा आदमी है"—अगमू चौकादार से कटहा थाना के नये दारोगा साहब पूछते हैं।

"हुजूर ! अच्छा आदमी है। मगर···।"

"मगर क्या रे ?···साला आधा बात बोलता है···'बटचू' आधा बात पेट में रखता है। साले, हमको 'चीन्ह' लो। हस दूसरे जिला के नहीं,

हमारा घर इसी जिला में है। जानते हो न ? हमसे साले, बात छिपाते हो !···क्या मगर ?"—नये दारोगा साहब 'जलजल' करते हैं। हवा को भी गाली देते हैं—"साला। रात में 'बटच्'···ऐसा हवा बहता था हवलदार साहब कि साला नींद तो बुझिये कि बोझ दिया। हवलदार साहब जरा वह 'फाइल' दीजिये तो ?···देखें क्या-क्या सब पूछा है ? नया-नया पार्टी होता है, साला हमलोगों का जान जाता है !"

दारोगा साहब नई उम्र के हैं। कहते हैं कि इस जिले के पहले पाँच दारोगा में से एक हैं। बातें करते समय वह यह कहना नहीं भूलते—'साहब। मैं बाहरी आदमी नहीं। इसी जिले का हूँ।'—हर मौके पर इसका बढ़िया इस्तेमाल करते हैं—'मैं यदि एक पैसा खा भी लूँगा तो इसी जिले में रहेगा।'—दारोगा साहब जबर्दस्त गलतफ़हमी से परिशान रहते हैं—बाहर के जितने भी लोग यहाँ आये हैं, उन्हीं के हिस्से का सुख-मौज लूट रहे हैं।···फ़ारबिसगंज के नवतुरिया नेता छोटन बाबू जिला काँग्रेस के सिक्रेटरी हुये हैं।···लिखा है···यह डाक्टर 'कौमनिस्ट पार्टी' का है।

दारोगा साहब ने अस्पताल को चारों ओर से एक दर्जन सिपाहियों से 'घेरवा' रखा है !

"आपका घर·····असल में कहाँ है"—दारोगा साहब हैरान होकर पूछते हैं।

"बिराटनगर।"

"बिराटनगर तो नेपाल में है। आप नेपाली हैं ?"

"नहीं।"

"तब ?"

"आप इतना हैरान क्यों हो रहे हैं दारोगा साहब। मैं जो कुछ भी कहता हूँ लिखते जाइये।"

"ओ···लिखते जाइये ! वाह !—आखिर क्या लिखें ?"

"मैं जो कुछ भी जवाब देता हूँ।"

तहसीलदार साहब पसीने से 'तरबतर' हो रहे हैं।···प्यास का मुँह सूख गया है।···क्या बात है? कुछ पता नहीं चलता।·····मौसी का कलेजा धड़क रहा है।···लेकिन आश्चर्य! कमली पर इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं होती।'···डाक्टर को कुछ नहीं हो सकता। कोई बात नहीं है।'—कमली को दृढ़ विश्वास है।

···दारोगा साहब, डाक्टरको 'दो बात' में ही पहचान गये हैं—अजीब क़िस्म का आदमी है।

सुमरित दास बेतार से आज बच्चा-बच्चा पूछता है—"सुमरित दास ···डागडर साहेब ने क्या किया है जो दारोगा साहेब पकड़ने आये हैं? ···घूस लेने की सिकायत तो नहीं किया है किसी ने?"

"देखो न जी!···बड़ा खराब है यह दुनियाँ। किसी का बिसवास नहीं।···रमैन में कहा है न—बिस रस भरे कनकघट जैसे। यह डाक्टर ···तो सुनते हैं कि···'जरमन वाला' का आदमी है।···जोतखी जी ठीक ही कहते थे···जरमन वाला का 'सीआईडी' है यह डाक्टर! यहाँ के लोगों को सूई भोंक कर कमजोर करने का काम करता था। कुँआँ में दवा डाल कर सचमुच में हैजा फैलाया है। जरमन वाला का एक पाटी है यहाँ, 'कमसीन···कौमनीस-पाटी' सुनते हैं, उसी पाटी का आदमी है।"

···इस दारोगा की हरकतों पर डाक्टर को ताज्जुब होता है।··· बार-बार कहता है, हम इसी जिले के हैं।···बेवकूफों की तरह सवाल करता है—"आपको ···बहुत लड़कियों से ताल्लुक रहा है?"

"रहा है।···कम-से-कम···चार सौ लड़कियों के साथ में दिन रात रह चुका हूँ।"—डाक्टर मुस्कुराता है।

"चार सौ?"—दारोगा साहब को जब किसी बात पर अचरज होता है तो उनकी आँखें उल्लू की आँखों की तरह गोल हो जाती हैं—"चा ···! चार सौ?···बटच्···इतनी लड़कियाँ कहाँ से मिलीं?"

"मेडिकल कॉलेज हॉसपिटल में।"

"ओ!···नहीं, मेरे पूछने का मतलब है कि भले घर की लड़कियाँ

……।"

"क्यों, हॉस्पिटल में भले घर की लड़कियाँ नहीं जातीं ?"

"मेरा मतलब…। खैर, छोड़िये इन बातों को…। 'कौमनिस्ट पार्टी' वालों से आपका कैसा रिश्ता है।"

"मेरे बहुत से दोस्त कम्यूनिस्ट हैं ।"

"आपने संथालों को…भड़काया…समझाया था कि जमीन पर जबर्दस्ती हमला कर दो ? संथालों ने अपने बयान में कहा है।"

"संथाल लोग समय-समय पर मुझसे पुराने, कागजात पढ़वाने आया करते थे।…जज्मेंट वग़ैरह ।"

"आप अपनी किताबें दिखला सकते हैं ?"—दारोगा साहब उठकर किताबों की आलमारी के पास जाते हैं ।

…साला, सब डाक्टरी किताबें हैं !…चिल्ड्रेन ऑफ यू० एस० एस० आर।[२] लाल रूस,…लेखक : बेनीपुरी।…लाल चीन, लेखक : बेनीपुरी।

"यह सब तो रूस की किताब है !"

"रूस की नहीं।…रूस के बारे में।"

"दोनों एक ही बात है।"—दारोगा साहब उस किताब को निकाल कर उलटते हैं—मानो किताब के पन्नों में 'बम' छिपा हो।…बहुत सतर्क होकर पृष्ठ उलटते हैं।

…डागडर साहेब 'गिरिफ्फ' !…जुलुम बात ! संथालों को डागडर साहेब ने ही भड़काया था। गाँव में हैजा भी उन्हीं ने ही फैलाया था। …गाँव के लोगों को कमजोर कर दिया।…हाँ, हैजा की सूई लेने के बाद…आज भी जब 'काम-धंधा' करने लगते हैं तो आँखों के आगे 'भगजोगनी' उड़ने लगती है।…देखने में कैसा बमभोला था !…मालूम होता था—देवता हैं। भीतर ही भीतर इतना बड़ा 'मारखू'[३] आदमी था सो कौन जाने ?…जोतखी काका ठीक ही कहते थे।

…गोनौरी के यहाँ फारबिसगंज का एक मेहमान आया है। कहता है, उसके गाँव के पास, सिमरवा-गरैया में, एक डागडर है जो डकैती कराता

"ऐ ! हीरू···रोओ मत ! हल्ला मत करो ।···चुपचाप ! अमावस्या की रात को—दोपहर रात को···। याद रखना ।"

अमावस्या की रात !

पारबती की माँ के पिछवाड़े में 'मरद' भर-भर भाँग की झाड़ी है। ···हीरू उसी झाड़ी में बैठ कर 'खैनी' चुनाता और खाता है ।····· मोरंगिया गाँजे का नशा बड़ा तेज होता है···कातिक महीने से ही रात में 'सीत' गिरने लगती है ! हीरू का देह एकदम ठंढा हो गया...कैन रुपैया खैनी खाकर गर्म हो लेता है, हीरू—"साली घर है—डागडर नटखट परसाद ! बाहर नहीं निकलती है ।···निव

"हाँ भाई, पी ?···यदि बाहर नहीं हो··

"सोमाजट कल ट[illegible]गरिफ्फ हो गया ।"—सोमन मोची कहता है—"अभी मेलो से जो लोग आये हैं, बोल रहे हैं ।··· अब हम अखाड़ा में ढोल नहीं बजायेंगे ।"

(१) भटकाता है । (२) सोवियट रूस के प्रचार विभाग की एक पुस्तिका। (३) वदमाश (४) बी० एल० केस।

—आठ

जोतखी काका आजकल बहुत खुश रहते हैं ।···

···गाँव के लोग आजकल दिन में पाँच बार 'परनाम' करते हैं । ···अलबत्त 'बरमगियानी' हैं जोतखी काका ! 'कलजुग' में भी यदि कुछ 'तेज' बाकी है तो 'बाभन' में ही ।···'जोतिस बिद्या' हँसी खेल नहीं । ···'बरमतेज' अभी भी है । सोना यदि कीचड़ में रहे तो उस पर काई नहीं लग सकती ।···परनाम जोतखी काका ।

"जीओ !···आओ बैठो ! क्या बात है ?"

"जोतखी काका !···हम लुट गये ।···मेरा तोता कल उड़ गया ।

……।"

"क्यों, हॉस्पिटल में भले घर की लड़कियाँ नहीं जातीं ?"

"मेरा मतलब…। खैर, छोड़िये इन बातों को…। 'कौमनिस्ट पाटी' वालों से आपका कैसा रिश्ता है।"

"मेरे बहुत से दोस्त कम्यूनिस्ट हैं।"

"आपने संथालों को…भड़काया…समझाया था कि जमीन पर बैठा हुआ हमला कर दो ? संथालों ने अपने बयान में कहा है।"

"…इतना जल्द समय-समय पर मुझसे पुराने, कागजात पढ़वाने…न को मरा है न ?" रह।"

"हाँ, ठीक सूरज डूबने दिखला सकते हैं ?"—दारो

"करसामाँ है।…डाइ जाते हैं। ह।…समझे हीरू ?… सुक्रबार को 'अमावस्या' है। जिस पर तुमकी संदेह हो, उसके 'पिछवाड़े' में बैठ रहना।…ठीक दोपहर रात को वह निकलेगी। उसका पीछा करना।…वह तुम्हारे बच्चे को जिला कर—तेल-फुलेल लगा कर, गोदी में लेकर जब नाचने लगेगी तो…। उस समय यदि उससे बच्चा छीन लो —तो फिर उस बच्चे को कोई मार ही नहीं सकता।…इन्द्र का वज्र भी फूल हो जायेगा।"

"इसमें और संदेह की क्या बात है जोतखी काका।…सफासफी— 'ऐना' की तरह बात झलकती है।…पाँच महीना पहले, दफा चालीस के समय, जब सभी लोग 'दर्खास' देने लगे तो हमने भी दे दिया।…मेरा 'साला' कचेहरी में 'मोहर्रिल' है। उसके 'पैरवी' से हमको नगदी हो गई। सभी की दरखास नामंजूर हो गई और हमको 'जमा' बाँध दिया। एक दिन पारबती की माँ गेहूँ हिस्सा माँगने लगी तो हम कह दिया कि अब बाँट कर नहीं देंगे। हमको नगदी हो गया है जमीन—दफा ४० में।…बस, तुरत 'आसीख सराप' देने लगी।…उसकी दसों बिघा जमीन हम ही जोतते थे - बस, वही 'गोस्सा' मन में पालती रही और कल हमको लूट लिया राच्छसनी ने।"

"ऐ ! हीरू···रोओ मत ! हल्ला मत करो ।···चुपचाप ! अमावस्या की रात को—दोपहर रात को···। याद रखना ।"

अमावस्या की रात !

पारबती की माँ के पिछवाड़े में 'मरद' भर-भर भाँग की झाड़ी है। ···हीरू उसी झाड़ी में बैठ कर 'खैनी' चुनाता और खाता है ।····· मोरंगिया गाँजे का नशा बड़ा तेज होता है···कातिक महीने से ही रात में 'सीत' गिरने लगती है ! हीरू का देह एकदम ठंढा हो गया है ।····· खैनी खाकर गर्म हो लेता है, हीरू—"साली घर में 'गुदुर-गुदुर' कर बोलती है—बाहर नहीं निकलती है ।···निकलो आज !···कहीं घर में ही तो नहीं नाचेगी ?···यदि बाहर नहीं हो···तब ?···जोतखी काका ने भी नहीं बताया ।"

मौसी को शाम से परीशान कर रखा है गनेश ने···। आज उसकी आँखों से नींद गायब हो गई है । रह-रह कर वह ऐसी-ऐसी बातें पूछ बैठता है कि मौसी को अच्छी तरह समझ-बूझ कर जवाब देना पड़ता है ।

"मामा को जेहल में मारता होगा ?"

"नहीं रे !···तुम्हारा मामा चोर डकैत नहीं ।"

"तो फिर, पकड़ा क्यों ? जेहल काहे ले गया ?"

"सरकार की जो मरजी ।"

"सरकार की जो मरजी ?···सरकार से तुम क्यों नहीं पूछतीं ?"

"चुपचाप रहो ! सो जाओ बेटा !"

"नानी ?"

"बाबू ।"

"हमको बाहर ले चलो ।···पेसाब करेंगे ।"

"चलो ।"

···खट् ! किवाड़ खोलती है मौसी !···पिछवाड़े में, भाँग की झाड़ी हिलती है ।···हीरू बोतल में दारू ले आया है— जल्दी-जल्दी बोतल में मुँह लगा कर पीता है !···हाँ, निकली तो है···राच्छसनी !·····ठीक

दोपहर रात है। 'रमडंडी' सिर पर आ गया है।···सियार बोल रहे हैं। ·····ठीक दोपहर रात है।·····कपड़ा क्यों संभालती है?·····नंगी हो रही है·····!!

—सटाक्!·····!!

"आ···ह···! बेटा···ग-ने-स!"

"ना···नी?"

—सटाक्! सटाक्!···फट, सटाक्!!

"गि-गि-गि-गि···गि-गि·····"

"नानी?···कमली···दीदी!···नानी!"

सब शान्ति!···मगर जीवानद···हीरू का बेटा कहाँ है?···हीरू का नशा अचानक टूट गया!·····छर-छर बहती हुई ख़ून की धारा को देख कर वह थर-थर काँपने लगता है।·····लाठी उसके हाथ से छुट कर गिर पड़ती है।·····

·····ख़ून?·····पुलिस-दारोगा···जेहल···फाँसी-सुल्ली!!—हीरू भागता है।

सबसे पहले तहसीलदार साहब हल्ला करते हुये—बंदूक़ का दो-तीन 'फ़ैर' करते हैं। ठाँय-ठाँय!

सारा गाँव जग गया है।···कुत्तों के मारे कुछ सुना भी नहीं जाता है कि 'हल्ला' किधर हुआ···क्यों हुआ?···क्या है?···क्या है? सभी अपने आँगन से ही पूछते हैं—क्या है रामदेल!···अरे नागेसर···क्या है?···पता नहीं!

तहसीलदार साहब चिल्लाते हैं—"अरे कालीचरन!···आवाज़ पारबती की माँ जैसी लगी।···तुमलोग घर से निकलते क्यों नहीं?····· लगता है सारे गाँव के लोग मुर्दा हो गये हैं।"

पारबती की माँ?···अरे बाप! ख़ून से नहा गई है! साँस देखो। मरी है या···। 'हुक-हुक' करती है?—तब अभी जान है।···और··· यह गनेस है?···दाँती लगी हुई है। पानी लाओ!···किसका काम है

यह ?···हे भगवान !···लाठी है ? तहसीलदार साहेब के जी बोले हैं—लाठी !···इसी से पता चल जायेगा ।·····

"अगमू !"——तहसीलदार साहब कहते हैं——"तुम अभी जाओ थाना ।·····कल पूर्णिया अस्पताल यदि ठीक समय पर पहुँच जाये·····।"

"नानी !·····नानी·····। मामा !! डाक्टर मामा !·····दीदी, दीदी ।"—गनेश रोता जाता है ।·····कमली आँखों को पोंछते हुये, गनेश को अपने घर ले आती है । बुद्धि यदि कम होती गनेश को तो अच्छा था !!·····कमली के साथ वह आता है । बातें भी करता है । ···कमली कहती है—"भगवान हम सबों के बाप हैं···उन्होंने नानी को अपने पास बुला लिया ।"

"हाँ···यें—"—लम्बी हिचकी पर गनेश क़ब्जा नहीं पा सकता है···"नानी !···कमली दीदी ! नानी !"

···हाय रे अभागा ! तेरी कमली दीदी किसके पास रोने जाये ?—"बाबू ! गनेश···तुम्हारे मामा आवेंगे !!···रोओ मत !"

···हीरू पकड़ा गया है ।···पकड़ावेगा कैसे नहीं भाई । गाँव में किसकी लाठी को कौन नहीं पहचानता । हीरू की ठुट्ठी लाठी तो मसहूर है—'हर-हँसेरी' में उसकी ठुट्ठी लाठी कमाल कर दिखाती थी न !··· रात में ही लोगों ने पहचान लिया—मगर डर से नहीं बोला कोई ।··· इसके अलावे उसके दोनो पैर खून से 'लथपथ' ! धोया भी नहीं था । ···लगता है, मारने के बाद 'लहास' को थोड़ी दूर घसीटने की कोसिस की थी हीरू ने ! ···सुबह को तो एकदम 'बघौछ'[२] लगे हुये पागलों की तरह ! उसे देख कर डर लगता था ।···

उसकी आँखें बताती थीं—वह अभी और भी कई ख़ून कर सकता है !···मुँह से लार भी गिरता था ।···दारोगा ने 'गिरिफ्फ' कर लिया, मगर वैसा ही । दारोगा ने दो लात मारी, हवलदार ने दो तीन हंटर गर्म किये और सिपाही ने तीन चार तमाचे जड़े—"साला ! बोलता

काहे नाहीं··· नाम गिनावऽऽअपन बाप के, जे साथ र-ह-लन । होने मुँह का देखऽताड़ऽऽ—चच्चा के तरफ देख के बोलऽ !···साला 'हतियारा' कहीं का···नरक में भी जगहा ना मिली ससुरे !!"

मगर वह बकता रहा—"हम अकेले मारा ।"

"ससुरे !···ई 'नीलगाय' जैसन औरत के तूँ अकेले मारा !···बन्नूक उन्नूक···।"

"ऐ ! सिपाही जी ! छोड़ दीजिये !"—छोटे दारोगा साहब बड़े भले आदमी हैं—कहते हैं—"साले ! यदि फाँसी से बचने के लिए पागल हुये हो तो दो ही दिन की मार में मर जाओगे ।"

'लहास' को एकदम ढँककर 'पालकी' में ले जाने का बंदोबस्त करते हैं दारोगा साहब ।···एक उँगली भी नहीं दिखाई पड़े !···'अतर-गुलाब' भी डलवा दिया ।···अरे ! लहास के साथ गनेस भी जायेगा ?···साथ में प्यारू जा रहा है । पुरैनियाँ खजांची 'धरमसाला' के पास ही गनेस की एक चाची रहती है ।···वह जब नहीं रखेगी तो अनाथालय में···।

मौसी चली गई···हमेशा के लिए ।···

कमली फूट कर रो पड़ती है ।

जोतखी जी को 'लकवा' मार गया ।—अरधाँग ! मुँह टेढ़ा हो गया है, एक आँख एकदम पथरा गई है । पैखाना-पेशाब सब बिछावन पर ही होता है ।···रामनारायण उनके पास अकेले बैठने में डरता है । रामनारायण जानता है सारी बातें । ···पारवती की माँ की हत्या की रात से ही उनकी हालत खराब हो गई थी ।···पेट खूब चला ! खून का पैखाना होने लगा—एकदम 'टटका' खून !—लाल लाल !—इसके बाद गाँव से 'लाश' जैसे ही निकली—लकवा मार गया ! भगवान के इस 'टटका इनसाफ' को देख कर रामनारायण डर गया था !···इतनी जल्दी पाप को फलते बहुत कम देखा है !···पैखाने में इतना दुर्गन्ध है कि चार बीघा आसपास के लोगों को कै हो जाये ।···नरक भोग और किसको कहते हैं ?

···लेकिन, जोखती जी ने कहा था ठीक !···सुनते हैं कि जिस दिन

पारबती की माँ के केस में दारोगा साहेब आये—उस दिन भी बोले हैं—'अभी क्या हुआ है ?···और भी बाकी है !'

भगवान जाने—और क्या क्या होगा !

जै बाबा 'जिन-पीर', गाँव की रच्छा करो महातमा !

(१) करिश्मा। (२) गतिशून्य हो जाना।

—नौ

कोठारिन लछमी दासिन बालदेव जी के साथ 'मठ' से अलग हो गई।

'कलम बाग' में 'बाँस-फूस' के तीन सुन्दर बंगले खड़े हो गये हैं। इस इलाक़े की यह भी एक बड़ी कारीगरी है—बाँस-फूस का 'चौखड़ा'।··· एक ही डर होता है—आग का ! लेकिन होता है—खूब !···मेहराब और 'जाफ़री' गूँथ कर लगा दिया है। फूल तो पहले से ही लगे हुये हैं !··· बाग की 'खपसूरती' तो अठारह गुना बढ़ गई है। वाह रे कोठारिन !··· चार सौ रुपये में एक जोड़ा 'बाछा' खरीद कर मँगवाई है—मोतीचूर हाट से। बड़ा तेज है।···हल्की सी 'बाछा-गाड़ी' बनवाई है। बाँस के पोर-पोर को छील कर, उसमें तरह-तरह के रंग लगाये गये हैं। हर बंधन को और खासकर 'बल्ला' की डोरी को 'सतरंगे-लड़ों' में गूंथा है। छोटे छोटे 'लट-कन फुदने'—लाल, हरे, पीले, नीले।···बाछों के सर पर पीतल के 'पान' हैं, गले में कौड़ी की लड़ियाँ और घंटी है। एक छोर मीढ़ी 'झुनकी' भी है।···झुन-झुन टुन-टुन : झुन-झुन टुन-टुन !···सुनो,···वही ! बालदेव जी गोसाईं साहेब की 'बध्घी सम्पनी' निकली !!···झुन-झुन, टुन-टुन।

···बालदेव जी अब कितने साफ-सुथरे रहते हैं ?···बगुला के पांखों की तरह खादी की लुंगी और 'मिर्जई' दप-दप करती है।···देह भी थोड़ा साफ हो गया है। लछमी अपने हाथों से सेवा करती है।···मठ पर तो

अब 'कौआ-मैना' के 'गू' के साथ आदमी के बच्चों के भी पैखाने भिनकते रहते हैं। रमपियरिया की माये दिन भर पड़ी रहती है, साथ में छोटे-छोटे तीन-चार बच्चे रहते हैं।···भंडारी उस दिन आकर 'कलप' रहा था—"दासिन! 'परसाद' चित से उतर गया है।···रोज रात को सपना देखते हैं कि पीने के पानी में मछली 'छलमला' रही है।···सतगुरु, हो।"

एक महीने में ही 'इमपियाड़ी' ने 'माया' के जाल में महंथ रामदास के अंग-अंग को फाँस लिया है।

महंथ साहब इस जाल से निकल भागने के लिए 'छटपटा' रहे हैं, मगर जाल की गिरहें और भी उलझती जा रही हैं।···कल 'गाली-गलौज' और मार पीट भी हो गई। महंथ साहब ने रौतहट हटिया से सुबह को एक 'भरी' गाँजा मँगवाया था; रात में सोने के समय 'इमपियाड़ी' ने कहा—"महंथ साहेब! गाँजा 'फुरा'[1] गया।"·····सुनते ही महंथ साहब चिढ़ गये——"ऐं? सुबह को ही न एक भर ला दिया है भंडारी ने?"

रमपियरिया महंथ साहब की 'मर्दानगी' ख चुकी है, वह चुप क्यों रहे?—"दम लगाने के समय होस रहता है कि नहीं। दिन भर 'घोड़ा के दुम' की तरह चिलिम मुँह में तो लगा ही रहता है···!"

"चुप चमारिन!···अखाड़ा को 'भरस्ट' कर दिया।···सतगुरु हो···; लछमी ठीक कहती थी।"

इसके बाद, रमपियरिया की माये और बच्चों ने मिल कर ऐसा हल्ला मचाया कि बात कुछ समझ में ही न आई!···महंथ रामदास चिल्ला रहे हैं, चिमटा 'खनखना' रहे हैं—और रमपियरिया गा-गाकर···सुर चढ़ा कर रो रही है—"अरे! तो SSरा···हाथ में कोढ़ फूटे रे कोढ़िया!···अरे लछमिनियाँ के खातिर···।"

·····सतगुरु हो! सतगुरु हो!!·····बन्द करो!·····बन्द करो!!·····

बालदेव जी को पारबती की माँ के खून के बाद से रात को बड़ा डर

लगता है।···रात भर···कलेजा धड़-धड़ करता रहता है। जरा भी कुछ आवाज हुई कि बिछावन पर 'तड़क' उठते हैं।···लछमी कहती है—'निरमल चित्त पर खराब छाप पड़ने से ऐसा ही होता है!···बालदेव जी की आँखें ही बता रही हैं।'

डिम डिमिक-डिमिक, रुन झुनुक-झुनुक!!—लछमी आज 'बुद खँजड़ी बजा रही है।···बालदेव जी 'आसनी' पर बैठे हुये हैं।···खिड़की से, कमरे में चाँदनी का एक टुकड़ा उतर पड़ा है। 'दीवारगीर' की हल्की रौशनी में लछमी की आँखें स्पष्ट नहीं दिखाई पड़ती हैं।···

"ज्वाला विरह वियोग की, रही कलेजे छा-आय!

"प्रेमी मन माने नहीं, दरसन को अकुला-य!"

बालदेव जी टकटकी लगाकर लछमी की ओर देख रहे हैं। खँजड़ी बजा कर गाने के समय लगता है कि लछमी की 'बोटी-बोटी' नाच रही है। घुटने के बल बैठी है···! 'इन्दर सभा' नाटक में 'हूर परी, मसहूर परी, सबुज परी' झुमनी बजा कर जैसा गाती थी—उसी तरह!!·····रह-रह कर पारबती की माँ की, खून से लथ-पथ लाश की याद आ जाती है—एक 'पलक' के लिए!!···बालदेव जी आँखें मूंद लेते हैं।···लछमी के देह से जो 'सुगन्धी' निकलती है, वह आज और तेज हो गई है।···लछमी की आवाज काँप रही है···रो रही है लछमी? ऐं?···गाल पर लोर ढुलक रहे हैं?···लछमी!···

"लछमी!···लछमी! रोओ मत लछमी!"—बालदेव जी की बाहों में भी इतना बल है?···लछमी को बाँहों में कसे हुये हैं।···लछमी गाती ही जाती है—

"गृह आँगन बन गये पराये···

"कि आहो संतो हो।

"तुम बिनु कंत बहुत दुख पाये···।"

डिम-डिमिक-डिमिक!

रुन-झुनुक-झुनुक!!

"एके गृह, एक संग में, हौंबिरहिण संग कंत
"कब प्रीतम हँसि बोलिहैं-जोह करही मैं पंथ !"

ढन-ढन-रुनुक-झुनुक ! झन-न-खंजड़ी हाथ से छूट कर गिर पड़ती है। बालदेव जी के ओठों पर आज पहली बार ऐसी मुस्कुराहट देखती है लछमी !·····गेहुआँ मुखमंडल, छोटी-छोटी दाढ़ी-मूँछ·····!!

···बालदेव जी के पाँव के अंगूठों से आँखें छुलाते हुये लछमी नजर मिलाती है—"सा···हे···ब···बं-द-गी !"

(१) खत्म हो जाना।

—दस

कॉमरेड बासुदेव, और सुन्दर लाल भी 'गिरिफ्फ'।···कैसे नहीं 'गिरिफ्फ' होगा भाई ? एक साल पहले तक किसी ने कभी गंजी भी पहनते नहीं देखा सुनरा को, सो इस गरमी के मौसिम में कोट, पैंट, गुलबन, मौजा, जूता और चस्मा लगा कर कटिहार जक्सन के 'मुसाफिरखाना' में बैठने से, लोग संदेह नहीं करेगा ? एक डिब्बा सिगरेट खरीद कर 'दस-टकिया लोट' तोड़ाते थे दोनों।···सुनते हैं आधा घंटा में ही दोनों ने करीब-करीब सभी 'फेरी वालों' को बुलाया और सौदा किया—"ऐ ! चाहवाला सुनता है नहीं ! देहाती समझ लिया है क्या ?···चाह लाओ। बिस्कुट खाओगे जी सुन्नर ? अरे, 'थड़किलासी' बिस्कुट क्या खाओगे जी ! ···कटिहार के फेरीवाले कैसा 'चाँई'[1] होते हैं सो सबों को मालूम है। उनलोगों ने बहुत बड़े-बड़े लोगों को देखा है—पर ऐसा नहीं।···भिखमंगे को चौअन्नी दे दिया—'जाओ···नास्ता कर लो।' ···लड़ाई के जमाना में अमरीकन साहेब लोग इसी तरह सिगरेट और बिसकुट लुटाते थे।—बस, 'सीआईडी' कहाँ नहीं है ? तुरत दोनो को 'गिरिफ्फ' कर लिया।····· भगवान जाने अब और किसका-किसका नाम गिनाता है !···

जोतखी जी ठीक कहते थे !···'अभी क्या हुआ है ?···अभी और बाकी है ।'

"बासुदेव ने कालीचरन का भी नाम बताया है, सुनते हैं ।"

"ऐं···? कालीचरन है कहाँ ?"

"मंगला देवी को कटिहार रखने गया है ।"

—मंगला देवी कटिहार चली गई । गाँव का चर्खा सेन्टर टूट गया ।···कटिहार में मंगला के, दूर के रिश्ते के, बहनोई रहते हैं । कालीचरन पहुँचाने गया है ।···'पाटी आफिस' में सुमरेन जी बोले—"सुनते हैं, तुम पर भी वारंट है ।"

"वारंट ?"

"हाँ, बासुदेव और सुनरा ने तुम्हारा भी नाम बताया है·····जरा होशियारी से घर लौटना ।"

"बासुदेव···? सुनरा···? बेईमान, झूठा !"

कालीचरन अँधेरे में···कोठी के बाग़ के पास छिपा हुआ है···जरा रात हो जाये तब घर जायेगा ।···बासुदेव और सुनरा को सोमा ने इतना आगे बढ़ा दिया ! उसको ताज्जुब होता है ।···डकैती के तीन दिन बाद ही कालीचरन को सब पता लग गया था ।···सिकरेटरी साहब को चुपचाप कहने के लिए 'पुरौनियाँ' गया वह, लेकिन सिकरेटरी साहब पटना चले गये थे ।···सिकरेटरी साहेब से सारी बातें कहनी होंगी !···चलित्तर कर्मकार से 'हेलमेल' बढ़ाने का यही फल है । हम पर बिसवास नहीं हुआ उनको तो—बासुदेव को 'चारिज' दिये कि चलित्तर से मिलते रहो ।··· बन्दूक पेस्तौल चलित्तर देता है ! काली को जेहल का डर नहीं, पाटी की कितनी बड़ी बदनामी हुई ?···अरे बाप ! पटना के बड़े 'लीडर' लोग को कैसे मुँह दिखलावेंगे ···। सब चौपट कर दिया ।·····कोई आ रहा है सायद ?

कोठी-बाग़ के पास ही अंधेरे में चेथरू से मुलाक़ात हुई । जड़ी उखाड़ने आया था ।···उसने बतलाया—गाँव में पुलिस-दरोगा 'कम्फु' लेकर आये हैं ।

कालीचरन ने चेथरू को दो रूपया दिया—"माँ को दे देना !··· और यह तुम लो एक रूपैया ।"

···जड़ी उखाड़ने के बदले चेथरू गाँव की ओर भागा ।····· 'फिरारी किरान्ती' को पकड़ा देने वालों को बहुत रूपैया इनाम मिलता है। तुरत ही उसने दारोगा साहब को चुपचाप ख़बर दी—"हम कालीचरन को कोठी के बगीचे में देखा है ।"···दारोगा साहब मिलिटरी लेकर जब तक आवें—कालीचरन 'पबन'[२] हो गया ।

चेथरू कहता है—"यहीं से पच्छिम की ओर 'हनहनाता' हुआ चला गया—घोड़पाड़ा की तरह ।"

खेलावन सिंह यादव बेचारे को फिर 'एक चरन' लग गया ।···इधर खेलावन जरा जादे 'हेलमेल' रखता था कालीचरन से । दारोगा साहेब ने कहा—"जरूर, डकैती का माल आपके यहाँ रहता है । आपने उन लोगों को 'चौखड़ा' घर बनवा दिया है । क्यों ?"

···लगता है, खेलावन सिंह यादव का 'दिन' अब 'घटती' पर है ।··· ···जब 'चढ़न्ती' पर रहता है किसी का दिन, तब वह माटी भी छू देगा तो सोना हो जायेगा ।···दिन बिगड़ने पर चारों ओर से खराब खबरें ही आती हैं ।···तहसीलदार साहेब का डेढ़ हजार 'मुहजुबानी' बाकी था ।··· कमला किनारे की बंदोबस्ती वाली जमीन में से दस बिघा सूदरेहन रख कर और भी एक हजार रूपैया तहसीलदार से लिया है खेलावन ने ।··· कल अररिया-बैरगाछी से खबर आई है— सकलदीप नानी का दस भर सोना चुरा कर न जाने कहाँ भाग गया है ।···सुनते हैं, मदनपुर मेला में एक 'ठेठर कंपनी' आई थी कलकत्ता से, उसमें एक 'लैला' थी । उसी ने सकलदीप को फँसा लिया है ।···जवान 'तड़-तड़' बहू घर में है । सकलदीप के ससुर आसिन बाबू तो बड़े आदमी हैं—खोज निकाल लेंगे !···खेलावन की स्त्री कहती है—"जिन पीर बाबा के 'दरघा'[३] पर घर नहीं है, वहाँ एक झोंपड़ी बनाने के लिए तीन साल से कह रही थी—आखिर नहीं बनाये । कालीचरन की बात पर 'फूच' हो गये, चौखड़ा घर बनवा दिया ।

·····दुहाई बाबा जिन पीर !···भूल-चूक माफ करो ।···मेरे बच्चा का मति फेर दो महतमा !!···सिरनी और 'बद्धी' चढ़ाऊँगी···एक भर गाँजा दूँगी ।"

मँहगू दास के यहाँ खलासी जी आये हैं ।···फुलिया के सारे देह में घाव हो गया है पैटमान जी के पास कई बार 'सँमाद' भेजा फुलिया ने । एतवारी बूढ़ा को उस दिन भेजा तो मालूम हुआ पैटमान जी की बदली हो गई—बथनाहा ! नेपाल सीमा के पास !!···चौकी खाट बगैरह सब बेच दिया है पैटमान जी ने ।···सरकारी नौकरी वाले की जब बदली होती है तो वह सभी चीजें बेच देता है । नई जगह में जाकर नई चीजें मिलती हैं । ···इसलिए क्या 'जलाना' को भी छोड़ देगा कोई ? खलासी जी ने सुना तो दौड़ आये हैं ।···कोई कुछ कहे, खलासी का कोई दोख नहीं ।···सारा दोख फुलिया का है ।···जो बेचारा इतना खरच करके तुमसे चुमौना किया, वह तुमको, 'अगोर' कर बैठा रहेगा तो चुल्हा कैसे जलेगा ? खलासी बेचारा दिन भर 'रेलवा लैन' पर काम करता था और इधर···पैटमान जी 'लैन क्लियर' देकर, गाड़ी पास करने के बाद फुलिया के यहाँ आकर बैठे रहते थे ।···आखिर, एक दिन लड़ाई झगड़ा, मारपीट करके फुलिया उनके यहाँ भाग गई । खलासी जी का इसमें क्या कसूर है ?···पाप भला छिपे ?···सारा देह गल गया है, मगर अभी भी 'होस' नहीं हुआ है फुलिया को ।···रमपियरिया उसके यहाँ रोज आती है और फुलिया 'फुसुर-फुसुर' करके उसको सिखाती है—महँथ से कोई चीज माँगने का कौन समय है ।···कैसे क्या कहना चाहिये ।

खलासी जी कहते हैं—"दुनियाँ भर के लोगों की गरमी की बेमारी आराम करें हम, और हमारी घरवाली इस रोग से भोगे ?·····तीन गोली में ही ठीक हो जायेगी तब एक बात है, गरमी निकलेगी तो एक अंग को लेकर—आँख, नाक, दाँत, अंगुली, इसमें कोई एक अंग 'भूठा' हो जायेगा !"

गाँव के बारे में खलासी जी कहते हैं—"गाँव में 'बनरभुत्ता' लगा

है। बंदर का भूत !···गाँव के गाँव इसी तरह साफ हो जाते हैं। कोई बन्दर मरा था इस गाँव में ?"

"ठीक बात !···एकदम ठीक !! डागडर बाबू तो तीन बंदर पालते थे। न जाने कौन सूई 'दिहिन' कि दोनों बेचारा 'केंकाते-केंकाते' मर गया। ·····रात भर 'किकियाया' था, याद नहीं ?"···

"ठीक बात ! ठीक बात ! एह ! यह डागडर ऐसा 'जुल्मी' आदमी था ! सारे गाँव को चौपट कर दिया।"

"कोई पर्वाह नहीं !"—खलासी जी कहते हैं—"हम रात में 'चक्कर' पूज कर, इस टोला को 'बाँध' देंगे। कुछ नहीं होगा।"

रमजू दास के गुहाल में 'चक्कर' पूजा है खलासी ने।···चावल, दूब और अड़हुल के फूल से चक्कर बनाया है—बीच में माटी का एक बड़ा सा 'दीया' है और उसमें एक बड़ी सी बत्ती जल रही है।···एक बोतल दारू धीकर खलासी जी बैठे है—रह-रह कर 'दीया' की जलती बाती को मुँह में ले लेते हैं।·····अरे बाप !! अलबत्त ओझा है—खलासी जी। अरे ! रे ! रे !!···जीभ में सुई गड़ा लिये—इस पार से उस पार !!

"अरे आजु के रैनि गे मैय।
"बड़ा अन्हकाल लागे
"दाहिने डाकिन, बामें पिचास बोले।
"हुँ···हुँ···हुँ···हुँ···हुँ !
"दोहाय गौरा पारबती इसर महादेव
"नैना जोगिन, जो सत से बेसत जाय
"···अंग अंग फूट बहराय !
"—फूत्···फूत !!"

"हिं-हिं-हिं-हिं···।"

"अब गाइये आपलोग 'गोचर' !"

—गाँव के 'भकतिया' लोग शुरु करते हैं।—मृदंग पर देवी का गीत गोचर।

धिधिनक् तिधिनक् !!

"कँहवाँ के-जे-आ-गे-मैया-आ-आ-"

खलासी जी—दीया की बाती को नचा रहे हैं और मुँह में ले कर बत्ती बुझाते हैं, फूँक मार कर 'भक्' से फिर 'दीया' जलाते हैं····· कबूतर को कच्चा ही चबा कर खा रहे हैं।·····असल ओझा हैं, खलासी जी !!

(१) चालाक। (२) हवा। (३) दरगाह।

—ग्यारह

"कमली के बाबू !···कमली के बाबू !—"

नींद में तहसीलदार साहब की नाक बहुत बोलती है—खुर्र-खुर-र !···कमला की माँ पलंग के पास खड़ी है। उसके चेहरे पर भय की काली रेखा छाई हुई है—"कमली के बाबू !"

"ऊँ-यें !···क्या है ?"

माँ धीरे से पलंग पर बैठ जाती है।·····तहसीलदार साहब और भी 'अकचका' जाते हैं—"क्या है ?"

"कुछ नहीं।"—माँ फिसफिसा कर कहती है—"कमला ने···कमला ने तो आँचल में दाग लगा लिया···।"

"आँ-यें ?···आँचल में ?"—तहसीलदार साहब को लगा कि कमला के कपड़े में आग लग गई है। कमला जल रही है !!

"हाँ,·····चार महीना !"

तहसीलदार साहब और माँ दोनों एक ही साथ लम्बी साँस छोड़ते हैं।

"हे भगवान !"

"अब क्या होगा ?"

"समझो !"

"कैसे पता चला ?"

"हम को तो पिछले महीने में ही थोड़ा संदेह हुआ था।···आज पूछने लगे तो चुप-चाप टुकुर-टुकुर मुँह देखने लगी।···डाक्टर ने तो खूब इलाज किया! अब मुँह पर कालिख जो लगी है, इसको कौन छुड़ावेगा ?

तहसीलदार साहब का मुँह सूख जाता है। आँखों के आगे भयावने दृश्य एक-एक कर आते जाते हैं—उनके मूँह में कालिख पुती हुई है, और···सभी लोग ताली बजा कर हँस रहे हैं; पीछे-पीछे दौड़ रहे हैं।

"हम पहले ही कहते थे···इतना हेलमेल अच्छा नहीं। आग और फूस एक साथ कब तक रहें ?···और तुम्हारी दुलारी पर तो मानो जादू कर दिया है डाक्टर ने। अभी भी कह रही है—डाक्टर ने कहा है···।"

"क्या कहा है डाक्टर ने ?"—तहसीलदार साहब तिनके का सहारा ढूँढ रहे हैं।

"साफ-साफ कहाँ कहती है कुछ। कहती है कि डाक्टर ने कहा है—जो होगा, मंगल होगा।"

"मंगल! हुंह-मंगल !!·····पाजी, सूअर, नमकहराम, कुत्ते का बच्चा, साला।—अब गले में रस्सी का फंदा लगा कर मरो कमला की माँ।···क्या करोगी ?"

"लेकिन हम सपथ खाकर कह सकते हैं···मेरी बेटी का इसमें कोई दोख नहीं·····।"—माँ रो पड़ती है—"कमली का कोई कसूर नहीं। डाक्टर ने फुसलाकर उसका सत्यानास किया है।"

कमली भी अपने बिछावन पर जगी हुई है। आज उसे बार-बार डाक्टर की याद आती है। डाक्टर का हँसना, बोलना, रूठना-झगड़ना, मीठी-मीठी बातें करना···और···बाहों में जकड़ कर···। उसकी आँखें भर-भर आती हैं। लेकिन, डाक्टर ने कहा है।—जो होगा—मंगलमय होगा।···यदि डाक्टर को 'दामुल हौज' हो जाये तब ?···माँ रोती क्यों थी ?···'महाभारथ' में कुन्ती, देवयानी, अहल्या, द्रोपदी···कौन ऐसी है जिसको·····? डाक्टर ने कहा है—हम दोनों को कोई अलग नहीं कर

सकता ।

"डाक्टर ने क्या कहा है ?"—तहसीलदार साहब, सुबह चाय पीते समय पूछते हैं—"पूछो कमला से साफ़-साफ़ ! डाक्टर ने क्या कहा है ।"

"कहती है, डाक्टर कहता था—हम लोगों को कोई अलग नहीं कर सकता !"—माँ धीरे-धीरे इधर-उधर देख कर कहती है ।

"सो तो समझा !"—तहसीलदार साहब का चेहरा फिर बुझ सा जाता है—"लेकिन, सवाल है कि वह तो जेल में है, अब क्या सजा होती है, सो कौन जाने ?···फिर, 'मरद' की बात का क्या ठिकाना ?···कमला के पास उसकी कोई चिट्ठी पत्तरी है ?"

तहसीलदार साहब क़ानूनची आदमी हैं—काग़ज़ पर आप के हाथ का 'क' भी लिखा रहे तो उससे वह सारी 'दस्तावेज़' ऐसी बना दें कि पटना का 'इस्पाट'[1] भी नहीं पहचान पाये कि असली है या जाली ।···

"चिट्ठी पत्तरी यदि होगी भी तो वह देगी नहीं ।···वह कह रही थी कि हमको 'गुदाम' घर में बंद रखो । लोग तो जानते ही हैं कि कमला बीमार है ।···तब तक डाक्टर आ जायेगा ।···लड़की की बातें सुन कर कलेजा 'थिर' नहीं रहता है । कहती थी—माँ अपराध के लिए आखिर कोई सजा तो मिलनी ही चाहिये । हमको घर में ही 'जेहल' दे दो !"

"इस्-स् !" तहसीलदार साहब का भी दिल 'कसक' उठता है—"कमला की माँ !···मेरी बेटी अब मेरे सामने नहीं आवेगी ?···क्यों ?··· एक बार उससे बात करना चाहता हूँ ।···तुम क्या कहती हो ?"

उफ़् ! कमला के चेहरे पर दिनों-दिन तेज आता जा रहा है । मुखमंडल चमक रहा है···लेकिन आज उसकी निगाहें नीची हैं । चुपचाप आकर पर्दे की आड़ में खड़ी हो जाती है ।

"दीदी !"

"·····"

"इधर आओ दीदी !···तुम्हारा कोई क़ुसूर नहीं बेटा !"

"बाबूजी !···मेरी सूरत मत देखिये ।···मुझे गुदाम में बंद कर

दीजिये !"—कमली रो पड़ती है। फफक्-फफक् कर !!

और कोई उपाय भी तो नहीं !

कमला कहती है—"लगता है कि यह डाक्टर नहीं 'जिन' है। एक बार गौरी मौसी ने 'जिन पीर' की कहानी सुनाई थी।"

"डर तो नहीं लगता ?"

"नहीं माँ ! डाक्टर अब मेरे पास हमेशा रहता है।···मुझे डर नहीं लगता है।···इस लिए मैं एकान्त में, अंधेरे में रहना चाहती हूँ।··· माँ ! डाक्टर का कोई क़ुसूर नहीं···वह सचमुच 'जिन' है।"

सुनते हैं कि 'जिन' जिस पर प्रसन्न हो—उसको तुरत कुछ-से-कुछ बना देता है। रुपया-पैसा, जगह-ज़मीन, तुरत ढेर लगा देता है। और 'जिन' जब लेने लगे तो धान के बखार के बखार में चूहे लग जायेंगे।··· तम्बाकू पर 'पत्थल' गिर पड़ेगा।···कोई बड़े 'सेसन-केस' में फँसना होगा।···तहसीलदार साहब हिसाब करके देखते हैं—डाक्टर जब से उसके परिवार में घुला-मिला है···रोज़ 'अलाये-बलाये' की आमदनी होती ही रहती है। जिस बात से सारे गाँव का नुक़सान हुआ, उसमें भी नफ़ा ही रहा तहसीलदार को। मुक़दमे में 'मुल्ले' फँस गये और इतना बड़ा सेशन-केस दूसरों के सर पर ही खेप लिया। अपने घर से तो एक पैसा गया ही नहीं ; ऊपर से पाँच हज़ार के क़रीब इसमें फ़ायदा भी हुआ। खेलावन, रामकिरपाल सिंह वग़ैरह की ज़मीन मिली सो मुफ़्त में ही।···कमला ठीक कहती है—डाक्टर 'जिन' ही है।

कमली ने एक सप्ताह बहुत मज़े में काट दिया ! कुछ किताबें पढ़ने को माँगी है—"विषवृक्ष, इन्दिरा, राजसिंह, आनन्दमठ, देवदास, श्रीकान्त, रंगभूमि, गोदान और···हरिमोहन बाबू की कन्यादान। बस, अभी इतना ही !···डाक्टर साहब की अलमारी में हैं किताबें।···हाँ, हाँ निकलवाइये। ···प्यारू से कहियेगा !"

गुदाम घर की ऊपरवाली खिड़कियों से चाँद झाँकता है।···शरत् की चाँदनी ! चाँद बादलों में छिप जाता है !···माँ दुर्गा के आने की

सूचना मिल गई है। इस बार देवी किस चीज़ पर चढ़ कर आवेंगी···बाबा से लिखकर पूछना होगा···।···ज़रूर हाथी पर आई होंगी !···जिस बार हाथी पर आती हैं म ···।

(१) हैण्ड राइटिंग एक्सपर्ट। (२) इधर-उधर की।

—बारह

जै ! दुरगा माता की जै !!

चम्पापुर के कुमार साहब ने इस बार फिर बड़े-बड़े पहलवानों को बुलाया है !···कुश्ती, शिकार, संगीत और साहित्य सबों का एक सम्मिलित 'पीठस्थल' रही है, चम्पापुर की ड्योढ़ी ! ···

बूढ़े राजा के समय की बात जाने दीजिये। अभी भी कुछ कम नहीं। ···विश्व-कवि रविन्द्र ने जिस ड्योढ़ी की साहित्य-गोष्ठी में अपनी प्रसिद्ध रचना 'राजारानी' की आवृत्ति की है। जहाँ की संगीत-मंडली में पूरे एक सप्ताह तक फ़ैयाज़ ख़ाँ की अमर स्वर-लहरी लहरा चुकी है।···बूढ़े राजा ने शिकार पर कई किताबें लिखी हैं···।

···पंजाबी पहलवान मुश्ताक़ का चेला "चाँद" आया है इस बार ! जमेगा !···कालीचरन बनमंखी के पास एक गाँव में है। दूर के रिश्तेदार बहुत चालाक आदमी हैं, उसका नाम बदल दिया है—रुस्तम ख़ाँ !··· लोगों से कहता है रुस्तम ख़ाँ तम्बाकू का दल्लाल है—'पूबा'[1] है।···कल चाँद अखाड़े में जाँघिया लगाकर उतरा, मगर सुनते हैं कि कोई जोड़ा ही नहीं मिला।···कालीचरन ऐंठ जाता है। वह जायेगा···ज़रूर-ज़रूर !!

···चम्पापुर मेले का दंगल है बाबू।···देखने वालों पर कभी-कभी ऐसा जोस सवार होता है कि आस-पास के लोगों में 'धुक्कधुक्की' सुरू हो जाती है।···सिपाहीजी लोग छड़ी नहीं चमकाते रहें···तो हर साल एक दो आदमी दब कर मर जाये !—

···आज भी चाँद जाँघिया लगा कर घूम रहा है। कालीचरन भीड़ में से देखता है—'वाह! बलिहारी दोस्त! खूब सरीर को बनाया है। बलिहारी है दोस्त!!'

···ऐं? आज भी चाँद का जोड़ा नहीं मिला?···जै-जै! दुरगा माई की जै। जोड़ा नहीं मिला! जै!!

भेंपों-भेंपों-भें-भें···! पों-पों-पों!!

चटाक-चट-धा···! चट-धा-गिड़-धा!!

"अ···ज-ज-जा! आ-आली!!"—हाफ क़मीज और पाजामा फाड़कर चित्थी-चित्थी करते हुये कालीचरन मैदान में उतर पड़ता है!

"ऐ! ऐ!! पागल है···मारो-मारो!"

"नहीं जी!···जाँघिया है अन्दर में।"

···अरे! वाह! यह तो असल जोड़ा है।···कौन है?···अखाड़े में उतरने का ढंग ही कुछ ऐसा है कि सबों की आँखें चमक उठती हैं।··· सभी कुमारों की निगाहें आपस में मिलती हैं—'हाँ, यही है चाँद की जोड़ी!'

"मंडल जी नाम-गाम पूछकर जल्दी से कुस्ती सुरू करवाने का हुकुम दे रहे हैं।"

सभी बाजे-गाजे अचानक थम गये हैं।···क्या हुआ? कुस्ती होगी या नहीं? पहलवान मुस्ताक अली हाथ जोड़ कर क्या कह रहा है, बड़े कुमार, साहेब से?···क्या नाम कहा?···रुस्तम अली? जोगबनी का। मो-रंगिया है?···नहीं नहीं 'देसिया' ही है।···वाह! अलबत्त जोड़ा है।

चटाक्-चटधा! चटधा-गिड़धा!!

"अरे वाह रे उस्ताद! ले-ले-ले···बच गया।···अरे यह तो बिजली है—बिजली।"—चाँद नाच रहा है।···यह पंजाबी पैंतरा है।···रुस्तम चुपचाप मुस्कुरा रहा है···'मंगला···उस्ताद! आज की बाजी यदि हार गये तो समझेंगे कि 'मंगला' को छूना पाप हुआ है!···यदि जीत गये तो···यही परीच्छा है मेरी!···चाँद को क्या ऐब लगा दिया

है उसके गुरू ने ?···इतना पागल होकर टूटता क्यों है ?···काली··· रुस्तम मुस्कुरा कर एक छोटी दुलकी लेता है, चाँद ने अचानक ही फिर हम्ला किया।

"अ-ज-जा !···भैया यह रुस्तमवाँ भी तो कमाल है। कोई जादू जानता है क्या ? हाँ,···चाँद को मालूम हो गया होगा।"

"नहीं जी, कहाँ पंजाबी और कहाँ देसिया !"

···कहीं दारोगा साहेब तो देख नहीं रहे हैं ?···क्या ठिकाना।···खेल दिखाने का समय नहीं।···जल्दी फैसला हो जाना चाहिये···।

"अरे-ला-ला-रा-जा हा-हा···हा हो-हो-जै-जै !!"

पीछे वाले उचक-उचक कर देखते हैं। पास के पेड़ की एक डाली टूट गई।···क्या हुआ ?···साफ ?···कौन ?—उड़ गज के एक छोटे से चक्कर में रुस्तम घूमा और चाँद को आसमान दिखा दिया।

"कहाँ गया ? ···रुस्तम कहाँ गया ?"—बड़े कुमार साहब भाव-विह्वल होकर पुकार रहे हैं। शक्ति का पुजारी खोज रहा है—"रुस्तम !··· भीड़ को हटाइये। रुस्तम कहाँ गया ?"

···लगता है, जौहरी को क़ीमती पत्थर हाथ लग गया है। नहीं, नहीं···हाथ में आते-आते खो गया ?···कहाँ गया ?···

रुस्तम लापता हो गया !

···बहुतों ने कहा—चलित्तर कर्मकार ही नाम बदल कर आखाड़े में उतरा था। चलित्तर को सुनते हैं—'लाल धूजा'—हनुमानी झंडा का ···महातम मिला है—वह कहीं हार ही नहीं सकता है।

मेला में 'लाल फाहरम' बाँट हुआ है। लिखा है—"कम्यूनिस्ट पार्टी के 'लाल झंडा' को बुलन्दी से ढोनेवाले चलित्तर कर्मकार के ऊपर से वारंट हँटाओ।"

···कालीचरन बनमनकी के रिश्तेदार के यहाँ से फ़ारबिसगंज की ओर चला जाता है।···सिकरेटरी साहब उससे नहीं मिलना चाहते हैं। लेकिन, वह मिलेगा।···सुनते हैं—सिकरेटरी साहब ने कहा है—कालीचरन

वगैरह पाटी के मेम्बर नहीं—किसान सभा के दुअनियाँ मेम्बर हैं।··· मिल कर वह सारी बातें समझावेगा। उस रात वह पाटी आफिस में था। ···धरमपुरी जी से भी भेंट नहीं हुई 'बम्बे' गये हैं।···कालीचरन अपनी पूरी 'सफाई' देकर ही 'हाजिर' होगा।

"अरे! तुम!···काली!"—मंगला डरते-डरते संभल गई—"क्या डफ़ाली मियाँ की तरह सूरत बनाई है!···अंदर आ जाओ।···कोई डर नहीं। अकेली हूँ।"

कालीचरन मंगला से मिलने आया है—अचानक!

कालीचरन को एक पुराने रेलवे क्वाटर के अन्दर वाले कमरे में बैठाकर मंगला लोटा गिलास लेकर पानी के कल पर चली जाती है।··· कालीचरन देखता है—चर्खा है धुनकी भी है। खाट पर कम्बल के ऊपर सफ़ेद खादी की चादर है।···उसकी आँखों में ख़ुमारी है। रात भर बैल-गाड़ी पर जगा ही रह गया है। ···रेल पर भी ऊपर वाली 'तखती' पर लेटा आया है।···लोटा-गिलास चकमक करता है। ठंढा पानी!··· नीबू का शरबत!

मंगला गिलास बढ़ाते हुये मुस्कुराती है—"मैं तो डफ़ाली मियाँ ही कहूँगी। रुस्तम अली तो जोगबनी मिल का बूढ़ा सरदार है।"

कालीचरन हाथ में गिलास लेकर मंगला की ओर टकटकी लगाकर देखता है—मंगला कितनी दुबली हो गई है। रंग भी ज़रा 'चरका' हो गया है!

"ख़बरदार! हेन्डसप्!"

खट-खट-खट-खट-!

···दारोगा साहब पिस्तौल ताने खड़े हैं। आठ दस सिपाही बंदूक़ की नली को इस तरह ताने हुये हैं, मानो 'फ़ैर' कर देंगे।

"दारोगा साहेब!—पानी पी लेने दीजिये!" मंगला को थाना-पुलिस का क्या डर?

"आप···तुम···कौन हो इसकी?···तुम क्या करती हो?···तुम को

भी गिरफ़्तार किया जाता है।"

"दारोगा साहब इनको पानी पी लेने दीजिये।"

मंगला अपना सर्टिफ़िकेट देखने देती है।

"ओ!···आप चर्खा-सेन्टर की महिला हैं—" दारोगा साहब मंगला के सर्टिफ़िकेट को देखकर छोड़ देते हैं।

"हाँ, मेरीगंज में काम करती थी। जान पहचान थी, एक साथ काम किया था।···इसीलिए!"

"नोच लो इस साले की दाढ़ी! तेरी माँ को···।"

"आह!"—मंगला झट से दरवाज़ा बन्द कर लेती है।

ऊपर से बन्दूक़ के कुन्दे झड़ रहे हैं काली के कन्धे पर! वह···शरबत की डकार लेता हुआ 'पुलीस-लौरी' पर जा बैठता है···कातिक महीने के कागज़ी नीबू में कितना सुगन्ध होता है।···सर से झर-झर ख़ून गिर रहा है। लेकिन, उसका सारा शरीर 'संतुष्ट' है—शून्य है।

···दारोगा साहब उसके मुँह में हंटर डालते हुये कहते हैं—"साला! ···मर जायेगा मगर नहीं क़बूलेगा···ठीक सोमा साला भी ऐसा ही है।···अरे!···चलित्तर करमकार तेरी मा का भतार है? है न?

···कालीचरन के हाथों की हथकड़ी एक बार 'झनक' उठी।··· घायल पुट्ठों में एक नया दर्द उभर आया, आँखों में ख़ून उतर आया। ···लेकिन नहीं! उसकी पाटी बदनाम हो रही है।···वह सब कुछ सहेगा।

"भेज दो साले को!···बासुदेवा और सुनरा तो दो ही थप्पड़ में 'बक-बक' उगलने लगा।···उन दोनों को क्या है? सरकारी गवाह हो गये हैं। रिहा हो जायेंगे दोनों।···मरेगा यही दोनों।·····डकैती 'विथ मर्डर'!"

नीबू का शरबत!···ढकार अभी भी आ रही है कालीचरन को।

"···मंगला! मुझे माफ करना!"

(१) पूरब का, बंगाल के व्यापारी जो गाय-बैल, भैंसा-पाड़ा ख़रीदने आते हैं।

—तेरह

बालदेव जी 'रामकिसुन आसरम' बहुत दिनों बाद आये हैं।··· एकदम बदल गया है आसरम! लोग भी बदल गये हैं। थोड़ा 'चालचलन' भी बिगड़ गया है आसरम का। अब तो लोग मछली और अंडा भी चौका ही में बैठ कर खाते हैं। अमीन बाबू सिकरेटरी हुये हैं। कहते हैं—"मछली मांस आश्रम में न तो बनाया-धोया जाता है और न चूल्हे पर पकता ही है। लोग शहर से पका-पकाया ले आते हैं, खाते हैं। इसमें हर्ज ही क्या है?"

"हरज क्या है?"—बालदेव जी हक्का-बक्का होकर अमीन बाबू का मुँह देखते हैं—"लेकिन···पहले तो आसरम के हाता में भी नहीं आता था।"

"यह जो नया रसोई घर बना है, वह आश्रम की जमीन में नहीं, कुबेर साह की जमीन में है।···अब तो आप जगह-जमीन वाले आदमी हो गये, खाता-खतियान, नक्शा-परचा देखना तो जरूर सीखे होंगे।··· जाइये, जाकर कचहरी में 'नक़ल-निकास' करवाकर देख लीजिये। समझे?" —फ़ारबिसगंज के 'नवतुरिया' नेता छोटन बाबू कहते हैं।

बालदेव जी 'कटमटा' कर उनकी ओर देखते हैं···छोटन? फारबिसगंज का यह लुच्चा लौंडा हर बात में 'फुच-फुच' करता है। अमीन बाबू के साथ दिन रात रहता है न, इसलिए 'मुँहजोर' भी हो गया है। ···झूठा तो नम्बर एक का।···फारबिसगंज का नाम 'फरेबगंज' करेगा यह, इसमें कोई संदेह नहीं।

"छोटन बाबू! खाता-खतियान, नक्सा-परचा देख कर हम क्या करेंगे? रामकिसून बाबू के जमाने में···।"

"रामकिसून बाबू का जमाना रामकिसून बाबू के साथ चला गया।" —छोटन बाबू का 'टंडेल-मोलटियर'[1] मटरा भी बोलता है?—"यह काँग्रेस आफिस है, बाबा जी का 'मठ' नहीं।"

बालदेव जी की 'अकिल' गुम हो रही है !

खैनी से सड़े हुये दाँतों को निकाल कर मटरा हँसता है। फिर, मटकी मार कर कहता है—"कबिराहा में तो 'सब धन साहेब का' ही होता है। ···खँजड़ी बजाना सीखे हैं या नहीं !"

"हा—हा—हा—हा"—सभी ठठा कर हँस पड़ते हैं।

चन्ननपट्टी का सूदर कहता है—"बालदेव ! अब अपने गाँव में आओगे तो 'जतियारी भोज' से पकड़ कर उठा दिये जाओगे।"

"बालदेव मेरीगंज का 'एकान्ती-मजा' छोड़ कर गाँव क्यों जायेगा। ···अंधों में काना बन कर मौज कर रहा है।"

"हा—हा—हा—हा—हा—हा !!"

बालदेव जी की आँखों में आँसू आ जाते हैं···यदि 'दोरिक सरमा' नहीं आ जाते तो वह फूट कर रो पड़ता। 'सरमा' ने आते ही कहा—"क्या है, क्या है ?···बालदेव जी को तुम लोग क्यों चिढ़ाते हो ?"

"चिढ़ाते कहाँ हैं। हम लोग 'सतसंग' करते हैं।"—छोटन बाबू हँस कर बोले।

'सरमा' ने पास की खाली कुर्सी पर बालदेव जी को बैठाते हुये कहा—"बालदेव जी ! यहाँ बैठिये, हम जवाब देते हैं।···सतसंग की बात कहते हैं छोटन जी ? यह बालदेव, दोरिक शर्मा, नेवा लाल, फगुआ, सहदेवा, बौनदास, उजागू, चुन्नी दास, पिरथी, जगरनथिया, छेदी, गंगाराम वगैरह के 'सतसंग' का ही फल है कि आपके जैसे 'लाल' पैदा हुये हैं।···अभी 'चेयरलेट' गाड़ी पर लांडरी सीख रहे हैं आप ? आप क्या जानियेगा कि सात-सात दिनों तक भूखा फाँक कर, सौ-सौ माइल पैदल चलकर, गाँव-गाँव में काँग्रेस का झंडा किसने फहराया ? 'मोमेंट' में आपने अपने स्कूल में, पंचम जारज का फोटो तोड़ दिया, हेडमास्टर को ऑफिस में ताला लगा कर कैद कर दिया—बस आज आप लीडर हो गये।···यह भेद हम लोगों को मालूम रहता तो हम लोग भी खाली फोटो तोड़ते।···गाँव के जमींदार से लेकर थाना के चौकीदार-दफादार जिनके बैरी ! कहीं-कहीं गाँव

वाले दल बाँध कर हमें हड़काते थे, जैसे 'मुड़बलिया'[२] को लोग सूप और 'खपरी' बजाकर हड़काते हैं।—आप नहीं जानियेगा छोटन बाबू! आपका जन्म भी नहीं हुआ था। उस समय आपके बाबूजी दारू की दूकानों की ठेकेदारी करते थे।···हम लोग उनकी गाली सुन चुके हैं।·····क्या बालदेव! याद है?···वही कटफर भट्ठी की बात?"

गूदर तुरत रंग बदलना जानता है·····वह भी तो 'नीमक कानून' के समय से ही झोला टाँग रहा है——"सरमा जी! गिधवास हाट पर·····।"

"चुप चोट्टा कहीं का!"—शर्मा जी डाँटते हैं—"जिधर चाँद उधर सलाम!—बालदेव जी को सभी मिल कर चिढ़ाता था क्यों रे?···बालदेव जी जरा साफ कपड़ा पहनने लगे हैं; 'एरवदा चक्र' खरीदे हैं; चेहरा-मोहरा पहले से जरा चिकना लगता है; पास में पैसा है; इसीलिये तुम लोगों का कलेजा जल रहा है।···चलिये बालदेव जी, गांगुली जी के यहाँ, हम भी बहुत दिनों से नहीं गये हैं।"

"अभी मिटिन जो है।"—बालदेव जी कहते हैं।

"अरे, आप भी तो बालदेव जी सब दिन एक ही समान रह गये।··· मिटिंग में रह कर क्या कीजियेगा? फारबिसगंज वालों का 'कजिया' फैसल होने वाला है?···खुशय बाबू एक घोड़ा गाड़ी में भर कर कागज-पत्तर, फाइल-रजिस्टर, भौचर, 'डिबलूकट' और मुकदमों के कागज ले आये हैं। उधर फगुनी सिंघ भी एक सौ आदमी को 'भँजा' कर ले आये हैं।···आज रात भर खूब 'घमाघम' होगा। चलिये, क्या देखियेगा 'राँड़ी-बेटखौकी' का झगड़ा?"

बालदेव जी दोरिक शर्मा के साथ चले गये तो गूदर ने आँख-टीप कर फिसफिसाके कहा—"अरे! गांगुली जी के यहाँ जाता है थोड़ो! जा रहा है 'तिरपित भंडार' में, अभी बालदेव को चोट पर चढ़ावेगा। रसगुल्ला झाड़ेगा।"

छोटन बाबू कहते हैं—"अमीन बाबू से कहना होगा। मेरीगंज में

अब बालदेव से काम नहीं चलेगा। चर्खा—सेन्टर को चौपट कर दिया! घर-घर में सोशलिस्ट घरघराने लगे।···अभी तो सब डकैती केस में ऐरेस्ट हैं।···उस गाँव का डाक्टर 'कौमनिस्ट' था, वह भी ऐरेस्ट है।····· उसको तो हम्हीं ने एरेस्ट कराया है। कटहा का नया दारोगा हमारा क्लास फ्रेन्ड है।"

"लीजिये! एक 'बरमगियानी' गये तो दूसरे 'कठपिंगल जी' आ रहें हैं।···यह तो आज कल और भी काबिल हो गया है।" —

बावन दास जी आ रहे हैं।···आश्रम के बूढ़े कुत्ते "बिलेकपी" (ब्लैक प्रिंस) ने बावन दास को दूर से ही पहचान लिया है। अशोक गाछ के नीचे वह इसी तरह लेटा रहता है और हर आने-जाने वाले को देखता है। बावन दास को देख के कान खड़ा कर, गर्दन उठा कर देखता है। दुम भी हिला रहा है।···'ससाँक जी' ने इस कुत्ते का नाम रखा था— 'ब्लैक प्रिंस'!···सोशलिस्ट पार्टी के जिनगारी जी ने 'लाल पताका' में, जिला के एक मारवाड़ी को 'ब्लैक प्रिंस' लिखा था।·····अर्थात—जो 'ब्लेक' करने में मशहूर हो। चूँकि माड़वारी एकदम नौजवान था इसलिए प्रिंस' लिखा था। माड़वारी ने मुक़दमा ठोक दिया था कि 'लाल पताका' के संपादक ने उसे कुत्ता कहा है।···'बिलेकपी' ने ठीक पहचाना है।··· बावन दास जी भी अशोक की छाया में, 'बिलेकपी' के पास आकर बैठ गये।···अहा···हा!···प्यार का भूखा 'बिलेकपी'! खुशी से उछल कूद कर, दौड़ कर कभी बावन दास जी की झोली दाँत से पकड़ कर खींचता है, कभी लाठी लेकर भागता है! अ-हा-हा!

"अ-हा-हा! बिलेकपी रे!···बाल झड़ रहें हैं।···पहले तो रविवार को निरजला-अनसन करते थे। तुम दूध-हलुवा भी नहीं सूँघते थे।··· सुनते हैं आजकल मुर्गा की हड्डी चबाते हो?···तुम्हारा क्या कसूर भैया! ···घाव भी हो गया है।···बदमासी मत करो। झोली में क्या है जो देंगे?···जाओ झोली में कुछ नहीं है!"

"काऊँ-काऊँ-क्यूँ"—बिलेकपी धरती पर चित्त होकर लेटा हुआ—

'काऊँ म्याँऊ' कर रहा है और बावन दास की झोली को दाँत से खींचता है।

बावन दास जी धीरे से झोली से एक कागज की पूड़िया निकालते हैं। बिलेकपी और भी जोर-जोर से 'काऊँ-माऊँ' करने लगता है।···उसकी यही आदत है। बावन दास जब आता है—उसके लिए एक आने का 'मंडा' खरीदता आता है।···दस साल से मंडा खा रहा है बिलेकपी। ···अब एकदम बूढ़ा हो गया।···बावनदास एक टुकड़ा 'मंडा' उसे देता है। बिलेकपी चट से खाकर मुँह देखता है बावन दास का।

"अब क्या लेगा ? अंडा ?"

(१) किसी नेता का व्यक्तिगत नौकर जिसका दरमाहा काँग्रेस से मिलता है।

(२) बिना सर का एक प्रेत; कहा जाता है, दलबांध कर गाँव में परेड करता हुआ जाता है।

—चौदह

तहसीलदार साहब अपने नये दोमंजिले की छत पर बैठ कर देखते हैं—धान के खेतों में अब धानी रंग उतर आया है। बालियाँ झुक गई हैं। पचीस दिन कार्तिक के बीत गये हैं।···'अखता' धान की अब कटनी शुरू हो जायेगी।···चारों ओर तहसीलदार साहब की जमीन ! पूरब ···वह जो ताड़ का पेड़ दिखाई पड़ता है कमला के उस पार—वहाँ तक, और उत्तर···बूढ़े बरगद तक। दक्खिन में, संथालों की जमीन दखल करने के बाद—पिपरा गाँव तक तहसीलदार के पेट में चला आया है। ···घर के पच्छिम—ततमाटोला के पास पचास एकड़ जमीन की एक ही 'जमा' है। खजाना लगता है—सिर्फ दस रुपया।···तहसीलदार साहब के बाप ने भी इस 'जमा' को दखल करने की 'हरचंद कोशिश की थी, मगर गोटी नहीं बैठी ! तहसीलदार साहब ने भी अपनी तहसीलदारी के समय

बहुत 'क़लम' चलाई, लेकिन, तुम 'कैथ' तो वह भूमिहार ! वह ज़मीन धरमपुर के भैरो बाबू की है।···तहसीलदार साहब की आँख की किरकिरि वह ज़मीन ! इस दोमंज़िले की छत पर बैठने से ज़मीन की भूख और तेज़ हो जाती है।···लिखा-पढ़ी, दलील-दस्तावेज़ मरम्मत से लेकर, अकेले में बैठ कर, तरह-तरह के 'पैन्ट'[1] भी यहीं सोचते हैं वह।···नीचे उतरते ही उनका चेहरा बदल जाता है। तब, पोखर में स्नान करने से लेकर भोजन पर बैठने तक वह न जाने कौन 'शास्तर' का 'मंतर' बुदबुदाते रहते हैं—ओं-ग-मिरिंग···शिवा···आ···य। ओं-ग-मिरिंग··· !!

रोज खाने के समय तहसीलदार साहब धीरे से पूछते हैं—"दीदी कैसी है ?"

"आज बहुत खुस है तुम्हारी बेटी।"

"सच ! कमला की माँ। रात तो मुझे नींद ही नहीं आई।"—तहसीलदार साहब जिस दिन खाने के समय खुश हुये, उस दिन जो भी सामने, जला-पका, मीठा नमकीन, रहा सब खा जाते हैं।

अभी कहती थी कि 'इन्दिरा' को उसका स्वामी मिल गया।···बहुत खुस है।"

"पगली !"—तहसीलदार साहब हँसते हैं।

बात यह हुई कि रात को अचानक कमला के कमरे से रोने की आवाज़ आई !···कमला हिचकियाँ लेकर रो रही थी।···माँ को तो 'जड़ैया-बुखार' की तरह कँप-कँपी लग गई। तहसीलदार साहब की आँखों से आँसू की झड़ी लग गई। माँ ने अपने को बहुत संभाल के पूछा—क्या है बेटी ! क्या हुआ ?···बोल कमल ! कमली ! बेटी !!···बोल बेटा !···मैना मोरी !"

"माँ ! मैं अपने लिए नहीं रोती हूँ।···यह···देखो न।···इन्दिरा के लिए···।"—कमला कहते-कहते फिर हिचकियाँ लेती है।

"कौन इन्दिरा ?···कौन है वह ?"

"···कौन इन्दिरा ?···हाँ, तुम क्या जानो ! माँ, इस किताब की

'इन्दिरा' के लिए रो रही हूँ।···बेचारी पहले-पहल ससुराल जा रही थी —डोली पर चढ़ के। मन में कितने मनसूबे बाँध कर दुलहिन इन्दिरा ससुराल जा रही थी। एक पुराने तालाब के किनारे डोली रुकी।···वह पोखर 'बिजूबन-बिजूखंड' जैसे एक जंगल के पास ही था। बहुत 'खुनियाँ' जगह थी। इसीलिए साथ में सिपाही लोग थे। लेकिन, 'इन्दिरा' को डकैत लोग डोली सहित उठा कर ले गये। दिन दहाड़े डकैती हो गई।····· लेकिन, माँ···उसकी सबसे बड़ी चीज़ बच गई है···उसकी इज़्ज़त!····· अभी वह उसी 'बिजूबन-बिजूखंड' जैसे घोर जंगल में है···माँ!···बेचारी इन्दिरा!"

कमला, बंकिम बाबू की पुस्तक 'इन्दिरा' पढ़ कर रो रही थी।··· आज वह ख़ुश है।···इन्दिरा को उसका स्वामी फिर मिल गया।

तहसीलदार साहब कहते हैं—"यह पागलपन नहीं कमला की माँ! ···बेटी मेरी बड़ी समझदार है।···मोम का कलेजा है।···बाबा विश्व-नाथ! मंगल करना!!"

"कल डाक्टर से भेंट किये या नहीं?" माँ पूछती है।

"हाँ, रात में तो सुना ही नहीं सका। बड़ा झंझट का काम है। दर्ख़ास्त दिया तो पूछा कि डाक्टर आपके कौन हैं। मैं क्या जवाब दूँ।··· कहा, कोई नहीं। बस, नामंज़ूर कर दिया दर्ख़ास्त। किरानी बाबू बड़े भले आदमी थे। वे बोले कि डाक्टर साहब नज़रबन्द हैं, इसलिए वे सिर्फ़ माँ, बाप, स्त्री और बहन से ही ख़त-किताबत कर सकते या मिल सकते हैं। ···क्या क़ानून है! बहन को चिट्ठी दे सकते हैं—बहनोई को नहीं। स्त्री से भेंट कर सकते हैं, लेकिन साथ में ससुर रहे तो वह बेचारा अपने जमाई का मुँह भी नहीं देख सकता!"—तहसीलदार साहब मुँह धोकर, बग़ल की कोठरी में जाते-जाते कहते हैं—"प्यारू वहीं पूर्णिया में ही रहता है। एक होटेल में खाता-पीता है जेल के अन्दर से ही डाक्टर ने गनेश का इन्तिज़ाम कर दिया है—'बरमो-समाज' मन्दिर में। हर महीने दस्तख़त करके 'चिक' भेज देता है डाक्टर! प्यारू और गनेश के नाम से अलग-

अलग 'चिक' देता है···जो भी कहो, आदमी बहुत अच्छा है यह डाक्टर !···प्यारू कहता था, एक दिन वह दूध के ठीकेदार के साथ अंदर चला गया। अंदर जाकर, फाटक के पास ही, डाक्टर साहब से भेंट हो गई। डाक्टर साहब जेल आफ़िस में आ रहे थे। प्यारू को देखकर अकचका गये डाक्टर साहब।···फिर कहा, क्यों आये ?···प्यारू ने कुछ जवाब नहीं दिया तो पूछा—मेरीगंज से कब आये हो ? कमला···कैसी है ?

"एँ ? पूछा ? डाक्टर ने पूछा था ?···प्यारू ने क्या जवाब दिया ?"—कमला की माँ एक ही साँस में, उतावली होकर पूछती है—"न जाने क्या बता दिया उसने ?"

"नहीं, प्यारू बेवक़ूफ़ नहीं है। जवाब दिया—अच्छी है। आपका फ़ोटो ले गई है, रोज सुबह उठ कर देखती है।"

"अच्छा ?···कहा उसने ? कितना होशियार है प्यारू ! आ-हा-हा ! भगवान भी कैसे हैं ? कोई नहीं है बेचारे को।···तब डाक्टर ने क्या कहा ?"

"कहता था, हँसते-हँसते चले गये।"—तहसीलदार साहब ने मुँह में पान डाल लिया।···अब बात 'फुरा' गई !···

मारे खुशी के कमला की माँ भरपेट खा भी नहीं सकती है ! माँ-बेटी साथ ही खाती हैं रोज। आज कमला बार-बार टोकती है—"माँ खाओ भी, पुरैनियाँ की कथा पीछे होगी।···बलैया मेरी किसी का फ़ोटो देखेगी !"

आज से माँ बैठ कर 'उपनियास' सुनेगी। कमला फिर शुरू से 'इन्दिरा' पढ़ कर सुना रही है। कमला कहती है—माँ, शकुन्तला, सावित्रि आदि की कथा पढ़ने में मन लगता है, लेकिन 'उपन्नियास' पढ़ते समय ऐसा लगता है कि यह देवी देवता, ऋषि-मुनी की कहानी नहीं,···जैसे यह हम लोगों के गाँव घर की बात हो।"

आज दो दिनों से खाने पीने के बाद कमला के गर्भ में पलता हुआ शिशु हाथ-पाँव फड़काता है। लाज से वह कुछ कहती नहीं है माँ को।

···लेकिन जब से उसे आने वाले की आहट मिली है, कमला का मन किसी दूर देश में खो सा गया है। ···एक ही साथ बहुत से बच्चों के मुखड़े खिलखिला उठते हैं उसकी आँखों के आगे! बच्चे उसके साथ आँख मिचौनी खेल रहे हैं। कौन है वह?···सभी प्यारे! ताज़े कमल की तरह खिले हुये···वह किसका हाथ पकड़े?···वह एक चंचल बालक को उठाकर गोद में ले लेती हैं। कितने कोमल हैं उसके हाथ-पैर। कैसी मीठी मुस्कुराहट! कितना चंचल?···मेरा···चुलबुला राजा रे!···कमला की छाती से दूध झरने लगते हैं।

"कमला की माँ!" तहसीलदार साहब दोमंजिले की कोठरी से पुकारते हैं।—"ज़रा इधर आना कमला की माँ!"

दोमंजिले पर पैर रखते ही तहसीलदार साहब की बुद्धि, उनके विचार, उनकी 'बोली—बानी' सब बदल जाती है।···जबड़े की हड्डियाँ ख़ुद-ब-ख़ुद चलती रहती हैं, मानो कोई चीज़ चबा रहे हों!

"कमला की माँ!···मैं अब फाँसी लगा कर मर जाऊँगा। मुझे नींद नहीं आती है।···क्या होगा? कुछ सोचती हो?···कोई उपाय?··· दुश्मन को भी ये दिन कभी देखने न पड़ें!···तुम तो अब दिन-रात बेटी के पास रहती हो, मेरा जी अकेले में घबराता है।···तुम्हारी नागिन बेटी ने ऐसा डँसा है कि···।" तहसीलदार साहब आवेश में आकर खड़े हो जाते हैं।

"छिः!···कमला के बाबू!···कैसी बातें करते हो?"

"चुप रहो तुम!···तुम दोनों ने मुझे···। हट जाओ!"

"कमला के बाबू! बैठ जाओ! चिल्लाओ मत। लड़की सुन लेगी।"

"सुन लेगी! ···हूँ, बड़ी लाट साहब की बेटी आई है!"

"कमला के बाबू!"

"चौप!"

बूढ़ी नौकरानी आकर कहती है—"चाह पीये ले बजबै छथिन दाय ···नीचाँ!"

"चलो !"

कमला अब भी रोज़ दोनों वक़्त अपने हाथों से चाय बनाकर भेजती है अपने बाप को !···कमला कहती है—"बाबा एक सौ प्यालियों के बीच, सिर्फ़ रंग देखकर, मेरी बनाई हुई चाय पहचान लेंगे।"

नीचे के कमरे में बैठकर, चाय की प्याली में चुस्की लेते ही तहसीलदार साहब की तनी हुई रगें ढीली पड़ जाती हैं। चेहरा स्वाभाविक हो जाता है।

"सेबिया को रजाई भरवा दो इस बार !···नहीं तो बूढ़ी इस जाड़े में गठिया से नहीं उबर सकेगी।"—तहसीलदार साहब कहते हैं।

"तुम्हारी बेटी तुम्हारे लिए ऊनी गंजी बिन रही है।·····किताब खोल कर सामने रख लेती है। दोनों हाथ में 'सलाई' लेकर किताब में देख-देख कर जब बिनने लगती है कमला—तो लगता है हाथ नहीं 'मिसीन' है।"

"सच ?···अहा ! बेचारी···! मेरे जैसे अभागे के घर में जन्म लेकर बचपन से दुख ही दुख भोगती आ रही है दीदी मेरी···कमला की माँ, तुमको याद है···जब सिर्फ़ एक साल की थी कमला, उसी समय मैं ने कहा था कि मेरी बेटी 'संतोख' की पुतली बन कर आई है।"

सेबिया हँसती हुई अधूरा स्वेटर ले आती है।

"यही देखो !"—माँ हाथ में लेकर दिखलाती है— "अपनी बेटी की कारीगरी देखो !"

तहसीलदार साहब मुस्कुराते हुये देखते हैं, फिर सेबिया को इशारा करते हुये कहते हैं—"यह तो बहुत बड़ा होगा मेरे देह में। मेरे लिए तो इतना छोटा (एक बच्चे के बराबर) चाहिये !···इ-त-ना छोटा !"

"ऊँ !"—सेबिया गाल पर हाथ रख कर हँसते हुये कहती है—"बतहा।"२

माँ कहती है—"दे आओ !···कहना बहुत बढ़िया है।"

बहुत पुरानी नौकरानी है सेबिया।···कमला की माँ के बचपन की

सहेली है वह ! साथ-साथ खेली है···बचपन में ही बेवा हुई—चुमौना की बात सुनते ही हफ्तों रोती रहती और नदी में डूबने जाती ।—कमला की माँ के साथ यहाँ आई और अब तक है ।···गठिया के कारण शरीर बहुत कमजोर हो गया है और एक कान से कम सुनती है ।···

कमला कहती है—सेबिया माई !

"ए ! सेबिया माई !!"—

बूढ़ी रोज चुरा कर चुल्हे की लाल मिट्टी के टुकड़े दे आती है कमला को !···कितनी सोंधी लगती है चुल्हे की मिट्टी !!

"माँ, सेबिया माई पूछती थी—जमाई कब अवेगा ?"

···तहसीलदार साहब दोमंजिले की छत पर खड़े होकर देख रहे हैं। पच्छिम की ओर डूबते हुये सूरज की लाल रौशनी 'धरमपुर-मिलिक' के खेतों पर फैली हुई है । रंग धीरे-धीरे बदल रहा है । लाल···धुँधला लाल, मटमैला···!! अब अँधियारी बढ़ी आ रही है ।···तहसीलदार साहब की ड्योढ़ी, चहारदीवारी भी अब अंधेरे में डूब गई !!

(१) प्वाइन्ट । (२) पागल ।

—पन्द्रह

बालदेव जी घोड़ा-गाड़ी वाले से कहते हैं—"देखो जी, आज यदि 'टैन' पकड़ा दो तो आठ आना बक्सीस देंगे !"

"देखिये, अपने जानते 'कोरसिस' तो हम खूब करेंगे !···चल बेटा ! कदम-कदम बढ़ा के !"—घोड़े वाला छोकरा घोड़े को चाबुक लगाते हुये गाता है—"झगड़ा सुरू हुआ है सारे हिन्दुस्तान में, हिन्दू-मुसलमान में ना ।"

बालदेव जी को आज मालूम हुआ है कि 'महतमा जी' दो महीने से लगातार पटने में थे । रोज प्राथना सभा में 'भाखन' देते थे 'महतमा

जी'।···आज कल 'डिल्ली' में हैं।

·····एँ ? कौन गाड़ी बिगूल दिया जी ?···

"अभी सिंगल डौन भी नहीं हुआ है। देरी है।"

"देरी है ?···वाह बहादुर !"

स्टेशन पर बालदेव जी ने भाड़ा के अलावा एक अठन्नी 'बकसीस' में दिया तो घोड़ागाड़ी वाले छोकरे ने बड़े 'कैदा' से हाथ चमकाके सलाम किया—"समलाम हजौर !"

किसी जवान स्त्री को देखते ही बालदेव जी को झट से लछमी की याद आ जाती है।·····बालदेव जी मन ही मन सोचते हैं, यदि थोड़ी देर गंगुली जी के यहाँ और हो जाती तो आज 'सरमाजी' आने नहीं देते। चलते-चलते सरमाजी ने आखिर दिल्लगी कर ही लिया—'अच्छा तो बालदेव जाओ ! हम बेकूफ हैं जो तुमको रोकेंगे तुमको यहाँ रोक लें और उधर तुम्हारी कोठारिन किसी से 'सतसंग' करने लगे तो हुआ !···हा-हा हा-! माफ करना अच्छा तो जै हिन्द !'

"जै हिन्न बालदेव जी !"

"कौन ?···खलासी जी ! कहिये क्या हाल है ?"

"हम तो अभी आ रहे हैं मेरीगंज से।···जाइये रौतहट टीसन में आपकी बैलगाड़ी लगी हुई है—गये थे 'रोसकती'[1] कराने के लिए। आज दस दिन के बाद लौटे हैं।···हमारे 'जलाना' को 'गरम हवा'[2] लग गया था। झाड़फूँक कर साथ लेते आये हैं।···अ-हा ! आज दस बजे हम आपके 'आसरम' के तरफ गये थे—एक जड़ी खोजने के लिए। आसरम देखकर मन होता था कि यहाँ से कहीं नहीं जायें।···आप तो थे नहीं कोठारिन जी थीं। साहेब बनगी किया, सुपाड़ी कसैली खाया। एक नवतुरिया साधू जी इतना बढ़ियाँ गा-गाकर बीजक पढ़ रहे थे कि जी होता था, बैठे रहें।···अच्छा तो जै हिन्न !"

नवतुरिया साधू ?···काशी जी का 'बिदियारथी जी' है। महंथ सेवादास के समय से ही मठ पर आता है—साल दो साल के बाद। महंथ

साहब जाने के समय धोती, चादर, किताब का दाम और राह खर्चा देते थे।···मोती के जैसा अक्षर लिखता है।···लछमी ने जो बीजक दिया था बालदेव जी को—इसी 'बिदियारथी जी' का लिखा हुआ था।···इस बार आये हैं तो कहते हैं कि मठ पर जी नहीं लगता है।···लेकिन लछमी तो अब मठ की कोठारिन नहीं। एक भले घर की 'इसतिरि' है।

···जब मैं घर में नहीं था तो वह क्यों गया?···आखिर लोग क्या सोचते होंगे?···नहीं, यह अच्छी बात नहीं। लछमी को समझा देना होगा।

बालदेव जी की मौसी रोज सुबह ही उनके 'आसरम' के सामने आकर बैठ जाती है और गिन-गिन कर गालियाँ सुना जाती है—"अरे भकुआ रे!···एही दिन के लिए पालपोस के इतना बड़ा किया था रे।·····'मुड़िकटौना'··· रे! लछमिनियाँ ने तो तुमको 'मोखा की माटी'[3] खिला कर बस कर लिया है। भेंड़ा बना कर रख लिया है। रे···बेलज्जा, 'मोटकी-घुमर्सी' की सूरत पर कैसे भूल गया रे।"···और, लछमी कभी सेर भर चावल, पाव भर दाल अथवा गेहूँ, आलू वगैरह दे कर विदा करती है।

···एक पहर साँझ हो गई है। सर्दी काफ़ी पड़ने लगी है अब। बालदेव जी चादर से कान को ढँक लेते हैं। लेकिन, कान तो गर्म है।···बिदियारथी जी!

"अरे—हाँ—हाँ—! ठहर! साला! आदमी देख कर भी भड़कता है?"—गाड़ीवान ने बैलों को रोकते हुये पुकारा—"गोसाईं जी!···उठिये, आ गये घर।"

बालदेव जी जगे ही हुये हैं। उठते ही दूर पेड़ की छाया में किसी को जाते देखते हैं।···ओ! बिदियारथी जी अभी जा रहे हैं। इसी लिए बैल भड़के थे?

"साहेब-बंदगी!"—लछमी पैर छूकर साहेब-बंदगी करती है।

बालदेव जी मिनमिना कर कुछ कहते हैं और सीधे अपनी आसनी

पर चले जाते हैं।···

"मेरा कम्बल कौन ओढ़ा था?"—बालदेव जी बिछावन पर पड़े हुये कम्बल को नाक सिकोड़ कर देखते हुये पूछते हैं—"मेरा कम्बल क्यों ओढ़ा था वह?"

"कौन?"

"और कौन?···मालूम होता है सपना देखती हो?"—बालदेव जी का माथा गर्म है।

"रामफल!···तुमलोग खा लो! हम को भूख नहीं। हम नहीं खायेंगे।"—बालदेव जी जोर-जोर से कम्बल झाड़ते हुये कहते हैं—"दुनियाँ भर का आदमी आकर आसन पर सोयेगा···!"

लछमी कई दिनों से देखती है, बालदेव जी बात-बात पर बिगड़ जाते हैं। वह आकर दरवाजे के पास खड़ी हो जाती है—"आसन झाड़ा हुआ है।···बिदियारथी जी तो ओसारे पर बैठे थे।"

"क्यों? ओसारे पर क्यों थे? घर में क्यों नहीं बैठते हैं बिदियारथी जी?···सूने घर में जैसा घर वैसा ओसारा···।" —बालदेव जी के ओंठ फड़क उठते हैं।

"बिदियारथी जी आते हैं सतसंग करने के लिए···।"

"हाँ, हाँ! खूब समझते हैं। सतसंग···! हुँ···सतसंग।"—बालदेव जी घृणा से मुँह सिकोड़ लेते हैं।

न जाने क्यों, आज 'सतसंग' सुनते ही उनके देह में 'झरक' सी लगती है।···छोटन बाबू ने कहा था—'सतसंग' कर रहे हैं।' ···दोरिक सरमा ने आखिर में कह दिया···'कोठारिन किसी के साथ 'सतसंग'···।

"सतसंग ही करना है तो उनकी आसनी यहीं लगा दो। दिन-रात खूब सतसंग करती रहना।"—बालदेव जी ओंठ को टेढ़ा करके एक अजीब मुद्रा बना कर, हाथ चमका कर कहते हैं—"सतसंग!"

"गुसाईं साहेब!"—लछमी के भी नथने फड़क उठते हैं—"ऐसा क्यों बकते हैं?"

"तुम हम को 'टिरिकबाजी' दिखाती हो ?···हम सब समझते हैं।"

"क्या समझते हैं ?"

बाँहें क्यों मरोड़ती है लछमी ?···मारपीट करेगी क्या ?···गुस्सा से थरथर काँपती है—"बोलिये ! क्या समझते हैं।···रंडी समझ लिया है क्या ?···ठीक ही कहा है—जानवर की 'मूँड़ी' को पोसने से गले की फाँसी छुड़ाता है, मगर आदमी की मूँड़ी···।"

"हम तुम्हारे पाल्तू कुत्ता नहीं।···हम अभी चननपट्टी चले जायेंगे। अभी।"—बालदेव जी उठ कर खड़े होते हैं।

"गोस्सा मत होइये गोसाईं साहेब !···'क्रोध पाप को मूल !' जाते-जाते देह में 'अकलंग'[४] लगा कर मत जाइये।"

बालदेव जी कुछ सोच कर बैठ जाते हैं।···लछमी के देह से 'गंध' निकलती है। चुपचाप लछमी की ओर देखते हैं वह।···लछमी चुपचाप किवाड़, के सहारे खड़ी आँसू पोंछते हुये सिसकती है—"मेरी तकदीर ही खराब है।"

लछमी रो रही है ?···बालदेव जी का गुस्सा धीरे-धीरे उतर जाता है। वह उठते हैं, लछमी के सर पर हाथ फेरते हुये कहते हैं—"रोओ मत !···तुम पर भला संदेह करेंगे ? रोओ मत !!···लेकिन तुमको अब खुद समझना चाहिये कि तुम अब मठ की कोठारिन नहीं, मेरी 'इसतिरि' हो···। लोग क्या कहेंगे···।"

लछमी बालदेव जी के पाँव पर गिर पड़ती है—"छमा प्रभू ! दासी का अपराध···।"

"छिः छिः ! लछमी ! उठो ! चलो भूख लगी है।"

(१) बकबकाती। (२) भूत प्रेत की हवा। (३) बस में करना। (४) कलंक।

—सोलह

डाक्टर नजरबन्द है।

जेल अस्पताल के एक 'सेल' में उसे रखा गया है।···हर सप्ताह कोई-न-कोई ऑफ़िसर आकर उसे घंटों परीशान करता है, तरह-तरह के प्रश्न पूछता है।···चलित्तर कर्मकार के दल से डाक्टर का कोई संबंध प्रमाणित करने के लिए पुलीस जी तोड़ परिश्रम करती है।

"आप जानते हैं, चलित्तर कर्मकार किस पार्टी का मेम्बर है?"

"जी नहीं।···मैंने चलित्तर कर्मकार का नाम भी नहीं सुना?"

"नही सुना?···ज़िले भर के बच्चे तक जानते हैं।"

चलित्तर को कौन नहीं जानता? बिहार सरकार की ओर से पन्द्रह हज़ार इनाम का एलान किया गया है। हर स्टेशन के मुसाफ़िरखाने में उसकी बड़ी-सी तस्वीर लटका दी गई है। पुलीस, सी० आई० डी० और मिलिटरी का एक 'स्पेशल' जत्था, उसे गिरफ़्तार करने के लिए साल भर से ज़िले के कोने-कोने मे घूम रहा है। नये एस० पी० साहब ने प्रतिज्ञा की है—या तो चलित्तर को गिरफ़्तार करेंगे अथवा नौकरी छोड़ देंगे।··· घर-घर मे चलित्तर की कहानियाँ होती हैं। नेताजी के 'सिंघापुर' में आने के समय गाँव-घर, घाट-बाट, नाच-तमाशा में लोग जैसी चर्चा करते थे —वैसी ही चर्चा चलित्तर की भी होती है—कटहा के बड़े दारोगा से थाने पर जाकर भेंट करके, बातचीत करके, पान खा कर और नमस्ते करके जब उठा तो हँस कर कहा—हम ही चलित्तर कर्मकार हैं।···दारोगा साहेब को 'दाँती' लग गई।···कलट्टर साहेब दार्जिलिंग रोड से कहीं जा रहे थे, डँगरा घाट की नाव बह गई थी। कलट्टर साहेब लौटे आ रहे थे कि एक आदमी ने आकर सलाम किया और कहा कि चलिये उस पार पहुँचा देते हैं। कलट्टर साहेब मोटर में बैठे ही रहे, उस आदमी ने मोटर सहित कलट्टर साहेब को नदी तैर कर पार कर दिया। सिरिफ मोटर का एक पहिया एक हाथ से पकड़े रहा। उस पार जाकर कलट्टर साहेब ने खुस

होकर इनाम देने के लिए 'नाम-गाम' पूछा तो बताया···'चलित्तर कर्मकार'। ···कलट्टर साहेब के हाथ से कलम छुट कर गिर गई।···रोते हुये बच्चों को रात में माँ डराती है—आ रे! चलित्तर···घोड़ा चढ़ी!

और डाक्टर कहता है कि उसने चलित्तर का नाम भी नहीं सुना? ···कैसे विश्वास किया जाये?···बिराटनगर (नेपाल) के बड़े हाकिम ने लिखा है—डाक्टर नेपाल की प्रजा नहीं।···बंगाल वालों का जवाब आया है—बंगाल से इसका कोई संबंध नहीं।···तो आखिर कहाँ का आदमी है? पुरानी फ़ाइलों को उलटने से बातें और भी उलझ जाती हैं। अजब झंझट है।···उधर विधान-सभा में सवाल पूछ दिया गया है—डाक्टर को क्यों नज़रबंद किया गया है?···बड़ी मुश्किल है! एस० पी० साहब बहुत कड़े आदमी हैं। कटहा के छोटे दारोग़ा को 'गलिया' कर ठीक कर दिया है।

जेल में दाखिल होने के बाद डाक्टर को लगा—इसकी बहुत बड़ी आवश्यकता थी! जेल अस्पताल का यह सेल! ऑफ़िसरों की 'आवा-जाही' और पूछताछ पन्द्रह-बीस दिनों के बाद ही बंद हो गई।···गाँधी जी पटने की प्रार्थना सभा में रोज प्रवचन देते हैं।···दैनिक पत्रों के ये पृष्ठ कभी पुराने नहीं होंगे!! इन प्रवचनों पर बहस नहीं की जा सकती है—किसी 'सेल' में बैठ कर इसका अध्ययन किया जा सकता है।···अभी कल कुछ संप्रदायवादियों के एक बड़े जलसे का उद्घाटन किया है प्रान्त के एक बड़े जग-ज़ाहिर नेता ने।···मालूम होता है चालबाज़ी बहुत दूर तक चली गई है—महात्मा गाँधी जी से भी 'काली-टोपी-स्वयंसेवक-दल' के लिए प्रशंसा के शब्द वसूलना—हँसी-खेल बात नहीं? मन में किसी ने कहा था—'उन्हें धोखा दिया गया है'। और तीसरे ही दिन बात स्पष्ट हो गई—गाँधी जी ने बयान में कहा—"इस संस्था के संचालकों ने मेरे पास अपनी संस्था का उद्देश्य छिपाया, इसका मतलब हुआ, उनकी आत्मा कहती है कि वे असत्य मार्ग पर हैं। फिर कोई सही दिमाग़ वाला आदमी उन्हें कैसे कहेगा कि वे सही रास्ते पर हैं।"···मेरीगंज की याद आती है!···

कमला की बड़ी चिन्ता थी, मगर—सुना है वह ठीक है।···कमला की याद आते ही 'जेल' की सारी कुरूपतायें सामने आकर खड़ी हो जाती हैं! ···कालीचरन, बासुदेव वगैरह डकैती-केस में फँस कर आये हैं।····· बासुदेव, सुन्दर और सोमा की बात नहीं जानता, लेकिन···कालीचरन? विश्वास नहीं होता। मगर, कुछ कहा भी नहीं जा सकता है!····· तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद की अब पाँचों उँगलियाँ घी में होंगी। लेकिन, यह अन्याय कितने दिनों तक चलेगा?···तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद ने एक दिन हँस कर कहा था—'जिस दिन—धनी, जमींदार, सेठ और मिलवालों को लोग राह चलते कोढ़ी और पागल समझने लगेंगे उसी दिन—उसी दिन असल 'सुराज' हो जायेगा।···आप कहते हैं कि ऐसा जमाना आवेगा। जब जमाना आवेगा तो हमारी सम्पत्ति छीनी जायेगी ही। और···अभी संपत्ति बटोरने पर तो कोई प्रतिबंध नहीं। तो फिर, बैठा क्यों रहूँ!'···तहसीलदार साहब भी अजीब आदमी हैं। लेकिन···वह जेल से छूट कर मेरीगंज ही जायेगा!···कहाँ जायेगा वह?···नेपाल?··· नेपाल के लोगों ने 'नेपाली राष्ट्रीय काँग्रेस की' स्थापना की है। नहीं, राजनीति में वह नहीं जायेगा। वह राजनीति के क़ाबिल नहीं। एक बार ममता ने बातें करते हुये राजनीति की तूलना डाइन से की थी।····· डाइन!·····मौसी को लोगों ने मार ही डाला! मौसी···गनेश·····! कमला!!···लाख चेष्टा करने पर भी सूरत उसकी आँखों के आगे आ ही जाती है!···

"डाक्टर साहब!"—असिस्टेन्ट जेलर साहब आये हैं—"ब्रह्मसमाज मंदिर के सेक्रेटरी आये हैं। आपका भांजा बीमार है। आपसे उसके इलाज के बारे में कुछ सलाह लेने आये हैं। जेलर साहब आपको बुला रहे हैं।"

"ओ!···चलिये।"

—सतरह

डेढ़ महीने से कालीचरन जेल में हैं। बासुदेव, सुन्दर, जगदेवा, सोमा और सोनमा सब एक ही केस में नत्थी हैं।···इस बीच, एक तारीख को कचहरी के 'मजिस्टरी-इजलास' में हाजिरी हुई है। एक गाड़ी मिलिटरी आगे और एक गाड़ी पीछे, सभी को हथकड़ी और बेड़ी डालकर कचहरी लाया गया था। उस दिन कालीचरन की निगाह—पुलिस की लौरी से जितनी दूर जा सकती थी—जेल की चारदीवारी पर थी।···कचहरी की 'हाजत' में पेशाब की गंध इतनी तेज क्यों होती है? कालीचरन की निगाह सिक्रेटरी साहब पर पड़ी, उनसे आँखें भी मिलीं। कालीचरन का चेहरा खिल गया। तीन महीनों से जिनकी सूरत आँखों के आगे नाच रही थी—"सेकरेटरी साहेब !!···कृष्णकांत मिश्र जी !"—कालीचरन ने चिल्ला कर कहा—"जय हिन्द कौमरेड !" सिक्रेटरी साहब ने तुरत कनपट्टी इस तरह फेर ली मानो कान के पास मधुमक्खी ने अचानक काट लिया। फिर उसी तरह गर्दन टेढ़ी किये आगे बढ़ते गये। कालीचरन को सिपाही ने डाँट दिया—'का हो ससुरे ! बिना हंटर के बात ना मनबऽ !'—उधर, सिक्रेटरी साहब काँटे वाले तार के घेरे में फँसते-फँसते बचे।·····'एकमूँहा' होकर जो चलेगा वह काँटे में तो जरूर फँसेगा ! तिस पर इधर सिपाही जी ने कालीचरन को डाँटा'·····सुनरा तो खिलखिला कर हँस पड़ा।···लेकिन इसमें, सिकरेटरी साहेब का क्या कसूर? चोर-डकैतों से सभी भले लोगों को दूर रहना चाहिये। बासुदेव, सुनरा, सोमा, सनिचरा वगैरह आखिर डकैत ही तो हैं?···और सिकरेटरी साहेब उसे भी डकैत समझ रहे हैं। कोई ऊपाय नहीं।

·····कोई उपाय नहीं ! लेकिन आज 'माँस' का दिन है। जाड़े के समय, सप्ताह में एक साम, कैदियों को 'माँस' मिलता है। साम को 'बैस्नब' और 'साकठ' को खिलाते-खिलाते काफी अंधेरा हो जाता है। अस्पताल के पिछवाड़े के वाडर साहेब माँस जोगाड़ करने के लिए चले

जाते हैं।···आज कोसिस करके देखना चाहिये!···

कालीचरन ने फ़ैसला कर लिया है—यदि मौका मिला तो वह जरूर कोसिस करेगा। हाँ, वह भागेगा।···और कोई उपाय नहीं। उसने सब पता लगा लिया है, जेल से भागने की सजा सिरिफ ६ महीना है। 'डंडाबेड़ी' और 'लाल टोपी' पहननी पड़ेगी।···लोग कहेंगे 'ललटोपिया' और क्या? लाल रंग खराब तो नहीं।···सिकरेटरी साहेब और धरमपुरी जी से मिलकर वह बात करना चाहता है। उसके बाद उसे 'फाँसी-सूल्ली' जो भी मिले, वह खुसी-खुसी झेल लेगा। पाटी की इतनी बड़ी बदनामी करा के, वह जी कर ही क्या करेगा?···

···बासुदेव, सुनरा और सनिचरा तो चोर डकैतों के साथ इस तरह हिल-मिल गये हैं कि उन्हें देख कर लाज आती है कालीचरन को। बासुदेव ने डाक्टर नटखट प्रसाद से दोस्ती कर ली है। डाक्टर नटखट!··· नामी 'सिकचिल्ली'[1] आदमी है यह डाक्टर। फारबिसगंज की तरफ का है। डकैती केस में आया है।···अचरज की बात है। उस डाक्टर को देख कर किसी को बिस्वास ही नहीं होगा कि उसने आदमी को मारने के सिवा कभी जिलाने का भी काम किया है। चेहरा ठीक कसाई की तरह है! बासुदेव का उसके साथ भी खूब हेलमेल देखते हैं। रात में जूआ भी खेलता है। बासुदेव, कालीचरन से नहीं बोलता है। वह दूसरे 'खटाल' में रहता है। उस दिन 'दाल—कमान' में थोड़ी देर के लिए भेंट हुई। कालीचरन ने सिरिफ इतना ही पूछा—'बासुदेव!·····तुमको यही करना था?'···बासुदेव के साथ एक 'कलकतिया-पाकिटमार' था। दोनों एक साथ खिलखिला कर हँस पड़े। जाते समय बासुदेव ने कहा—'जिस समय सात सौ रुपैया का पुलिन्डा बाँध कर सिरकेटरी साहेब को देने गये थे, उस दिन क्यों नहीं पूछा था कि चार दिन के भीतर कहाँ से इतना रूपैया वसूल हुआ?'···उसी साम को 'पानी-टंकी' के पास—डाक्टर नटखट ने उसको रोक कर कहा था—'कालीचरन!···कोई रास्ता नहीं।···तुम यदि चाहो तो तुम्हारा जमानतदार भी होगा और मुकदमा में बेदाग छुट भी

जाओगे।·····सोचना। सोच कर देखना।·····पाटी-वाटी कोई काम नहीं देगी।'

···थू! थू!!···जेल में आकर काली को खैनी की आदत लग गई है। डाक्टर साहेब···अपने गाँव के डाक्टर ने जमादार से उस दिन जेल-गेट पर हँस कर कहा था—'सिपाही जी!···कालीचरन पर जरा ख्याल रखियेगा।'···देवता हैं डाक्टर साहेब। जरूर देवता हैं।···सिरिफ खैनी ही नहीं, कभी-कभी बीड़ी भी जमादार साहेब दे देते हैं।···थू! थू!!···थूक है ऐसे पैसे पर! डाक्टर नटखट प्रसाद की बात वह नहीं मानेगा! सोमा ने भी एक बार दबी जबान कहने की कोसिस की थी—'उस्ताद'···!! 'चुप उस्ताद का बच्चा!'—कालीचरन ने डाँट बाता दी थी।

उस्ताद!—जेल से बाहर, फिरारी हालत में चलित्तर करमकार से उसकी भेंट हुई थी।·····कौन कहता है कि वह बड़ा भारी कलेजा वाला आदमी है! कुसियारगाँव टीसन के पास—'बड़का-घत्ता' के बीच दोगछिया की छाया में भेंट हुई थी। कालीचरन को देखते ही वह अपने साथियों के साथ 'हाल-हथियार' लेकर खड़ा हो गया था।···हेन्सप्!—दारोगा साहेब जिस तरह चिल्लाये थे—उसी तरह चिल्ला उठा था चलित्तर!··· कालीचरन को हँसी आ गई थी। उसके मुँह से अनजाने ही निकल पड़ा था—'अरे! हम हैं उस्ताद! खाली-हाथ-पाटी वाला कालीचरन!' ···चलित्तर ने एक बार कहा था—'इस खाली-हाथ-वाली-पाटी में रह कर सब दिन खाली-हाथ ही रहोगे!'·····पीछे तो बहुत बहस किया। आखिर में चलित्तर ने कहा था—'तुमने हमको उस्ताद कहा है। 'गाढ़े-बिपत' में कभी जरूरत पड़ने पर याद करना।'···कालीचरन ने हँस कर कहा था—'उसकी जरूरत नहीं होगी···।' दुबारा उस्ताद कहते-कहते वह रुक गया था।···आज भी चलित्तर की वह बात कान में गूँज रही है—'देखना है तुम्हारी उस्तादी!'

···लेकिन, आज बासुदेव और सोमा की मदद लेनी ही होगी। एक बार मिल तो जाये! वह 'पटिया' लेगा।

गोटी बैठ गई।···सोमा और बासुदेव को कालीचरन ने 'पटिया' लिया है।···अस्पताल के पिछवाड़े में···!

ठीक है···अस्पताल के पिछवाड़े में—दीवाल की छाया में बासुदेव और सोमा ही हैं! ठीक है!—दोनों के कंधे की ओर इशारा किया।

···सब ठीक! हत्तेरे की!···कालीचरन गिर पड़ा। तब बासुदेव और सोमा कंधे में कंधा भिड़ा कर खड़े हुये।···ठीक है!···जरा-सा··· जरा सा और! बस, चार अंगुल! बासुदेव और सोमा के कंधों पर कालीचरन जरा उचकता है। दोनों के कंधों का भार जरा हल्का मालूम होता है! ऐ···ठीक है।···भागो!!

"भागा! भागा!!"

टु-टू-ऊ-ऊ···टु-टू-ऊ-ऊ!!—जेल-अस्पताल के पिछवाड़े से सिपाही 'सीटी' फूँकता है।

टु-टू-टू-टू!!—बहुत सी सीटियों की मिली हुई आवाज!!

ढन-ढन, ढनाँग ढनाँग·····!—जेल फाटक का बड़ा घंटा घनघना उठा।

···कालीचरन पाँच मिनट तक जेल के बाहर, दीवार के पास जमीन पर बेसुध पड़ा रहा।···सीटी और घंटे की आवाज ने उसे सजीव कर दिया।···नहीं, ज्यादे चोट नहीं आई है। सिरिफ कमर में मोच आ गई है।·····ढनाँग-ढनाँग!!·····जेल का घंटा घनघना रहा है!!···वह भागता है!

फर्र-र्र-र्र र!—एक साथ कई बंदूकें गरज उठीं!

—अंधेरे में कुछ सूझता भी तो नहीं।···एक घड़ी रात भी नहीं हुई है—ओस से धरती 'पच-पच' करती है, पैर फिसल जाते हैं।···

भर्र-भर्र-र-र-र—सामने दार्जिलिंग रोड पर पाँच सात मिलिटरी-लौरियाँ दौड़ रही हैं।

कालीचरन, पाँचू बाबू वकील के घर के पिछवाड़े की एक झाड़ी में छिपकर हाँफता है!···सड़क कैसे 'टपा' जाये?···किधर से जाना ठीक

होगा ?···दाहिने ओर भी लोग हल्ला करने लगे।···पास की गली होकर 'घुड़सवार' लोग जा रहे हैं।···

कालीचरन तय करता है—सामने बाँसवाड़ी पार करके 'मोबरली साहेब' की पुरानी कोठी की बगल से जाना ही अच्छा होगा !···अब देर नहीं करनी चाहिये।

·····ऐं ?···'मोबरली साहेब' की कोठी के पास कालीचरन को ऐसा लगा कि पीछे से कोई 'टौर्च' मार रहा है।···हाँ, यह तो टौर्च की ही रोसनी है !···वह जंगल में घुस जाता है।—बस, थोड़ी देर यहाँ सुस्ता कर, टौर्च वाले को देख कर, फिर एक दुलकी !···एक 'जूम'[२] खैनी दिन में ही उसने चुनाकर, कपड़े के एक खूँट में बाँध ली थी।···बहुत मौके पर अभी उस पर हाथ पड़ गया।···खैनी खाकर वह झड़बेरी की झाड़ी से निकल कर साफ़ मैदान की ओर आता है !···कहाँ है टौर्च की रोसनी ? बाप ! एकदम पास ही !!···कालीचरन भागता है। टौर्च की तेज़ रौशनी उसका पीछा कर रही है और फिर जंगल की निस्तब्धता को भंग कर के राइफ़ल की आवाज़ गूँज उठती है—फर्र-र-र-र-र- !!

जंगल-झाड़, 'काँट-कुस' और अड्डा-खाई को टपता हुआ कालीचरन भाग रहा है। जंगल की लत्ती पैर 'छान्द' लेती है—मगर वह झाड़ देता है !···जाँघ में लगता है, 'खोंच' लग गई है !!

·····पार्टी ऑफ़िस के पिछवाड़े में जो घना जंगल है, वहाँ पहुँच कर उसे लगा—वह निरापद है।···अरे ! यह तो खोंच नहीं !! अरे बाप !! इतना खून !!···आधा बित्ता माँस उधेड़ दिया है।···खलरा लटक गया है। ओ ! गोली लगी है सायद !!···खून बंद नहीं हो रहा है !!···

"कौ-औ···न ?···काली-च-रन ?"—ऑफ़िस सेक्रेटरी, राजबल्ली जी किवाड़ खोलकर सचमुच अवाक् हो गये। जीभ की नोक पर बोली चढ़ी ही नहीं।···

"ऐं ? कौन ? कालीचरन ?"—सेक्रेटरी साहब भी धड़फड़ा कर कमरे से बाहर आते हैं—"ओ कालीचरन ! तुम हो ?·····इसी लिए शहर में

इतना हल्ला हो रहा है। जेल से भाग आये हो ?"

"जी ! लगता है···जाँघ में गोली लग गई है···।"

"तुम्हारे कलेजे पर गोली दागी जानी चाहिये ! डकैत ! बदमाश !!"

"सिकरेटरी साहेब !···इसीलिए तो !···इसीलिए तो···आपके···पास ···आये हैं। सुन लीजिये !·····माँ कसम, गुरु कसम, देवता किरिया ! जिस रात···उस रात को हम···यहीं—जिला पाटी औफिस-में थे।"

"राजबल्ली जी ! आपको 'बघोछ' लग गया है ? किवाड़ बंद कीजिये हटाइये इसे।···बाबू, मिहरबानी करो—चले जाओ। नहीं तो···।"

"आ-आ-आ-प ह-हल्ला काहे करते हैं। आ-आ-प अन्दर जाइये।"—राजबल्ली जी मौन भंग करते हैं।

कालीचरन पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा है।

'मोबरली साहेब' की कोठी की ओर धड़ाधड़ फ़ायर हो रहे हैं····· फर्र-र्र-र्र !

"साथी राजबल्ली जी !···सिकरेटरी···साहेब···को समझा दीजियेगा। मेरा कोई···कसूर···नहीं।"

कालीचरन हिलता है ! थोड़ी देर तक खड़े रहने के बाद—अब तो चला भी नहीं जा रहा है। वह दोनों पावों को बारी-बारी झाड़ता है।··· सामने 'कच्चू' के पत्तों पर कुछ झरझरा कर गिरा !···वह धीरे-धीरे फिर बग़ल के जंगल में चला जाता है।···अब ?···वह पुरानी धोती के एक खूँट को चीर कर घाव को बाँधते हुये सोचता है—अब ?···

·····चलित्तर कर्मकार ने कहा था—'गाढ़े-बिपद में खबर करना ! याद करना !!···'

चलित्तर कर्मकार ?

(१) शेख़ चिल्ली, बदमाश। (२) एक खू़राक।

—अट्ठारह

"भाग ! भाग !!···मलेटरी, मलेटरी···!!"

अरे बाप ! लाल पगड़ी वाला पुलिस नहीं है, एकदम···गोरखा मलेटरी । सुनते हैं, गोरा मलेटरी से भी ज्यादे 'चाँस' वाला होता है—गोरखा । मारने लगेगा तो मारते-मारते जान से ही मार देगा ।····· हसलगंज हाट पर कटिहार वाले बाबू साहेब की 'कचेहरी' पर सुबह से ही आकर है—दो मोटरगाड़ी—'ठसमठस !!···'मोहर्रिल जी' बोले कि गाँव में 'रौन'[१] देने आया है ।···रात में रौन देगा ?···गोरखा मलेटरी ?

"अरे, क्या बात है ?···कौन झूठमूठ खबर लाया है ?"

"झूठ नहीं !···ततमा टोली का बबुजन अभी दौड़ता-हाँफता आया है ।···उसको इमान-धरम और माय का 'किरिया' खिला कर पूछिये तो !"

"ऐ ?···सुनो ! मोटरगाड़ी की आवाज हुई न ?"

"हाँ !···पछियारी टोला के पास आ रही है मोटरगाड़ी ।"

"···भागो ! एकदम लाल-अड़हुल रंग की मोटरगाड़ी आ रही है ।" भागो किधर ? मोटरगाड़ी तो आ गई !!

"भर्रर्र-र्र-कें्क्-कें्क्-भर्र-र···।" —मिलिटरी लौरी 'लीक' छोड़ कर 'बेलीक' ही, अड्डा-खाई, आल-गोड़ा टपते, तहसीलदार साहब के दरवाजे की ओर जाती है ।

"कौन ? सुमरित दास बेता···?"

"सिस् !···चुप !"—सुमरित दास फिसफिसा कर कहता है—"कलिया जेहल से भाग गया है । इसीलिए मलेटरी आया है ।····· खबरदास ! सुसलिट पाटी का नाम भी नहीं लेना ।···पूछे तो कहना—हम लोग काँगरेस में हैं ।···कालीचरन से कोई रिस्ता मत बताना ।····· समझे ? लाल झंडा जिसके घर से निकलेगा तुरत गिरिफ्फ हो जायेगा ।"

सुमरित दास 'बेतार' के देह में—इस 'बुढ़ारी' में भी कितना तेज है !

पुराना पानी पीया हुआ बुड्ढा है।···कलिया तो अपने साथ अपने गर-गरामत, पर-परोसिया, और गाँव-समाज सब को ले डूबना चाहता है।···क्या है लाल सालू? खबरदास! झंडा और सालू में क्या 'फरक' है।···फाहरम-परचा सब जलाओ!···सब फँसेगा।

"खबरदास! कलिया 'घसकन्तोबाचः' हो गया है।···सुसलिट माटी और कालीचरन का नाम···'हरगिस' नहीं।···लच्छन लगता है समूचे गाँव को 'कुरुक' करेगा।"

"एँ!···कौन?"—कालीचरन की अंधी माँ हुक्का पीना बंद कर पूछती है— "कौन भाग गया?···सरसतिया, परमेसरी,···तराबत्ती··· अरे! कौन भाग गया बेटी।"

"और कौन?···तुम्हारे कुलबोरन बेटा कालीचरन के चलते आज सारा गाँव 'बन्हा' रहा है।"

"भाग! भाग!!···मलेटरी!"

गुरखा सिपाहियों ने कालीचरन के घर को चारों ओर से घेर लिया है। एस० पी० साहब कालीचरन की बूढ़ी माँ से पूछते हैं—"हुँ···अंधी है या ढंग करती है?···सुन बुड्ढी···तेरा बेटा कलिया जेल से भाग आया है। अब रोना-गाना छोड़ कर सीधे-सीधे बता कि वह यहाँ आया था या नहीं?"

"मेरा बेटा!···वह डकैत नहीं दारोगा बाबू।···दुसमन लगा हुआ है उसके पीछे हजूर। जाने सूरुज भगवान!"

"ठीक-ठीक बताओ! उसके साथ और कौन-कौन—उसके साथी-संगी का नाम बताओ।"

"हजूर!···हमारा कुछ नै मालूम।"

"अच्छा, सब मालूम हो जायेगा।···ले चलो बुढ़िया को!"

कालीचरन की माँ को 'जड़ैया-बुखार' आ गया।···जैसे ही नेपाली सिपाही ने उसकी कलाई पकड़ी, वह जोर-जोर से—'डिकरने' लगी—लोहे से दागने के समय बैल-गाय वगैरह जैसे डिकरते हैं—उसी तरह!

"अ्-य-बाँ-बाँ-बाँ-आँ···॥"

माघ की संध्या ठिठुरते हुये गाँव को धीरे-धीरे अपने आँचल में छिपा रही है। भयार्त पशु की आँखों की तरह किसी-किसी घर में ढिबरी भुक-भुका रही है।···'घूर' के पास आज कौन बैठेगा!···सभी अपने-अपने घर के कोने में छुपे हुये हैं।···सन्नाटा॥···और इस सन्नाटे को चीर कर जब कालीचरन की माँ की यह दर्द भरी पुकार गाँव के कोने-कोने में फैली!···

"एह! अरे बाप!···मालूम होता है बुढ़िया को 'कीरिच' से 'जबेह' कर रहा है।···हे भगवान।"

कालीचरन की माँ की 'डिकराहट' में कुछ ऐसी बात थी कि एस०पी० साहब का दिल पसीज गया। उन्होंने कहा—"छोड़ दो!···छोड़ दो बुढ़िया को!"

बुढ़िया अचानक ही चुप हो गई!

गाँव-घर, बगीचा-बाड़ी और अगवारे-पिछवारे में दम साधकर छिपे लोगों ने समझा—बुढ़िया को सचमुच 'जबेह' कर दिया!

"किसकी बोली है, पहले पहचान लो।···टट्टी में कान लगा कर सुनो।"

"अगमू चौकीदार है!···सुमरित दास भी है।"

"जै भगमान! जै भगमान॥"

"ऐ भगमान भगत! भगमान भगत···दरवाजा खोलो जी!"—सुमरित दास खखारते हैं—"अह-ख्-ख्!···भगमान भगत! डरने की बात नहीं।···सिकरेट है, सिकरेट? मलेटरी साहेब हैं···पैसा देते हैं।"

पछियारी घर में, संदूक के पीछे भगवान भगत 'दम-साध' कर 'घुसके' हुये हैं।···"आहि रे दादा रे दादा! ई त हमरे नाम लेके···।" भगताइन फिसफिसा कर कहती है—"अरे जा न!···कौनो बाघ थोड़ो बा।"···भगत डाँटता है—"अरे चुप।"

"अहँख्!···के? दास जी!"—भगताइन खखास कर अंदर से पूछती है

—"का लेब हो !"

"अरे खोलो भगताइन !···भगत जी कहाँ हैं ?"

भगताइन, टीन की 'टट्टी' खोलते हुये देखती है—"बाप रे बाप !··· ई कौन देस के आमदी बा रे दैबा ।···हुँड़ार जैसन मुँह बा ।···"

—"दास जी ! ···अन्दरे आके जे लेब से ले जा ।···बुढ़बा के बुखार बा···हमरो सिर बथता···।"

सुमरित दास टीन की 'टट्टी' को ठेल कर अन्दर जाता है—"इस्···! तुमलोगों को लगता है कि कलेजा है ही नहीं ।···झूठ नहीं कहा है, बनियाँ का कलेजा धनियाँ !···'इसपी' साहेब अभी तुरत सबों को बुला रहे हैं, तहसीलदार साहेब के दरवाजे पर !···'मिटिन' है । इसमें जो नहीं जायेगा अभी, उसको कालीचरन की पाटी का आदमी समझा जायेगा ।···लाओ पाँच पाकिट असली कैंचीमार सिकरेट !···कलिया जेहल से भाग गया ।"

"हँ-हँ-ख् ! के···? सुमरित भाई ?"—भगवान भगत 'काँखते' हुये आता है—"अरे ! ई बुखार त जान लेके छोड़ी ! का बात बा ?"

"बात का बा !" —सुमरित दास हाथ चमका-चमका कर कहते हैं—"···चीनी पाँच सेर ! गरम मसाला आठ आने का । चार पाकिट सिकरेट लेकर अभी तुरत तहसीलदार साहेब बुलाये हैं !···'इसपी' साहेब मिटिन में बुला रहे हैं—सबों को ।···हाँ, सिपाही जी को पाँच पाकिट दिया उसका भी पैसा लोगे ?"

"अरे ! हम का हुकुम से बाहर बानी ?···चलीं हम आव तानी ।" —भगत बात चबाते हुये, कान खुजलाता है ।

'गोरखा मलेटरी' कहता है—"ऊँहूँ ! नहीं !···हम मुफुत में नहीं लेगा । काहे लेगा ?···हम 'पैसा तीर कर'[२] चुरुट लेगा ।···काहे लेगा ? हम बायेर का मलेटरी नहीं···हम इसी देस का है । मुफुत में काहे लेगा !"

तहसीलदार साहब के दरवाजे पर लोग जमा हो रहे हैं । अगमू चौकीदार और 'अबदुल्ला बक्सी' सबों को 'हाँकते' आ रहा है—"डेग

बढ़ाओ !···'घसर-फसर' काहे करते हो।"···लगता है धान की 'दबनी' करने के लिए बैलों को हाँक कर लाया जा रहा है।···बालदेव जी भी हैं, रामकिरपाल सिंघ भी हैं।···बहुत दिनों से रामकिरपाल सिंघ, 'पर-पंचायत' या 'सभा-मिटिंग' में नहीं जाते हैं। एकदम गुमसुम रहते हैं।···पचास बीघा धनहर जमीन—एक 'लाटबंदी'[3], एक ही जमा, और खजाना सिर्फ़[6] पाँच रुपये! ऐसी जमीन जिसकी बिक जाये, या महाजन के यहाँ 'सूद-रेहन' लग जाये तो दिल चकनाचूर होगा नहीं?···खेलावन सिंह यादव का कलेजा 'धकधक' कर रहा है—जगह-जमीन, रुपैया-पैसा तो पहले ही मुकदमें में 'सोहा' हो गया, अब एक कोरी भैंस है। तहसीलदार की नजर लगी हुई है!···

एस० पी० साहब चाय पीकर खड़े हो जाते हैं।···जै भगवान! दुहाई काली माई!!

"प्यारे भाइयो!···मैंने आपलोगों को एक बहुत बड़े काम में मदद के लिए बुलाया है।···आप लोग डरिये नहीं! मैं बदमाशों के लिए महा-बदमाश हूँ, और सीधे लोगों का सेवक!···हाँ, हम तो आपलोगों के नौकर हैं···।"

"जै हो! जै हो!!···धन्न है, धन्न है।"—लोगों के देह में अब थोड़ी गर्मी आती है।

एस० पी०साहब कहते हैं—"···अभी इस जिले में एक बड़ा भारी डकैत उत्पात मचा रहा है। उसका नाम आपलोगों ने जरूर सुना होगा···।"

"जी नहीं।···हमलोग तो 'कूपमंडू' हैं।"

"देखिये! झूठ मत बोलिये!···'डगरिन' से पेट छुपाते हैं?··· चलित्तर कर्मकार इस गाँव में कभी नहीं आया है?"

"हाँ, हाँ—चलित्तर!"

"नहीं, नहीं।···नहीं आया है।"

"···देखिये!···जरा रौशनी और करीब लाइये।···देखिये यही है

उसका फ़ोटो !"

"हाँ, ठीक। यही है। यही है।"

"तब देखिये। आप लोग झूठ काहे कहते थे !···जानते हैं, डकैत से बढ़ कर होता है डकैत का 'झपैंत'···आपलोगों ने 'झपैंत' का काम किया है।"

"नहीं हजूर, मायें-बाप।···मालूम नहीं था।"

"···ख़ैर ! सुन लीजिये।···चलित्तर कर्मकार को न तो देश से मतलब है, न गाँव से और न समाज से। उसका पेशा है—डकैती करना, लूटना। वह समाज का दुश्मन है—देश का दुश्मन है।···अभी देखिये, हाल ही में कम्यूनिस्ट पार्टी वालों ने एक पर्चा निकाला है। लिखा है, कॉमरेड चलित्तर पर से वारंट हटाओ। चलित्तर कर्मकार किसानों और मजदूरों का प्यारा नेता है।···अब आप ही बताइये कि कोई हत्यारा और डकैत कैसे किसी का प्यारा नेता हो सकता है ?···ख़ैर, मेरा भी नाम बजरंगी सिंह है।···मैंने ऐसे-ऐसे बहुत से हत्यारों को ठीक किया है—फाँसी पर लटकवाया है।···ऐसा आदमी किसी की भी हत्या कर सकता है···।"

"बाबा !···गाँधी जी मारे गये !"—कमली अन्दर हवेली से ही पगली की तरह चिल्लाती है—"गाँधी जी···!"

"क्या हुआ ?"

"क्या हुआ ?"

तहसीलदार साहब अन्दर हवेली की ओर दौड़ते हैं।···सुमरित दास कहता है—"हजूर तहसीलदार साहेब की बेटी का मगज जरा खराब है।"

"अनर्थ हो गया हुजूर !"—तहसीलदार साहब दौड़ते हुये आते हैं—"गाँधी जी मारे गये।"

"एँ ?···कहाँ ! कैसे ?"

"रेडियो में खबर आई है।"

"कहाँ है रेडियो ?···अंदर हवेली में ?···मेहरबानी करके यहाँ ले

आइये।"—एस० पी० गिड़गिड़ाते हैं।

"अरे-रे-रे! बालदेव जी को संभालो!···बेहोश हो गये।"

तहसीलदार साहब पोर्टेब्ल रेडियो-सेट ले आते हैं—"हुजूर!···इसके कल-काँटे का भेद हम को मालूम नहीं।···डाक्टर साहब का है।"

"इधर लाइये।"—एस०पी० साहब जल्दी-जल्दी मिटर ठीक करते हैं।

"खड़-र-ड़···हम सब के पिता, राष्ट्र के पिता की हत्या कर दी गई।···चारों ओर एक···एक···मनहूस अँधेरा छाया हुआ है।···हमारी आँखों के आगे अँधेरा है···दिल में अँधेरा है।···ऐसे मौक़े पर हम किन लफ़्ज़ों में, कै···से···किन शब्दों में आप को ढारस बँधायें।···ग़म के बादल में सारा मुल्क ग़र्क़ है।···एक पागल ने बापू की हत्या कर डाली।···ज़ाहिर है, पागल के सिवा कोई ऐसा काम नहीं कर सकता।···अब हमें अपने ग़म और ग़ुस्से को दबा कर सोचना है···।"

"नेहरू जी बोल रहे थे शायद!"

नेहरू जी!···जमाहिर लाल बोल रहे थे!···बीच में एक जगह गला एकदम भर गया था···लगा, रो रहे हैं।

"सुनिये! अब पटेल साहब···सरदार पटेल बोल रहे हैं।"—एस०पी० साहब का चेहरा एकदम काला हो गया है।

बेतार के खबर में क्या बोला? गाँधी जी का हत्यारा पकड़ा जा चुका है?···अरे! कैसे नहीं पकड़ावेगा भाई!···हाय रे पापी! साला···जरूर जंगली देस का आदमी होगा। हत्यारा!···माराठा? यह कौन 'जात' है भाई? मारा-ढा!···अरे बाभन कभी ऐसा काम नहीं कर सकता—जरूर वह साला चंडाल होगा।

एस० पी० साहब हाथ जोड़ कर कहते हैं—"भाइयो!···कहा सुना माफ़ करेंगे। आप लोग जैसा समझें करें।···लेकिन, देखते हैं न?···अरे जिसने एक ग़रीब बनिया को—बालबच्चा सहित मार डाला···वही हत्यारा गाँधी, जवाहर, पटेल सबों की हत्या कर सकता है।···हत्यारा!···हम अभी जाते हैं।···आपलोग कल···शाम को नदी के किनारे

'जलप्रवाह' कीजियेगा।···और खबर सब तो रेडियो में आती ही रहेगी। तहसीलदार साहब हैं···सबों को सुना देंगे! अच्छा, तो चलते हैं। जय हिन्द!!"

भर्र-र-र-र-र !!

"रघुपति-राघव-राजाराम, पतीत पामन सीतारा।"—बालदेव जी आँखें मूँद कर गाना शुरू करते हैं।

"आज 'आखर' धरने वाला भी कोई नहीं!···काली, बासुदेव, सुनरा, सनिचरा···कोई नहीं।···जाड़े से 'दलक' रहे हैं बालदेव जी। ···जरा, यहाँ एक धूनी लगा दी जाती, तो अच्छा होता!!···

"अरे! कोठारिन···लछमी दासिन!"

लछमी आई है। साथ में है रामफल पहलवान लालटेन लेकर!··· बालदेव जी आँखें मूँद कर गा रहे हैं—"इसवर अल्ला तेरो नाम, सबको 'सम्पत' दो भगमान।"

"जै रघुनंदन जै घनश्याम, जानकी बल्लभ सीताराम!"—लछमी दासिन अगला 'आखर' उठाती है।

इसबार भीड़ के आधे लोगों ने साथ दिया!···

"जय, रघुपति राघव राजा राम···!

बावन ठीक ही कहता था—भारथमाता और भी जार बेजार रो रही है।···बालदेव जी का सारा शरीर 'सुन्न' हो गया है। रास्ते में नाचते-नाचते गिर पड़ते हैं···"

—"सीताराम-सीताराम···जै रघुनंदन।"

···३१ जनवरी '४८ की रात!—कमला सोचती है—सारा संसार, अभी बस एक ही महा-मानव के लिए रो रहा है।···रेडियो पर गीता-पाठ हो रहा है!! लगता है, गीता के एक-एक श्लोक की सीढ़ी महात्मा जी को उपर ऊठाये लिये जा रही है—ऊपर···ऊपर···और···ऊपर!!···

"अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योकताः शरीरिणः।
"अनाशिनोऽ प्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत।।"

अँधेरे में एक महाप्रकाश !!···आँखें चौंधिया जाती हैं कमला की··· महात्मा जी खिलखिला कर हँस पड़ते हैं—"रोती है क्यों माँ !···माँ !! रोती क्यों है ?"

"मत रोओ बेटी !"—माँ समझाती है—"बेटी ! रोओ मत !" अचानक डाक्टर की याद आती है—डाक्टर !···डाक्टर को कौन ढारस बँधाता होगा ?···मत रोओ डाक्टर ! मत रोओ !!

कमला रेडियो की आवाज़ को और तेज़ कर देती है—

"वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि । तथा शरीराणि विहाय जिर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही । नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः·····।"

(१) राउन्ड (२) पैसा चुका कर । (३) होल्डिंग ।

—उन्नीस

जोतखी काका के दरवाज़े पर भीड़ लग गई है !

···ठीक कहते थे जोतखी काका । अभी क्या हुआ है, अभी और बाकी है । 'अच्छर-अच्छर' सब बात फल गई ।···ऐसे 'अगरजानी' आदमी की बात काटने का नतीजा सारा गाँव भोग रहा है ।···

जंगली जड़ी-बूटी से ही जोतखी काका 'टनमना' गये हैं । खुद उठ नहीं सकते, बोली साफ़ नहीं हुई है । घिघिया कर, मुँह टेढ़ा करके बोलते हैं—"छयअआँछ !···छयअआँछ !!···आँ···आँ ।"

अर्थात्—सर्वनाश ! सर्वनाश !! हाँ···। सर्वनाश होगा ।

"जोतखी काका ! आज हुकुम हुआ कि सारा दिन 'बासी-मुँह' रह कर साम को कमला के किनारे जलपरवाह करना होगा ।"—खेलावन यादव अब जोतखी जी की बात कभी नहीं काट सकता ।···जोतखी जी ने कहा था, अट्ठारह साल की 'उमेर' में सकलदीप को माता-पिता 'बिओग'

लिखा हुआ है।···एकदम फल गई बात—सकलदीप दो महीने तक 'बिलल्ला' की तरह कलकत्ते में भटकता रहा।···समुर पकड़ लाया है। उसका भी 'पराच्छित' करना होगा।···होटल में बर्तन माँजता था।

जोतखी जी इशारे से कहते हैं—"नहीं!···हरगिज नहीं! ऐसा काम मत करो।"

जोतखी काका ने क्या कहा?···गाँधी जी काहे मारे गये?·· क्या कहते थे—अच्छा हुआ? धेत्त!···उनका मगज अब सही नहीं है।

दूसरे पहर को जुलूस निकला।···बाँस की एक 'रंथी' बना कर सजाई गई है—लाल, हरे, पीले कागजों से। एक ओर बालदेव जी ने कंधा दिया है, दूसरी ओर सुमरित दास, जिबेसर मोची और सकलदीप ने।···खेलावन यादव नहीं आया है। सकलदीप को बहुत समझाया, गाली दिया—मगर सकलदीप ने तो आकर रंथी में कंधा ही लगा दी।

टन-टनाँग!—घड़ीघंट बजता है।

तिन्ना तिरकिट तिन्ना—धिन्ना धा धा धिन्ना!

"आँ रे! काँ-च-हि बाँस के खाट रे खटोलना···"

गाँव के भकतिया लोगों ने 'समदाउन' शुरू किया।·····'समदाउन' की पहली कड़ी ने ही सबों के रोयें को कलपा दिया, सबों के दिल 'गम्हड़' उठे और आँखें छलछला आईं।

"आँरे काँचहि बाँस के खाट रे खटोलना
"आखैर···मूंज केर-हे-डोर!
"हाँ-रे-मोरी-रे-ए-ए-ए-हाँ-आँ-आँ-रामा-रामा!!
"चार समाजी मीली···डोलिया उठाओल
"लई चलल जमूना के ओ···र···।
"हाँ रे मोरी रे-ए···।"

अब कोई अपने को नहीं सँभाल सकता है। सब 'फफक-फफक' कर रो पड़ते हैं।···जुलूस आगे बढ़ रहा है। धीरे-धीरे सभी जुलूस में आकर मिल जाते हैं—रोते हुये चलते हैं।···बूढ़े रोते हैं, बच्चे रोते हैं—जवान

रो रहे हैं—औरतें रो रही हैं।···सकलदीप की जवान बहू 'दहलेज' से देखती है, उसके ओंठ काँप रहे हैं। रह-रह कर ओंठ थरथराते हैं और अंत में वह अपने को सँभाल नहीं सकती है। वह दौड़ती है जुलूस के पीछे। खेलावन सिंह चिल्लाते हैं—"कनियाँ, कनियाँ!···ऐ···कनियाँ।"

"हाँ-आँ-रे-गोड़ तोरा लागौं हम भैया रे कहरिवा से,
"घड़ी भर···डोली बिलमाव।
"भाई जे रोवय·····"

—माँ रो रही है। भारथमाता रो रही है।

रामदास हाथ में खँजड़ी लिये चुपचाप रो रहा है।···उसी के पाप से महत्मा जी मारे गये हैं।···उसने साधू के अखाड़े को 'भरस्ट' किया है।···परसों रमपियरिया की माये गाँव से मछली का सालन माँग कर लाई थी। रमपियरिया रात में उठ कर—चुरा कर खा रही थी।·····
···महंथ रामदास ने रंगे-हाथ पकड़ लिया था—बुआरी मछली की कुरी!

रमजू दास की स्त्री छाती पीट-पीट कर रो रही है।·····ठिठरा चमार की बारह साल की बेटी रो रही है—"बाबा हो!···बाबू हो!"

बापू!

···कमला 'रेडियो' अगोर कर बैठी हुई है। उसकी आँखों से आँसू टप-टप गिर रहे हैं। माँ आँचल से बेटी के आँसू पोंछती है और खुद रोती है—"वे तो नररूप धारन कर आये थे।···लीला दिखा कर चले गये।"

रेडियो से आँखों देखा हाल प्रसारित हो रहा है—"अब···अब··· चंदन की चिता तैयार है। बस, अब कुछ ही क्षणों में···देखिये, पंडित नेहरू देवदास गाँधी जी से···महात्मा जी के सुपुत्र से कुछ कह रहे हैं।···नरमुंड ···नरमुंड···कहीं भी एक तिल रखने की जगह नहीं·····(कोलाहल की आवाज क्रमशः तेज हो रही है।···जय···जय···) अपार जनसमुद्र में मानों लहरें आ गई हैं, सभी एक बार, अंतिम बार महामानव की पवित्र

चिता को—अंतिमबार देखना चाहते हैं।···ऐम्बुलेंस गाड़ियाँ बेहोश लोगों को ढो रही हैं।···और···और···आह!···अब···पच्छिम आकाश में सूरज अपनी लाली बिखेर कर अस्त हो रहा है···और इधर····· महामानव की चिता में अग्निशिखा···धरती का सूरज अस्त हो रहा है। ···क्षिति-जल-पावक···पाँच तत्वों का पुतला·····(गीता-वाणी सुनाई पड़ती है)—जन्मबन्धवि-निर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम्···।"

"माँ-माँ!"

माँ, माँ·····कमला स्पष्ट सुनती है, कोई पुकार रहा है। कौन पुकारता है उसे-माँ!···

"क्या हुआ बेटी!"—माँ बाहर से दौड़ी आती है।

"मेरा बच्चा···मेरा-मेरा-बेटा···!"

ॐ शांति···शां···ति···!!

—बीस

"सेत्ताराम! सेत्ताराम!!"

"ओ बावनदास जी! आइये!"—लछमी मोढ़ा देती है।

"बालदेव जी कहाँ है?"

"आइये, साहेब बंदगी, जै हिन्द!"—बालदेव जी आ गये।

"जै हिन्द।"

बावन दास को देख कर डर लगता है—एकदम सूख कर काँटा हो गये है।···बाल इतना ज्यादा कैसे पक गया?···ओ! आज टोपी नहीं पहने हैं, इसीलिए। आवाज भी बदल गई है।···बालदेव जी कहते हैं—"आप तो अब यहाँ रहते ही नहीं हैं।···उस दिन हम अकेले, जिस समय से रेडियो में सुने, उसी समय से लेकर दूसरे दिन 'जलपरबाह' तक, सब कुछ किये।···किसी तरह संभाल लिया। 'सराध' के दिन तहसीलदार साहेब भोज देने वाले हैं—बाभन, रजपूत, यादव और हरिजन सभी एक 'पंगत'

में बैठ कर खायेंगे।·····अच्छा हुआ, आप भी आ गये।·····अकेले हम···।"

"नहीं, बालदेव जी। हम रहेंगे नहीं। हम जरूरी काम से जा रहे हैं। सोचा, एक बार आपलोगों से भेंट करते चलें।···हम तुरत···अभी चले जायेंगे।"

"अच्छा···उधर का हाल समाचार क्या है, सुनाइये।"

"हाल क्या सुनियेगा। अब सुनना-सुनाना क्या है?···रामकिसुन आसरम में भी 'हरिजन भोजन' होगा।·····'बिलेक पी' कल मर गया। ···सिवनाथ बाबू आये हैं, पटना से।···ससाँक जी 'प्रान्ती'[1] सभापति हो गये हैं, वह भी अब पटना में ही रहेंगे।···सब आदमी अब पटना में ही रहेंगे। 'मेले'[2] लोग तो हमेसा वहीं रहते हैं।···सुराज मिल गया, अब क्या है?·····छोटन बाबू का राज है। एक कोरी बेमान, 'बिलेक-मारकेटी' के साथ कचेहरी में घूमते रहते हैं। हाकिमों के यहाँ दाँत खिटकाते फिरते हैं।···सब चौपट हो गया।"—बावन दास कहते-कहते रुक जाता है।

"छोटन बाबू की बात मत पूछिये।···अब तो 'घर-घराना' सहित कंगरेसी हो गये हैं।"

"नहीं बालदेव। छोटन बाबू जैसे छोटे लोगों की बात जाने दो। यह बेमारी ऊपर से आई है।·····यह पटनियाँ रोग है।·····अब तो और 'धूमधाम' से फैलेगा।···भूमिहार, रजपूत, कैथ, जादव, हरिजन···सब लड़ रहे हैं।·····अगले चुनाव में तीगुना 'मेले' चुने जायेंगे। किसका आदमी ज्यादे चुना जाये, इसी की लड़ाई है। यदि रजपूत पाटी के लोग ज्यादे आये तो सबसे बड़ा 'मंतरी' भी रजपूत होगा।···परसों बात हो रही थी आसरम में। छोटन बाबू और अमीन बाबू बतिया रहे थे—गाँधी जी का 'भसम' लेकर ससाँक जी आवेंगे। छोटन बाबू बोले—जिला का कोटा 'भसम' जिला सभापति को ही लाना चाहिये।·····ससाँक जी क्यों ला रहे हैं। इसमें बहुत बड़ा 'रहस'[3] है।—हा-हा-हा-···हा···।"—

बावन दास विचित्र हँसी हँसता है। ऐसी हँसी तो कभी नहीं देखा। बालदेव जी ने भी नहीं।

"काहे ? हँसते काहे हैं दास जी ?

"हा-हा-ह-ह !···अरे, वही अमीन बाबू। तुरत उठकर बैठ गये, बोले—आप ठीक कहते हैं छोटन बाबू। गाड़ी तो चली गई। कटिहार जाने से गाड़ी मिल सकती है।···तुरत मोटर 'इस्टार्ट' करके दोनो रमाना हो गये। सभापति-मंतरी···हो राम !···राम मिलाये जोड़ी।···हा-हा-चले दोनों ···हा-हा-भसम लाने···हा-हा-।···देस को भसम कर देंगे ये लोग ! भसमासुर !"

"दास जी !···मालूम होता है कोई सोसलिट ने आपको···।"

"सोसलिस ? सोसलिस ?···क्या कहेगा सोसलिस हमको ?···सब पाटी समान। उस पाटी में भी जितने बड़े लोग हैं—मंतरी बनने के लिए मार कर रहे हैं। सब 'मेले-मंतरी' होना चाहते हैं, बालदेव। देस का काम, गरीबों का काम चाहे मजूरों का काम—जो भी करते हैं—एक ही लोभ से।···उस पाटी में बस एक 'जैपरगास' बाबू हैं···हा-हा-हा····· उनको भी कोई गोली मार देगा।···फिर भसम लेने के लिए सभापति-मंतरी साथे-साथ···।"

नया चूड़ा और नया गुड़ एक 'थरिया' में ले आती है लछमी—"जरा बालभोग कर लीजिये।···थोड़ा सा है। दूध-दही तो भोज के लिए जमाया जा रहा है।"

बावनदास बगल की झोली का मुँह फैलाते हैं। लछमी कहती है—"यह क्या ?···जलपान कीजिये ! झोली में क्यों लेते हैं ?"

लछमी की आँखें न जाने क्यों सजल हो जाती हैं।···इतने दिनों के बाद एक 'बैष्णव' आया और बिना पत्तल जुठाये चला जायेगा ?···नहीं, वह ऐसा नहीं होने देगी।

"नहीं। बालभोग तो आप को करना ही होगा।"—लछमी जिद करती है—"दास जी 'बिनती' करती हूँ···।"

बालदेव जी देखते हैं, बावनदास को कुछ हो गया है।·····बड़ा 'अटरपटर' बोलते हैं। चेहरा भी एकदम बदल गया है, आँखें लाल हैं। ···· कपड़ा कितना मैला हो गया है?···डेढ़ बित्ता कपड़ा कमर में लपेटते हैं, सो भी तार-तार हो गया है।·····हँसते हैं कैसा? वह सोलह-सतरह साल से बावनदास के साथ है, कभी तो ऐसा हँसते नहीं देखा।····· 'अलमुनियाँ' का लोटा और बाटी नहीं छोड़ते हैं कभी।

जलपान करके हाथ धोते हुये बावनदास जी कहते हैं—"बालदेव जी अब हम चलेंगे।···पुवरिया-लैन की गाड़ी 'कोदलिया टीसन' में जाकर पकड़ेंगे।···आपसे एक काम है।"

बावनदास झोली से लाल रंग का एक बस्ता निकालते हैं। बस्ता खोल कर कागज का छोटा सा पुलन्डा निकालते हैं।—"बालदेव जी!·····सब महत्मा जी के खत हैं। गंगुली जी ने एक बार कहा था—'जरूरत पड़ने पर हमको दीजियेगा।'···आने के समय याद ही नहीं रहा।····आप पुरैनियाँ कब तक जाइयेगा।·····चार-पाँच दिन के बाद? तब ठीक है, आप रख लीजिये। गंगुली जी को दे दीजियेगा।··· जरूर।"

परम श्रद्धा-भक्ति से सहेजी हुई पवित्र चिट्ठियों को बावन दास एक टक देख रहा है।·····फिर एक-एक कर अलग-अलग छाँटता है। हवा से एक चिट्ठी उड़कर बिछावन के नीचे चली गई, बावनदास ने चट से उठा कर सर से छुला लिया।···उसे एक अक्षर का भी बोध नहीं, लेकिन वह प्रत्येक चिट्ठी के एक-एक शब्द पर निगाह डालता है—लगता है, सचमुच पढ़ रहा हो।···आखिरी चिट्ठी खत्म कर वह एक लम्बी साँस लेता है।

'बस्ता' हाथ में लेकर बावनदास थोड़ी देर तक बेकार ही उसकी डोरी को उंगलियों में लपेटता और खोलता है। फिर एक लम्बी साँस लेकर, अचानक ही खड़ा हो जाता है—"लीजिये!···सेत्तारा-सेत्तारा!!"

बालदेव जी बस्ता लेकर लछमी के हाथ में दे देते हैं—"पौंती-पिटारी में रख दीजिये!"

लछमी बस्ता लेकर सर से छुलाती है, फिर छाती से लगाती है।··· वह एकटक बावनदास को देख रही है।···इस चिरकुट खधड़ की 'दोलाई' से जाड़ा कैसे काटते हैं बावनदास जी!

"दासजी!···इस चादर से जाड़ा कैसे काटते हैं?·····ठहरिये, एक पुराना कम्बल है। ले लीजिये।"—लछमी विनती के सुर में ही कहती है।

"नहीं-माई!"—बावनदास कंधे से झोली को लटकाते हुये कहता है —"नहीं माई कम्बल की जरूरत नहीं।"

लछमी चुप हो जाती है।···बावनदास जी को अब कम्बल की जरूरत नहीं। अब उन्हें किसी चीज की जरूरत नहीं।·····लछमी मानो सबकुछ समझ जाती है।

धरती फाटे मेघ-जल
कपड़ा फाटे डोर
तन फाटे की औखदी
मन फाटे नहीं ठौर।

"अच्छा तो···अब जै हिन्द!"

"जै हिन्द!"

बावनदास लुढ़कता हुआ जा रहा है।···सोबरन का 'कटहा' कुत्ता खिटखिटा कर भूँकते हुये उस पर टूटता है। लेकिन, बावनदास उधर देखता तक नहीं है।···कुत्ता भी आश्चर्य से चुप हो जाता है। ज़रा सा 'धेत्त-धेत्त' भी नहीं किया?·····कैसा आदमी है?·····कुत्ता बावनदास के पीछे-पीछे दुम हिलाते मिट्टी सूँघते कुछ दूर तक जाता है।

"बावनदास जी का मन एकदम फट गया है।"—लछमी कहती है।

बालदेव जी कहते हैं—"अरे मन फटेगा क्या! थोड़ा 'ढंग' भी करता है।···गंगुली जी चिट्ठी लेकर क्या करेंगे?···दूसरे की चिट्ठी भले लोग नहीं पढ़ते हैं। दोख होता है।"

'कोदलिया टीसन' पर गाड़ी में बैठ कर बावनदास को लगता है, वह

कोई 'तीरथ' करने जा रहा है।···बहुत दिनों से उसके मन में लालसा है —एक बार 'जगरनाथजी' जाने की।···केदार नाथ, बदरिका नाथ वह गया है। उसकी आँखों के आगे 'जगरनाथ का पट'—छाता और छड़ी लिये तीर्थ से लौटे हुये बावनदास की मूर्ति आ खड़ी होती है—

"जगरनथिया रौ भाय,

"बाबा रौ बिराजे उड़िया···देस में।"

एक यात्री ने कहा—"अरे, माघ महीना में कौन जगरनाथ से लौटा है भाई!"

दूसरे ने कहा—"जरा जोर से बावन गुसाईं जी।"

बावनदास खिड़की से बाहर की ओर देखता है—खेतों में लोग धान काट रहे हैं।···नदी में मछली मार रहे हैं। भैंस चरा रहे हैं। बावन ने बहुत सफ़र किया है, 'लैन' से—'कलकत्ता—काँगरेस', 'लखनौ—काँगरेस', बैजवाड़ा, साबरमती आश्रम, महात्मा गाँधी जी की जन्मभूमि काठियावाड़ —फिर 'बम्बै,।···'रेलवे लैन' के किनारे काम करते हुये लोगों के मुखड़े —विभिन्न प्रदेश के लोगों के मुखड़े—उसकी आँखों के आगे इकट्ठे हो जाते हैं।···खगड़ा 'टीसन' पर उतर कर एक बार नाथ बाबू के यहाँ जाने का विचार था, लेकिन नाथबाबू कलकत्ता गये हैं। खोखी दीदी और काकी जी भी गई हैं।···खोखी दीदी ने एक बार बावन दास की तस्वीर बनाई थी।···बोली—बस आप जैसे बैठे हैं, बैठे रहिये।—एक कागज पर पेन्सिल से तस्वीर बनाने लगी।···काकी जी ठीक माये जी की तरह बोलती हैं। नाथ बाबू रहते तो बावन को आज बहुत भारी मदद मिलती!···बहुत कड़े आदमी हैं। गोस्सा में जब होते हैं तो किसी को कुछ नहीं बूझते हैं। ·····'कम्फ जेहन्न' के साहेब को 'जिनगी' भर याद रहेगा।···नाथ बाबू का चेहरा लाल हो गया था उस दिन—एकदम लाल टेस।···पिछले साल नाथ बाबू और चौधरी जी 'बम्बै' जा रहे थे। बावन भी साथ में था। ···'मोगलसराय टीसन' पर गाड़ी में भीड़ देख कर होस गुम। इस छोर से उस छोर तक घूम आये, मगर कहीं घुसने ही नहीं दिया।···चौधरी

जी हँसते हुए बोले—'एहो गाड़ी छूटतऽ लच्छन लगैछेहौं।'* नाथ बाबू ने एक डिब्बा के हैन्डिल को जैसे ही पकड़ा कि अंदर से एक आदमी ने ग़ुस्सा होकर कहा—'देखता है नहीं, इस पर लिखा हुआ—बंगाल के मेम्बर के वास्ते 'रिजप' है।'

नाथ बाबू ने भी ग़ुसा कर जवाब दिया था—"खूब देखता है।···बंगाल में अब आप लोगों के जैसा आदमी फलने लगा है—यह भी देखता है। हाम भी ए० आई० सी० सी० का मेम्बर है, आप भी उसी का मेम्बर है—मगर आदमियत···।"

भीतर से किसी ने रसिकता की थी—"आदमियत तूले आर कोथा बोलबेन ना मोशाय।·····आसून—आपनार तो देखची ऐकेबारे 'त्रिमूर्ति'।···"

बात भी कुछ ऐसी ही हो गई कि सभी हँस पड़े—चौधरी जी भी, नाथ बाबू भी और डिब्बे के सभी मेम्बर!···हँसने वाली बात ही है।··· चौधरी जी एकदम लम्बा—माने, चौधरी जी की लम्बाई की बात तो सभी जानते ही हैं, पूरा ऊँचे क़द का आदमी भी उनके कंधे के बराबर होता है। और, इधर नाथ बाबू ठेठ-नाटे क़द के। गोल चेहरा—चेहरे पर हरदम मुस्कुराहट, वह भी छोटी-सी!···और तीसरा मूर्ति—सेवक-बावनदास!··· विचार कर देखिये—हँसने की बात है या नहीं।···चौधरी जी ने ऊपर बेंच पर अपना बिस्तर लम्बा किया था, नाथ बाबू और बावन दास नीचे।

"एँ? खगड़ा आ गया?···सेत्तारांम सेत्तारांम।"

खगड़ा स्टेशन पर उतर कर, बावनदास एक बार ऊपर आस्मान की ओर देखता है—वह शाम तक पहुँच जायेगा।···नहीं, नाथ बाबू से नहीं भेंट होगी तो अब किससे भेंट करने जाये वह।···

'कलीमुर्दीपुर' की ओर जा रहा है बावन!···'कलीमुर्दीपुर' पाकिस्तान में जाते-जाते बच गया है। एक बार हल्ला हुआ कि हिन्दुस्तान में रहेगा—दूसरी बार हल्ला हुआ कि 'पाकिस्तान' में।···सुनते हैं पाकिस्तान वाले कहते थे कि गाँव का नाम 'इसलामी' है, इसलिये इसको···। क्या बच्चों

जैसी बुद्धी···।

···सेत्तारामं ! सेत्तारामं !!—बावनदास जल्दी-जल्दी डेग बढ़ाता है ···आज जैसे हो, शाम तक उसे पहुँचना ही है—एक जगह···। उस जगह का नाम भी अभी वह अपने मन में नहीं लायेगा।

चलते-चलते वह कभी-कभी रुक कर उसाँसें लेता है—बहुत देर तक रोने पर बच्चे जिस तरह उसाँसें लेते हैं, उसी तरह !! बावन की झोली में खँजड़ी है। खँजड़ी में लगी हुई झुनकी उसकी गति को एक लय में बाँध रही है—किन्न, किन्न, किन्न, किन्न !!···खेतों की मेड़ों पर, मैदान में, सड़कों पर—ऊँची-नीची जमीन पर उसके चरण पड़ते हैं !—मंजिल क़रीब है अब···किन्न, किन्न, किन्न, किन्न···! और थोड़ी दूर···और आधा कोस !···किन्न, किन्न···।

···जै महतमा जी ! जै बापू !···माँ ! माँ !···धन्न हो प्रभू ! एक परिच्छा से तो पार करा दिया प्रभू।···बस यही···इसी 'साँहुड़' के नीचे ! ···इसी कच्ची 'लीक' के पास···डाल दो डेरा-रे-मन !···

···नागर नदी के किनारे ! नागर को एक बहुत बड़ा गवाह बनाया है—दोनों देस वालों ने। नागर नदी ही सीमा रेखा है।···एक किनारा हिन्दुस्तान, दूसरा किनारा पाकिस्तान !! इस पार हिन्दुस्तान, दूसरी ओर पाकिस्तान !···नागर बारहों मास बहती है—सूखती नहीं कभी। शायद, इसीलिए !···राम डंडी माथा पर आ गया !

माघ की ठिठुराती हुई सर्दी !···पछिया हवा भी चलती है। लगता है, आज की रात 'बदरीनाथ' की तरह यहाँ भी बरफ गिरेगी।···राम-डंडी सिर पर आ गया···! बावन निराश नहीं होता है—जब तक सूरज नहीं उगेगा, वह टलेगा नहीं।···बात ही कुछ ऐसी है !! यदि इस रास्ते से नहीं आई गाड़ी···। तो !···वह दूर, बहुत दूर किसी गाँव की रौशनी को देखता है। दोनों हाथों को मल कर गर्म हो लेता है।···हाँ, गाड़ियाँ आवेंगी ! पचासो गाड़ियाँ।···कपड़े और चीनी और सिमेंट से लदी हुई गाड़ियाँ।···जिसने खबर दी है उसे—उसका नाम वह जान जाने पर भी

नहीं खोलेगा। बावन ने गाँधी जी की क़सम खाई है! बेचारा ग़रीब··· उसकी नौकरी चली जायेगी।···कटहा के दुलारचन्द कापरा, वही जूआ कंपनीवाला — जिसकी जूये की दुकान पर नेबीलाल, भोला बाबू और बावन ने फ़ारबिसगंज मेला में 'पिकेटिन' किया था। जूआ भी नहीं, एकदम 'पाकिट काट' खेला करता था और मोरंगिया (नेपाली) लड़कियों, मोरंगिया दारू गाँजा का कारबार करता था।···कटहा थाना काँग्रेस का सिकरेटरी है।···उसी की गाड़ियाँ हैं। 'सपलाई निसपिट्टर' और कटहा थाना के दारोगा और यहाँ कलमुहींपुर के 'नाका' वाले हवलदार मिलाकर 'रकम' आठ आना और इधर दुलारचन्द कापरा रकम आठ आना! गाड़ियाँ सदर-चालू सड़क से नहीं जायेंगी।···'चोर पैड़ा'ऽ होकर, चोरघाट होकर पार करेंगी। फिर उधर के व्यापारी को उस पार पहुँचा देगा।—उधर के हाकिम हुक्कामों को भी इसी तरह हिस्सा मिलेगा! लाखों रुपया का कारबार है!···वह आ गई! हाँ गाड़ियाँ···कच्ची सीक में पहियों की आवाज़!···हाँ गाड़ी ही है!

जै भगवान! जै महतमा जी! सेत्तिाराम! सेत्तिाराम!!···बल दो प्रभू। परीच्छा में पार करो गुरु। बापू! बापू!!···माँ···माँ!···झोली के अन्दर वह कुछ टटोलता है।···

वह झोली को कंधे से लटका कर खड़ा हो जाता है।···नदी किनारे कोई पखेरू बोला--'टिटिक्।'···किन्न—खँजड़ी की झुनकी ज़रा झनकी!

"···भगवान! महतमा जी!···बापू! माँ!! मुझे बुला लो अपने पास। क्या करूँगा इस दुनियाँ में रहकर?···धरम नहीं बचेगा।"

गाड़ियाँ आ गईं—एकदम क़रीब!

"अरे बा-आ-आ-प रे—भू···ऊ त!"—अगला गाड़ीवान डरी और दबी आवाज़ में अपने साथी से कहता है—"भूत!"

"छिउँ···" बैल भड़कते हैं।···कचकचा कर गाड़ियाँ रुक जाती हैं।

"सेत्तिाराम! सेत्तिाराम!!"

कलीमुहींपुर नाका के सिपाही जी आगे बढ़ आते हैं—ख़ास कर

पूछते हैं—"कौन है ?"

बगल की झाड़ी से सामने आकर बावन ने कहा—"हम हैं। सेवक बावन दास।"

"बा···व···न···दास !"—सिपाही जी का मुँह खुला का खुला रह जाता है। इस आदमी को···वह 'सन् तीस' से ही जानता है !···चान टरे, सुरूज टरे···!

सिपाही जी 'मुरैठा' की 'पूछरी' से मुँह छिपाते हैं।···बावन दास हँसकर कहता है—मुँह क्यों छिपाते हैं रामबुझावन सिंघ जी। आज खुल कर खेला होना चाहिये !···मुँह मत छिपाइये।"

"दास जी !···हमारा क्या कसूर ?···आप तो जानते ही हैं।"

"सिंघ जी ! बातचीत कुछ नहीं। गाड़ियाँ जायेंगी खगड़ा !··· लौटाइये।"

"गाड़ी त ना लौटी।"

"लौटी ना त ठाढ़ रही !"

अढ़ाई हजार रुपये हिस्से में मिल चुके हैं रामबुझावन सिंघ को।··· क्या किया जाये।···

"दास जी, ठहरिये !···हम तुरत आते हैं।"

"अच्छी बात ! ले आइये आज जो लोग पर्दे में हैं। जाइये !"

कलीमुर्दीपुर में एक 'होटिल बंगला'[६] है।·····हाकिम-हुक्काम लोग बराबर आते रहते हैं।···बाँस फूस का बड़ा सा चौखड़ा है !···गाँव के एकदम बाहर !!

'होटिल-बँगला' में सप्लाई इन्सपेक्टर, दुलारचंद कापरा और कली-मुर्दीपुर के हवलदार साहब टेब्ल के चारों ओर बैठ कर·····'मोरंगिया माल' पी रहे हैं। कलीमुर्दीपुर 'होटिल बंगला' के बेरसपतिया बावर्ची के हाथ का 'मुर्ग-मुसल्लम' जिसने खाया उसी ने जी खोल कर 'बक्सीस' दिया !

सप्लाई इन्सपेक्टर साहब गिलास में चुस्की लगाते हुये मुस्कुराते हैं

—"अरे धत्त !···इस मुर्ग़-मुसल्लम से गर्मी थोड़ो आयेगी !···हवलदार साहब !···अरे कोई दो-टाँगवाली मूर्गी···।"

"क्या पूछते हैं, आज···महतमा जी के सराध की वजह से सभी भोज खाने चली गई हैं ।"

दुलारचंद कापरा कहता है—"ऊँह ! ऐसा जानते तो कटहा से ही दो 'रिफ़्युजनी' को उठा लाते ।···सब मज़ा किरकिरा कर दिया ।"

कड़कड़···कड़क् ! —सप्लाई इन्सपेक्टर चतुरानन्द सिंह जी मूर्गी की टाँग चबाते हैं ।

कड़-कड़-कड़क् !—बाहर साइकिल की आवाज़ होती है ।

"कौन ?"

"सलाम !···हम रामबुझावन सिंघ ।"

"क्या हाल है ?"

"सब चौपट । बावन दास···।"

"आँ···यें !—बावन दास ? कहाँ ?"

सभी गुम हो गये ।···बेरसपतिया बावर्ची इशारे से कहता है, हवलदार साहब को—"मिल सकती है मूर्गी···। मगर···"(दोनों हाथों की उँगलियाँ दिखलाता है ।)

हवलदार साहब कहते हैं—"अच्छा अभी ठहरो—तुम बाहर जाओ ।"

"क्या हो अब ?"—सभी एक साथ लम्बी साँस लेते हैं ।

"अकेला है या···?"

"एकदम अकेला !"

"मगर···इसका मतलब जानते हैं ?"

"दुलारचंद जी !···कापरा जी !"

सबों कि निगाहें मिलती हैं आपस में !····दुलारचंद गिलास में बोतल से शराब ढाल कर गटगटा कर पी जाता है । सभी उसकी ओर 'आशा' भरी दृष्टि से देखते हैं—"मैं पंजाबी हूँ जी !···मगर आगे आपलोग

जानो। मैं अपना फ़रज अदा करने जाता हूँ।"

···'सिटसिट' कर पछिया हवा चल रही। हवलदार साहब साइकिल का 'पैडिल' चलाते हुये कहते हैं—"कापरा जी! आस-पास के गाँव वालों का डर जरा भी मत कीजिये।·····एलान किया हुआ है कि सरहद के आस-पास 'रात-बेरात' जो निकलेगा, उसे गोली लग जा सकती है।"

बावनदास ठीक पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा है—बीच लीक पर!

दुलारचन्द कापरा देखता है—हाँ, बावन ही है।

"कौन?···कापरा जी!···गाड़ी के पीछे से झाँकते क्या हैं? सामने आइये!"—बावनदास हँसता है।

"बावन!···रास्ता छोड़ दो! गाड़ी पास होने दो!"

"आइये सामने। पास कराइये गाड़ी।···आप भी काँगरेस के मेम्बर हैं और हम भी। खाता खुला हुआ है, अपना-अपना हिसाब-किताब लिखाइये।···आज के इस पवित्तर दिन को हम कलंक नहीं लगने देंगे।"

कापरा जानता है, इससे माथा-पच्ची करना बेकार है। वह हवलदार के कान में कुछ कहता है। फिर पुकारता है—"इसपिरिंग खाँ। कहाँ!···"

यह इसपिरिंग खाँ, कापरा का अपना आदमी है।···नाम फ़र्जी है। ···एक गाड़ी पर से उतरता है, फिर चुपचाप अगली गाड़ी पर जाकर बैठ जाता है।

"बावन दास!···मान जाओ!"

"·····।"

"हाँको जी गाड़ी। इसपिरिंग खाँ!"

गाड़ी में जुते हुये दोनो जानवर अचरज से चौंक पड़ते हैं। भड़कते हैं! छिऊँ! छिऊँ!! नाक से आवाज कर के आगे बढ़ने से इनकार करते हैं। कापरा एक बैल की पूँछ पकड़ कर ऐंठता है—हड्डी 'पट्' से बोली··· मगर, बैलों ने लीक छोड़ दिया और गाड़ी को बगल की ओर लेकर भागे।

दूसरी गाड़ी···! एक बैल को हवलदार और दूसरे को कापरा, पूँछ मरोड़ कर, आगे बढ़ाते हैं।···गाड़ीवान अवाक् होकर हाथ में रास थामे हुये है।···यह क्या हो रहा है?

बैलगाड़ी पास हो गई।···पास हो रही है। बावन दास बीच लीक पर खड़ा है और गाड़ियाँ ऊपर से 'आरपार' पास कर रही हैं···बैल भड़के जरूर···मगर।···

तीन-चार! चार गाड़ियाँ?

अब, बावन दास ठीक बैल के सामने आकर खड़ा होता है। बैल उसे 'हुँत्था' मार कर गिरा देता है। वह लीक पर लुढ़क जाता है!··· ठीक पहिये के नीचे!

मड़-मड़-मड़।

···बापू!···माँ···!

गाड़ी पास!···कट-कर्र-कट!

—गाड़ियाँ पास हो रही हैं।···पचास गाड़ियाँ!!

आखिरी गाड़ी जब गुजर गई तो हवलदार और रामबुझावन सिंह मिलकर, बावन की चित्थी-चित्थी लाश—लहू के कीचड़ में लत-पत लाश को उठा कर चलते हैं···नागर नदी के उस पार, 'पाखिस्तान' में फेंकना होगा।···इधर नहीं···'हरगिस' नहीं!

दुलारचंद कापरा बावन की झोली लेकर उनके पीछे-पीछे जाता है।

नागर पार करते समय बावन के गले की तुलसी-माला नागर की बहती हुई धारा में गिर पड़ती है—सेत्ताराम!!

चार बजे भोर को पाकिस्तानी पुलिस ने घाट गश्त लगाने के समय देखा—लाश!

"अरे! यह तो उस पार के बौने की है। यहाँ कैसे आई?···ओ समझ गये।···उठाओ जी, हनीफ़ और जुम्मन—ले चलो उस पार!"

बावन की ठंढी लाश—'झोली झंडा' के साथ फिर उठी।

बावन ने दो आज़ाद देशों की—हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की

ईमानदारी को···इन्सानियत को बस दो डेग में ही नाप लिया !

नागर नदी के बीच में पहुँच कर पाकिस्तान के पुलिस अफ़सर साहब ने कहा—"नदी में ही डाल दो।···इसकी झोली को उस पार दरख़्त से लटका दो। जल्दी।"

नागर की धारा हठात्···कलकला उठी ! सिपाही खँजड़ी को पानी में फेंकते हुये कहता है—"डमरू बजा के रघुपति राघव गाते रहो।"

"···झनक्···।"

(१) प्रांतीय। (२) एम० एल० ए०। (३) रहस्य। (४) लगता है, यह गाड़ी भी छूट जायेगी। (५) चोर रास्ता। (६) हाल्टिंग बंगला।

—एक्कीस

तेरीगंज गाँव के एकमात्र मालिक—एकछत्र ज़मींदार—तहसीलदार बाबू विश्वनाथ मल्लिक का 'खम्हार' देख लो !···जिस बड़े चौताल पर एक पंक्ति में बैठकर, गाँधी जी के 'सराध' के दिन लोगों ने 'सरबघटन' भोज खाया—उसी को घेर कर खलिहान बनाया है तहसीलदार साहब ने। दस बीघे का घेराव है।

···रामकिरपाल सिंघ अपनी बची खुची ज़मीन, फ़सल सहित तहसीलदार के यहाँ सूदरेहन रख कर—तीरथ करने जा रहे हैं, 'कासी'; 'बदिरका जी'; 'केदार जी'; जहाँ तक जा सकें। तहसीलदार साहब ने कहा है—"बाक़ी रुपया जहाँ से लिखियेगा—मनिआर्डर से भेजते रहेंगे।"

बाक़ी खज़ाना, घर-खर्चा, जाड़े का कपड़ा, सकलदीप के 'प्राच्छित' और सतनारायण-पूजा के लिए खेलावन दो सौ रुपया माँगने गया। तहसीलदार साहब ने साफ़ जवाब दे दिया—'हाथ में एक पैसा नहीं है।' ···घर के पिछवाड़े की ज़मीन, जिसमें धान क़रीब-क़रीब तैयार हो गया था—लिख दिया तो तीन सौ रुपये दिये।

सब मिलाकर पाँच हज़ार मन से क्या कम होगा धान इस बार !

तंत्रिमा छत्री टोली, कुर्म छत्री टोली, कुसवाहा छत्री टोली, धनुकधारी छत्री टोली और गहलोत छत्री टोली के जन-मज़दूरों की हाँडी माघ महीने में ही टँग गई है।·····खम्हार में जितना धान हिस्सा होगा—उससे चौगुना तो कर्ज़ा है। सब काट लिया जायेगा।···और इस बार तो लगता है गाँव में 'गुजर' नहीं चलेगा।···खेलावन यादव पाँच हल चलाते थे, इस साल एक ही हल चलावेंगे, एक हल 'अधहरी'[1] पर चलेगा। रामकिरपाल सिंह ने तो खेती-बारी उठा ही दी। बुढ़िया को लेकर 'तीरथ' चले गये। शिवशक्कर सिंह दो हल चलावेंगे।···तहसीलदार साहब इस बार 'टक्टर' (ट्रैक्टर) खरीद रहे हैं। बेतार कहता था—"उसी से सब कुछ होगा—हल, चौंगी, बिया, कोड़-कमान, कादो-गोरा और धनकटनी भी !···आदमी की क्या जरूरत ?···पानी का 'पम्पू' आवेगा ! इन्दर भगवान की खुशामद की जरूरत नहीं।···कमला नदी में 'पम्पू' लगा दिया, 'मिसिन इसटाट' कर दिया और 'हथिया सूँड़'[2] की तरह सब पानी सोख कर खेत पटा देगा।"···जब इन्दर भगवान को ही 'नून-नेबू' चटा रहे हैं तहसीलदार साहेब, तो आदमी उनके 'हजूर'[3] में क्या है ?···कटिहार में एक जूट मिल और खुला है। तीन जूट मिल ?···चलो, चलो !! दो रुपैया रोज मजूरी मिलती है। गाँव में अब क्या रखा है ?

एक महतमा जी का भरोसा था, उनको भी मार दिया।···बालदेव जी से पूछो न, महतमा जी की जगह पर अब कौन आवेंगे। जमाहिर लाल ?···मगर महतमा जी तो एक ही 'कोपिन' पहनते थे।···

बिरंची कहता है—"जहाँ सभी जात भाई का, बारहो बरन का, ऊँच-नीच का पत्ता जूठा हुआ है—उस 'खम्हार' में 'बरक्कत' तो 'उधिया' कर होगा।···तहसीलदार साहेब आज कह रहे थे—इस बार सभी को अपने हिस्से में से 'औकाद' मुताबिक धान देना होगा—एक कट्ठा, आध कट्ठा, एक सेर, आध सेर !···महतमा जी का 'चन्ना' हो रहा है।"

"महतमा जी का चन्ना ? क्या होगा चन्ना—सराध तो हो गया।"

"नहीं !···रहुआ के गुरुबंसी बाबू ने 'डिल्ली' में जाकर एक करोड़ या···एक लाख···पता नहीं एक हजार···याद नहीं ; मगर एक 'मोट' रुपैया गुरुबंसी बाबू ने जमाहिर लाल को जाकर दिया है।···महतमा जी का चन्ना। सुनते हैं, और भी देंगे।"

"ऐं ! कौन हल्ला करता है उधर ?"

"और कौन ?···रमपियरिया है !"

रमपियरिया और रमपियरिया की माँ के गले की आवाज़ सुनी जाती है।···मठ पर झगड़ा हो रहा है। आज लगता है—मारपीट ज़्यादा हुई है।

"रामदास गुसाईं आजकल भर दिन गाँजा पीता है। एक-न-एक दिन वह भी खून करेगा।"

"साला, इन्हीं लोगों के पाप से धरती 'दलमला' रही है।···भरस्ट कर दिया। अब वह मठ है ?···लालबाग मेला का 'मीनाबजार' हो गया है···दस-दस कोस का लुच्चा लफंगा सब आकर जमा होता है।"

तहसीलदार साहब आजकल रात में ऊपर के कोठे पर सुमरित दास के साथ 'कागज पत्तर' ठीक करते रहते हैं। किसी-किसी दिन सुमरित दास सीढ़ी पर लड़खड़ा कर गिर जाता है।···संथालों के घर में चुलाया हुआ महुआ का दारू बड़ा तेज होता है।···गंगाई माँझी रोज आधा 'कंटर' दे जाता है।···कभी-कभी तहसीलदार साहब भी नीचे उतर कर खूब हल्ला करते हैं। कमला की माँ को, कमला को, सेबिया बूढ़ी—सबों को गोली से उड़ा देने की धमकी देते हैं।

—एक रात को तो इतना 'मात' गये तहसीलदार साहब, कि कमला की माँ डर से छाती पीटने लगी थी।···ऐसी खराब-खराब गाली, जो जिन्दगी में कभी एक बार भी उनके मुँह से नहीं सुनी गई—कमला की बन्द किवाड़ के सामने आकर—जोर-जोर से बकने लगे। कमला दरवाजा खोल कर बाहर आई और बोली—"बाबा !···मुझे जो सजा

देनी हो दो। मगर माँ को गाली मत दो।···उनका क्या क़ुसूर है?"

कमला को देखते ही तहसीलदार साहब का नशा उतर गया—वे ऊपर भागे।

उस दिन से माँ—कमला को एक मिनट भी अकेली नहीं छोड़ती है।···'बिलार' को देख कर बच्चे वाली बिल्ली की सतर्क आँखें कैसी तेज हो जाती है?···कमला की माँ को डर है—तहसीलदार साहब किसी दिन···कोई 'कांड' करेंगे।···एक सप्ताह पहले शराब में एक दवा मिला कर दिया उन्होंने—"कमला को पिला दो।···एकदम 'खलास' हो जायेगी।···बड़ी मुश्किल से 'जोगाड़' किया है।"

उन पर कैसे विश्वास किया जाये?···न जाने कब क्या कर दें!

गाँव के घर-घर में 'हे भगवान' की पुकार मची हुई है!···सुबह से शाम तक, रात भर धान-दबनी कर जो मजदूरी मिलती है, खलिहान पर ही 'बाकी मोजर' हो जाता है। नाई-धोबी और मोची का 'खन' भी नहीं जुड़ेगा इस बार।···चलो कटिहार!···मिल का भोंपा बजता है रोज, सुनते नहीं।···बुला रहा है—'आ-ओ-ओ-ओ-हो-हो-हो-हो-।'

रात के सन्नाटे में जोतखी काका की खाँसी बड़ी डरावनी सुनाई पड़ती है—'खाँयें-खाँयें।'···दिन में, ठीक दोपहर को अमड़ा गाछ पर बैठ कर कागा जिस तरह बोलता है—ठीक उसी तरह—खाँयें-खाँयें!!

—खायेगा!···सबों को खा जायेगा।···पिंगलवर्णा देवी क्रमशः बढ़ी आ रही है—उसके हज़ारों 'गण' दाँत निकाले हैं—जीभ लपलपा रही है।···खायेगा···खायेगा!!···

भयार्त शिशु की तरह सारा गाँव कुहरे में 'दुबका' हुआ थर-थर काँप रहा है!···

"खबरदार—हो-य-य-य-य—खबरदार!"

तहसीलदार साहब ने खलिहान 'जोगाने' के लिए तीन संथालों को और ड्योढ़ी के पहरा के लिए चार पहड़िया सिपाहियों को बहाल किया है।···एक नाल बंदूक़ का 'लैसन' फिर मिला है।···चलित्तर कर्मकार

जब तक पकड़ाता नहीं है—पैसे वालों को रात में नींद नहीं आयेगी।··· पहरेवालों की बोली भी डरावनी मालूम होती है।···आजकल कोठी के जंगल में शाम को ही एक रौशनी जलती है—बहुत तेज़! फिर रात में और फिर भोर को।···

बालदेव जी जगे हुये हैं। शाम को पुरैनियाँ से लौटे हैं।···उनको नींद नहीं आ रही है। पुरैनियाँ जाने के समय लछमी ने बावन दास का बस्ता—गाँधी जी की चिट्ठियों वाला बस्ता—देते हुये कहा था—'लघुसंका'[४] करने के समय पॉकिट से निकाल कर···।' गांगुली जी से वह भेंट करने गया था। गांगुली जी ने पूछा भी था—'बावन दास ने कुछ दिया है आप को?···'

"जी···ऊँहूँ।···नहीं।"—बालदेव जी इस जाड़े के मौसम में भी पसीने-पसीने हो गये थे।

न जाने क्यों गंगुली जी अचानक उदास हो गये थे!

···बालदेव अब जान रहते इन चिट्ठियों को नहीं दे सकता। इन चिट्ठियों को देखते ही जमाहिर लाल नेहरू जी बावन दास को मेनिस्टर बना देंगे, नहीं तो 'डिल्ली' जरूर बुला लेंगे।···यों भी, आज तक जितने लीडर आये, सबों ने बावन दास से ही हँसकर बातें कीं।

···उस बार मेनिस्टर साहेब आये। बड़े-बड़े लीडरों ने, मारवाड़ियों ने, वकीलों 'मुक्तियारों' और जमींदारों ने 'दसखत' करके 'दरखास' दिया—'भगवती बाबू सरकारी वकील को काँगरेस का मेम्बर बहाल कर लिया जाये।'···मगर मेनिस्टर साहेब ने बावन दास से पूछा—'क्या बावन दास जी?' भगवती बाबू नहीं बहाल हुये। आखिर बावन की ही बात रही!··· भगवती बाबू ने 'बियालिस' में सुराजियों को फाँसी पर झुलाने के लिए खूब बहस किया था।

और ये चिट्ठियाँ!···नहीं, वह 'हरगिस' नहीं देगा।···लछमी को न जाने क्या हो गया है। जिस दिन से बस्ता मिला, दोनों 'बखत' सतसंग के समय सिर से छुला कर सामने रखती थी।···रोज चंदन और

फूल चढ़ाती थी इस पर। कभी-कभी चिट्ठियों को खोल कर पढ़ती और रोती।···पुरैनियाँ से लौटने पर 'कुसल-मंगल' पूछना तो दूर, पूछ बैठी—"गंगुली जी को दे दिया न ?"

"हाँ-हाँ। दे दिया। इतना 'ना-परतीत' था तो मेरे हाथ में दिया ही क्यों था ?"

बालदेव जी को नींद नहीं आ रही है। बैलगाड़ी पर 'पुआल' के नीचे बस्ता छिपा कर रख दिया है।···धूनी तो धू-धू कर जल रही है।···

बालदेव जी उठ कर बाहर जाते हैं।

"होये !···खबरदार !"—पहरा चिल्लाता है।

बालदेव जी धुनी के पास बैठकर लकड़ियों को जरा इधर-उधर करते हैं, फिर कनखी से लछमी के बिछावन की ओर देखते हैं।···धीरे से बस्ता निकाल कर खोलते हैं। उनका सारा देह सिहर रहा है, जीभ सूखकर काठ हो गई है, मुँह में थूक नहीं है !···धुनी की आग लहलहा उठी है, लकड़ियाँ 'चिट्-चिट्' बोलती हैं।···बालदेव ने एक चिट्ठी निकाली···।

"दुहाई गाँधी बाबा !···बाबा रे···!"—लछमी बिछावन पर से ही झपटती है—"गुसाईं साहेब ! छिः छिः ! यह क्या कर रहे हैं।···सतगुरु हो छिमा करो।—बालदेव !···पापी···हत्यारा।"

धुनी की आग लछमी के कपड़े में लग जाती है।···लगने दो आग ···मुट्ठी खोलिये ! बस्ता दीजिये बालदेव जी !···मैं जल कर मर जाऊँगी, मगर···।"

बालदेव जी की कसी हुई मुट्ठी खुल जाती है।···लछमी बस्ते को कलेजे से चिपका कर खड़ी होती है।···कमर से लिपटा हुआ कपड़ा खुद-ब-खुद गिर पड़ता है। बालदेव जी कमंडल से पानी लेकर छींटते हैं।

"हे भगवान !···सतगुरु हो ! जै गाँधी जी !!···बाबा···जै बावन दास जी !···हः हः।"—लछमी रो रही है।

लछमी एकदम नंगी खड़ी रो रही है।

लछमी के हाथ-पाँव जल गये हैं, बड़े-बड़े फफोले निकल आये हैं।

बालदेव जी अपनी मसहरी में आकर छिप जाते हैं। लेटकर सोचते हैं—नहीं, अब यहाँ रहना अच्छा नहीं। वह किस मुँह से यहाँ रहेगा? ···लछमी की ओर अब वह निगाह उठा कर कभी देख नहीं सकेगा।··· वह पुरैनियाँ जायेगा, वहीं से चन्ननपट्टी चला जायेगा। वह अब अपने गाँव में रहेगा। अपने समाज में, अपनी जाति में रहेगा।···जाति बहुत बड़ी चीज है।···जाति की बात ऐसी है कि अब सभी बड़े-बड़े लीडर अपनी-अपनी जाति की पाटी में हैं।···यह तो 'राजनीति' है। लछमी क्या समझेगी?···कासी जी का 'बरमचारी' तो लगता है, अब यहीं खुट्टा गाड़ेगा···। ठीक है।···नहीं, वह लछमी पर जाते-जाते 'अकलंग' लगा कर नहीं जायेगा। वह···

"गुसाईं साहेब!···उठिये!···सतसंग का समय हो गया।"—लछमी कराहते हुये उठती है।···सारा देह जल गया है!

रोज की तरह लछमी उठती है, उठ कर बालदेव जी के बिछावन के पास आती है, मसहरी हटा कर बालदेव जी के अँगूठों में आँखें लगाती है—"सा-हे-ब-बंदगी।"

बालदेव जी रोते हैं—सिसकियाँ लेकर—"ल-छ-मी।"

"उठिये गुसाईं साहेब!···"

(१) आधा हल। (२) इन्द्रधनुष। (३) सामने। (४) पेशाब।

—बाईस

तीन महीने बाद!

१९४८ साल के अप्रैल की एक सुबह!!

इस इलाक़े में अखतिया 'पटुआ-भदै' बोनेवाले किसानों को चाहिये कि सूरज उगने से पहले ही खेत को चार 'चास' कर दें!···'भुरुकुआ'

तारा जगमग कर रहा है।···कमला नदी के गड्ढे में उसकी छाया झिल-मिला रही है। लगता है—नीलकमल खिला है।

कंधे पर हल लिये मरियल बैलों को हाँकता हुआ जा रहा है बिरंची···कोयरी टोला के सोबरन का तीन बीघा खेत 'मनकुत्ता' पर जोतता है।···मगर इस साल टोटा पड़ेगा। ··उसकी सूरत···दियासलाई की डिबिया में जैसे हलवाहे की छापी रहती है—एकदम दुबला-पतला, काला कलूटा, कमर में बिस्ठी—वैसी ही है।

खेलावन अब खुद भैंस चराता है। तीन बजे रात में भैंस जैसा चरती है—वह दिन भर में नहीं चरेगी।—अब तो उसको अपना 'रमना'[1] भी नहीं है—इसी लिए 'धता' की ओर ले जाता है।···खेलावन यादव—यादव टोली का मड़र—भैंस चरा कर लौट रहा है!

आसमान साफ़ होता जा रहा है। सबों के चेहरों पर सुबह का प्रकाश पड़ता है—झुमाई हुई ईंट जैसे चेहरे!

तहसीलदार साहब का 'ट्रैक्टर' लेकर 'ड्राइवर' साहब निकले—भट-भट-भट-भट-भट!!

तहसीलदार साहब दोमंजिले की छत पर खड़े, हाथों को पीछे की ओर बाँधे टहल रहे हैं। भट-भट-भट···भट···भट!···छत दलकती है!···उसी के ताल पर उनका कलेजा 'धुकधुका' रहा है।···कौन आ रहा है? कौ···न? सेबिया?!···चुप!···धीरे से!···क्या?

"क्या?"—तहसीलदार साहब पूछते हैं।

"ऊँ! बतूहा!···नाती भैलहीं।"[2]—सेबिया हँसती है।

"चुप !···जिन्दा है या···।"

"उँह !···। 'गुजुर गुजुर' हे रैछे !"[3]

उफ़् !···भगवान !!···तहसीलदार साहब थर-थर काँप रहे हैं ।

कमला नदी के उस पार, अधपके रब्बी की फ़सिल के उस पार··· सेमलबाड़ी के जंगल के उस पार आसमान लाल हो गया है !···दक्खिन··· कोठी के बाग में गुलमुहर की लाल-लाल डालियाँ दमक उठती हैं ।

ड्योढ़ी के उस पार बच्चे के रोने की आवाज़ नहीं जाने पावे ! इंतिज़ाम हो रहा है ।···कोई इंतिज़ाम ज़रूर हो जायेगा ।···यदि बच्चा ज़ोर से रोये ?···ऐं···गला-टी···प दो । मार डालो !

दिल्ली में, राजघाट पर—बापू की समाधि पर रोज़ श्रद्धांजलियाँ अर्पित होती हैं ।···संसार के किसी भी कोने का, किसी भी देश का आदमी आता है—वहाँ पहुँच कर अपनी ज़िन्दगी को सार्थक समझता है !

कलीमद्दीपुर में—नागर नदी के किनारे—चोरघट्टा के पास साँहुड़ के पेंड़ की डाली से लटकती हुई खद्दर की झोली को किसी ने शायद टपा दिया है ।···कौन लेगा ?···दुलारचंद कापरा ने एक महीने के बाद जाकर देखा—झोली तो लटक रही है डाली से ।··· ज़िला काँग्रेस का कोई भी 'वरकर' देखते ही पहचान लेगा—बावन दास की झोली है ।···झोली, कापरा ने टपा दी ।···मगर झोली का फ़ीता अभी भी डाली में झूलरहा है ।···

···किसी दुखिया ने इसे 'चेथरिया-पीर'[4] समझ कर 'मनौती' की है—अपने आँचल का एक खूँट फाड़ कर बाँध दिया है—'मनोकामना पूरी हो तो नया 'चेथरा' चढ़ाऊँगी !'···बहुत बड़ी आशा और विश्वास के साथ वह गिरह बाँध रही है ।—दो चिथड़े !!

पूर्णिया जेल के सामने—बड़ा पुराना 'बटवृक्ष' है । उसके नीचे सूखी

हुई पत्तियाँ हवा में इधर-उधर उड़ रही हैं।···बट के बँधाये चबुतरे के पास एक युवती खड़ी है।···साथ में है प्यारू!

खाली देह पर एक पुराना गमछा रखे, सिर्फ़ जाँघिया पहने एक 'वार्डर' साहब बार-बार 'बारिक' से निकल कर युवती को देखते हैं, गीत गाते हैं—तोरी पतरी कमरिया।···और एक बार पूछ ही देते हैं,—"आप डाक्टर साहेब की 'वाइफ' हैं?"

युवती ने गर्दन हिला कर कहा—"नहीं!"

वार्डर साहेब प्यारू की ओर देखते हैं।···प्यारू इस वार्डर को जानता है—बड़ा बेकूफ है। हमेसा खराब-खराब बात बोलता रहता है।···वह मुँह फेर लेता है।

जेल का लौह कपाट झनझना कर खुलता है। युवती के चेहरे पर से प्रतीक्षा की बेचैनी हट जाती है।···उसके चेहरे पर हाल में ही जो छोटी-छोटी झुर्रियाँ पड़ गई थीं—धीरे-धीरे खिल पड़ती हैं।

डाक्टर इस तरह मुस्कुराता, डेग बढ़ाता, हाथ में छोटा बैग लिये आ रहा है—मानो 'लेबोरेटरी' से छुट्टी पाकर लौटा है।

प्यारू का चेहरा देखने क़ाबिल हो रहा है!···वह अपने अन्दर में उठनेवाले ख़ुशी के आवेगों को दबाता है, किन्तु उसका मुँह अस्वाभाविक रूप से खुला हुआ है···।

"तुम भी किसी जेल में थीं क्या?"

"नहीं बाबा! ऐसी क़िस्मत लेके नहीं आई।···झुको! बाबा विश्वनाथ का प्रसाद है!"—युवती रूमाल से सूखे 'बेलपत्तर' और फूल निकाल कर डाक्टर प्रशान्त के सिर से छुलाती है।

"तब प्यारू?···क्या हाल है? ममता!···प्यारू से बातचीत हुई है या नहीं···।"

"सुबह से और कर क्या रही हूँ!"—ममता हँसते हुये कहती है—"घोड़ागाड़ी बुलाइये। प्यारिचांद सरकार!

प्यारू हँसता-लँगड़ाता कचहरी की ओर जाता है।

"तीन बजे रात में पहुँची पूर्णिया स्टेशन।···ज्योति-दी तो आजकल यहीं हैं न! उनके डेरे पर गई, सुबह उठकर कलक्टर साहब के बँगले पर गई।···दस्ती आर्डर साथ में था—तुम्हारे 'रिलीज़' का। ज्योति-दी ने कहा, यदि कलक्टर साहब 'टूर' पर निकल गये तो फिर देर हो जासकती है।···तो अभी कहाँ चलना है?"—ममता मुस्कुराती है।

"तुम मेरीगंज नहीं चलोगी?"

"क्यों नहीं।···मैंने पन्द्रह दिनों की छुट्टी ले ली है।"

एस० पी० साहब का चपरासी खत लेकर आता है। एस० पी० साहब ने डाक्टर को अपने बँगले पर निमन्त्रित किया है।

(१) चरागाह। (२) ऊँ, पागल नाती हुआ है। (३) गुज़ुर-गुज़ुर देखता है। (४) जिस दरख्त को 'पीर' समझ कर सियड़ा चढ़ाते हैं।

—तेईस

तहसीलदार साहब अब नीचे नहीं उतरते हैं। ऊपर ही रहते हैं।···दिन भर ताड़ी पीकर रहते हैं, रात में संथाल टोली का महुआ का रस।···कभी होश में नहीं रहते हैं। सुमरित दास 'बेतार' से रोज़ पूछते हैं—"सोचा उपाय?"

"मेरा तो मगज नहीं काम कर रहा है।"

"नहीं काम कर रहा है, तो लो एक गिलास।···पीओ साले!··· यदि कहीं बोले तो देख लो बंदूक!"···

कमला की माँ दरवाज़ा कभी नहीं खोलती। कुएँ की ओर खुलने वाला दरवाज़ा कभी-कभी खोलती है।···कमरे के अँधकार में, एक कोने में, एक छोटा सा दीप जल रहा है।···कमला की गोदी में उसका शिशु··· कपड़े में लिपटा सो रहा है।·····कमला 'कजरौटी' में काजल 'पार' रही है!

भट-भट-भर्र-र्र···

एक 'स्टेशन वैगन' पुर्णियाँ-मेरीगंज रोड पर भागी जा रही है।

चलते समय ममता की नज़र बचा कर प्यारू ने डाक्टर के हाथ में एक लिफ़ाफ़ा दिया है।···आगे ड्राइवर की बगल में बैठा हुआ प्यारू कभी-कभी गर्दन उलट कर पीछे की ओर देखता है। डाक्टर साहब चिट्ठी पढ़ रहे हैं—

"प्राणनाथ!"

कमला की चिट्ठी है।···एक सप्ताह पहले की चिट्ठी है:—

"प्राणनाथ,

"पता नहीं, समय पर यह पत्र तुमको मिले या नहीं। देर या सवेर —कभी भी मेरी यह चिट्ठी तुम्हें मिल ही जायेगी—मुझे पूरा विश्वास है। तुम मेरे पास दौड़े आओगे!···तुम जानते हो, अब मुझे डर लगने लगा है।···तुम्हारा···तुम्हारा कैसे लिखूँ?···माँ कहती है,—यदि तुम किसी तरह बाबा को लिख दो या मालूम कर दो कि···मेरी होनेवाली संतान के तुम पिता हो, तो मैं जी जाऊँ। विश्वास नहीं करती माँ। बाबू जी अब एकदम पागल हो गये हैं। न जाने कब क्या हो!···तुम्हारी किताबों ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है।·····मुझे कितना बड़ा सहारा मिला है, तुम्हारी किताबों से। लेकिन अब एक नई किताब चाहिये जिसके पृष्ठ-पृष्ठ में लिखा हुआ हो—कमला!···विश्वास करो। डरो मत!···जो होगा—मंगलमय होगा···।"

डाक्टर एक ही साँस में इतना पढ़ गया। इसके बाद उसने ममता की ओर निगाह डाली। रात भर की जगी ममता गाड़ी के हिचकोलों पर मीठी झपकी ले रही है।···चोट लग जायेगी!

"और कितनी दूर?"—ममता जग कर पूछती है।

"और एक घंटा।"—प्यारू कहता है

डाक्टर आगे पढ़ता है—"···बाबा तुम्हारे बच्चे को मार डालेंगे।"

"नहीं! नहीं।"

"ऐं ?"—ममता पूछती है—"क्या है ?"

डाक्टर, ममता के हाथ में पत्र देकर बाहर की ओर देखता है। प्यारू गर्दन उलट-उलट कर डाक्टर साहब की ओर देखता है।

ममता आँखें मलते हुये पढ़ती है—"प्राणनाथ ?···किसकी चिट्ठी है···कमला की ?"

ममता पढ़ रही है। डाक्टर ने एक बार ममता की ओर देखा—ममता की नींद से माती आँखें एक बार चमकती हैं।···पत्र शेष करके वह पूछती है—"और कितनी दूर ?"

"अब, और एक घंटा। कच्चा रास्ता है!"

"और वह ?···गनेश कहाँ है ?"

"उसकी तो एक लम्बी कहानी है।···ब्रह्मसमाज मंदिर में उसे रखवा दिया था।···न जाने कहाँ से उसके एक चाचा ऊपर हो गये।···बहुत बखेड़ा हुआ···जाति धर्म का बवंडर उठाया। मैंने भी कह दिया—ले जाओ।"

"उससे भैंस चरवाता है।"—प्यारू कहता है—"उसके गाँव का आदमी बराबर कचहरी आता है न!"

"मैंने मेडिकल गजेट में तुम्हारी रिपोर्ट दे दी है।···एक संक्षिप्त रिपोर्ट है—जंगली जड़ी-बूटी और यहाँ के गाँवों में प्रचलित 'टोटकों' के बारे में—तुम्हारी चिट्ठियों से 'सार्ट' करके लिख दिया···।"

"लेकिन···मैंने तो फ़ैसला कर लिया है—रिसर्च असफल होने की घोषणा कर दूँगा।"

"कोई रिसर्च कभी असफल नहीं होता है डाक्टर।···तुमने कम-से-कम मिट्टी को तो पहचाना है।···मिट्टी और मनुष्य से मुहब्बत! छोटी बात नहीं।"

डाक्टर, ममता की ओर देखता है—एकटक। ममता बाहर की ओर देख रही है—विशाल मैदान!·····वंध्या धरती!···यही है वह मशहूर मैदान—नेपाल से शुरू होकर गंगा किनारे तक—वीरान—धूमिल—

आँचल।···मैदान की सूखी हुई दूबों में चरवाहों ने आग लगा दी है—पंक्तिबद्ध दीपों जैसी लगती है दूर से।···'तड़बन्ना' के ताड़ों की फुनगी पर डूबते हुये सूरज की लाली क्रमशः मटमैली हो रही है।

भर्र-र-र्र···।

"सुमरित दास! अभी ट्रैक्टर क्यों चला रहा है?—कहाँ ले जा रहा है, ड्राइवर से पूछो तो।"—तहसीलदार साहब दोमंजिले की छत पर से पुकारते हैं।

"ट्रैक्टर नहीं। मोटर है मोटर।"

"मोटर···कौन है?"

"डागडर!"

"कौन डाक्टर?"

सुमरित दास दौड़ कर छत पर जाता है—"अपने—डागडर बाबू।···साथ में एक 'जलाना' है।···प्यारू भी है।"

तहसीलदार साहब हाथ में बंदूक लेते हैं। सुमरित दास थर-थर काँपते हुये कहता है—"दुहाई···ऐसा काम मत कीजिये।"

"ऐसा काम नहीं करूँ? तब! क्या करूँ?"

प्यारू पुकारता है—"मौसी!···गे मौसी!"

"कौन? प्यारू?"—माँ दरवाजे की फाँक से कहती है—"क्या है?"

"डागडर बाबू।"

"ऐंहें-ऐंहें—आँ-आँ"—सौर-गृह में कमला का नन्हा रोता है—ऐं-हें—ऐं-हाँ-।'

ममता जल्दी से किवाड़ के पास जाकर कहती है—"किवाड़ खोलो मौसी!···मैं हूँ। ममता···। खोलो तो पहले!"

किवाड़ के पल्ले खुल जाते हैं। ममता सौर-गृह के अंदर चली जाती

है।···डाक्टर, अकेला, चुपचाप खड़ा है। सीढ़ी पर खड़ाऊँ की आवाज होती है—भारी भरकम आवाज। कोई ज़ोर-ज़ोर से पैर पटक कर चल रहा है।

"कौन है? डाक्टर!"—तहसीलदार साहब चिल्लाते हैं।

"आइये! बैठिये डागडर बाबू।"—सुमरित दास मसूढ़े निकाल कर हँसता है—"आइये।"

"नहीं!···सुमरित दास।···इससे पूछो—कहाँ आया है?···किसके यहाँ आया है? क्या करने आया है?·····क्या लेने आया है?····· पूछो!"

सुमरित दास 'बेतार', डाक्टर के पास आकर कनखी और इशारों से समझाता है—"आजकल ज़रा ज़्यादा ढलने लगी है न···इसीलिए।"

सौर-गृह के दरवाज़े की फाँक से कमला की माँ कहती है—"कमली के बाबू!···कैसे हो तुम। जमाई को···।"

"जमाई को क्या?···अपने जमाई को क्यों नहीं कहती हो, वह मेरा पैर छू कर प्रणाम कहाँ करता है?"

डाक्टर, तहसीलदार की चरणधूलि लेता है।

तहसीलदार साहब अचानक फूट कर रो पड़ते हैं—डाक्टर साहब को बाँहों में जकड़ कर, रोते हैं—"मेरा बेटा! बाबू!···मेरा बेटा!!"

सुमरित दास बेतार ने रात में ही घर-घर खबर पहुँचा दी—"कमली की सादी तो पहले ही डागडर बाबू से हो गई थी।···तुमलोग तो जानते ही हो। 'पाँच-पंच' को जना कर जब-जब सादी की बात पक्की हुई—एक-न-एक 'बिघिन' पड़ गया। इसीलिए, कासी के पंडितों ने 'गंधरव-बिबाह' कराने को कहा। गंधरव बिबाह की बात किसी को मालूम नहीं होने दी जाती है।···यदि बच्चा हो तो सबसे पहले बाप उसको देखेगा, तब और लोग।···डागडर बाबू आ गये हैं। अब कल 'छट्ठी' के भोज का

हाथ में अपने शिशु को सौंप रही है।···अँधेरा!···भयावनी छाया?··· नहीं, नहीं।···डाक्टर ने अपने बाँयें हाथ की उँगलियों से नीलोत्पल के 'हार्ट' की धड़कन का अनुभव किया था—'अहा! नन्हा सा दिल, धुक-धुक कर रहा है!'

सौर-गृह में, बारह दिन के शिशु की लम्बी उम्र, सुन्दर स्वास्थ्य, विद्या-बुद्धि और धन-सम्पत्ति के लिए मंगलगीत गाये जा रहे हैं।··· डाक्टर जगा हुआ है।···उसका रिसर्च?···ममता कहती है—'असफल नहीं हुआ है।···मिट्टी और मनुष्य से इतनी गहरी मुहब्बत किसी 'लेबोरेटरी' में नहीं बनती!'

लेबोरेटरी!···विशाल प्रयोगशाला। ऊँची चहारदीवारियों में बंद—प्रयोगशाला।···साम्राज्य-लोभी शासकों की संगीनों के साये में वैज्ञानिकों के दल खोज कर रहे हैं, प्रयोग कर रहे हैं।···गंजी-खोपड़ियों पर लाल-हरी रोशनी पड़ रही है!···मारात्मक, विध्वंसक और सर्वनाशा शक्तियों के सम्मिश्रण से एक ऐसे 'बम' की रचना हो रही है—जो सारी पृथ्वी को हवा के रूप में परिणत कर देगा।···ऐटम, 'ब्रेक' कर रहा है।···मकड़ी के जाल की तरह···। चारों ओर एक महा अंधकार! सब वाष्प! प्रकृति-पुरुष···अंड-पिंड···! मिट्टी और मनुष्य के शुभचिंतकों की छोटी-सी टोली अँधेरे में टटोल रही है। अँधेरे में वे आपस में टकराते हैं।···

···वेदान्त···भौतिकवाद···सापेक्षवाद···मानवतावाद!···हिंसा-जर्जर प्रकृति रो रही है।···व्याध के तीर से ज़ख़्मी हिरन शावक-सी मानवता को कहाँ पनाह मिले?···हा-हा-हा-! अट्टहास! व्याधों के अट्टहास से आकाश हिल रहा है। छोटा-सा, नन्हा-सा हिरन हाँफ रहा है। छोटे फेफड़े की तेज़ धुक-धुकी!···नीलोत्पल? नहीं, नहीं!···यह अँधेरा नहीं रहेगा। मानवता के पुजारियों की सम्मिलित वाणी गूँजती है—पवित्र वाणी!···उन्हें प्रकाश मिल गया है। तेजोमय!! क्षत-विक्षत पृथ्वी के घाव पर कोई शीतल चंदन लेप रहा है।···प्रेम और अहिंसा की साधना सफल हो चुकी है!···फिर कैसा भय?···विधाता की सृष्टि में 'मानव'

ही सब से बढ़कर शक्तिशाली है ! उसको 'जय' करना असंभव है—प्रचंड शक्तिशाली बमों से भी नहीं।···पागलो ! आदमी, आदमी है 'गिनीपिग' नहीं।···सबारि ऊपर मानुस सत्य···।

"···अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम ।
"अनेक दिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम् ।···
"···दिवि सूर्यसहस्र···।"

···ममता गा रही है ? तो सुबह हो रही है।···बग़ल के कमरे में तहसीलदार साहब खर्राटे ले रहे हैं। डाक्टर उठकर खिड़कियों को खोल देता है—मटमैली अँधियारी में कोठी का बाग़ ठिठका हुआ किसी की प्रतीक्षा कर रहा है।···गुलमुहर, अमलतास और योजनगंधा की नई कलियाँ मुस्कुराने को तैयार हैं।··· नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं···।

"प्रशान्त !"—ममता मुस्कुराती हुई कमरे में प्रवेश करती है। सुबह की हौले-हौले बहनेवाली हवा जैसी। सद्यस्नाता ममता के भींगे बिखरे केशगुच्छ को डाक्टर छू देता है।

"अरे धेत् ! औरतों का भीगा केश नहीं छूना चाहिये। दोष होता है।···पूछती हूँ, चाय पीओगे ? कुमार साहब का दूध गर्म हो रहा है। लगता है, रात भर जगे रहे हो ?···कुल्ली कर लो। मैं चाय ले आती हूँ।"—ममता मुस्कुराती हुई चली जाती है।

बेचारी ममता की ज़िन्दगी का एकमात्र विलास—चाय ! शीला कहती थी एक बार—"ममता-दी चाय पीने का बहाना ढूँढती रहती है। ···दिन भर में दस पन्द्रह प्याली···।"

चाय की प्याली प्रशान्त के हाथ में देते हुये ममता पूछती है—"पढ़ गये ?···महात्मा जी की आख़िरी लालसा ?···मैं तो कहती हूँ, यह वह महा प्रकाश है, जिसकी रौशनी में दुनिया निर्भय हज़ारों बरस का सफ़र तय कर सकती है।"

"ममता !···मैं फिर काम शुरू करूँगा। यहीं, इसी गाँव में। मैं प्यार की खेती करना चाहता हूँ। आँसू से भीगी हुई धरती पर प्यार के

पौधे लहलहावेंगे।···मैं साधना करूँगा। ग्राम्यवासिनी भारतमाता के 'मैले आँचल' तले !! कम-से-कम एक ही गाँव के कुछ प्राणियों के मुर्झाये ओठों पर मुस्कुराहट लौटा सकूँ, उनके हृदय में आशा और विश्वास को प्रतिष्ठित कर सकूँ···।"

ममता हँसती है—"मन करता है, किसी को आँचल पसार कर आशीर्वाद दूँ—तुम सफल होओ !···मन करता है, किसी कर्मयोगी के बढ़े हुये चरणों की धूलि लेकर कहूँ···।" प्रशान्त के पैरों की ओर हाथ बढ़ाती है।

"ममता !"

"ममता-दी !···लो इसे। दूध फेंकता है।"—कमला अपने शिशु को गोदी में लेकर हँसती हुई आती है।

"दो !···कैसे फेंकता है ? कैसे पिलाती हो ?···बोतल दो।"—ममता आलथी-पालथी मार कर बैठ जाती है और बच्चे को गोद में ले लेती है—"तुमने 'टैब्लेट' खा लिया कमला ?···खा लो।"

प्रशान्त चुपचाप ममता को देख रहा है—शरत बाबू के उपन्यासों की यह 'नारी' अपने विश्वास पर अडिग होकर आज भी आगे बढ़ रही है।···रूप बदल दो, नाम बदल दो, समय बदल दो, जगह बदल दो, पर यह कभी बदल नहीं सकती।

कमला पूछती है—"प्यारू भी पटना चलेगा ?"

"हाँ।"—ममता संक्षिप्त उत्तर देती है।

"आँयें-ऐं···ऐं···।"—नीलू रोता है।

"ना-ना···। पी लो···बाबू। राजा। सोना···मानिक !···नीलू। रोओ मत। ···अब रोने की क्या बात है प्यारे ?"—ममता हँसती है।

—कलीमुर्दीपुर घाट पर 'चेथरिया-पीर' में किसी ने 'मानत' कर के एक चिथड़ा और लटका दिया—